कविर्देवायः नमः

(सम्पूर्ण)

कबीर पंथ की स्थापना पतन तथा उत्थान

प्रकाशक व मुद्रक :-
राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सर्व सदस्य
(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)
पुस्तक संबंधी किसी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र :- 9416296541, 9416296397, 9813844747

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्म नहीं कोई न्यारा।।

-: विषय सूची :-

1. भूमिका 1
2. गुरू के लक्षण (पहचान) 6
- पूर्ण संत की अन्य पहचान 7
- परम सन्त की अन्य पहचान 9
- पूर्ण संत तीन बार में दीक्षा क्रम पूर्ण करता है 9
3. श्रीमद्भगवत् गीता में तीन नाम जाप देने का प्रमाण 10
4. वेदों व श्रीमद्भगवतगीता में भक्ति मन्त्रों का उल्लेख 10
5. पूर्ण संत यज्ञ व दान-धर्म वेद अनुसार कराता है 20
- हवन को ज्योति यज्ञ के द्वारा करने की राय पूर्ण संत देता है 21
6. कबीर पंथ की स्थापना 24
7. पाँच वर्ष की आयु में सन् 1403 (वि.सं. 1460) में कबीर पंथ को परमेश्वर कबीर जी ने स्थापित किया, प्रथम रामानन्द जी को समझाया.....28
8. सार शब्द को छुपाने का अन्य प्रमाण 37
- धर्मदास जी को जीवित को धरती में दबाने का क्या कारण था? 37
9. चुड़ामणि जी को गुरू पद प्रदान करना 40
10. कबीर पंथ का पतन 43
11. कबीर पंथ का उत्थान 63
12. आओ जानें कलयुग कितना बीत चुका है 66
13. हरि की परिभाषा 69
- हरि अवतार की परिभाषा 72
14. ब्रह्म (काल) के अवतारों की जानकारी 72
15. परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष के अवतारों की जानकारी 73
16. सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार 75
17. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी 75
18. भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण 78
19. एक महापुरूष के विषय में जयगुरुदेव की भविष्यवाणी 83
20. भक्ति नाश का कारण 85
21. शास्त्रों के आधार से पूर्ण संत तारणहार की पहचान 90
22. तारणहार परम सन्त की अन्य पहचान 91
23. परमेश्वर कबीर जी द्वारा अवतार धारण करने की भविष्यवाणी 92
24. पवित्र कबीर सागर में काल के दूतों द्वारा हस्तक्षेप 94

25. कलयुग का 5505 वर्ष कौन से सन् में पूरा होता है 110
26. परमेश्वर कबीर जी द्वारा अवतार धारण का समय 110
27. उसी दिव्य महापुरूष के विषय में नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी 112
28. नास्त्रेदमस के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणीयाँ 118
29. उस दिव्य महापुरूष का संक्षिप्त परिचय 120
30. संकट मोचन कष्ट हरण अवतार 126
- भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा 126
- एक श्रद्धालु की आत्म कथा 129
- अनहोनी की परमेश्वर ने 131
- अपने भक्त को धर्मराज के दरबार से छुड़वाना 134
- भक्त रामस्वरूप दास की आत्मकथा.....136
- भूतों व रोगों के सताए परिवार को आबाद करना 137
- पूर्ण परमात्मा साधक को भंयकर रोग से मुक्त करके आयु बढ़ा देता है.139
- भक्तमति सुशीला की आँखें ठीक करना 141
- तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है 141
- जीवन दाता अवतार 146

❖❖❖

पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए पढ़ें पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' पुस्तक प्राप्ति स्थल :-
सतलोक आश्रम हिसार-टोहाना रोड़, बरवाला जिला-हिसार (हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र :- 9812166044, 9812026821, 9812151088, 9992600825

दो शब्द

{जीव हमारी जाति है मानव धर्म हमारा।
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्म नहीं कोई न्यारा।।}

पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' भक्त समाज में वितरित की गई। उस पुस्तक में लिखे प्रमाणों को जान कर हजारों की संख्या में नकली कबीर पंथों में फंसे हुए भक्तों ने सतलोक आश्रम ''बरवाला'' जिला-हिसार प्रान्त-हरियाणा में आकर दीक्षा ग्रहण की। सत्य से परिचित होकर उन्होंने ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' पुस्तक का स्वयं प्रचार आरम्भ किया।

इस प्रमार्थी उद्देश्य से वे भक्त दामाखेड़ा धर्मनगर (छत्तीसगढ़) में भी प्रचार हेतु पुस्तकें बांटने गऐ। उस समय दामाखेड़ा में प्रकाशमुनि जी का सत्संग भी चल रहा था। जब उन गद्दी वाले नकली कबीर पंथियों को पता चला कि ऐसी पुस्तक वितरित की जा रही है जिसमें हमारे अज्ञान का पर्दाफाश किया गया है हमारी दुकानें बन्द हो जाऐंगी, सत्य को आँखों देखकर भी उन गद्दी वाले अहंकारियों ने सत्य को माना नहीं, उल्टा पुस्तक वितरित कर रहे भक्तों को जिनमें महिलाऐं भी थी, घसीट कर कबीर मंदिर में ले गए। दिन के 10 बजे से लेकर शाम 4 बजे तक पीटा, इतना पीटा कि वे बेहोश हो गए। फिर होश आया तो कसम दिलाई कि तुम आगे प्रचार नहीं करोगे। लेकिन भक्तों ने कहा कि चाहे हमें जान से मार दो, हम सत्य का प्रचार अवश्य करेंगे। आज आप ने अपनी असलियत भी दिखा दी है कि तुम महन्त व सन्त के रूप में राक्षस हो। जब भक्तों ने उनकी शर्त नहीं मानी तो भक्तों को पुलिस में पकड़वा दिया और झूठा मुकदमा बनवा दिया। तीसरे दिन भक्तों की जमानत हुई।

इसके पश्चात् दामाखेड़ा वालों ने एक पुस्तक छापी जिसका नाम रखा ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' उसमें ज्ञान का अज्ञान बना कर पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' के ज्ञान की निराधार आलोचना की है। जिसका कोई सिर-पैर नहीं है। एक भक्त ने यह पुस्तक हमें लाकर दी। इसलिए यह पुस्तक ''कबीर पंथ की स्थापना, पतन तथा उत्थान'' हमारे द्वारा बनाई गई है। दामाखेड़ा वालों ने ''कबीर पंथ'' की स्थापना सन् 1513 में बताया है जब परमेश्वर कबीर जी ने ''चुड़ामणि जी'' को गुरू पद दिया था। वास्तव कबीर पंथ की स्थापना विक्रमी संवत् 1460 (सन् 1403) में पांच वर्ष की लीलामय आयु में परमेश्वर कबीर जी ने कर दी थी। जब स्वामी रामानन्द जी को शरण में लिया और स्वामी रामानन्द जी ने परमेश्वर कबीर जी को सत्यलोक में तथा यहाँ पृथ्वी पर दोनों स्थानों पर देखा तो कहा था :-

दोहूँ ठौर है एक तू, भया एक से दो।
गरीबदास हम कारने, आए हो मग जो।।

तुम साहेब तुम सन्त हो, तुम सतगुरू तुम हंस।
गरीबदास तव रूप बिन, और न दूजा अंश।।

इसके पश्चात् परमेश्वर कबीर जी के विशेष आग्रह करने पर स्वामी रामानन्द जी ने गुरू बनना स्वीकारा तथा परमेश्वर कबीर जी को नाम दान करने की आज्ञा की औपचारिकता की थी।

★ इससे सिद्ध हुआ कि कबीर पंथ की स्थापना सन् 1403 (विक्रमी संवत् 1460) में हुई। दामाखेड़ा वाले गद्दी वालों ने कबीर पंथ की स्थापना सन् 1513 (विक्रमी संवत् 1570) में बताई है, वह गलत है।

विचार करें :- इन्होंने तो परमेश्वर कबीर जी के 115 वर्ष व्यर्थ सिद्ध कर दिये। परमेश्वर कबीर जी ने 5 वर्ष की आयु में कबीर पंथ की स्थापना कर दी थी। परमेश्वर कबीर जी कुल 120 वर्ष जुलाहे की भूमिका करके सशरीर अपने निज धाम में चले गए थे। धर्मदास को सन् 1512 (विक्रमी संवत् 1569) में जिन्दा जमीन में समाधि देकर अर्थात् जमीन में दबा कर उस के एक वर्ष पश्चात् सतलोक गवन से 5 वर्ष पूर्व सन् 1513 (विक्रमी संवत् 1570) में धर्मदास जी के द्वितीय पुत्र श्री चुड़ामणि जी को गुरू पद प्रदान किया था तथा उसे केवल प्रथम मन्त्र (जो पाँच नाम का है) दीक्षा रूप में देने का आदेश दिया था। सत्यनाम (जो दो अक्षर का है जिसमें एक ओम्=ॐ नाम है तथा दूसरा तत् यह सांकेतिक है) तथा सारनाम (जिसको सार शब्द, आदि नाम, अमर नाम उसके पर्यायवाची नामों से जाना जाता है।) चुड़ामणि जी को नहीं बताया था क्योंकि ये दोनों मन्त्र (सत्यनाम+सारनाम) तो कलयुग के 5505 वर्ष बीत जाने के पश्चात् (सन् 1997 में कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका था) ही स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने बताने थे, अब सन्त रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर जी ने सन् 1997 को सर्व मन्त्रों को दीक्षा रूप में स्वतंत्र रूप से देने का निर्देश दिया है। जो वर्तमान में सतलोक आश्रम बरवाला जिला-हिसार हरियाणा में सन्त रामपाल दास जी महाराज प्रदान कर रहे हैं।

इस से सिद्ध हुआ कि धर्मदास जी की वंश परंपरा में वास्तविक भक्ति नहीं है, जिससे मोक्ष संभव है।

★ श्री चुड़ामणि से चली गुरू गद्दी के छठे गद्दीनसीन ने ''वह दीक्षा जो परमेश्वर कबीर जी ने श्री चुड़ामणि जी को दी थी'' भी त्याग दी तथा 12 नकली पंथों में से एक ''टकसारी पंथ'' है उसके बहकावे में आकर उसी वाले पाँच नाम (अमीनाम, आदिनाम, अमर नाम .....) तथा वही चौंका आरती प्रारम्भ कर दी जो वर्तमान में दामाखेड़ा गद्दी वाले 15 वें गद्दीनसीन श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब प्रदान कर रहे हैं।

प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 पर।

धर्मदास तव वंश अज्ञाना, चिन्हें नहीं अंश सहिदाना।

जस कुछ आगे होइ भाई। सो चरित्र तोहि कहों बुझाई।।
छठी पीढ़ी वंश तव होई। भूलै वंश बिन्द तव सोई।
टकसारी को लै है पाना। अस तव वंश होए अज्ञाना।।
चाल हमारा वंश तव झाड़ै। टकसारी के मत सब माण्डै।
चौका तैसे करै बनाई। बहुत जीव चौरासी जाई।।
होवे दुरमत वंश तुम्हारा। बचन वंश रोकै बटपारा।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर जी ने अपने भक्त धर्मदास जी से स्पष्ट कर दिया है कि छटी पीढ़ी वाला तेरा वंश ''टकसारी नकली कबीर पंथ'' वाले नाम तथा चौका प्रारम्भ करेगा। जिस कारण से बहुसंख्या में जीव चौरासी लाख के चक्र में गिरेंगे।

तेरे गद्दी वाले पक्के बटपार (ठग) होंगे। वे मेरे वचन वंश के साथ झगड़ा करके बाधक बनेंगे। सन्त रामपाल दास जी महाराज परमेश्वर कबीर जी के वचन के वंश हैं क्योंकि दो प्रकार के वंश सन्त मत में माने जाते हैं। 1. बिन्द (माता-पिता से उत्पन्न) 2. वचन (गुरू से उपदेशी को वचन का पुत्र अर्थात् शिष्य कहा जाता है।) परमेश्वर कबीर जी सन्त गरीब दास जी को सन् 1727 (विक्रमी संवत् 1784) में गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर प्रान्त-हरियाणा में सत्यलोक से सशरीर आकर मिले थे। उनको पान (दीक्षा) देकर वचन का वंश (शिष्य) बनाया था। उसी वचन परंपरा में सन्त रामपाल दास जी महाराज सन्त गरीब दास वाले पंथ से जुड़े हैं। इसलिए ये भी परमेश्वर कबीर जी के वचन वंश के पुत्र हैं। दामाखेड़ा गद्दी वालों ने हमारे भक्त-भाई व बहनों को यथार्थ कबीर पंथ का प्रचार करने से रोका तथा उनके साथ मारपीट की। सत्य को आँखों देख कर भी नहीं माना, उल्टा विरोध व बाधा ही किया है। अधिक जानकारी आप जी इसी पुस्तक में पढ़ेंगे।

★ जो पुस्तक दामाखेड़ा वालों ने ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' लिखी है, उस में सत्य को छुपा कर असत्य का प्रतिपादन किया है।

क. = दामाखेड़ा गद्दी वाले तथा सर्व नकली कबीर पंथी परमेश्वर कबीर जी को परमात्मा नहीं मानते। ये तो कबीर जी को परमेश्वर अर्थात् सत्य पुरूष का प्रतिनिधि यानि नौकर मानते हैं। जैसे प्रधान मंत्री का प्रतिनिधि कोई I.A.S. अधिकार सचिव के रूप में होता है। वह प्रधान मन्त्री से कुछ शक्ति प्राप्त करके जनता को लाभ दे सकता है।

प्रमाण :- पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 8 तथा 11 पर कहा है कि कबीर जी ने सत्य पुरूष के प्रतिनिधि के रूप में थे, उन्हीं की आज्ञा से सर्व कार्य करते थे। कृपया पढ़ें ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 8 की फोटोकापी जिसमें दामाखेड़ा के वंश गुरू तथा अनुयाईयों का कैसा ज्ञान है? इसमें कुछ सृष्टि की रचना का भी वर्णन है जो निराधार है।

8

है। इस भाव को सदगुरु कबीर साहब ने धर्मदास साहेब को इस प्रकार समझाया है–

आदि अन्त कोई नाँहें वासा। आप हीआप कीन्ह प्रकाशा।
साहेब हतो और नहिं कोई। शिष्य गुरु हते नहिं दोई।।
नहिं तब ब्रह्मा वेद निशानी। ना हीं तब शिव की उत्पानी।।
नहिं तब विष्णु न निरंजन राया। नाहिं तब अक्षर सृष्टि बनाया।
पिण्ड ब्रह्मांड तब ना हता, नाहिं लोक विस्तार।
पुरुष एक निश्चल हता, जिनका सकल पसार।।

(सर्वज्ञ सागर, पृष्ठ 128–129)

अतः सदगुरु कबीर साहब सत्यलोकाधिपति सत्यपुरुष के प्रतिनिधि है। सत्यपुरुष का यही पवित्र प्रतिनिधि समस्त संसार का पूर्ण गुरु (सदगुरु) भी है और पथ प्रदर्शक भी। इस एकाधिपति सत्यपुरुष से ही इस सृष्टि की रचना हुई है। सदग्रन्थों में सत्यपुरुष को आदिपुरुष अथवा निःअक्षर नाम से भी संबोधित किया गया है। निःअक्षर (परमात्मा) से ही अक्षर (आत्मा) फिर आत्मा से क्षराकार मन (निरंजन) और फिर मन (निरंजन) से माया (अष्टांगी) की उत्पत्ति हुई। माया से रज (ब्रह्मा) सत (विष्णु) तथा तम (शंकर) ने पांच तत्वों के साथ मेल करके जगत की सृष्टि की। इस रहस्य को सदगुरु

यह पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 8 की फोटोकापी है। इसमें स्पष्ट है कि दामाखेड़ा वाले कबीर जी को सत्य पुरूष का प्रतिनिधि यानि नौकर मानते हैं।

वास्तविकता यह है कि ''कबीर जी'' स्वयं सत्य पुरूष अर्थात् परमेश्वर हैं। ये ही दो भूमिका कर रहे थे।

जिस समय स्वामी रामानन्द जी को परमेश्वर कबीर जी सत्यलोक लेकर गए फिर वापिस छोड़ा तो उन्होंने आँखों देखा हाल ब्यान किया जो सन्त गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी में बोला है :-

बोलत रामानन्द जी सुनों कबीर करतार।
गरीबदास सब रूप में तुम ही बोलनहार।।
दोहूं ठौर है एक तू भया एक से दो।
गरीबदास हम कारणे तुम आए हो मग जो।।
तुम साहिब तुम सन्त हो तुम सतगुरू तुम हंस।
गरीबदास तव रूप बिन और न दूजा अंश।

इसी को सन्त गरीब दास जी ने भी प्रमाणित किया है। सन्त गरीब दास जी को तथा सन्त नानक जी तथा सन्त दादू जी को तथा अब्राहिम सुल्तान को भी परमात्मा मिले थे, उनको सत्यलोक ले गए थे तथा पुनः वापिस छोड़ा था। उन्होंने

भी यही प्रमाण दिया है कि काशी नगर में जुलाहा (धाणक) रूप में जो कबीर जी जो लीला किया करते थे। वे स्वयं सत्य पुरूष है। वे ही सर्व के रचनहार हैं, कुल मालिक हैं।

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद नहीं पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

इस से सिद्ध हुआ कि दामाखेड़ा गद्दी वालों का ज्ञान गलत है। उनका उपदेश मन्त्र गलत है। जिस से मोक्ष संभव नहीं है। अधिक जानकारी आप जी इसी पुस्तक में आगे पढ़ेंगे।

★ दामाखेड़ा गद्दी वाले जो नकली पाँच नाम की एक आरती-सी दीक्षा रूप में देते हैं। उसी को सार शब्द - सार नाम तथा सत्यनाम कहते हैं। इसी को मूल मन्त्र भी कहते हैं।

(प्रमाण :- पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ के रहस्य'' के पृष्ठ 22-23 तथा 65 पर।)

★ दामाखेड़ा वालों ने इस सत्य भक्ति को गलत बताया है जो सन्त रामपाल दास जी महाराज वर्तमान में प्रदान कर रहे हैं तथा जिसका तीन बार में दीक्षा क्रम पूरा करने का प्रमाण ''कबीर सागर'' के अध्याय ''अमर मूल'' के पृष्ठ 265 पर परमेश्वर कबीर जी का आदेश है।

(प्रमाण :- पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 58-59, 68 से 83)

अधिक जानकारी आप जी इसी पुस्तक में पढ़ेंगे।

★ दामाखेड़ा वालों ने ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' पर अज्ञान आधार से आलोचना करके कहा है कि इस पुस्तक में कुछ भ्रान्तियां फैलाई गई हैं। उनका निवार्ण करते हुए पृष्ठ 78 पर भ्रान्ति नं. 1 में लीपा-पोती करके अपने नकली पंथ को असली सिद्ध करने की कुचेष्टा की है। इसका उत्तर पहले लिखा जा चुका है और अधिक जानकारी आप इसी पुस्तक ''कबीर पंथ की स्थापना, पतन तथा उत्थान'' में आगे पढेंगे तथा विस्तार के साथ ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' पुस्तक में पढें।

भ्रान्ति नं. 2 पृष्ठ 83 पर दामाखेड़ा वालों ने अप्रत्यक्ष रूप में सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा तीन बार में दीक्षा क्रम को पूरा करने वाली विधि को गलत कहा है जो कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' के पृष्ठ 265 पर प्रमाणित है कि :-

प्रश्न : संत रामपाल दास जी महाराज तीन बार नाम देते हैं। परंतु दामा खेड़ा वाले तथा अन्य कबीर पंथी महंत, संत तो नाम एक ही बार देते हैं। कौन सा सत्य है ? इसकी परख कैसे हो ?

कबीर पंथ में दामाखेड़ा वाले महन्तों द्वारा तथा उन्हीं से भिन्न हुए खरसिया गद्दी वालों तथा लहरतारा काशी (बनारस) वालों द्वारा जो उपदेश मन्त्र (नाम) दिया जाता है। वह हैः- ''सत सुकृत की रहनी रहो। अजर अमर गहो सत्य नाम। कह कबीर मूल दीक्षा सत्य शब्द प्रमाण। आदि नाम, अजर नाम, अमी नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम, आकाशे अदली निज नाम। यही नाम हंस का काम। खुले कुंजी खुले कपाट पांजी चढ़े मूल के घाट। भर्म भूत का बान्धो गोला कह कबीर यही प्रमाण पांच नाम ले हंसा सत्यलोक समान''

उत्तर : कबीर सागर में अमर मूल बोध सागर पृष्ठ 265 पर लिखा है :-

तब कबीर अस कहेवे लीन्हा, ज्ञानभेद सकल कह दीन्हा।।
धर्मदास मैं कहो बिचारी, जिहिते निबहै सब संसारी।।
प्रथमहि शिष्य होय जो आई, ता कहैं पान देहु तुम भाई।।1।।
जब देखहु तुम दृढ़ता ज्ञाना, ता कहैं कहु शब्द प्रवाना।।2।।
शब्द मांहि जब निश्चय आवै, ता कहैं ज्ञान अगाध सुनावै।।3।।

दोबारा फिर समझाया है -

बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासों कहहू वचन प्रवाना।।1।।
जा कहैं सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता कहें स्मरन देहु लखाई।।2।।
ज्ञान गम्य जा कहैं पुनि होई। सार शब्द जा कहैं कह सोई।।3।।
जा कहैं दिव्य ज्ञान परवेशा। ताकहैं तत्व ज्ञान उपदेशा।।4।।

ऊपर लिखी वाणियों में परमेश्वर कबीर जी का विशेष आदेश है कि गुरू पद पर विराजमान सन्त को चाहिए कि जो श्रद्धालु दीक्षा का इच्छुक आए, उसको प्रथम बार = पान प्रवाना देना चाहिए।

पान प्रवाना का भावार्थ है कि मन्त्रित पेय पदार्थ बनाकर प्रथम नाम दीक्षा दी जाती है। सन्त रामपाल दास जी महाराज अमृत जल बनाकर वह जल प्रथम बार दीक्षा लेने वाले को देते हैं। साथ में मिश्री का प्रसाद देते हैं। इस प्रकार प्रथम दीक्षा का क्रम पूरा होता है।

दूसरी बार में ''सत्यनाम'' जो अक्षर (एक ॐ + दूसरा तत् जो सांकेतिक है) का है वह प्रथम दीक्षा मन्त्र के चार महीने पश्चात् देते हैं। तीसरी बार में सारनाम दिया जाता है। यही निर्देश परमेश्वर कबीर जी ने उपरोक्त वाणी में दिया है कि इस प्रकार दीक्षा देने से सर्व संसार का कल्याण होगा। जैसे वाणी में कहा है कि :-

हे धर्मदास! अब बताता हूँ कि दीक्षा क्रम तीन बार में पूरा होना चाहिए।

1. प्रथम तो पान प्रवाना देना चाहिए।

2. जब उस श्रद्धालु को कुछ विश्वास हो तो दूसरी बार सत्य नाम का दो अक्षर का शब्द प्रवाना (मन्त्र) दें।

3. जब सत्यनाम के शब्द (मन्त्र) में पूरी निष्ठा हो जाए तब वह गूढ़ रहस्य सार

नाम प्रदान करना चाहिए।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट है कि कड़िहार गुरु तीन स्थिति में दीक्षा क्रम को पूरा करता है। धर्मदास जी के माध्यम से संत रामपाल दास जी को संकेत है। क्योंकि कबीर सागर में तो प्रमाण बाद में देखा था परंतु उपदेश विधि पहले ही पूज्य गुरुदेव तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी ने संत रामपाल दास जी महाराज को प्रदान कर दी थी। जो उपदेश मन्त्र (नाम) दामाखेड़ा वाले व खरसीया तथा लहरतारा काशी वाले देते हैं वह मन्त्र व्यर्थ है। उस में तो सत्यनाम तथा निजनाम (सारनाम) तथा पांच नामों की महीमा बताई है जो संत रामपाल दास जी महाराज प्रदान करता है। यह उपरोक्त पूरा शब्द(जो दामाखेड़ा व खरसीया व लहरतारा काशी वाले उपदेश में देते हैं) रटने से कुछ लाभ नहीं जो इसमें संकेत है उस सत्यनाम व निज नाम (सारशब्द) तथा पांच नामों को संत रामपाल जी महाराज से प्राप्त करके साधना करने से मोक्ष होगा। धर्मदास जी को तो परमश्वेर कबीर साहेब जी ने सार शब्द देने से मना कर दिया था तथा कहा था कि यदि सार शब्द किसी काल के दूत के हाथ पड़ गया तो बिचली पीढ़ी वाले हंस पार नहीं हो पाऐंगे।

भ्रान्ति नं. 3 पृष्ठ 87 पर दामाखेड़ा वालों ने तीसरी भ्रान्ति का निवार्ण करते हुए भ्रान्ति फैलाई है कि चौदहवें वंश गुरू श्री ग्रन्ध मुनि नाम साहेब जी 2½ वर्ष के गद्दी पर बैठे थे, वे पूर्ण विद्वान थे। अप्रत्यक्ष रूप से सन्त रामपाल दास जी महाराज पर कटाक्ष किया है कि यदि उस को शंका है तो तेहरवें वंश गुरू श्री ग्रन्ध मुनि नाम साहेब जो वर्तमान दामाखेड़ा गद्दीनसीन के पूज्य पिता व गुरू जी हैं, उनका ज्ञान पढ़ लें।

उत्तर :- जैसा ज्ञान वर्तमान में पंथ श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब और आप (''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' पुस्तक के लेखक) का है। वही ज्ञान व भक्ति मन्त्र वह 2½ वर्ष का बालक प्रदान करता था जो कबीर जी को सत्यपुरूष का प्रतिनिधि बताते हो और जो नकली पाँच नाम तथा चौंका आरती भी ''नकली टकसारी कबीर पंथ'' वाली ही प्रदान करते हो और एक ही बार में दीक्षा क्रम को पूरा करने का दावा करके विद्वान बने हो। ऐसा ही ज्ञान उस 14 वें वंश गुरू जी श्री ग्रन्ध मुनि जी का था क्योंकि उसी से प्राप्त ज्ञान वर्तमान में दामाखेड़ा के महन्तों तथा भक्तों में है। जिसकी एक झलक दामाखेड़ा प्रकाशित पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 8 में विद्यमान है। जिसकी फोटोकापी लगाई है। कृपया पढ़ें यह फोटोकापी वाला ज्ञान।

8

है। इस भाव को सदगुरु कबीर साहब ने धर्मदास साहेब को इस प्रकार समझाया है-

आदि अन्त कोई नाहिं वासा। आप हीआप कीन्ह प्रकाशा।
साहेब हतो और नहिं कोई। शिष्य गुरु हते नहिं दोई।।
नहिं तब ब्रह्मा वेद निशानी। ना हीं तब शिव की उत्पानी।।
नहिं तब विष्णु न निरंजन राया। नाहिं तब अक्षर सृष्टि बनाया।
पिण्ड ब्रह्मांड तब ना हता, नाहिं लोक विस्तार।
पुरुष एक निश्चल हता, जिनका सकल पसार।।

(सर्वज्ञ सागर, पृष्ठ 128-129)

अत: सदगुरु कबीर साहब सत्यलोकाधिपति सत्यपुरुष के प्रतिनिधि है। सत्यपुरुष का यही पवित्र प्रतिनिधि समस्त संसार का पूर्ण गुरु (सदगुरु) भी है और पथ प्रदर्शक भी। इस एकाधिपति सत्यपुरुष से ही इस सृष्टि की रचना हुई है। सदग्रन्थों में सत्यपुरुष को आदिपुरुष अथवा नि:अक्षर नाम से भी संबोधित किया गया है। नि:अक्षर (परमात्मा) से ही अक्षर (आत्मा) फिर आत्मा से क्षराकार मन (निरंजन) और फिर मन (निरंजन) से माया (अष्टांगी) की उत्पत्ति हुई। माया से रज (ब्रह्मा) सत (विष्णु) तथा तम (शंकर) ने पांच तत्वों के साथ मेल करके जगत की सृष्टि की। इस रहस्य को सदगुरु

यह फोटोकापी पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 8 की है। इसमें कबीर जी को सत्यपुरूष का प्रतिनिधि कहा है जबकि कबीर जी स्वयं सत्यपुरूष जी थे। फिर सृष्टि रचना का ज्ञान भी लिखा है। सत्यपुरूष को निःअक्षर नाम से कहा जाता है। निःअक्षर (परमात्मा) से अक्षर (आत्मा) फिर आत्मा से क्षराकार मन (निरंजन) उत्पन्न हुआ, मन (निरंजन) से माया (अष्टंगी) = दुर्गा की उत्पत्ति हुई। यह है ग्रन्ध मुनि नाम साहेब 14 वें वंश गुरू का आध्यात्मिक ज्ञान। अपना जीवन व्यर्थ किया, लाखों को ओर डुबोया।

भ्रान्ति नं. 4 पृष्ठ 92 पर दामाखेड़ा वालों ने भ्रान्ति का निवार्ण न करके भ्रान्ति फैलाई है ''कबीर सागर'' के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 136-137 वाली वाणियों का अनर्थ करके सत्य को दबाना चाहा है। परन्तु कबीर जी ने कहा है :-

चोर चुरावै तुम्बड़ी, गाढ़ै पाणी मैं। वह गाढ़ै वो ऊपर आवै, यूं सच्चाई छानि ना।।

परमेश्वर कबीर जी ने ''कबीर सागर'' के अध्याय ''स्वसमबेद बोध'' के पृष्ठ 121 तथा 171 पर भी स्पष्ट किया है जिसका सम्बन्ध कबीर बानी के पृष्ठ 136-137 से ही है। लिखा है कि जब कलयुग 5505 वर्ष (सन् 1997) बीत जाएगा। तब एक महापुरूष यथार्थ कबीर पंथ को प्रकट करेगा। वह मेरा विशेष कृपा पात्र

होगा तथा मेरा ही भेजा हुआ होगा। वह वास्तविक गुरू होगा। उसी से दीक्षा प्राप्त करके पूरा विश्व मोक्ष प्राप्त करेगा। उस के पास सत्य नाम व सार नाम (जो भक्ति के यथार्थ मन्त्र हैं) सर्व होंगे। धर्मदास जी से भी परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि यदि तेरे वंश वाले भी उस वचन वंश वाले मेरे कृपा पात्र सन्त से दीक्षा प्राप्त करेंगे तो आप के वंश भी मोक्ष प्राप्त कर लेंगे। जब पूरा विश्व उन सत्य मन्त्रों को प्राप्त करके पार होगा तो आप के वंश वाले कैसे पार नहीं होंगे अर्थात् सर्व का कल्याण होगा। (कृपया पढ़ें गुरू के लक्षण इसी पुस्तक में आगे)

दामाखेड़ा वंश गद्दी वाले कबीर पंथी तथा अन्य जितने भी कबीर पंथी हैं, सर्व ''यथार्थ कबीर पंथ'' से भटके हैं। सर्व श्रद्धालुओं से नम्र निवेदन है कि इस पुस्तक ''कबीर पंथ की स्थापना, पतन तथा उत्थान'' को धैर्य के साथ पढ़ें तथा सतलोक आश्रम बरवाला जिला-हिसार से अन्य पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' भी प्राप्त करें तथा सत्य-असत्य को जान कर अपना जीवन धन्य करें। अधिक जानकारी के लिए पुस्तक ''कबीर पंथ की स्थापना, पतन तथा उत्थान'' में आगे प्रवेश करके पढ़ें। आप जी को स्वयं नकली तथा असली का बोध हो जाएगा।

धन्यवाद।

प्रार्थी

राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सर्व सदस्य

भूमिका

(जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई धर्म नहीं कोई न्यारा।।)

आध्यात्मिक जगत में पंथ का अर्थ भक्ति का मार्ग होता है और जो परमात्मा प्राप्ति का निर्देशन अर्थात् मार्ग दर्शन करता है उस मार्ग दर्शक को ''गुरु'' कहा जाता है।

जिस लोक में हम रह रहे हैं, यह काल रूपी ब्रह्म अर्थात् ज्योति निरंजन का लोक है। इसका इक्कीस ब्रह्माण्ड का क्षेत्र है। एक ब्रह्माण्ड में 14 लोक तथा इनसे भिन्न तीन स्थान और हैं। काल रूपी ब्रह्म को एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाने का शाप लगा है। (जिसकी अधिक जानकारी के लिए कृपया पढ़ें पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' में ''सृष्टि उत्पत्ति'' अध्याय में कि इसको शाप क्यों लगा था?)

जिस कारण से यह सतर्क रहता है कि कोई प्राणी मेरे लोक से निकल न जाए, कहीं मेरा लोक खाली हो जाऐं तब मेरी क्षुधा कैसे शान्त होगी?

इसी काल रूपी ब्रह्म ने श्रीमदभगवत् गीता का ज्ञान श्री कृष्ण में प्रवेश करके बोला था।

श्रीमद्भगवत् गीता में अपनी स्थिति बताते हुए स्पष्ट किया है कि ''मैं काल हूँ। इस समय सर्व का नाश करने को प्रवृत हुआ हूँ। (गीता अध्याय 11 श्लोक 32) मेरे और तेरे अर्जुन बहुत जन्म हो चुके हैं अर्थात् मैं नाशवान हूँ, तू नहीं जानता मैं जानता हूँ। (गीता अध्याय 2 श्लोक 12,गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में)।

हे अर्जुन नाशरहित (अविनाशी) तो उसको जान जिससे सर्व संसार उत्पन्न हुआ है, जिसका नाश करने में कोई सक्षम नहीं है। (गीता अध्याय 2 श्लोक 17 में)।

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्व भाव से उस परमात्मा की शरण में जा, उसकी कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा शाश्वत् स्थान (सत्य लोक) को प्राप्त हो जाएगा। जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौट कर संसार में कभी नहीं आते।

गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता (काल रूपी ब्रह्म) ने कहा है कि ''जो साधक जरा (वृद्ध अवस्था के दुःख से) तथा मरण से (मृत्यु चक्र के दुःख से) मोक्ष (छुटकारा) प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं। वे साधक तत् ब्रह्म से सर्व आध्यात्मिक ज्ञान से तथा सर्व कर्मों से परिचित हैं।

अर्जुन ने गीता ज्ञान दाता से तुरन्त अध्याय 8 श्लोक 1 में प्रश्न किया कि ''तत् ब्रह्म'' क्या है? इसका उत्तर गीता ज्ञान दाता ने अध्याय 8 श्लोक 3 में दिया

है कि वह ''परम अक्षर ब्रह्म'' है।

श्रीमदभगवत् गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरूष अर्थात् प्रभु (ब्रह्म) बताऐ हैं।

गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरूषों (प्रभुओं) की जानकारी कही है। बताया है कि ''एक क्षर पुरूष अर्थात् नाशवान प्रभु है जो स्वयं गीता ज्ञान दाता ने अपने विषय में संकेत किया है। यह 21 ब्रह्मण्डों का प्रभु (पुरूष) है।

★ दूसरा ''अक्षर पुरूष'' अर्थात् कुछ स्थाई प्रभु (पुरूष) है जो सात शंख ब्रह्मण्डों का स्वामी अर्थात् प्रभु है। यह भी स्पष्ट किया है कि ये दोनों पुरूष (प्रभु) तथा जितने इनके लोकों में प्राणी हैं, सर्व नाशवान हैं परन्तु आत्मा किसी की नहीं मरती वह तो कुत्ते, गधे की भी नहीं मरती।

★ तीसरा :- गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में स्पष्ट किया है कि उत्तम पुरूष अर्थात् पुरूषोत्तम तो उपरोक्त दोनों से (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से भिन्न है। वही परमात्मा कहा जाता है।

वह तीनों लोकों (क्षर पुरूष का लोक = 21 ब्रह्मण्ड तथा अक्षर पुरूष का लोक = सात शंख ब्रह्मण्ड तथा स्वयं अपना लोक = जो असंख्य ब्रह्मण्डों का क्षेत्र है) में प्रवेश करके सब का धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी है। गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में जिस ''परम अक्षर ब्रह्म'' के विषय में कहा है उसी का संकेत गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में किया है। सन्त भाषा में इसे सत्य पुरूष कहा जाता है।

नोट :- श्रीमदभगवत् गीता के पाठकों से निवेदन है कि जब आप गीता अध्याय 15 श्लोक 18 को पढ़ते हैं तो आप को भ्रम होगा कि श्लोक 17 में तो कहा है कि उत्तम पुरूष अर्थात् पुरूषोत्तम तो गीता ज्ञान दाता से अन्य है। यहाँ गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता कह रहा है कि मैं पुरूषोत्तम हूँ।

इस गीता अध्याय 15 श्लोक 18 का भावार्थ यह है कि ''गीता ज्ञान दाता कह रहा है कि मेरे लोक में (21 ब्रह्मण्डों में) जितने प्राणी हैं, मैं उनसे उत्तम हूँ। इस कारण से मैं लोकवेद अर्थात् मेरे लोक में प्रचलित ज्ञान के आधार से पुरूषोत्तम प्रसिद्ध हूँ। वास्तव में पुरूषोत्तम तो गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में स्पष्ट हो चुका है।

इससे स्पष्ट हुआ कि काल रूपी ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष से अन्य कोई सर्व शान्तिदायक, पूर्ण मोक्षदायक ''परम अक्षर ब्रह्म'' है। उसका लोक अमर है जिसको सन्त मत में ''सत्य लोक'' कहा है।

सत्यलोक की प्राप्ति के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक 32 व 34 में कहा है कि :-

1. यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी तत्वज्ञान में विस्तार के साथ कही गई है। तत्वज्ञान स्वयं परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष अपने मुख कमल से उच्चारण करके बताता है उसको सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कहा जाता है। उस (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी में धार्मिक भक्ति कर्मों का ज्ञान

विस्तार से कहा गया है। वह सुक्ष्म वेद अर्थात् तत्वज्ञान है। उसको जानने के पश्चात् साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 20 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मंत्र 3, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 17 से 20 तक ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मंत्र 2 में भी है।

जिनका भावार्थ है कि ''परमात्मा ऊपर के लोक अर्थात् सत्यलोक में तख्त (सिहांसन) पर बैठा है। राजा के समान शोभावान है। वहाँ से चल कर सशरीर यहाँ आता है। अपने शरीर का तेज हल्का करके आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है, कवियों की तरह आचरण करता हुआ घूमता-फिरता है। लोकोक्तिओं, दोहों, शब्दावलियों के माध्यम से अपने विषय में ज्ञान बोलता है। जिस कारण से प्रसिद्ध कवियों में से भी एक उपाधी प्राप्त करता है। परन्तु वह तो स्वयं परम अक्षर ब्रह्म ही होता है। वह (कविर्गिर्भिः) कबीरवाणी द्वारा ज्ञान बोलता है। सन्त भाषा में उसे ''कबीर बाणी'' कहा जाता है।

''कबीर बाणी'' जिसको स्वयं कबीर परमेश्वर जी ने वेदोक्त प्रमाणों के आधार से सन् 1398 वि. सं. 1455 में सत्यलोक से सशरीर चल कर आकर काशी शहर के बाहर ''लहर तारा'' सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में प्रकट होकर जुलाहे के घर परवरिश की लीला करके बोला था। वह ''कबीर बाणी'' कही गई है। उसका संग्रह ''कबीर सागर'' नामक पवित्र पुस्तक कहलाती है। इसके साथ-साथ कबीर साखी, कबीर शब्दावली, कबीर बीजक आदि पवित्र पुस्तकें भी कबीर वाणी कही जाती है। ये सर्व पुस्तकें ''कबीर बाणी'' अर्थात् तत्व ज्ञान (सूक्ष्म वेद) कहलाता है।

श्रीमदभगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि ''हे अर्जुन! उस तत्व ज्ञान को (जो स्वयं परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख कमल से बोलता है) तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत प्रणाम करके सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्वज्ञान को जानने वाले सन्त तेरे को तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

इस गीता के कथन से स्पष्ट हुआ कि जो तत्वज्ञान है उसका उल्लेख ''गीता ग्रन्थ'' में नहीं है। गीता ज्ञान दाता भी उस तत्वज्ञान से अनभिज्ञ है।

वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का ज्ञानदाता भी काल रूपी ब्रह्म है तथा इन्हीं चारों वेदों का सारांश ''श्रीमदभगवत् गीता ग्रन्थ'' है। इसका ज्ञानदाता भी काल रूपी ब्रह्म है।

★ परम अक्षर ब्रह्म (परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी) वि. सं. 1455 (सन् 1398) में सशरीर काशी में बालक रूप में प्रकट होकर पाँच वर्ष की लीलामय आयु में ही वेदों, पुराणों वाला ज्ञान तथा इनसे भी ऊपर का ज्ञान-तत्वज्ञान अपने मुख कमल से बोलने लगे थे। जिसका लोहा विद्वान, पंडितों, काजी तथा मुल्लाओं को भी मानना पड़ा था। भले ही मानवश उन्होंने सत्य को अनदेखा किया था। उस

तत्वज्ञान को परमेश्वर कबीर जी के परम भक्त ''धनी धर्मदास जी'' ने समझा तथा उसको लिखा जो कबीर सागर, कबीर शब्दावली, दोहावली तथा कबीर बीजक के नामों से जाना जाता है। जिस में परमात्मा प्राप्ति तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित परम शान्ति तथा शाश्वत स्थान (सत्यलोक) प्राप्त होता है।

तत्वज्ञान (कबीर वाणी) में परमात्मा प्राप्ति का मार्ग (पंथ) स्वयं परमात्मा ने ही बताया है। उस समय (सन् 1398 से सन् 1518 तक 120 वर्ष तक) किसी ने भी परमात्मा के इस तत्व ज्ञान को महत्व नहीं दिया। यहाँ तक कि अपने आप को कबीर पंथी बताने वाले महन्तों को आज तक (सन् 2014 तक) भी इस तत्वज्ञान के गूढ़ रहस्यों का कतई ज्ञान नहीं है, अन्य की तो बात ही छोड़ो।

इसी प्रकार वेदों, गीता तथा पुराणों के गूढ़ रहस्यों से पूरा हिन्दू समाज तथा पूरा विश्व अपरिचित है। यह जानकारी गुरू ही बताता है।

कबीर परमेश्वर जी ने अपनी अमृतवाणी (कबीर वाणी) में कहा है :-

गुरू बिन काहू न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छड़े मूढ़ किसाना।
गुरू बिन बेद पढ़े जो प्राणी, समझे न सार रहे अज्ञानी।

परमेश्वर प्राप्ति अर्थात पूर्ण मोक्ष को प्राप्त करने का पंथ (मार्ग) स्वयं परमात्मा कबीर बन्दी छोड़ जी अपने तत्वज्ञान (कबीर बाणी) में लिखवा कर निज धाम सशरीर चले गये। उस समय धनी धर्मदास जी ने एक शंका व्यक्त की थी कि आप जी ने मुझे ''सार नाम'' प्रदान कर दिया। मूलज्ञान भी बता दिया। आप जी ने मुझे 42 पीढ़ी तक वंश चलने का भी आर्शीवाद दे दिया परन्तु आगे किसी को यह ''सार शब्द'' तथा मूल ज्ञान न बताने की प्रतिज्ञा भी दिला दी।

धर्मदास मेरी लाख दुहाई। सार शब्द कहीं बाहर न परही।।
सार शब्द बाहर जो पड़ही। बिचली पीढ़ी हंस नहीं तरही।।
सार शब्द तब तक छिपाई। जब तक द्वादश पंथ न मिट जाई।।
(प्रमाण = कबीर सागर .....)

धर्मदास मेरी लाख दुहाई। मूल ज्ञान कहीं बाहर न जाही।।
पवित्र ज्ञान तुम जग में भाखो। मूल ज्ञान गुप्त ही राखो।।
मूल ज्ञान बाहर जो पड़ही। बिचली पीढ़ी हंस नहीं तिरही।।
तेतीस अरब ज्ञान हम भाखो। मूल ज्ञान गुप्त ही राखा।।
मूल ज्ञान तब तक छिपाई। जब तक द्वादश पंथ न मिट जाई।।
(प्रमाण = कबीर सागर के अध्याय कबीर बानी पृष्ठ 137)

धनी धर्मदास जी ने प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मेरे वंशजों का उद्धार तथा अन्य मानव का उद्धार कैसे होगा?

परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया :-

हे धर्मदास! मैंने आप से बताया है कि ''काल से मेरा अनुबंध हुआ है कि तीन युगों

(सतयुग, त्रेतायुग तथा द्वापर युग) में कम जीव पार करूँगा। चौथा युग कलयुग है जो वर्तमान में चल रहा है। इसके तीन चरण हैं।

1. प्रथम चरण तो वर्तमान में चल रहा है। मैं स्वयं विद्यमान हूँ। जब मैं सत्यलोक जाऊँगा, उस समय मगहर स्थान पर एक लीला करूँगा। वह प्रथम चरण कलयुग का होगा। (प्रमाण = कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' पृष्ठ 137) ''प्रथम चरण कलयुग निरवाना। तब मगहर मांडो मैदाना''

मेरे सत्यलोक चले जाने के पश्चात् मेरे द्वारा चलाए ''कबीर पंथ'' में काल के दूत प्रवेश करके इस कबीर सागर में कुछ फेर बदल करेंगे तथा 12 नकली कबीर पंथ पनपेंगे। उन बारह पंथों में एक गरीबदास पंथ बारहवां पंथ होगा। उसका जन्म संवत् 1774 में होगा। उस बारहवें पंथ के संचालक (गरीबदास) द्वारा मेरी महिमा की बानी पुनः प्रकट होगी। परन्तु सर्व कबीर पंथी (नकली) मेरी वाणी (कबीर सागर तथा कबीर वाणी, कबीर शब्दावली व दोहावली तथा गरीबदास जी की वाणी) को ठीक से न समझकर अपने अनुसार उनका अनर्थ करके सत्य साधना तथा सत्यज्ञान से वंचित रह जाऐंगे। जिस कारण से सर्व कबीर पंथी जिनमें एक पंथ आप के वंश ''गद्दी परम्परा वाला भी होगा, असंख्य जन्म तक सत्यलोक नहीं जा सकते। फिर धर्मदास जी को चिन्तित देखकर परमात्मा कबीर जी ने कहा बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ) में हम स्वयं चलकर आऐंगे तब सब पंथों को ज्ञान से समाप्त करके एक पंथ ''यथार्थ कबीर पंथ'' को चलाऐंगे। उस मूल ज्ञान को बताऐंगे, सार शब्द का भी ज्ञान कराऐंगे।

प्रमाण :- कबीर सागर - अध्याय कबीर बाणी = पृष्ठ 136-137

उस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा। तब तक सर्व काल के पंथ चल चुके होंगे। वे अपना अनुभव तथा मोक्ष मार्ग के जाप मन्त्र भी अपने अनुयाईयों को बता चुके होंगे जो ''यथार्थ कबीर पंथ'' को चलाऐगा। वह मेरा अंश होगा या मैं स्वयं हूँगा। उस समय सर्व पंथ एक होकर मेरी सत्य भक्ति किया करेंगे। विश्व में आपसी भाईचारा बढ़ेगा। माया प्राप्ति की दौड़-धूप समाप्त होगी। सत्य नाम तथा मूल ज्ञान व सार शब्द सर्व भक्तों को प्रदान किया जाएगा। सर्व प्राणी मोक्ष प्राप्त करेंगे। यदि तेरे वंश वाले सत्य नाम व सार शब्द उस मेरे ''नाद'' परम्परा के सन्त से लेकर भक्ति करेंगे तो उनका भी उद्धार होगा।

प्रमाण :- कबीर सागर अध्याय स्वसमबेद बोध पृष्ठ 121 व 171

वह मेरा अंश वास्तव में ''गुरू'' कहलाने का अधिकारी होगा।

धनी धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि :-

प्रश्न :- हे परमेश्वर पूर्ण गुरू के लक्षण बताने की कृपा करें।

उत्तर :- परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया :-

★ ''गुरु के लक्षण (पहचान)''

परमेश्वर कबीर जी ने ''कबीर सागर'' के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' में पृष्ठ 1960(2024) पर गुरू के लक्षण बताऐ हैं।

चौपाई

गुरू के लक्षण चार बखाना। प्रथम वेद शास्त्र का ज्ञाना(ज्ञाता)।।
दूसरा हरि भक्ति मन कर्म बानी। तीसरा सम दृष्टि कर जानी।।
चौथा बेद विधि सब कर्मा। यह चारि गुरू गुन जानों मर्मा।।

भावार्थ :- जो गुरू अर्थात् परमात्मा कबीर जी का कृपा पात्र दास गुरू पद को प्राप्त होगा, उसमें चार गुण मुख्य होंगे।

''प्रथम बेद शास्त्र का ज्ञाना (ज्ञाता)''

1. वह सन्त वेदों तथा शास्त्रों का ज्ञाता होगा। वह सर्व धर्मों के शास्त्रों को ठीक-ठीक जानेगा।

''दूसर हरि भक्ति मन कर्म बानी''

2. वह केवल ज्ञान-ज्ञान ही नहीं सुनाऐगा, वह स्वयं भी परमात्मा की भक्ति मन कर्म वचन से करेगा।

''तीसरे समदृष्टि करि जानी''

3. सर्व अनुयाइयों के साथ समान ब्यौहार करेगा, वह समदृष्टि वाला होगा। आप देखते हैं कि आश्रम में सर्व श्रद्धालुओं को एक समान खाना-पीना, एक समान बैठने का स्थान। सन्त रामपाल दास जी के माता-पिता, बहन-भाई, बच्चे जब कभी आश्रम में आते हैं साधारण भक्त की तरह आश्रम में रहते हैं।

''चौथा बेद विधि सब कर्मा''

4. चौथा लक्षण गुरू का बताया है कि वह सन्त वेदों में वर्णित भक्ति विधि अनुसार साधना अर्थात् प्रार्थना (स्तुति) यज्ञ अनुष्ठान तथा मंत्र बताएगा।

★ प्रार्थना (स्तुति) दिन में तीन बार (प्रातः, दिन के मध्य में तथा शाम को) करने का वेद में प्रमाण :-

★ ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 1 मन्त्र 29 में कहा है कि तीन समय परमात्मा की स्तुति (प्रार्थना) करनी चाहिए। सुबह परमात्मा का गुणगान, दिन के मध्य में सर्व देवों की स्तुति करनी चाहिए तथा शाम को आरती (स्तुति) करनी चाहिए।

मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने दिवः।
मम प्रपित्वे अपि शर्वरे वसवा स्तोमासो अवृत्सत ॥२९॥

पदार्थः—(**वसो**) हे व्यापक प्रभो ! (**उदिते, सूरे**) सूर्योदय के समय (**मम** स्तोमासः) मेरी स्तुतियां (**दिवः**) दिन के (**मध्यन्दिने**) मध्य में (**मम**) मेरी स्तुतियां (**शर्वरे, प्रपित्वे, अपि**) रात्रि होने पर भी (**मम**) मेरी स्तुतियाँ (**त्वा**) आप (**अवृत्सत**) आवर्तित=पुनः-पुनः स्मरण करें ॥२९॥

★ यह फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 1 मंत्र 29 की है। जिसका हिन्दी

अनुवाद महर्षि दयानन्द तथा उस के भक्तों द्वारा किया गया है। भले ही कुछ गलत किया है फिर भी स्पष्ट है कि परमात्मा की प्रार्थना (स्तुति) दिन में तीन बार करने का प्रावधान वेद में स्पष्ट है।

विशेष :- आश्चर्य की बात तो यह है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने आप को वेदों का विद्वान बताते थे और परमात्मा की संध्या स्तुति अर्थात् प्रार्थना दो बार (सुबह और शाम) ही करते थे तथा अपने अनुयाईयों को करने की राय देते थे।

प्रमाण :- पुस्तक ''जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती''
प्रकाशक :- आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली-6 (स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में)
पृष्ठ = 294 पर।

★ वेद में प्रमाण है कि तीन समय परमात्मा की स्तुति (प्रार्थना) करनी चाहिए। आप जी ने फोटो कापी में पढ़ा भी है।

परम सन्त रामपाल दास जी महाराज प्रारम्भ से ही तीन समय की स्तुति (प्रार्थना) करता है तथा अनुयाईयों को करने की राय देता है।

पूर्ण संत की अन्य पहचान

उसकी पहचान होती है कि वर्तमान के धर्म गुरु उसके विरोध में खड़े होकर राजा व प्रजा को गुमराह करके उसके ऊपर अत्याचार करवाते हैं। कबीर साहेब जी अपनी वाणी में कहते हैं कि-

जो मम संत सत उपदेश दृढ़ावै (बतावै), वाके संग सभि राड़ बढ़ावै।
या सब संत महंतन की करणी, धर्मदास मैं तो से वर्णी।।

कबीर साहेब अपने प्रिय शिष्य धर्मदास को इस वाणी में ये समझा रहे हैं कि जो मेरा संत सत भक्ति मार्ग को बताएगा उसके साथ सभी संत व महंत झगड़ा करेंगे। ये उसकी पहचान होगी।

आदरणीय गरीब दास जी ने भी सन्त की पहचान बताई है कि वह संत सभी धर्म ग्रंथों का पूर्ण जानकार होता है। प्रमाण सतगुरु गरीबदास जी की वाणी में -

"सतगुरु के लक्षण कहूं, मधूरे बैन विनोद।
चार वेद षट शास्त्र, कहै अठारा बोध।।"

सन्त गरीबदास जी महाराज अपनी वाणी में पूर्ण संत की पहचान बता रहे हैं कि वह चारों वेदों, छः शास्त्रों, अठारह पुराणों आदि सभी ग्रंथों का पूर्ण जानकार होगा अर्थात् उनका सार निकाल कर बताएगा। यजुर्वेद अध्याय 19 मंत्र 25, 26 में लिखा है कि वेदों के अधूरे वाक्यों अर्थात् सांकेतिक शब्दों व एक चौथाई श्लोकों को पुरा करके विस्तार से बताएगा व तीन समय की पूजा बताएगा। सुबह पूर्ण परमात्मा की पूजा, दोपहर को विश्व के देवताओं का सत्कार व संध्या आरती अलग से बताएगा वह जगत का उपकारक संत होता है।

यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 25

सन्धिछेदः– अर्द्ध ऋचैः उक्थानाम् रूपम् पदैः आप्नोति निविदः।

प्रणवैः शस्त्राणाम् रूपम् पयसा सोमः आप्यते।(25)

अनुवादः– जो सन्त (अर्द्ध ऋचैः) वेदों के अर्द्ध वाक्यों अर्थात् सांकेतिक शब्दों को पूर्ण करके (निविदः) आपूर्त्ति करता है (पदैः) श्लोक के चौथे भागों को अर्थात् आंशिक वाक्यों को (उक्थानम्) स्तोत्रों के (रूपम्) रूप में (आप्नोति) प्राप्त करता है अर्थात् आंशिक विवरण को पूर्ण रूप से समझता और समझाता है (शस्त्राणाम्) जैसे शस्त्रों को चलाना जानने वाला उन्हें (रूपम्) पूर्ण रूप से प्रयोग करता है ऐसे पूर्ण सन्त (प्रणवैः) औंकारों अर्थात् ओम्–तत्–सत् मन्त्रों को पूर्ण रूप से समझ व समझा कर (पयसा) दूध–पानी छानता है अर्थात् पानी रहित दूध जैसा तत्व ज्ञान प्रदान करता है जिससे (सोमः) अमर पुरूष अर्थात् अविनाशी परमात्मा को (आप्यते) प्राप्त करता है। वह पूर्ण सन्त वेद को जानने वाला कहा जाता है।

भावार्थः- तत्वदर्शी सन्त वह होता है जो वेदों के सांकेतिक शब्दों को पूर्ण विस्तार से वर्णन करता है जिससे पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति होती है वह वेद के जानने वाला कहा जाता है। सन्त रामपाल दास महाराज जी ने श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 17 शलोक 23 के सांकेतिक शब्दों तत् तथा सत् का भेद बताया जिसको आज तक कोई आचार्य-शंकराचार्य तथा सन्त व ऋषि-महर्षि नहीं बता पाए।

यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 26

सन्धिछेद :–अश्विभ्याम् प्रातः सवनम् इन्द्रेण ऐन्द्रम् माध्यन्दिनम्
वैश्वदैवम् सरस्वत्या तृतीयम् आप्तम् सवनम् (26)

अनुवाद :– वह पूर्ण सन्त तीन समय की प्रार्थना की साधना बताता है। (अश्विभ्याम्) सूर्य के उदय–अस्त से बने एक दिन के आधार से (इन्द्रेण) प्रथम श्रेष्ठता से सर्व देवों के मालिक पूर्ण परमात्मा की (प्रातः सवनम्) पूजा तो प्रातः काल करने को कहता है जो (ऐन्द्रम्) पूर्ण परमात्मा के लिए होती है। दूसरी (माध्यन्दिनम्) दिन के मध्य में करने को कहता है जो (वैश्वदैवम्) सर्व देवताओं के सत्कार के सम्बधित (सरस्वत्या) अमृतवाणी द्वारा साधना करने को कहता है तथा (तृतीयम्) तीसरी (सवनम्) पूजा शाम को (आप्तम्) प्राप्त करता है अर्थात् जो तीनों समय की साधना भिन्न–२ करने को कहता है वह जगत् का उपकारक सन्त है।

भावार्थः- जिस पूर्ण सन्त के विषय में मन्त्र 25 में कहा है वह दिन में 3 तीन बार (प्रातः दिन के मध्य-तथा शाम को) साधना करने को कहता है। सुबह तो पूर्ण परमात्मा की पूजा मध्याह्न को सर्व देवताओं को सत्कार के लिए तथा शाम को संध्या आरती आदि को अमृत वाणी के द्वारा करने को कहता है वह सर्व संसार का उपकार करने वाला होता है।

☞ सन्त रामपाल जी महाराज प्रारम्भ से ही तीन समय की प्रार्थना अर्थात् परमात्मा की वंदना श्रद्धालुओं को बता रहे हैं। इसलिए सन्त रामपाल दास महाराज जी ही वे सन्त हैं जिनके विषय में सर्व धर्म ग्रन्थ जोर देकर कह रहे हैं।

यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 30

सन्धिछेदः– व्रतेन दीक्षाम् आप्नोति दीक्षया आप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धाम् आप्नोति श्रद्धया सत्यम् आप्यते (30)

अनुवादः– (व्रतेन) दुर्व्यसनों का व्रत रखने से अर्थात् भांग, शराब, मांस तथा तम्बाखु आदि के सेवन से संयम रखने वाला साधक (दीक्षाम्) पूर्ण सन्त से दीक्षा को (आप्नोति) प्राप्त होता है अर्थात् वह पूर्ण सन्त का शिष्य बनता है (दीक्षया) पूर्ण सन्त दीक्षित शिष्य से (दक्षिणाम्) दान को (आप्नोति) प्राप्त होता है अर्थात् सन्त उसी से दक्षिणा लेता है जो उस से नाम ले लेता है। इसी प्रकार विधिवत् (दक्षिणा) गुरूदेव द्वारा बताए अनुसार जो दान–दक्षिणा से धर्म करता है उस से (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त होता है (श्रद्धया) श्रद्धा से भक्ति करने से (सत्यम्) सदा रहने वाले सुख तथा परमात्मा अर्थात् अविनाशी परमात्मा को (आप्यते) प्राप्त होता है।

भावार्थ :- पूर्ण सन्त उसी व्यक्ति को शिष्य बनाता है जो सदाचारी रहे। अभक्ष्य पदार्थों का सेवन व नशीली वस्तुओं का सेवन न करने का आश्वासन देता है। पूर्ण सन्त उसी से दान ग्रहण करता है जो उसका शिष्य बन जाता है फिर गुरू देव से दीक्षा प्राप्त करके फिर दान दक्षिणा करता है उस से श्रद्धा बढ़ती है। श्रद्धा से सत्य भक्ति करने से अविनाशी परमात्मा की प्राप्ति होती है अर्थात् पूर्ण मोक्ष होता है। पूर्ण संत भिक्षा व चंदा मांगता नहीं फिरेगा।

कबीर, गुरू बिन माला फेरते गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल है पूछो वेद पुराण।।

★ ''परम सन्त की अन्य पहचान''

★ पूर्ण संत तीन बार में दीक्षा क्रम पूर्ण करता है।

वह सन्त तीन प्रकार के मंत्रों (नाम) को तीन बार में उपदेश करेगा जिसका वर्णन कबीर सागर ग्रंथ पृष्ठ नं. 265 बोध सागर में मिलता है व गीता जी के अध्याय नं. 17 श्लोक 23 व सामवेद संख्या नं. 822 में मिलता है।

कबीर सागर में अमर मूल बोध सागर पृष्ठ 265 -

तब कबीर अस कहेवे लीन्हा, ज्ञानभेद सकल कह दीन्हा।।
धर्मदास मैं कहो बिचारी, जिहिते निबहै सब संसारी।।
प्रथमहि शिष्य होय जो आई, ता कहैं पान देहु तुम भाई।।1।।
जब देखहु तुम दृढ़ता ज्ञाना, ता कहैं कहु शब्द प्रवाना।।2।।
शब्द मांहि जब निश्चय आवै, ता कहैं ज्ञान अगाध सुनावै।।3।।

दोबारा फिर समझाया है -

बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासों कहहू वचन प्रवाना।।1।।
जा को सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता को स्मरन देहु लखाई।।2।।
ज्ञान गम्य जा को पुनि होई। सार शब्द जा को कह सोई।।3।।
जा को होए दिव्य ज्ञान परवेशा, ताको कहे तत्व ज्ञान उपदेशा।।4।।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट है कि कड़िहार गुरु (पूर्ण संत) तीन स्थिति में दीक्षा क्रम को पूरा करता सार नाम तक प्रदान करता है। कबीर सागर में तो प्रमाण मैंने बाद में देखा था परंतु सन्त रामपाल दास महाराज जी तो शुरु से ही तीन बार

में नामदान की दीक्षा करते आ रहे हैं।

हमारे गुरुदेव रामपाल जी महाराज प्रथम बार में श्री गणेश जी, श्री ब्रह्मा सावित्री जी, श्री लक्ष्मी विष्णु जी, श्री शंकर पार्वती जी व माता शेरांवाली का नाम जाप देते हैं। जिनका वास हमारे मानव शरीर में बने चक्रों में होता है। मूलाधार चक्र में श्री गणेश जी का वास, स्वाद चक्र में ब्रह्मा सावित्री जी का वास, नाभि चक्र में लक्ष्मी विष्णु जी का वास, हृदय चक्र में शंकर पार्वती जी का वास, कंठ चक्र में शेरांवाली माता का वास है और इन सब देवी-देवताओं के आदि अनादि नाम मंत्र होते हैं जिनका वर्तमान में गुरुओं को ज्ञान नहीं है। इन मंत्रों के जाप से ये पांचों चक्र खुल जाते हैं। इन चक्रों के खुलने के बाद मानव में भक्ति करने से रूचि बनती है। सतगुरु गरीबदास जी अपनी वाणी में प्रमाण देते हैं कि :--

पांच नाम गुझ गायत्री आत्म तत्व जगाओ। ॐ किलियं हरियम् श्रीयम् सोहं ध्याओ।।

भावार्थ : पांच नाम जो वास्तविक गायत्री है। इनका जाप करके आत्मा को जागृत करो। दूसरी बार में दो अक्षर का जाप देते हैं जिनमें एक ओम् और दूसरा तत् (जो कि गुप्त है उपदेशी को बताया जाता है) जिनको स्वांस के साथ जाप किया जाता है।

तीसरी बार में सारनाम देते हैं जो कि पूर्ण रूप से गुप्त है।

श्रीमद्भगवत गीता में तीन नाम जाप देने का प्रमाण :--

अध्याय 17 का श्लोक 23

ॐ, तत्, सत्, इति, निर्देशः, ब्रह्मणः, त्रिविधः, स्मृतः,
ब्राह्मणाः, तेन, वेदाः, च, यज्ञाः, च, विहिताः, पुरा।।23।।

अनुवाद : (ॐ) ब्रह्म का (तत्) यह सांकेतिक मंत्र परब्रह्म का (सत्) पूर्णब्रह्म का (इति) ऐसे यह (त्रिविधः) तीन प्रकार के (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा के नाम सुमरण का (निर्देशः) संकेत (स्मृतः) कहा है (च) और (पुरा) सृष्टीके आदिकालमें (ब्राह्मणाः) विद्वानों ने बताया कि (तेन) उसी पूर्ण परमात्मा ने (वेदाः) वेद (च) तथा (यज्ञाः) यज्ञादि (विहिताः) रचे।

★ वेदों व श्री मदभगवत् गीता में भक्ति मन्त्रों का उल्लेख :-

संख्या न. 822 सामवेद उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

मनीषिभिः—पवते—पूर्व्यः—कविर्—नृभिः—यतः—परि—कोशान्—असिष्यदत्—त्रि—तस्य—नाम—जनयन्—मधु—क्षरनः—न—इन्द्रस्य—वायुम्—सख्याय—वर्धयन्।

शब्दार्थ—(पूर्व्यः) सनातन अर्थात् अविनाशी (कविर नृभिः) कबीर परमेश्वर मानव रूप धारण करके अर्थात् गुरु रूप में प्रकट होकर (मनीषिभिः) हृदय से चाहने वाले श्रद्धा से भक्ति करने वाले ज्ञानी भक्तात्मा को (त्रि) तीन (नाम) मन्त्र अर्थात् नाम का उपदेश देकर (पवते) पवित्र करके (जनयन्) जन्म व (क्षरनः) मृत्यु से (न) रहित करता है तथा (तस्य)

उसके (वायुम्) प्राण अर्थात् जीवन–स्वांसों को जो संस्कारवश गिनती के डाले हुए होते हैं को (कोशान्) अपने भण्डार से (सख्याय) मित्रता के आधार से (परि) पूर्ण रूप से (वर्धयन्) बढ़ाता है। (यतः) जिस कारण से (इन्द्रस्य) परमेश्वर के (मधु) वास्तविक आनन्द को (असिष्यदत्) अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

भावार्थ :- इस मन्त्र में स्पष्ट किया है कि पूर्ण परमात्मा कविर अर्थात् कबीर मानव शरीर में गुरु रूप में प्रकट होकर प्रभु प्रेमीयों को तीन नाम का जाप देकर सत्य भक्ति कराता है तथा उस मित्र भक्त को पवित्रकरके अपने आर्शिवाद से पूर्ण परमात्मा प्राप्ति करके पूर्ण सुख प्राप्त कराता है। साधक की आयु बढाता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि ओम्-तत्-सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविद्य स्मृतः भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का ॐ (1) तत् (2) सत् (3) यह मन्त्र जाप स्मरण करने का निर्देश है। इस नाम को तत्वदर्शी संत से प्राप्त करो। तत्वदर्शी संत के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है तथा गीता अध्याय नं. 15 श्लोक नं. 1 व 4 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई तथा कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान जानकर उसके पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए। जहां जाने के पश्चात् साधक लौट कर संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मुक्त हो जाते हैं। उसी पूर्ण परमात्मा से संसार की रचना हुई है।

विशेष :- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि पवित्र चारों वेद भी साक्षी हैं कि पूर्ण परमात्मा ही पूजा के योग्य है, उसका वास्तविक नाम कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है तथा तीन मंत्र के नाम का जाप करने से ही पूर्ण मोक्ष होता है।

सामवेद मन्त्र सं. 822 में स्पष्ट है कि परमात्मा प्राप्ति का मन्त्र तीन नाम का है तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 53 मन्त्र 4-5 में कहा है कि जो व्यक्ति प्रथम मन्त्र के रूप में पाँच नाम वाला मन्त्र जाप करते हैं। वे सर्व सुख को प्राप्त होते हैं। ये मन्त्र देवताओं के कुप्रभाव को समाप्त करते हैं। जिस से देवता केवल सुख ही देते हैं। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 53 मन्त्र 4

तद्द्य वाचः प्रथमं मसीय येनासुराँ अभि देवा असाम ।
ऊर्जाद उत यज्ञियासः पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम् ॥४॥

पदार्थः—(**वाचः**) वाणी के (**प्रथमम्**) मुख्य भाग (**तत्**) उस वचन को (**अद्य**) संप्रति (**मंसीय**) उच्चारण करते हैं (**येन**) जिससे (**देवाः**) हम विद्वज्जन (**असुरान्**) असुरों को (**अभि असाम**) दबा देवें । हे (**ऊर्जादः**) अन्नाद (**उत**) और (**यज्ञियासः**) यज्ञ करने वालो (**पंचजनाः**) चार वर्ण और पांचवां अवर्ण मनुष्यो (**मम**) मुझ भगवान् के बताये (**होत्रम्**) होत्र को(**जुषध्वम्**) प्रीति से किया करो ।

तदद्य वाचः प्रथमं मसीय येनासुराँ अभि देवा असाम ।
ऊर्जाद उत यज्ञियासः पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम् ॥४॥

पदार्थः—(**अद्य**) इस अवसर पर (**वाचः**) वेदवाणी के प्रमुख रूप (**तत् प्रथमम्**) सर्वश्रेष्ठ नाम को (**मसीय**) मनन से प्राप्त करूं । (**येन**) जिससे (**देवाः**) हम विद्वान् जन (**असुरान् अभि असाम**) केवल प्राणपोषी विघ्नकारी पुरुषों को पराजित करें अतः (**ऊर्जादः**) बलयुक्त अन्न खाने वाले और (**यज्ञियासः**) सूक्ष्म आहार करने वाले (**पञ्च जनाः**) पांचों जन (**मम होत्रम्**) मेरे आह्वान वा उपदेश को (**जुषध्वम्**) सेवन करो ॥४॥

यह ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 53 मंत्र 4 की फोटो कापी है जिनका अनुवाद महर्षि दयानन्द तथा उसके चेले-आचार्यों ने किया है। एक ही मन्त्र का अनुवाद दो शास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न किया है। इनको वेद ज्ञान नहीं था। इसलिए अर्थों का अनर्थ किया है। यह फोटो कापियां इसलिए लगाई हैं कि अधिकतर भारत के भक्त या सामान्य समाज यह मानता है कि वर्तमान में वेदों का ज्ञान महर्षि दयानन्द जी को था या उसके चेलों (आचार्यों) को है। इसलिए आप के समक्ष रखकर वास्तविक अर्थ करके प्रमाणित किया जाएगा कि वेद वास्तव में क्या बताते हैं?

यथार्थ अनुवाद :- इस उपरोक्त ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 53 के मन्त्र 4 में वेद ज्ञान दाता ने कहा है कि (तत्) उस पूर्ण परमात्मा की (अद्य) वर्तमान में अर्थात् कलयुग के 5505 वर्ष बीतने से पूर्व सतयुग में जब यह वेद ज्ञान प्राप्त हुआ था (प्रथम वाचः) सर्व श्रेष्ठ प्रथम वचन अर्थात् प्रथम मन्त्र का (मसीय) जाप दिया जाता है। (येन) जिससे (असुरान्) राक्षस-दैत्य-प्रेत आदि को (देवा) जिन देवताओं का यह मन्त्र है वे (अभि असाम) पूर्ण रूप से दबा देते अर्थात् यह मन्त्र संकट निवार्ण करता है। हे (यज्ञियासः) यज्ञ करने वालो अर्थात् साधको इस मन्त्र से (ऊर्जादः) भक्ति की शक्ति प्राप्त होती है। यह (पंच जनाः) पांच नाम का है तथा पाँचों जनों (1.गणेश, 2.सावित्री-ब्रह्मा, 3.लक्ष्मी-विष्णु, 4.शिव-पार्वती 5.दुर्गा) का है। इसलिए (मम होत्रम्) मेरे इस उपदेश को (जुषध्वम्) वह लाभ प्रीति से पालन करके जाप किया करो।(4)

आगे अर्थात् कलयुग के 5505 वर्ष बीत जाने पर 7 नाम का मन्त्र दिया जाएगा। यह प्रमाण आप आगे पढ़ेंगे ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 55 मन्त्र 3 में।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 53 मन्त्र 5

पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥५॥

पदार्थः—(**गोजाताः**) शरीर में उत्पन्न हुए (**उत**) और (**ये**) जो (**यज्ञियासः**) यज्ञ की इच्छा करने वाले हैं ऐसे (**पंचजनाः**) चारवर्ण और पांचवां अवर्ण मनुष्य (**मम**) मेरे द्वारा उपदिष्ट (**होत्रम्**) यज्ञ को (**जुषन्ताम्**) श्रद्धापूर्वक करें (**पृथिवी**) हमारी वाणी (**नः**) हमें (**पार्थिवात्**) वाचिक (**अंहसः**) पाप से (**पातु**) बचावें और (**अन्तरिक्षम्**) मन (**दिव्यात्**) मानसिक पाप से (**अस्मान्**) हमें (**पातु**) बचावें ।

पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥५॥१३॥

पदार्थः—(**गो-जाताः**) धरती पर उत्पन्न तथा वेदवाणी में पारंगत, (**उत ये**) और जो (**यज्ञियासः**) यज्ञ-योग्य हैं, वे (**पंच जनाः**) पांचों जन (**मम होत्रं**) मेरे यज्ञ, आह्वान एवं वचनों को प्रेमपूर्वक स्वीकारें । (**पृथिवी**) पृथिवी माता (**नः**) हमें (**पार्थिवात् अंहसः**) पृथिवी के पापों वा दोषों से (**पातु**) बचावे और (**अन्तरिक्षम्**) गुरु, पिता आदि (**अस्मान्**) हमें (**अंहसः**) आकाशी कष्टों से (**पातु**) बचावें ॥५॥१३॥

यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 53 मन्त्र 5 की है। इसका अनुवाद भी दो आर्यसमाजियों ने अपनी बुद्धि द्वारा भिन्न-भिन्न किया है जो ठीक नहीं है। वास्तविक अर्थ इस प्रकार है।

यथार्थ अनुवाद :- (मम होत्रं जुषन्तां) वेद ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि जो मेरे इस उपदेश का पालन करते हुए पूजा साधना करता है, उसके (पंच जनाः) ये पांच नाम पांच प्रधानों के हैं (गो जाताः) पृथ्वी पर उत्पन्न मनुष्यों के लिए वास्तविक वचन ''मन्त्र'' है। (उत ये) और जो (यज्ञिजासः) साधकों को करने योग्य है। जिन के जाप करने से (पृथिवीः) धरती पर ही (नः) नहीं अपितु हमारे (पार्थिवात्) कर्त्तव्य कर्म करते समय मन कर्म वाणी से होने वाले जितने (अंहसः) पाप हैं उनसे (पातु) बचावे अर्थात् इस पांच नाम के मन्त्र को अधिकारी गुरू से प्राप्त करने के पश्चात् कर्त्तव्य कर्मों में होने वाले पाप भी साधक को नहीं लगते। जैसे खेती करते समय जीव-जन्तु मरते हैं तथा मजदूरी करते समय या खाना बनाने में तथा पौंचा लगाने में जो कर्त्तव्य कर्म हैं। इनके करने में होने वाले पाप भी साधक को नहीं लगते। यहाँ तक कि (अस्मान्) हम साधकों को (अन्तरिक्षम्) आकाश के देवों के प्रकोप से (दिव्यात्) दिव्य मन्त्र (पातु) रक्षा करें अर्थात् किसी प्रकार का देवी-देवताओं का संकट साधक को प्रभावित नहीं करता।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 55 मन्त्र 1

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैर्यत्त्वा भीते अह्वयेतां वयोधै ।
उदस्तभ्नाः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान्मघवन्तित्विषाणः ॥१॥

पदार्थः—(**इन्द्र**) हे परमेश्वर ! (**ते**) आप का (**तत्**) वह (**नाम**) तेज (**पराचैः**) पराङ्मुख लोगों से (**दूरे**) बहुत अधिक (**गुह्यम्**) नहीं जाना जाता है अर्थात् गूढ वा रहस्यमय है, (**यत्**) जिससे (**भीते**) डरे हुए के समान द्यु और पृथिवी लोक (**वयोधैः**) बल धारण करने के लिए (**त्वा**) तुझे (**अह्वयेताम्**) पुकारते हैं । तू (**भ्रातुः**) सूर्य अथवा पर्जन्य के (**पुत्रान्**) किरणों अथवा जलों को (**तित्विषाणः**) दीप्त करता हुआ (**पृथिवीम्**) पृथिवी और (**द्याम्**) द्युलोक को (**अभीके**) उनके समीप होकर (**उत् अस्तभ्नाः**) थामे रहता है ।

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैर्यत्त्वा भीते अह्वयेतां वयोधैः ।
उदस्तभ्नाः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान्मघवन्तित्विषाणः ॥१॥

पदार्थः—(**यत्**) जो (**त्वा**) तुझे (**भीते**) भय से डरते हुए आकाश और पृथिवी (**वयः धै**) बल धारण कराने या देने हेतु (**अह्वयेताम्**) आह्वान करते हैं और तू (**पृथिवीं द्याम्**) पृथिवी व आकाश दोनों को (**अभीके**) उनके निकट होकर (**उत् अस्तभ्नाः**) थामता है और (**भ्रातुः**) भरण पोषण कर्ता सूर्य एवं मेघ की (**पुत्रान्**) पालन करने में समर्थ किरणों एवं जल-धाराओं को (**तित्विषाणः**) तेज से प्रकाशित करता है, तेरा (**तत् नाम**) वह स्वरूप (**पराचैः**) पराङ्मुख जनों से (**गुह्यं**) गुह्य एवं दूर रहता है ॥१॥

यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 55 मन्त्र 1 की है। इसका अनुवाद भी दो आर्यसमाजियों ने अपनी-२ समझ से कर रखा है जो कुछ-कुछ ठीक है।

यथार्थ अनुवाद :- हे परमेश्वर! (ते) आप का (तत्) वह (गुह्यम्) गुप्त (नाम) नाम अर्थात् सार नाम (पराचैः) परांमुख अर्थात् शास्त्र ज्ञान से अपरिचित व्यक्तियों से (दूरे) बहुत दूर है। (यत्) जिसके (त्वा) आप को (वयः धै) भक्ति शक्ति प्राप्त करने के लिए तथा (भीते) संकट में भयभीत साधक (अह्वयेताम्) साधना करके याद करते हैं, पुकारते हैं अर्थात् जिस गुप्त नाम से सर्व संकट निवार्ण होते हैं। वह सारनाम बहुत रहस्यमय है। आप के उस गुप्त नाम अर्थात् सार नाम की वचन शक्ति (पृथिवीः) पृथ्वी तथा (द्याम्) तेजोमय लोक अर्थात् ऊपर के सत्यलोक आदि को (उत् अभीके) पूर्ण रूप से (अस्तभ्ताः) थामे रहती है। आप के इस सार नाम को अधिकारी गुरू से प्राप्त करके जो (भ्रातुः) भाई (पुत्रान्) सन्तान जाप साधना करते हैं। उनको (तित्विषाणः) भक्ति तेज से युक्त करता हुआ (मघवन्) वास्तविक सुख प्रदान करता है। परम शान्ति को प्रदान करता है अर्थात् पूर्ण मोक्ष करता है।

विशेष :- आप जी देखें ऊपर दो आर्यसमाजियों द्वारा किए गए अनुवाद की इसी मन्त्र की फोटोकापियाँ इनके अनुवाद में ''मधवन्'' शब्द का अर्थ ही नहीं किया है। अन्तिम पंक्ति के अन्तिम वाक्य का संधिविच्छेद इस प्रकार है = पुत्रान् मधवन् तित्विषाणः ऊपर किए अनुवाद में ''इन्द्र'' शब्द जोड़ा है जो मूल पाठ में नहीं है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 55 मन्त्र 2

महत्तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग्येन भूतं जनयो येन भव्यम् ।
प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च ॥२॥

पदार्थः—हे इन्द्र=परमेश्वर ! (**तव**) आप का (**तत्**) वह (**पुरुस्पृक्**) बहुतों से स्पृहणीय (**गुह्यम्**) गूढ (**नाम**) तेज (**महत्**) महान् है (**येन**) जिससे (**भूतम्**) उत्पन्न भूत=भूतजात को (**जनयः**) उत्पन्न करते हो, (**येन**) जिससे (**भव्यम्**) होने वाले को (**जनयः**) उत्पन्न करते हो, (**यत्**) जो कि (**अस्य**) इस जगत् का (**प्रत्नम्**) पुरातन (**ज्योतिः**) प्रकाश (**जातम्**) प्रसिद्ध है तथा (**प्रियम्**) प्रिय है उसको (**प्रियाः**) प्यारे (**पंच**) पांच भूत (**समविशन्त**) आश्रय करते हैं ।

महत्तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग्येन भूतं जनयो येन भव्यम् ।
प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च ॥२॥

पदार्थः—(**महत् तत् गुह्यं नाम**) परमात्मा वह महान् गुप्ततम रूप है (**पुरुस्पृक्**) जिसकी अनेक जीव स्पृहा करते हैं (**येन**) जिससे (**भूतम्**) वर्तमान जगत् को तू (**जनयः**) उत्पन्न करता है और (**येन भव्यम् जनयः**) जिससे तू भविष्यत् को भी उपजाता है और (**यत्**) जो कि (**अस्य**) इसका (**प्रत्नं**) नितान्त पुरातन (**ज्योतिः**) प्रकाशमय रूप (**अस्य प्रियं जातम्**) इस उत्पन्न जीववर्ग को प्रिय है, इस प्रिय ज्योति को प्राप्त होकर (**पंच सम् अविशन्त**) पांचों महाभूत सम्यक् स्थान पाते हैं ॥२॥

यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 55 मन्त्र 2 की है। यह दो आर्यसमाजियों द्वारा अपनी-२ बुद्धि अनुसार अनुवाद किया है। परन्तु कोई सिर-पैर नहीं है।

यथार्थ अनुवाद :- (तत् महत्) उस बड़े परमात्मा का (गुह्यम् नाम) गुप्त नाम ''मन्त्र'' है (येन) जिस वचन की शक्ति से (पुरुस्पृक्) बहु संख्या (भूतम्) प्राणियों को (जनयः भव्यम्) भविष्य में उत्पन्न करता है। (प्रत्नम्) यह सनातन मन्त्र है (यत्) जिस से (जातम्) परमेश्वर स्वयं प्रकट होकर (अस्य ज्योतिः) इस मन्त्र का प्रकाश करता है। इसी मन्त्र को प्राप्त करके (पंच) वे पांच प्रधान (प्रियम् प्रियाः) पति-पत्नी सहित इस सर्व श्रेष्ठ मन्त्र = सारनाम की भक्ति करके (समविशन्त)

उसी समयक् स्थान अर्थात् सत्यलोक स्थान में परमेश्वर के पास स्थान पाते हैं।

भावार्थ यह है कि ब्रह्मा-विष्णु-शिव सहित सर्व जीवों का कल्याण सार नाम की साधना करने से ही हो सकता है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 55 मन्त्र 3

आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ ऋतुशः सप्तसप्त।
चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चष्टे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन ॥३॥

पदार्थः—यह इन्द्र=परमेश्वर (**रोदसी**) द्यु और पृथिवी को (**आ अपृणात्**) अपनी व्याप्ति से पूर्ण कर रहा है, (**उत**) तथा (**मध्यम्**) अन्तरिक्ष को (**आ**) पूर्ण कर रहा है (**पञ्च**) पांच (**देवान्**) पृथिवी, अप्, तेज, वायु और आकाश को पूर्ण कर रहा है, (**सप्तसप्त**) ४९ मरुतों को पूर्ण कर रहा हैं, अथवा सात प्रकृति विकृतियों, सात किरणों, सात लोकों तथा मन और बुद्धि सहित सात इन्द्रियों को पूर्ण कर रहा है। (**ऋतुशः**) प्रत्येक काल में (**चतुस्त्रिंशता**) ३४ तत्त्वों के द्वारा [आठ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, प्रजापति, इन्द्र और वाक्] (**सरूपेण**) समान रूप (**ज्योतिषा**) ज्योति और (**विव्रतेन**) विविध क्रियाओं से (**पुरुधा**) नाना प्रकार के (**विचष्टे**) जगत् को दिखाता है।

आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ ऋतुशः सप्तसप्त।
चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चष्टे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन ॥३॥

पदार्थः—वह (**रोदसी**) भूमि एवं आकाश को पूर्णता प्रदान कर रहा है। (**उत मध्यम् अपृणात्**) और वह दोनों के बीच के भाग या अन्तरिक्ष को भी भली-भांति भर रहा है। वह (**ऋतुशः**) ऋतुओं के अनुसार (**पञ्च सप्त सप्त देवान्**) पांच ज्ञानेन्द्रिय देवों व सर्पणशील सात प्राण स्थानों के शरीर में मस्तक आदि प्राणों के केन्द्रों को भली-भांति पूर्ण करता है। वह (**वि-व्रतेन**) विविध कर्म के जनक (**चतुस्त्रिंशता**) ३४ प्रकार के गण सहित (**स-रूपेण ज्योतिषा**) एक समान तेज से भी (**पुरु-धा विचष्टे**) नाना प्रकार का दीखता है ॥३॥

यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 55 मन्त्र 3 की है जो दो आर्यसमाजियों ने अपनी-२ बुद्धि अनुसार अनुवाद किया है। दोनों के अनुवाद में अंतर है।

यथार्थ अनुवाद :- इस मन्त्र में प्रथम मन्त्र की महिमा के साथ-साथ सात नामों (मन्त्रों) का भी वर्णन है। कहा है कि (आ रोदसी) प्रथम मन्त्र पृथिवी तथा अन्तरिक्ष दोनों स्थानों पर लाभ देता है। यह (अपृणात्) सर्व प्रकार से पूर्ण लाभ देता है। परन्तु इस समय जब कलयुग में सत्य भक्ति प्रदान की जाएगी उस समय (सप्त-सप्त) सत मन्त्र केवल सात कम या ज्यादा नहीं, इन सात नामों वाला मन्त्र दिया जाएगा। उस के (मध्यम्) मध्य में (पंच देवान्) पाँच देवताओं के नाम हैं।

1.गणेश, 2.सावित्री-ब्रह्मा, 3.लक्ष्मी-विष्णु, 4.शिव-पार्वती 5.दुर्गा देवी इन पाँच प्रधानों के जाप मन्त्रों का संकेत है। जो (ऋतुशः) प्रत्येक काल में समय अनुसार कभी केवल पाँच नाम कभी सात नाम जाप दिये जाते हैं (विव्रतेन) इस मन्त्र का भली-भांति संयम से बर्ताव अर्थात् जाप किया जाए तो (स-रूपेण) सही रूप में इस का (ज्योतिषा) प्रकाश अर्थात् प्रभाव (चतुर-त्रिशता) मन-कर्म, वचन तथा स्वभाव + 5 विकार = काम, क्रोध, मोह, लोभ तथा अहंकार + 25 प्रकृति इस प्रकार 34 प्रकार के प्रभाव जो जीव को प्रताड़ित करते हैं, उनको नियंतीत करता है। वह (परूधा विचष्टे) भिन्न-भिन्न प्रकार से जगत को भगत में दिखाई देता है।

भावार्थ :- समय अनुसार पाँच तथा सात नाम का मन्त्र पूर्ण संत देता है। पाँच तो देवताओं का नाम मन्त्र होता है। इस के पहले तथा बाद में दो मन्त्र और जोड़ कर यह सम्पूर्ण मन्त्र बनता है। मध्य में देवताओं के पाँच मन्त्र होते हैं। यह सर्व विकारों को कम करता है। फिर साधक भक्ति कर सकता है। उस भक्त में आया परिवर्तन अलग ही दिखाई देता है जिसको सर्व जगत भी देखता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 33 मन्त्र 4

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमंति धेनवः।
हरिरेति कनिक्रदत् ॥४॥

पदार्थः— (**धेनवः, गावः**) इन्द्रियवृत्तियाँ (**तिस्रः, वाचः उदीरते, मिमन्ति**) तीनों वाणियों को उच्चारण करती हुई परमात्मा का साक्षात्कार कराती हैं (**हरिः**) और वह परमात्मा (**कनिक्रदत्, एति**) गर्जता हुआ उनके ज्ञान का विषय होता है ॥४॥

यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 33 मन्त्र 4 की है जो आर्यसमाजियों द्वारा अनुवादित है। यह अनुवाद गलत है।

यथार्थ अनुवाद :- जो पाँच व सात नामों ''मन्त्रों'' के जाप का लाभ तो पूर्व बता दिया है। अब तीन मन्त्र के जाप का महत्व बताया है। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में लिखा है कि ॐ तत् सत् यह मन्त्र सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का है। इसका स्मरण तीन प्रकार से होता है। इस में ओम् ''ॐ'' तो स्पष्ट है परन्तु ''तत्'' व ''सत्'' ये सांकेतिक हैं। यही प्रमाण ''कुरान शरीफ'' की सूरत ''शूरा'' 42 की आयत नं. 1 में संकेत है लिखा है :- अैन् सीन् काफ यह तीन अक्षर के मन्त्रों की ओर संकेत है = अैन् = ओम्, सीन् = तत्, काफ = सत्, इसमें अधिक रहस्य रखा है। अैन यह पहला अक्षर है ''ओम्'' का, इसी प्रकार ''सीन्'' यह पहला अक्षर है ''तत्'' का अर्थात् ''सोहं'' का इसी प्रकार ''काफ'' यानि ''क'' यह पहला अक्षर है ''सत्'' का अर्थात् ''सार नाम''।

उसी का उल्लेख इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 33 मन्त्र 4 में है। (तिस्रः) तीन (वाचः) वचन अर्थात् नाम ''मन्त्रों'' का (उदीरते) उच्चारण-स्मरण करती हुई

(गावो) प्रथम मन्त्र जो सात नामों का है, उस से नियंतित इन्द्रियों से (धेनवः) गाय रूपी शुद्ध आत्मा (मिमंति) परमात्मा का साक्षात्कार करती है। जिस कारण से (हरि) सर्व कष्ट हरण करने वाला परमात्मा (कनिक्रदत्) उस तीन नाम मन्त्र का अर्थात् सार शब्द के प्रभाव से विशेष धुन प्रकट करता हुआ (एति) प्राप्त होता है।

भावार्थ :- तीन नाम के जाप से आत्मा को परमात्मा की वास्तविक धुन सुनने लगती है। फिर परमात्मा की प्राप्ति होती है। आत्मा गाय रूप में काल रूपी कसाई के लोक से निकल कर सुरक्षित हो जाती है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 75 मन्त्र 2

ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥२॥

पदार्थः—(दिवः) द्युलोक के (रोचने) प्रकाश के लिये (तृतीयं) तीसरा (नाम) नाम (अधिदधाति) धारण करता है तथा (पुत्रः पित्रोः) सन्तान और सन्तानी भाव का (अपीच्यं) अधिकरण है। और (ऋतस्य जिह्वा)सचाई की जिह्वा है। तथा (पवते) सबको पवित्र करता है। (मधु) मधुर (प्रियं) प्रिय वचनों का (वक्ता) कथन करने वाला है। और (अदाभ्यः) अदम्भनीय वह परमात्मा (अस्या धियः) इन कर्मों का अधिपति है ॥२॥

ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥२॥

पदार्थः—(दिवः) द्युलोक के (रोचने) प्रकाश के लिये (तृतीयं) तीसरा (नाम) नाम (अधिदधाति) धारण करता है तथा (पुत्रः पित्रोः) सन्तानभाव और सन्तानीभाव का (अपीच्यं) अधिकरण है और (ऋतस्य जिह्वा) सचाई की जिह्वा है। तथा (पवते) सबको पवित्र करता है। (मधु) मधुर (प्रियं) प्रिय वचनों का (वक्ता) कथन करने वाला है और (अदाभ्यः) अदम्भनीय वह परमात्मा (अस्या धियः) इन कर्मों का अधिपति है ॥२॥

यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 75 मन्त्र 2 की है जो आर्यसमाजियों द्वारा अनुवादित है। इसका कोई सिर-पैर नहीं है।

यथार्थ अनुवाद :- (पति) कुल का मालिक सब का स्वामी पूर्ण परमात्मा (प्रियम् वक्ता) सर्व को प्रिय लगने वाले वक्ता के रूप में प्रकट होकर (धियः) यथार्थ बुद्धि अर्थात् ज्ञान करता है। (अस्या) यह उस परमात्मा की महानता है कि वह (अदाभ्यः) कोई पाखण्ड ''दम्भ'' नहीं करता (ऋतस्य) सच्चाई का अर्थात् सत्य का वर्णन (मधु) मधुर (जिह्वा) जीह्वा अर्थात् वाणी से बोल कर (पवते) पवित्र ज्ञान प्रचार करता है। वह स्वयं ही उस (तृतीयं नाम) तीसरे नाम अर्थात् सार नाम को प्रकट करता है। (पुत्रः पित्रोः) अपने अनुयाईयों जो वचन के पुत्रों ''नाद पुत्रों'' को पिता

रूप से अर्थात् गुरू रूप से (दधाति) प्रदान करता है। (अपीच्यं) जिस के प्रभाव से अधिकार से (अधि रोचने दिवः) वह अध्यात्मिक प्रकाशमान दिव्य सतलोक स्थान व पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति होती है।

भावार्थ :- इस मन्त्र में स्पष्ट है कि तीसरा नाम अर्थात् सारनाम परमेश्वर स्वयं अपने मुख कमल से अपनी जुबान से बोल कर अपने विशेष दृढ़ भक्तों को सुनाता है। जिस से पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है। यही प्रमाण श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में है कि सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (ब्रह्मणः मुखे) अपने मुख कमल से धार्मिक अनुष्ठानों अर्थात् साधनाओं का ज्ञान करता है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 55 मन्त्र 1 से 3 में कहा है कि सात नाम का मन्त्र भी परमात्मा प्राप्ति के लिए करना होता है।

यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 तथा 17 में कहा है कि ॐ(ओम्) नाम का जाप ब्रह्म का है। उसको स्मरण करना चाहिए। यह भी कहा है कि पूर्ण परमात्मा तो ब्रह्म से अन्य है, वह तो परोक्ष अर्थात् गुप्त है। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में कहा है कि परमात्मा के विषय में कोई तो कहता है कि वह (असम्भवात्) कभी जन्म नहीं लेता अर्थात् निराकार है। कोई कहता है कि वह (सम्भवात्) जन्म लेकर अवतार धारण करता है जैसे श्री रामचन्द्र तथा श्री कृष्ण के रूप में परन्तु परमात्मा की सही जानकारी (धीराणाम्) तत्वदर्शी सन्त जानते हैं, उनसे सुनो।

श्रीमद्भगवत गीता चारों वेदों का सारांश माना जाता है। गीता का ज्ञान ब्रह्म ने श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके बोला है जिसने गीता अध्याय 8 मन्त्र 13 में स्पष्ट किया है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में अपनी साधना का केवल एक ॐ(ओम्) अक्षर कहा है जिसका स्मरण मरते दम (अन्तिम श्वांस) तक करने की राय दी है। जिससे ओम् (ॐ) की साधना से होने वाली गति (मोक्ष) प्राप्ति बताया जिससे ''ब्रह्म लोक'' प्राप्त होता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट किया है कि ब्रह्मलोक तक में गए साधक फिर से लौट कर संसार में जन्म-मरण के चक्र में गिरते हैं। गीता ज्ञान दाता भी जन्म-मरण के चक्र में है। प्रमाण गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 4 तथा 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में है। इसलिए गीता ज्ञाना दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी गति (ब्रह्मलोक प्राप्ति) को भी अनुत्तम (अश्रेष्ठ = घटिया) बताया है क्योंकि जब तक जन्म मरण है तब तक परम शान्ति नहीं हो सकती।

इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि हे अर्जुन! यदि तूने परम शान्ति और शाश्वत् स्थान (अमर लोक) प्राप्त करना है तो सर्व भाव से उस परमेश्वर अर्थात् पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की शरण में सर्व भाव से जा। जहाँ जाने के पश्चात् साधक पुनः लौट कर संसार में जन्म-मरण के चक्र में नहीं आते। जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। केवल उसी की भक्ति कर उसी की शरण में रह।

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति के मन्त्र का संकेत गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में किया है। ओम्(ॐ)-तत्-सत् यह तीन प्रकार का मन्त्र जाप सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (पूर्ण परमात्मा) को पाने का है। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 व 34 में स्पष्ट किया है कि सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (परम अक्षर ब्रह्म = पूर्ण परमात्मा) अपने मुख कमल से वाणी बोल कर जो ज्ञान सुनाता है। वह सूक्ष्म बेद अर्थात् तत्व ज्ञान है। उस तत्व ज्ञान में यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी विस्तार के साथ दी गई है। उस को जान कर प्राणी सर्व पापों से मुक्त हो जाता है अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है। गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि उस तत्व ज्ञान से मैं परिचित नहीं हूँ। उस तत्व ज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ।

इसलिए गीता ज्ञाना दाता ब्रह्म ने गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में अपना मन्त्र तो स्पष्ट करके लिख दिया ओम्(ॐ) तथा ''तत्'' जो अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म का सांकेतिक मन्त्र है तथा ''सत्'' जो परम अक्षर पुरूष अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म का सांकेतिक मन्त्र है; बताया है। जिनका यथार्थ ज्ञान तत्वदर्शी सन्त के पास है, उससे जानने को कहा है।

★ ''पूर्ण संत यज्ञ व दान-धर्म वेद अनुसार कराता है''

श्रीमद्भगवत गीता वेदों का सारांश है। गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 15 तक स्पष्ट किया है कि यज्ञ (धर्म यज्ञ, ध्यान यज्ञ, हवन यज्ञ, प्रणाम यज्ञ तथा ज्ञान यज्ञ के पाँच यज्ञ) भी करने चाहिऐं। जो ये यज्ञ नहीं करता, वह परमात्मा का चोर कहा है। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 117 मन्त्र 1 से 6 में है। जिनमें कहा है कि साधक को दान करना चाहिए, दान करने से धन कम नहीं होता। जो दान, धर्म, यज्ञ आदि नहीं करता, वह तो पाप ही खाता है अर्थात् पाप का भागी बनता है। यही प्रमाण सूक्ष्मवेद (परमेश्वर की वाणी) में भी है।

कबीर, चीड़ी चौंच भर ले गई, नदी न घट्यो नीर।
दान दिए धन नहीं घटै, कह रहे सन्त कबीर।।

परन्तु दान भी गुरु के माध्यम से करना चाहिए तथा कुपात्र को दिया दान लाभ के स्थान पर हानि ही करता है।

उदाहरण :- एक व्यक्ति ने एक भिखारी को 100 रूपये दान कर दिया। वह भिखारी पहले पाव शराब पीता था और अपने परिवार को तंग करता था। उस दिन उसने आधा बोतल शराब पी ली तथा अपनी पत्नि तथा बच्चों को बहुत ज्यादा पीटा। उसकी पत्नि दुःख के कारण सर्व बच्चों सहित कुएं में गिर गई, पूरा परिवार नष्ट हो गया। इस प्रकार कुपात्र को दिए दान ने एक परिवार का नाश कर दिया। जिस में दान करने वाला भी पाप का भागी बनता है। इसलिए परमेश्वर कबीर जी अपनी वाणी अर्थात् सुक्ष्म वेद में कहते हैं :-

कबीर गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, चाहे पूछो वेद पुराण।।

★ हवन को ज्योति यज्ञ के द्वारा करने की राय पूर्ण सन्त देता है :-

परम सन्त रामपाल दास जी महाराज ज्योति यज्ञ करने को कहते हैं जिसका प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 10 में है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 10

ज्योति यज्ञस्य पवते मधु प्रियम् पिता देवानाम् जनिता विभू वसूः।
दधाति रत्नम् स्वधयोरपीच्यम् मदिन्तमः मत्सरः इन्द्रियः रसः (10)

अनुवाद :– (विभू वसूः) भिन्न–२ स्थानों ''सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अकह लोक'' में निवास करने वाला (प्रियम् पिता) प्रिय परम पिता परमेश्वर (देवानाम् जनिता) सर्व आत्माओं व देव रूप आत्माओं का उत्पति करने वाला है। उस से (मधु) सर्व सुख प्राप्ति के लिए (ज्योतिः यज्ञस्य) ज्योति यज्ञ का अनुष्ठान करें। जो (पवते) पवित्र विधी है अर्थात् आत्मा को शुद्ध करता है।

जिस कारण से साधक को परमेश्वर (स्वधयोरपीच्यम्) इस लोक तथा परलोक के (मदिन्तमः मत्सरः) परम शान्ति रूप पूर्णमोक्ष तथा (इन्द्रियः रस) इन्द्रियों के आनन्द रूप (रत्नम्) पूर्ण मोक्ष रूपी अनमोल रत्न (दधाति) प्रदान करता है।

भावार्थ :- परमात्मा अपने मूल स्थान में भिन्न-२ स्थानों पर भिन्न-२ रूप बनाकर विराजमान है। वह सर्व जीवों व देवताओं का उत्पति कर्ता है। उस परमेश्वर से सुख लाभ के लिए धार्मिक अनुष्ठानों को करना चाहिए। उनमें से एक ज्योति यज्ञ भी है। जिस से परमात्मा साधक को इस लोक का भी सुख देता है तथा परलोक प्राप्ति अर्थात् पूर्ण मोक्ष रूपी अनमोल रत्न भी प्राप्त कराता है।

★ नोट :- गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरूष (प्रभु = ब्रह्म) हैं। 1. क्षर पुरूष = क्षर ब्रह्म यह गीता ज्ञान दाता है, जो केवल 21 ब्रह्मण्डों का प्रभु है, यह स्वयं तथा इसके अंतर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं।

2. अक्षर पुरूष = अक्षर ब्रह्म = परब्रह्म यह सात शंख ब्रह्मण्डों का प्रभु है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्डों के प्राणी नाशवान हैं।

3. ''उत्तम पुरूषः तू अन्य'' जो पुरूषोत्तम है अर्थात् जो परम अक्षर पुरूष है, वह तो क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य है। वही वास्तव में सर्व पालक तथा अविनाशी है। जिसका प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में भी है।

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में अर्जुन को बताया है कि जो मेरे ज्ञान का आश्रय करते हैं अर्थात् जो तत्वदर्शी सन्त से तत्व ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। वे केवल जरा (वृद्ध अवस्था के कष्ट) तथा मरण (मृत्यु के कष्ट) से मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं क्योंकि वे (तत् ब्रह्म) उस पूर्ण परमात्मा से तथा सर्व आध्यात्मिक ज्ञान से तथा सर्व कर्मों से परिचित होते हैं। वे संसार की तथा स्वर्ग आदि की इच्छा भी नहीं करते।

गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में तुरन्त अर्जुन ने प्रश्न पूछा कि हे भगवन् = ''तत्ब्रह्म'' क्या है? गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में उत्तर दिया कि वह ''परम अक्षर ब्रह्म'' है।

प्रिय पाठकों गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में जो ''उत्तम पुरूषः तू अन्यः'' कहा है, वह यह परम अक्षर ब्रह्म है। जिसे सन्त भाषा में अमर पुरूष, सत्य पुरूष आदि उपमात्मक नामों से पुकारा गया है।

☞ अब पुनः उसी प्रसंग पर आते हैं कि तत्वदर्शी सन्त के लक्षणों में कहा गया है कि वह वेद विधि अनुसार भक्ति कर्म करता तथा कराता है। आप जी को जो सन्त रामपाल दास जी से दीक्षित हैं। पता ही है कि आपको प्रथम बार सात मन्त्रों का जाप करने को दिया जाता है तथा सर्व (पाँचों) यज्ञ भी कराई जाती है।

आप जी को दूसरी बार में सत्य नाम जो दो अक्षर का है, जिसमें एक मन्त्र ॐ(ओम्) तथा दूसरा मन्त्र तत् (जो सांकेतिक है जो उपदेशी हैं उनको पता है) मन्त्र हैं। जो परम अक्षर पुरूष का तीसरी बार आप जी को सत् (जो सांकेतिक है।) दिया जाता है। यह सार नाम (आदिनाम = सार शब्द = विदेह शब्द) भी कहा जाता है। जिस श्रद्धालु को यह ''सत्'' मन्त्र (जो वास्तविक है), दिया गया है, उसको पता है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी सन्त अर्थात् परमात्मा के कृपा पात्र सन्त के लक्षण कहे हैं तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से ज्ञान समझने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौट कर संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करते हैं।

अध्याय 15 का श्लोक 1

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्। १।

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।1।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वृक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वृक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वृक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है। (1)

गीता अध्याय 15 श्लोक 4

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं-
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी। ४।

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृत्तिः, प्रसृता, पुराणी।।4।।

अनुवाद : {जब गीता अध्याय 4 श्लोक 34 अध्याय 15 श्लोक 1 में वर्णित तत्वदर्शी संत मिल जाए} (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमेश्वर के (पदम्) परम पद अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भलीभाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गये हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसारमें नहीं आते (च) और (यतः) जिस परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृत्तिः) रचना–सृष्टि (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) उस (आद्यम्)सनातन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) पूजा करें और मैं उसी की शरण में हूँ। पूर्ण निश्चय के साथ उसी परमात्मा का भजन करना चाहिए। (4) इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता (क्षर पुरूष) अपने से अन्य पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर पुरूष) की पूजा करने को कह रहा है।

★ इस संसार रूपी वृक्ष के सर्व भाग इस प्रकार हैं :-

सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परमात्मा कबीर जी की वाणी जो तत्व ज्ञान है उसमें बताया कि :-

अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन (क्षर पुरूष) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, ये पात रूप संसार।।

भावार्थ है कि वृक्ष का जो भाग अदृश (परोक्ष) है वह तो मूल (जड़ें) है। जो जमीन से तुरन्त बाहर मोटा भाग है वह तना अर्थात् अक्षर पुरूष जानों, तने से कई मोटी डार निकलती हैं, उनमें से एक डार को क्षर पुरूष (क्षर ब्रह्म = ज्योति निरंजन) जानों।

उस डार से मानो तीन शाखाऐं निकली हों, उनको तीनों देव (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जानों।

उन तीनों शाखाओं के जो पत्ते हैं, यह संसार जानों अर्थात् ये तीनों लोकों का संसार (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) जानों।

प्रिय पाठकों आप जी ने आज तक बहुत से सन्तों, महन्तों, आचार्यों, शंकराचार्यों तथा ऋषि, महऋषियों के प्रवचन भी सुने होंगे, उनके अनुभव की पुस्तकें भी पढ़ी होंगी। लेकिन जो ज्ञान सन्त रामपाल दास महाराज जी ने भक्तों को बताया है, ऐसा निर्णायक तथा शास्त्रोक्त ज्ञान आप जी ने न कभी पढ़ा और न सुना होगा।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि जिस गुरू के बिना वेदों को पढ़कर भी अज्ञानी रहे उनको यथार्थ रूप में परम सन्त रामपाल दास महाराज जी ने जाना तथा आप को बताया है। इसलिए वह गुरू जो परमेश्वर कबीर जी का कृपा पात्र है, परम सन्त रामपाल दास महाराज जी ही हैं। इस पुस्तक में जो भी विवेचन सदग्रन्थों के पृष्ठ व अध्याय का हवाल तथा ज्ञान लिखा है, उसे शत प्रतिशत सत्य जानें। यह हमारा दावा है क्योंकि हमने सर्व ग्रन्थों से स्वयं जाँचा है।

❖❖❖

★ ''कबीर पंथ की स्थापना''

कबीर पंथ की स्थापना विक्रमी संवत् 1460 (सन् 1403) को हुई जब परमेश्वर कबीर जी पांच वर्ष की लीलामय आयु में थे और 104 वर्ष के वृद्ध पंडित रामानन्द जी को शरण में लेकर सत्यलोक दर्शन कराए थे। उसके पश्चात् स्वामी रामानन्द जी ने परमेश्वर कबीर जी को नामदान करने की औपचारिकता कर दी थी। विस्तृत जानकारी :-

परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी का धरती पर अवतरण सन् 1398 विक्रमी संवत् 1455 ज्येष्ठ मास पूर्णमासी (शुद्धि) को काशी शहर के बाहर ''लहर तारा'' नामक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में हुआ। आकाश से एक प्रकाश का गोला-सा आया और ''लहर तारा'' सरोवर के एक कोने में समाप्त हो गया। इस के प्रत्यक्ष दृष्टा स्वामी अष्टानन्द शिष्य स्वामी रामानन्द जी थे। वे प्रतिदिन सुबह वहाँ स्नान करके अपने गुरू स्वामी रामानन्द जी के मार्ग दर्शनानुसार साधना किया करते थे। यह दृश्य देखकर स्वामी अष्टानन्द जी को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि जब अष्टानन्द जी ने उस प्रकाश पुंज्ज को देखा तो उसकी चर्म दृष्टि उस तेज को सहन न कर सकी। आँखें बन्द हो गई। उस समय उनको एक शिशु का रूप दिखाई दिया जैसे हम कभी सूर्य की ओर देखते हैं तो हमारी आँखें सूर्य के प्रकाश को सहन नहीं कर पाती। आँखें बन्द करते हैं या सूर्य से दूसरी ओर करते हैं तो हमें सूर्य का प्रकाश रहित आकार दिखाई देता है।

इसी प्रकार अष्टानन्द जी को उस प्रकाश पुंज्ज में शिशु रूप दिखाई दिया था। इसका वास्तविक रहस्य जानने के लिए स्वामी अष्टानन्द जी उसी समय उठ कर स्वामी रामानन्द जी के पास चले गये।

काशी शहर में एक नीरू (नूर अली) नामक जुलाहा रहता था। उसकी पत्नी का नाम नीमा (नीयामत) था। वे निःसंतान थे। वे इसी जन्म में हिन्दू ब्राह्मण थे। उनको बलपूर्वक मुसलमानों ने धर्म परिवर्तन करके मुसलमान बना दिया था। उनका गंगा में स्नान करना भी मना कर दिया था। वर्षा के मौसम में गंगा दरिया का स्वच्छ जल लहरों द्वारा उछल कर गऊ घाटों में से बाहर आकर तारा नाम नीचे स्थान में भर जाता था जो एक सरोवर का रूप ले लेता था। पूरे वर्ष वह जल स्वच्छ रहता था। इस कारण से उस तालाब को ''लहर तारा'' नाम से जाना जाने लगा।

नीरू जिनका पूरा नाम नूर अली रखा गया था परन्तु वे नीरू नाम से ही अधिक जाने जाते थे तथा उनकी पत्नी ''नीमा'' जिनका पूरा नाम नीयामत रखा गया था परन्तु ''नीमा'' नाम से अधिक प्रसिद्ध हुई।

वे दोनों पति-पत्नी भी उस लहर तारा सरोवर में प्रतिदिन ब्रह्म महूर्त में स्नान करने के लिए जाते थे। (ब्रह्म महूर्त सूर्य उदय से लगभग 1½ घण्टा पूर्व के समय

को कहा जाता है)

उन्होंने उस सरोवर में कमल के फूल पर एक शिशु को देखा और तुरन्त उठाकर अपने घर ले गये। जुलाहे के घर पर पलने की लीला करने व बड़े होकर जुलाहे का कार्य करके लीला करने के कारण परमेश्वर कबीर जी जुलाहा (धाणक) कहलाऐ।

परमात्मा ने लीलामय आयु में 25 दिन तक कुछ नहीं खाया-पीया। नीरू-नीमा बहुत चिन्तित हुऐ। उस समय परमेश्वर कबीर जी की प्रेरणा से नीरू बच्चे का दूध न पीने का कारण जानने के लिए स्वामी रामानन्द जी के पास गये। स्वामी रामानन्द ने बताया कि यह कोई महान आत्मा है। यह कंवारी गाय का दूध पीयेगा। नीरू को यह बात नहीं जची कि कंवारी गाय दूध कैसे देवेगी। वह गाय नहीं लाया और सोचा कि स्वामी रामानन्द जी ने मजाक किया है।

नीरू पहले ब्राह्मण ही था। इसी जन्म में उनका नाम गौरी शंकर था। उनकी पत्नी भी ब्राह्मणी थी, उनका नाम सरस्वती था। ये शंकर भगवान के परम भक्त थे। भले ही वे उस समय मुसलमान बना दिये गये थे। परन्तु भगवान शंकर उनके हृदय से नहीं निकल पा रहे थे।

दूसरी ओर नीमा अपने भगवान शंकर को कसक के साथ याद करके बच्चे के दूध पीने के लिए प्रार्थना कर रही थी। यहाँ तक ठान लिया था कि यदि बच्चे की मृत्यु हो गई तो मैं भी साथ मरूंगी।

भगवान शंकर अपने शिवपुर से आये। एक साधू का रूप धारण करके नीमा से पूछा माई आप क्यों रो रहे हो?

कारण जानने के पश्चात् शिव जी ने साधु रूप में कहा कि माई आप के पति को बुलाओ। उससे कहा कि एक कंवारी गाय लाऐं। वह कंवारी गाय दूध देगी। उसका दूध यह महान बालक पीएगा।

इतने में नीरू भी वापिस घर आया। वहाँ एक साधु को देखा जो यह कह रहा था कि कंवारी गाय लाओ वह मेरे आशीर्वाद से दूध देगी उस दूध को यह बालक पीयेगा। तब नीरू को विश्वास हुआ कि स्वामी रामानन्द जी ठीक ही कह रहे थे।

नीरू जुलाहा तुरन्त एक बच्छिया ले आया। उस ने साधु के आशीर्वाद से दूध दिया। वह दूध बालक रूप धारी परमेश्वर कबीर जी ने पीया। फिर वह बच्छिया प्रतिदिन दूध देने लगी जिससे परमेश्वर कबीर जी की परवरिश की लीला हुई। प्रमाण = कबीर सागर अध्याय ''ज्ञान सागर'' पृष्ठ 74 (80)

(७४) 80 ज्ञानसागर

भिक्षा दे प्रमुदित चलि आई । हस्तामल को खोज न पाई ॥
वाचा बन्ध तहाँ पुनि आयो । काल कष्ट मैं तोर मिटायो ॥
सुन जुलहा मन भयो आनंदा । जिमि चकोर पायो निशि चंदा ॥
ले सुत चले हर्ष मन कीन्हा । तासों पुनि अस बोलेहि लीन्हा ॥
आगिल जन्म जब होइ तुम्हारा । तुम्हैं पठायब यम तैं न्यारा ॥

साखी–सुत काशी को लै चले, लोग देखन तहँ आव ॥
अन्न पानी भक्ष नहिं, जुलहा शोक जनाव ॥

चौपाई

तब जुलहा मन कीन्ह तिवाना । रामानन्द सौं कहि उत्पाना ॥
मैं सुत पायो बड़ गुणवंता । कारण कौन भखै नहिं संता ॥
रामानन्द ध्यान तब धारा । जुलहा सो तब वचन उचारा ॥
पूर्व जन्म तैं ब्राह्मण जाती । हरि सेवा कीन्हेसि भलि भांती ॥
कछु तुव सेवा हरिकी चूका । तातैं भायो जुलहा को रूपा ॥
प्रीति प्रभू गहि तोरी लीन्हा । तातैं उद्यानमें सुत तोहि दीन्हा ॥

तूरी वचन

हे प्रभु जस कीन्ह्यो तस पायो । आरत हो तुव दर्शन आयो ॥
सो कहिये उपाय गुसाईं । बालक क्षुधावंत कछु खाई ॥
रामानंद अस युक्ति विचारा । तुम सुत कोई ज्ञानी अवतारा ॥
बछिया जाही बेल नहिं लागा । सो ले ठाढे करै तेहि आगा ॥

साखी–दूध चलै तेहि थन तें, दूधहि धरौ छिपाइ ॥
क्षुधावंत जब होवै, ता कहँ देउ खवाइ ॥

चौपाई

जुलहा इक बछिया लै आवा । चल्यो दूत कोउ मर्म न पावा ॥
चल्यो दूत जुलहा हरषाना । राख छिपाइ काहू नहिं जाना ॥
सुन भामिनि आगे चल आवा । सो लै जाइ कोई भेद न पावा ॥

अन्य प्रमाण :- सन्त गरीब दास जी की अमर वाणी में।

जिस वाणी के विषय में परमेश्वर कबीर जी ने कहा था। धनी धर्मदास जी ने कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 137 में अंकित की है।

''बारहवें पंथ प्रगट होवे बानी। शब्द हमारे का निर्णय ठानी।।
संवत सतरह सौ पछत्तर होई। ता दिन प्रेम प्रकटे सोई।।''

बारहवां पंथ ''गरीब दास पंथ'' है। सन्त गरीब दास जी का जन्म संवत् 1774 में हुआ था। कबीर सागर में ''कबीर बानी'' अध्याय में पृष्ठ 136 पर गलती से 1775 प्रिन्ट है।

सन्त गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा यथार्थ रूप में कही है जो ''सदग्रन्थ साहेब'' गरीब दास में लिखी है।

पारख के अंग से इस प्रकार लिखा :-

दूध न पीवत न अन्न भखत, न पालने में झूलंत।
दास गरीब कबीर पुरूष, कमल कला फूलंत।।

शिव उतरे शिव पुरी से, अवगति बदन विनोद।
नजर–नजर से मिल गई, लिया ईश कूं गोद।।
सात बार चर्चा करी, बोले बालक बैन।
शिव कूं कर मस्तिक धरा, ला मौमिन एक धेनू।।
अनब्यावर (कंवारी) को दूहत है, दूध दिया तत्काल।
पीव कबीर ब्रह्मगति, तहां शिव भया दयाल।।

वेद में प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 में

❑ **जब परमात्मा दूसरी प्रकार का शरीर धारण करके अर्थात् शिशु रूप धारण करके पृथ्वी पर प्रकट होता है उस समय उनके पालन की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। कृप्या पढ़ें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 में जो निम्न हैं :-**

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)
ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9

अभी ईं ममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् ।
सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्य की (पातवे) वृद्धि के लिये । (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ॥९॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 की फोटो कापी है जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें परमेश्वर के दूसरे प्रकार के शरीर की स्थिति का वर्णन है। जिस शरीर में परमात्मा शिशु रूप धारण करके वन (जंगल) में जल पर प्रकट होता है। उस समय उस बालक वेशधारी परमात्मा के पोषण की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। यही प्रमाण पवित्र ''कबीर सागर'' नामक सद्ग्रंथ में है। जो आदरणीय धर्मदास जी द्वारा लगभग सन् 1500 के आसपास लिखा गया था। उसमें लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी शिशु रूप धारण करके 'लहरतारा' नामक सरोवर में कमल के फूल पर अपने द्यूलोक (सतलोक) से चलकर आकर विराजमान हुए। वहां उन्हें एक निःसन्तान जुलाहा दम्पति घर ले आया। बाल वेशधारी परमेश्वर ने कई दिनों तक कुछ नहीं खाया-पीया। फिर ऋषि रामानन्द जी के बताए अनुसार तथा एक सन्त रूप में प्रकट शिव जी के अनुसार कँवारी गाय लाई गई। परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद से उस कँवारी गाय (बछिया) ने दूध दिया। वह बालक कविर्देव ने पीया। वह बछिया प्रतिदिन दूध देने लगी। इस प्रकार बालक रूप में लीला कर रहे परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई।

प्रमाण के लिए कृपया पढ़ें फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान सागर''

के पृष्ठ 74 पर जिसमें स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर जी ने वही लीला की की थी जिसकी वेद गवाही दे रहे हैं कि परमात्मा ऐसी लीला करता है। इससे स्वसिद्ध है कि ''परमेश्वर कबीर है'' (Kabir is God)

★ पाँच वर्ष की आयु में सन् 1403 (वि.सं. 1460) में कबीर पंथ को परमेश्वर कबीर जी ने स्थापित किया, प्रथम रामानन्द जी को समझाया।

प्रमाण :- सन्त गरीब दास जी की अमर वाणी में

पांच वर्ष के जब हुए, काशी मंझ कबीर।
गरीब दास अजब कला, ज्ञान ध्यान गुण धीर।।
गुल भया काशी पुरी, अटपटे बैन विहंग।
दास गरीब गुणी थे, सुनि जुलहा प्रसंग।।
रामानन्द को गुरू कहै, तन से नहीं मिलात।
दास गरीब दर्शन भये, पैड़े लगी जू लात।।
पंथ चलत ठोकर लगी, राम नाम कह दीन।
दास गरीब कसर नहीं, सीख लई प्रबीन।।

परमेश्वर कबीर जी ने पांच वर्ष की लीलामय अवस्था में ही कबीर पंथ का प्रचार प्रारम्भ कर दिया अर्थात् सन् 1403 (संवत् 1460) में कबीर पंथ की स्थापना कर दी थी। स्वयं नाम दीक्षा देते थे। परमेश्वर कबीर जी की वाणी में परमात्मा प्राप्ति का विधान बताते हुए कहा है :-

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल है, चाहे पूछो वेद पुराण।।

इस आधार से औपचारिकता निभाने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को अपना गुरू बनाया था। वैसे परमेश्वर कबीर जी को गुरू की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे तो स्वयं परमात्मा हैं। उनको मालूम था कि आने वाले समय में कलयुग में काल बहुत से मनमुखी पंथ चलाएगा, जिनका कोई गुरू नहीं होगा। उदाहरण के लिए :- राधास्वामी पंथ आगरा के प्रवर्तक श्री शिवदयाल सिंह जी का कोई गुरू नहीं था। उसी से राधास्वामी डेरा ब्यास (पंजाब प्रान्त) में श्री जयमल सिंह जी ने स्थापित किया है। उसके पश्चात् श्री सावन सिंह जी उत्तराधिकारी हुए। श्री सावन सिंह जी के शिष्य श्री शाह मस्ताना जी (जिनका वास्तविक नाम श्री खेमामल जी था) ने डेरा सच्चा सौदा सिरसा में बेगु रोड़ पर सन् 1949 में स्थापित किया था। यह सब श्री शिवदयाल सिंह जी के पंथ से निकली शाखाऐं हैं। प्रथम प्रवर्तक का ही कोई गुरू नहीं था। जिस कारण से ये सर्व शाखाऐं भी भ्रमित ज्ञान व सन्त मत के विरूद्ध साधना करके अपना अनमोल जीवन नष्ट कर गए तथा वर्तमान में कर रहे हैं।

विचार करें :- जैसे ''थर्मल'' होता है, वहाँ से बिजली चलती है। अन्य पावर हाऊस (बिजलीघरों) में तार के माध्यम से आती है। उन बिजलीघरों से नगर, गाँव

में बिजली सप्लाई होती है जो तार के द्वारा ही जाती है। यदि प्रथम बिजलीघर का ही सम्बन्ध (Connection) थर्मल प्लांट से नहीं है तो अन्य में बिजली नहीं जा सकती। इसी प्रकार जब शिव दयाल का कोई गुरू नहीं था।

भावार्थ यह है कि प्रथम बिजलीघर (श्री शिवदयाल जी) का ही सम्पर्क थर्मल प्लांट (गुरू) से नहीं था तो अन्य शाखाओं वाले गुरूओं में भी वास्तविक भक्ति नहीं है। समझदार को संकेत ही पर्याप्त है।

इसलिए कबीर परमेश्वर जी ने गुरू की औपचारिकता करनी अनिवार्य समझी नहीं तो ये सर्व उपरोक्त पंथी यह कह देते कि ''कबीर जी'' ने भी तो कोई गुरू नहीं बनाया था।

परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को ज्ञान समझाया। स्वामी रामानन्द जी वेदों, गीता तथा पुराणों के महान विद्वान माने जाते थे। उन्होंने 1400 ऋषि (ब्राह्मण) शिष्य बनाकर सर्व को प्रचारक बना रखा था। 52 दरबार स्थापित किए थे। जहाँ पर स्वयं स्वामी रामानन्द जी समय-२ पर प्रचार करते थे। बाल ब्रह्मचारी थे, योग युक्त होकर स्माधिस्थ होते थे।

सन्त गरीब दास जी ने परमेश्वर की महिमा को अपनी अमृत वाणी में बताया है।

गरीब, योग युक्त प्रणायाम कर के जीता शकल शरीर।
त्रिवेणी के घाट में अटक रहे बलबीर।।

भावार्थ है कि अपनी साधनाओं से स्वामी रामानन्द जी त्रिवैणी तक पहुँच कर रूक जाते थे। आगे का मार्ग (पंथ) स्वामी रामानन्द जी को ज्ञात नहीं था। त्रिवैणी पर तीन रास्ते हो जाते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि स्वामी जी सामने वाला रास्ता ब्रह्म रंदर कहलाता है। यह आप का बन्द है। आप भी प्रवचनों में बताते हैं कि जब तक ''ब्रह्म रंदर'' नहीं खुलेगा, जीव मोक्ष प्राप्ति नहीं कर सकता। आपका भी ''ब्रह्मरंदर'' बन्द है। आप का मोक्ष भी संभव नहीं है। यह ब्रह्मरंदर का मार्ग आप के वेदोक्त किसी भी नाम (मन्त्र) से नहीं खुलेगा।

यदि आप जी को मेरी बात पर शंका है तो आप जिन-जिन नामों (मन्त्रों) का जाप करते हैं, उनका जाप करके इस ब्रह्मरंदर को खोलें।

स्वामी रामानन्द जी ने समाधि अवस्था में ही अपने सर्व मन्त्रों (ॐ, ओम् नमः भगवते वासुदेवाय, विष्णु संहस्र नामा, गायत्री मन्त्र = ॐ भूर्भवः स्वः तत् . ..... आदि-२) का जाप किया परन्तु ब्रह्मरंदर नहीं खुला। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मेरे पास ''सत्य नाम'' है उससे ब्रह्मरंदर सहज ही खुल जाता है। यह सत्य नाम दो अक्षरों का योग है। जिसमें एक = ओम् (ॐ) है दूसरा = तत् है जो सांकेतिक है केवल उपदेशी को ही बताया जाता है। कबीर जी ने कहा कि मैं उस ''सत्य नाम'' (जो दो अक्षरों का है) का जाप श्वासों से करूँगा। यह ब्रह्मरंदर अर्थात् आप जी का मोक्ष मार्ग खुल जाएगा।

परमेश्वर कबीर जी ने ऐसा ही किया। ब्रह्मरंदर खुल गया। स्वामी रामानन्द जी समाधि दशा में थे। समाधिस्थ होने से पूर्व परमेश्वर कबीर जी पाँच वर्ष की लीलामय अवस्था वाले उनके सामने बैठे ज्ञान चर्चा कर रहे थे।

स्वामी रामानन्द जी को परमेश्वर कबीर जी उसी पाँच वर्ष की अवस्था वाले शरीर में त्रिवैणी पर बातें कर रहे थे।

परमेश्वर कबीर जी ने ''सत्य नाम'' का जाप किया। उसी समय ब्रह्मरंदर खुल गया। स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को साथ लेकर परमेश्वर कबीर जी ब्रह्मरंदर पार करके ब्रह्म लोक ले गये। फिर सर्व ब्रह्मण्डों में भ्रमण कराया। तत् पश्चात् ग्याहरवें द्वार से पार होकर अक्षर पुरूष के सात शंख ब्रह्मण्डों वाले लोक में प्रवेश किया। अक्षर पुरूष (जिसे परब्रह्म भी कहा जाता है) के लोक को दिखाकर परमेश्वर कबीर जी ने बाहरवें द्वार को पार करके स्वलोक अर्थात् अपने सत्य लोक में प्रवेश कराया।

सत्य लोक में देखा तो पता चला कि यह बालक कबीर जी ही असंख्य ब्रह्मण्डों अर्थात् सर्व का मालिक है। वेदोक्त परम अक्षर ब्रह्म है। सत्य लोक का भ्रमण करा कर परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को पुनः शरीर में प्रवेश किया। उसी समय स्वामी रामानन्द जी की समाधि खुल गई। सामने देखा तो पाया कि बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी सामने धरती पर बैठे हैं। तब स्वामी रामानन्द जी ने कहा :- जो सन्त गरीब दास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा) ने अपनी अमृतवाणी में इस प्रकार चित्रार्थ किया है :-

अतहां वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार।
गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।।(61)
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि, भर्म कर्म किये नाश।
गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दृढ़ विश्वास।।(62)
सुन्न–बेसुन्न सैं तुम परै, उरैं स हमरै तीर।
गरीबदास सरबंग में, अबिगत पुरूष कबीर।।(63)
कोटि कोटि सिजदे करैं, कोटि कोटि प्रणाम।
गरीबदास अनहद अधर, हम परसैं तुम धाम।।(64)
बोलत रामानंदजी, सुन कबीर करतार।
गरीबदास सब रूप में, तुमहीं बोलन हार।।(65)
तुम साहिब तुम संत हौ, तुम सतगुरू तुम हंस।
गरीबदास तुम रूप बिन और न दूजा अंस।।(66)
मैं भगता मुक्ता भया, किया कर्म कुन्द नाश।
गरीबदास अबिगत मिले, मेटी मन की बास।।(67)
दोहूं ठौर है एक तूं, भया एक से दोय।
गरीबदास हम कारणैं, उतरे हो मघ जोय।।(68)
बोलै रामानंद जी, सुनौं कबीर सुभांन।
गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिंड अरु प्राण।।(69)

उपरोक्त अमृत वाणी का भावार्थ है कि ''स्वामी रामानन्द जी ने अपनी आँखों देखा सत्य लोक को तथा उस सिंहासन (तख्त) को जिस पर पहले तेजोमय रूप परमेश्वर विराजमान थे। जिन के एक रोम (बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा करोड़

चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक था। जब बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी उस सिंहासन के निकट पहुँचे और वहाँ रखे चंवर को उठाकर सेवक की तरह ढुराने लगे। उसी समय तेजोमय शरीर वाला परमेश्वर सिंहासन से उठ खड़े हुए तथा बालक कबीर जी को उस सिंहासन पर विराजने को कहा। बालक कबीर जी उस तख्त पर विराजमान हो गए तथा वह तेजोमय शरीर वाला प्रभु चंवर लेकर बालक कबीर पर सेवक की तरह चंवर करने लगा।

स्वामी रामानन्द जी असमंजस में थे कि इन दोनों में परमात्मा कौन से हैं? उसी समय तेजोमय शरीरधारी परमात्मा सिंहासन पर विराजमान बालक रूपधारी कबीर जी के शरीर में समा गए और बालक कबीर जी का शरीर तेज से चमक उठा। तब कबीर परमेश्वर जी ने स्वामी रामानन्द जी को याद दिलाया कि मैंने एक दिन आप से कहा था कि :-

''सन्त गरीब दास जी की अमृत वाणी''

हम ही अलख अल्लाह हैं, कुतुब, गौस और पीर।
गरीब दास खालिक धनी, हमरा नाम कबीर।।
ए स्वामी सृष्टा मैं, सृष्टि हमरे तीर।
दास गरीब अधर बसूं, अविगत सत्य कबीर।।

परन्तु उस समय आप को विश्वास नहीं हो रहा था। मेरे पास वेदोक्त तथा जो इन चारों वेदों में नहीं है वह सूक्ष्म वेद में है वह सत्य साधना उपलब्ध है। मैं ही संसार में जीवों के उद्धार के लिए काशी में जुलाहे की भूमिका करने गया हूँ। अब आप चलो नीचे अपने शरीर में प्रवेश करो। मैं भी वहीं पहुँचता हूँ। जब स्वामी रामानन्द जी की समाधि खुली और परमेश्वर को उसी बालक कबीर रूप में सामने बैठे पाया तो परमेश्वर को दण्डवत प्रणाम किया और कोटि-२ सिजदा किया। कहा कि ''आप दोनों स्थानों पर (यहाँ मेरे सामने पृथ्वी पर तथा ऊपर सत्य लोक में) आप ही हैं। आप के ज्ञान तथा वेदोक्त तथा सूक्ष्म वेदोक्त भक्ति के सामने मेरी बुद्धि अर्थात् मेरा ज्ञान तो बालकों जैसा है। मेरा सर्व भ्रम निवारण हो गया है। मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है कि आप स्वयं निज ब्रह्म (तत् ब्रह्म) अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म हैं। मैं आपका भक्त हूँ, अब मेरी मुक्ति होने में कोई शंका नहीं रही।

मैं आप के उस परम शान्तिदायक स्थान अमर लोक में आप के सच्चे दरबार को देख कर आश्चर्यचकित हो गया था। मैं जो सर्व साधना कर रहा था, वह अधूरी थी।

इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को समझाया तथा उनसे प्रतिज्ञा कराई कि आप मेरे गुरू रूप में बने रहोगे, यह परम्परा बनाऐ रखने के लिए अनिवार्य है।

आप मेरा भेद किसी को अभी नहीं दोगे। स्वामी रामानन्द जी परमेश्वर कबीर जी का गुरू बनने को तैयार नहीं थे क्योंकि वे आँखों देख कर जान गए थे कि ये स्वयं परम अक्षर ब्रह्म ही धरातल पर जुलाहा रूप में आए हैं। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने उनको उपरोक्त कसम दिलाई थी।

पहले स्वामी रामानन्द जी केवल ब्राह्मणों को ही दीक्षा देते थे। अन्य किसी जाति

वालों को नाम दीक्षा नहीं देते थे। फिर 84 अन्य जाति वालों को नाम दीक्षा देकर शिष्य बनाए जिनमें से मुख्य सन्त रविदास जी, राजा पीपा जी आदि-2। फिर स्वामी रामानन्द जी ने परमेश्वर कबीर जी को नाम दान करने की आज्ञा प्रदान की।

★ इसके पश्चात् परमेश्वर कबीर जी के पंथ में 64 लाख अनुयाई जुड़े जिन में से कुछ निम्न हैं :-

1. काशी नरेश बीर देव सिंह बघेल।
2. दिल्ली के बादशाह, सिकंदर लोधी।
3. मगहर के नवाब, बिजली खांन पठान।
4. धनी धर्मदास जी, बाधंवगढ़ वाले।
5. जीवा तथा दत्ता (तत्वा) दो भाई (शुकल तीर्थ, गुजरात)

★ कबीर पंथ में आदरणीय धर्मदास जी (निवासी = बांधवगढ़) की अहम भूमिका रही है।

➞ धर्मदास जी का जन्म विक्रमी संवत् 1452 (सन् 1395) में बांधवगढ़ नगर में हुआ जो वर्तमान छत्तीसगढ़ प्रान्त के अंतर्गत आता है।

➞ विवाह = विक्रमी संवत् 1480 (सन् 1423) में आमीनी देवी के साथ हुआ। (28 वर्ष की आयु में)

➞ मथुरा नगर में परमेश्वर कबीर जी से भेंट = विक्रमी संवत् 1519 (सन् 1462) 67 वर्ष की आयु में।

➞ धर्मदास जी की मृत्यु = विक्रमी संवत् 1569 (सन् 1512) में 117 वर्ष (1569-1452 = 117 वर्ष) की आयु में जगन्नाथ पुरी में कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को जीवित समाधि दी अर्थात् जीवित को ही मिट्टी में दबा दिया।

जीवित को समाधि देने का कारण यह था कि धर्मदास जी को सख्त शब्दों में परमेश्वर कबीर जी ने मना किया था कि ''सत्यनाम'' जो दो अक्षर का है तथा सार शब्द जो सांकेतिक है। इसको उस समय तक किसी को नहीं बताना है, जब तक कलयुग 5505 वर्ष नहीं बीत जाता अर्थात् सन् 1997 तक। परन्तु 117 वर्ष की वृद्ध अवस्था में धर्मदास बहकी-बहकी बातें करने लगा कि मेरे बच्चों को सत्यनाम तथा सारशब्द नहीं मिलेगा तो इनका उद्धार कैसे होगा? परमेश्वर कबीर जी ने देखा कि धर्मदास सन्तान मोह वश किसी दिन सत्य नाम जो दो अक्षर = ओम् + तत् जो सांकेतिक है तथा सार शब्द को अवश्य बताएगा। इसका दिमाग चल चुका है। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास में जगन्नाथ पुरी में (जहां पर परमेश्वर कबीर जी ने एक पत्थर पर विराजमान होकर समुद्र को रोका था तथा जगन्नाथ के मन्दिर का निर्माण पूरा हो सका था) उस स्थान को देखने की प्रबल प्रेरणा की। वहां जाकर सर्व ज्ञान को पुनः समझाया तथा पुनः उपदेश सिद्ध किया। तब धर्मदास ने स्वयं कहा कि हे प्रभु! मेरे वश की बात नहीं रही। मैं कभी भी इन मन्त्रों को बता सकता हूँ। आप का अनमोल कार्य बिगड़ जाएगा। मुझे मौत दे दो। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को धरती में गुफा खुदवा कर जिन्दा ही दबा दिया। धर्मदास जी की इस प्रकार मृत्यु को जीवित समाधि कहा जाता है। विचारणीय विषय है कि ''इन दोनों मन्त्रों को सन्

1997 (जब तक कलयुग 5505 नहीं बीता) तक गुप्त रखने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने प्यारे भक्त धनी धर्मदास जी को जिन्दा मिट्टी में दबा कर मौत दे दी परन्तु मन्त्रों को सार्वजनिक नहीं होने दिया। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि ''दामाखेड़ा'' गद्दी वाले कबीर पंथियों तथा अन्य कबीर पंथियों के पास ये मन्त्र नहीं है। इनके बिना मोक्ष नहीं हो सकता।

★ विचारणीय विषय यह है कि धर्मदास जी तो परमेश्वर के बहुत प्रिय भक्त थे। जिनके साथ परमात्मा विक्रमी संवत् 1519 (सन् 1462) से विक्रमी संवत् 1569 (सन् 1512) तक गुरू रूप में रहे। उसको अपने निज स्थान (सत्य लोक) में भी साथ लेकर गए। फिर उनको विश्वास हुआ कि परमेश्वर स्वयं कबीर जी ही हैं। धर्मदास जी ने परमात्मा की वाणी को कबीर सागर, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली, कबीर साखी नामक पुस्तकों को अपने कर कमलों से लिखा। ऐसे श्रद्धालु को जगन्नाथ पुरी में पुनः परवाना अर्थात् पुनः उपदेश दिया और तुरन्त ही जमीन में गड्ढा खुदवा कर जीवित को ही दबा दिया अर्थात् उनकी जीवन लीला का अन्त किया।

{(प्रमाण = ''आशीर्वाद शताब्दी ग्रन्थ'' पुस्तक के पृष्ठ 95, 11 तथा भूमिका पृष्ठ ''ए'' पर) यह पुस्तक धर्मदास वंशावली सभा कबीर धर्म नगर दामाखेड़ा वालों ने छपाई है।}

इसका कारण यह था :-

आदरणीय धर्मदास जी का एक पुत्र जिसका नाम ''नारायण दास'' था। वह काल का दूत था। उसने परमेश्वर कबीर जी के ज्ञान को स्वीकार नहीं किया।

धर्मदास जी इस बात से बहुत चिन्तित रहने लगे। खाना-पीना भी त्याग दिया। पुत्र मोह में व्याकुल थे कि मेरा इकलौता पुत्र है, यह काल के मुख में जाएगा।

अन्तर्यामी परमेश्वर कबीर जी सब जानते थे। फिर भी धर्मदास जी से चिन्ता का कारण पूछा। धर्मदास जी ने अपने मन की बात बताई कि ''मेरा पुत्र नारायण दास आप से दीक्षा नहीं ले रहा है, यह काल के मुख में जाएगा। मुझे यह चिन्ता खाए जा रही है।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा '' धर्मदास यह तेरा पुत्र काल का भेजा हुआ दूत है। '' कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी से कहा कि नारायण दास को बुलाओ। नारायण दास आया। परमेश्वर कबीर जी ने अपना आशीर्वाद भरा हाथ नारायण दास की ओर किया तथा धर्मदास से कहा कि देखो आपका पुत्र कितना सुन्दर है। जब धर्मदास जी ने देखा तो नारायण दास के रूप में काल के दूत का विकराल स्वरूप दिखाई दिया। उस समय धर्मदास जी को दृढ़ विश्वास हुआ कि सचमुच यह तो काल का ही दूत है।

इसके पश्चात् धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि हे प्रभु! मेरा वंश तो काल का वंश होगा। मैं कितना अभागा हूँ। इस चिन्ता में पुनः पीड़ित देखकर परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि धर्मदास आप चिन्तित न हों, आपकी पत्नी के गर्भ से एक नेक सन्तान मेरे आशीर्वाद से उत्पन्न होगी जो लड़का होगा। उस समय धर्मदास जी की आयु 85 वर्ष की थी। उनकी पत्नी का मासिक धर्म भी बन्द हो चुका था।

यह चिन्ता भी परमेश्वर कबीर जी से कही कि यह कैसे सम्भव होगा? तब परमात्मा ने सोचा कि धर्मदास बहुत टैन्सन लिए है। कहीं इसकी मृत्यु न हो जाऐ।

इसलिए इसको विश्वास दिलाना अनिवार्य है।

उसी समय परमेश्वर कबीर जी ने आसमान की ओर हाथ किया, एक नवजात शिशु ऊपर से आया तथा धर्मदास जी के घर के आंगन में लेट कर बाल लीला करते हुए पैर का अंगूठा मुख में लिए हुए क्रीड़ा करने लगा।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ''धर्मदास! मेरे आशीर्वाद से यह आत्मा दस महीने के पश्चात् तेरी पत्नी के गर्भ से लड़के के रूप में उत्पन्न होगी। तेरा 42 पीढ़ी तक वंश चलेगा।

यह कौतुक देख कर धर्मदास जी शान्त हुए। दसवें महीने उनकी पत्नी भक्तमति आमीनी के गर्भ से एक पुत्र ने जन्म लिया। उसका नाम चुड़ामणि रखा जिसको बाद में मुक्तामणि नाम से भी जाना जाने लगा।

जिस समय चुड़ामणि जी का जन्म हुआ (विक्रमी संवत् 1538 सन् 1481) उस समय धर्मदास जी की आयु 86 वर्ष की थी। (प्रमाण = ''आशीर्वाद शताब्दी ग्रन्थ'' दामाखेड़ा से प्रकाशित के पृष्ठ 11)

इस आयु में पुत्र प्रदान परमेश्वर ही कर सकता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि ''परम पूज्य कबीर जी स्वयं परम अक्षर ब्रह्म परमेश्वर ही हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को तीन बार में दीक्षा क्रम को पूरा किया :-

1. प्रथम चरण में केवल पाँच नाम दिए।
2. दूसरे चरण में ''सत्यनाम'' जो दो अक्षर का है जिसमें एक ''ॐ'' अक्षर तथा दूसरा ''तत्'' जो सांकेतिक है, उपदेशी को बताया जाता है।

जिसका प्रमाण ''कबीर सागर'' के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 62 (502), 63 (503) पर है।

(६२) 502 ज्ञानप्रकाश

धर्मदास वचन

कौन जग जीतें कौन जग हारे । कहो कौन विधि काज सवाँरे ॥

सतगुरु वचन

इन्द्रिन जीते साधुन सो हारे । कहैं कबीर सतगुरु निस्तारे ॥
सतगुरु सो सत्यनाम लखावे । सतपुर ले हंसन पहुँचावे ॥
सत्यनाम सतगुरु तत भाखा । शब्द ग्रन्थ कथि गुप्तहिं राखा ॥
सत्य शब्द गुरु गम पहिचाना । विनु जिभ्या करु अमृत पाना ॥
सत्य सुरति अम्मर सुख चीरा । अमी अंकका साजहु वीरा ॥
सोहं ओहं जावन वीरू । धर्मदास सो कहै कबीरू ॥
धरिहौ गोय कहिहौ जिन काहीं । नाद सुशील लखेहो ताहीं ॥
प्रथमहि नाद विन्द तब कीन्हा । मुक्ति पन्थ सो नाद गहि चीन्हा ॥
नाद सो शब्द पुरुष मुख बानी । गुरुमुख शब्द सो नाद बखानी ॥
पुरुष नाद सुत षोडश अहई । नाद पुत्र शिष्य शब्द जो लहई ॥
शब्द प्रतीति गहै जो हंसा । शब्द चालु जेहिसे मम बंशा ॥
शब्द चाल नाद दृढ़ गहई । यम शिर पगु देइ सो निस्तरई ॥
सुमिरण दया सेवा चित धरई । सत्यनाम गहि हंसा तरई ॥

बोधसागर 503 (६३)

बिन्दो होय शब्द मम धावैं । नाद बिन्दु दोउ मोहिं पहँ आवै॥
नाद सखा जेहि अहंविगुरचे । अहं रहित सो निज घर पहुँचे॥
केते पढि गुणि नर्कहिं जैहै । केते पढ़ि गणि लोक सिधैहै ॥

धर्मदास वचन

हो सद्गुरु मैं तुम्हारो दासा । विनती करौं खसम तुव पासा॥
पढ़े गुणै दुइदिशि किमिजाहीं । सो चरित्र वरणों मोहिं पाहीं ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्मनि बहु पढ़ि अरथावै । शब्द कहै सो चालु न पावै ॥
पढ़ि गुणि नीति विचारै नाही । अस पढ़ुआ सुनु नरकहिं जाही॥
जिन्ह पढिशब्दचाल गहिभाई । सुनु धर्मनि सो लोकहि जाई ॥
छन्द-जो कथत बकतौ तरै जग तो जग सबै तरि जायहो ॥
तजि तख्त सुलतान उबरै नृप क्यों बनजाय हो ॥
तातें कहूँ निज समुझ पापी शब्द पढि सतपद गहै ॥
जो सत्य पद निरखत चलै तो नहिं फेरि जो नीवहै ॥
दोहा-सत्यनाम सुमिरण करै, सतगुरुपद निज ध्यान ॥
आतम पूजा जीव दया, लहै सो मुक्ति अमान ॥
सोरठा-सद्गुरु कहै पुकारी, चाल चलै पथ निरखिके ॥
हंस होय भव पारि, शब्द गहन सद्गुरु कृपा ॥

यह फोटोकापी पवित्र कबीर सागर के खण्ड ''बोध सागर'' के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 62-63 की हैं। इनमें स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को दूसरी बार में ओहं (ओम् = ॐ) + सोहं दो अक्षर का सत्य नाम दिया था। यही नाम परमेश्वर कबीर जी ने = आदरणीय नानक जी को दिया था जो ''सत्यनाम'' कहा गया है, वह दो अक्षर का ही है।(ॐ-सोहं)

प्रमाण :- जन्म साखी भाई बाले वाली में ''समन्दर की साखी'' नामक अध्याय में स्पष्ट लिखा है।

यही सत्य नाम परमेश्वर कबीर जी ने अपने परम भक्त गरीब दास जी को दिया था जो वर्तमान में सन्त रामपाल जी महाराज प्रदान कर रहे हैं।

★ 3. तीसरे चरण में परमेश्वर कबीर जी ने ''सार शब्द'' धर्मदास जी को प्रदान किया था। वह ''सार शब्द'' (सार नाम = आदिनाम) भी कबीर सागर में लिखा है, उसको यहाँ सार्वजनिक नहीं किया जा सकता, उपदेशी को सन्त रामपाल दास जी महाराज बता सकते हैं।

★ धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने कड़े शब्दों में कहा था कि मैंने जो ''सत्य नाम'' दो अक्षर का है तथा ''सार नाम'' तुझे दिया है, इसको किसी से नहीं कहना। अपने वंश के व्यक्तियों से भी नहीं देना। यह मेरी लाख-लाख दुहाई है।

प्रमाण :- कबीर सागर ''कबीर बानी'' पृष्ठ 137 (1001) पर।

बोधसागर /००/ (१३७)

आज्ञा रहे ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे॥
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्ममें ठौर ना पावै॥
बारवै पन्थ प्रगट है बानी। शब्द हमारेकी निर्णय ठानी॥
अस्थिर घरका मरम न पावै। ये बार पंथ हमहीको ध्यावै॥
बारहे पन्थ हमही चलि आवै। सब पथ मिट एकहीपंथ चलावै॥
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा॥
प्रथम चरन कलजुग नियाना। तब मगहर माडौ मैदाना॥
धर्मरायसे मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी॥
बावन वीर कबीरं कहाऊ। भवसागरसों जीव मुकताऊ॥

कलियुगको अंत पठचते

ग्रहण परै चौंतीससो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा॥
३४००ग्रहणपरैसो लेखाकीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा॥
पांच हजार पाँचसौ पांचा। तब ये शब्द होगया सांचा५५०५
सहस्र वर्ष ग्रहण निर्धारा। आगम सत्य कबीर पोकारा॥
तेरा वंश चले रजधानी। वंश चूरामणि प्रगटे ज्ञानी॥
तिनकी देह छायाँ नहिं होई। सर्व पृथ्वी प्रमानिक सोई॥

किया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। भूल शब्द बर जिन जाई॥
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ॥
मूलज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढीवंशहंस नहिं तरही॥
तेतिस अर्व ज्ञान हम भाखा। मूलज्ञान गोए हम राखा॥
मूलज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई॥

इसमें कहा है कि ''मूल ज्ञान'' अर्थात् तत्व ज्ञान जिसमें भक्ति विधी विस्तार से बताई गई थी। उसी में तीन बार में दीक्षा क्रम पूरा करने को कहा था तथा इन दोनों मन्त्रों (सत्य नाम तथा सार शब्द) को भी बताया था। इसका तेरे अतिरिक्त किसी को ज्ञान नहीं होना चाहिए।

आप जी अपने पुत्रों को (वंश वालों) को भी नहीं बताना। यदि ऐसा कर दिया तो बिचली पीढ़ी अर्थात् दूसरे चरण वाले हंस पार नहीं हो सकेंगे क्योंकि यदि ये मन्त्र काल के गुरूओं के हाथ लग गए तो वे भी उस समय यही मन्त्र-दीक्षा दिया करेंगे। अधिकारी न होने के कारण किसी को भी लाभ नहीं होगा। इन मन्त्रों को तब तक छुपाना है, जब तक 12 पंथ चल कर अन्त हो जाऐं। उस समय तो एक भी पंथ नहीं चला था।

विशेष :- पूर्व में भी हम लिख आऐ हैं कि ''परमेश्वर कबीर जी ने कलयुग को तीन चरणों में बाँटा है।''

प्रथम चरण = जिस समय परमेश्वर कबीर जी स्वयं ज्ञान प्रचार करके मगहर स्थान से सशरीर सत्य लोक गए थे। यह प्रमाण इस ''कबीर सागर'' के ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 137 पर भी स्पष्ट है।

''प्रथम चरण कलयुग निरयाणा, तब मगहर मांडो मैदाना।।

दूसरा चरण = सन् 1947 के पश्चात् भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् चला है, यह लगभग 5000 वर्ष तक चलेगा, पूरी पृथ्वी पर कबीर परमेश्वर जी की भक्ति चलेगी, सतयुग के समान आपसी मेल-जोल होगा। माया जोड़ने की होड़ समाप्त होगी। सर्व प्राणी परमात्मा से डरने वाले होंगे। इसका प्रभाव 2 लाख वर्ष तक रहेगा।

तीसरा चरण = उसके पश्चात् कलयुग का तीसरा चरण प्रारम्भ होगा। इसमें सर्व प्राणी माँसाहारी, कृतघनी व भक्ति विमुख हो जाऐंगे। लाखों में एक ही परमात्मा से डरने वाला होगा।

★ सार शब्द को छुपाने का अन्य प्रमाण :-

कबीर सागर के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 (2001)

२९ जीवधर्मबोध 2001 (१९३७)

चौपाई

कृपा करे गुरु धनी दयाला। जीवहि खच लोक ले चाला॥
ताकी कृपा योग जब होना। लगे मही तब कालको टोना॥
कृपा योग जबलों नहिं लोई। कृपा कौनविधि तापर होई॥

सत्यकबीर वचन

धर्मदास तोहि लाख दोहाई। सार शब्द बाहर नहिं जाई॥
सारशब्द बाहर जो परि है। बिचलै पीढी हंस नहिं तरि है॥
युगन युगन तुम सेवा कीनी। ता पीछे हम इहां पगदीनी॥
कोटिन जन्म भक्ति जब कीन्हा। सारशब्द तबही पै चीन्हा॥
अंकूरी जिव होय जो कोई। सारशब्द अधिकारी सोई॥
सत्यकबीर प्रमाण बखाना। ऐसो कठिन है पद निर्वाना॥
पै दुतिये विधि कह्यो बहोरी। जापर सद्गुरु कृपा न थोरी॥
धर्मदास प्रति ऐसे कहेऊ। मांगु जो कछु तेरो चित चहेऊ॥
धर्मदास तब वचन उचारा। तारो मोहि सहित परिवारा॥
पिता पितामह सखा समेता। सबहि पारकर कृपानिकेता॥

(१९३८) 2002 बोधसागर ३०

तेहि अवसर सतगुरु विहसाना। का मांगे कछु मांग न जाना॥
तारो सकल सृष्टिको भाई। तुम तो आप रहे अरुगाई॥
यामें नहिं कछु दोष तुम्हारा। कालपुरुष तुमरी मति मारा॥
ऐसो समरथ सत्य कबीरा। पलमें सब क्रम कागज चीरा॥
कोटिन जन्म जो परा भुलेषा। करे जो कृपा चुकावै लेखा॥

★ धर्मदास जी को जीवित को धरती में दबाने का क्या कारण था?

★ धर्मदास जी को जीवित समाधि दी गई।(जीवित को मिट्टी में दबा कर मौत प्रदान करने को जीवित समाधि कहते हैं)।

॥ आशीर्वाद ॥

धर्मदास साहब एवं आमिन माता की समाधि, जगन्नाथपुरी

जगन्नाथ पुरी के स्वर्गद्वार में सद्गुरू कबीर साहेब की अविस्मरणीय यादों को समेटे कबीर चौरा मठ स्थित है। यह वही स्थान है जहां बैठ कर अपनी आशाबाड़ी रोप कर सतगुरू ने जगन्नाथ मंदिर की स्थापना हेतु समुद्र रोका था। सदियों की प्रसिद्ध यह कबीर आशाबाड़ी यहां का प्रमुख श्रद्धा का केन्द्र है। इस पर एक छोटा सा मंदिर भी बना है। सतगुरू ने यहीं बैठ कर जगन्नाथ मंदिर के पंडाओं का जाति पांति का भ्रम भी मिटाया था। इसी पवित्र भूमि में सतगुरू से परवाना ग्रहण कर धनी धर्मदासजी साहेब ने वि.सं. १५६९ में जीवित समाधि ली है। इसके ठीक छः महिने बाद माता आमिन ने भी यहीं नश्वर शरीर छोड़ा है। आज ये दोनों समाधियां कबीर आशाबाड़ी के पास ही स्थित है और कबीर पंथ की अगाध श्रद्धा का केन्द्र है। प्रस्तुत चित्र इन्हीं धर्मनि आमिन की समाधियों का है। केवल धर्मनि आमिन की ही नहीं, बल्कि सद्गुरू कबीर साहेब के अन्य प्रधान शिष्यों की समाधियां भी इसी मठ में स्थित है। कबीर पंथ की स्थापना के और संचालन के महान साक्षी और सहभागी रहे हैं ये महापुरूष। पंथ की एक अनन्य भक्त रत्नाबाई को भी इन्हीं के समकक्ष स्थान मिला है, उनकी समाधि भी यहीं बनी है। इसी मठ में एक पांजी द्वार भी बना हुआ है। कहा जाता है कि श्री समर्थ पुरूष पंथ श्री मुक्तामणि नाम साहेब इसी पांजी द्वार के रास्ते कुदुरमाल से यहां आया जाया करते थे। ज्ञातव्य हो कि एक पांजी द्वार कुदुरमाल धाम में भी बना है। इस प्रकार सद्गुरू कबीर साहेब की और कबीर पंथ की अन्यतम संस्मृतियों में जगन्नाथ पुरी के स्वर्ग द्वार स्थित इस कबीर चौरा मठ का अपना एक अलग ही स्थान है। यहां आकर हर कबीर पंथी अपने को कृत् कृत्य समझता है।

जगन्नाथ पुरी का यह कबीर चौरा मठ वंश गद्दी दामाखेड़ा द्वारा संचालित है।

९५

यह फोटोकापी पुस्तक ''आशीर्वाद शताब्दी ग्रन्थ'' के पृष्ठ 95 की है जो धर्मदास जी के वंशजों ने छापी है। दामाखेड़ा से धर्मदास वंशावली वालों ने लिखी है।

इसमें स्पष्ट है कि ''धर्मदास जी को जीवित समाधि दी गई (जिन्दे को ही जमीन में दबा कर मौत को प्राप्त करना)।

जब परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को सख्त शब्दों में कह दिया कि यह सार नाम तथा सत्य नाम तब तक छुपाना है जब तक कि कलयुग 5505 वर्ष न बीत जाए (सन् 1997 में कलयुग 5505 वर्ष का ही होता है)। तब धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि ''हे प्रभु! आप जी ने अपने दास को 42 पीढ़ी वंश बख्शा है। मेरे बच्चे कैसे पार होंगे? तब परमात्मा ने कहा था :-

''कबीर सागर'' के ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 136-137 (1000-1001) पर तथा 12 काल के पंथों का वर्णन करते हुए कहा था कि 12 वां पंथ ''गरीब दास''

पंथ होगा जिसका जन्म विक्रमी संवत् 1774 में होगा। उस गरीबदास द्वारा मेरी महिमा की वाणी प्रकट होगी। परन्तु उस वाणी के गूढ़ रहस्यों को कोई नहीं समझ सकेगा।

मैं स्वयं उस गरीब दास वाले पंथ में आऊँगा। सब पंथों को ज्ञान से समाप्त करके एक ''यथार्थ कबीर पंथ'' चलाऊँगा। उस समय सर्व संसार के प्राणी मेरी दीक्षा प्राप्त करके मेरी भक्ति किया करेंगे। सत्ययुग जैसे स्वभाव के हो जाऐंगे। उस समय यह तीनों नाम (तीन बार में प्रदान किए जाऐंगे) को प्राप्त करके आजीवन मर्यादा में रहकर भक्ति करेगा। पूरा संसार पार होगा। तब आप के वंश भी पार हो जाऐंगे। यदि वे भी उस समय नाम ले लेंगे अन्यथा नाम न लेने वाला कोई भी पार नहीं होगा। यह वृत्तांत सुनकर धर्मदास जी ने कहा परमात्मा! तब तक मेरे बच्चे कैसे मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे? परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

हे धर्मदास! मैं आप को आदेश देता हूँ कि आप केवल प्रथम मन्त्र जो पाँच नाम का है (जो सन्त रामपाल दास जी प्रदान करते हैं) इसको आप अपने वंशजों को तथा जो भी अन्य हमारे ज्ञान को समझ कर दीक्षा लेने का इच्छुक हो, उसको देना। परन्तु ''सत्य नाम'' - ''सार नाम'' कतई नहीं देना। वैसे तो यह सम्पूर्ण दीक्षा क्रम तीन चरणों में पूरा होता है।

प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' के पृष्ठ 265 (1129) पर स्पष्ट है।

(अधिक जानकारी पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 9 पर।)

परन्तु यह तो उस समय प्रदान करना है जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा।

धर्मदास जी ऊपर से तो सहमति व्यक्त कर रहे थे परन्तु अन्दर से चिन्तित थे कि तब तक मेरे बच्चे अनमोल मन्त्रों (सत्य नाम तथा सार शब्द) से वंचित रहेंगे, यह मैं कैसे देख सकता हूँ। अन्तर्यामी परमेश्वर कबीर जी ने जान लिया कि ''धर्मदास की आयु 117 वर्ष हो चुकी है। मैं साथ रहता हूँ, यह इन पवित्र मन्त्रों को सार्वजनिक नहीं कर पा रहा है। अति वृद्ध हो चुका है, कहीं किसी समय सन्तान मोह वश यह इन मन्त्रों को अपने पुत्र को न बता दे और मेरा मिशन ही असफल हो जाए।

धर्मदास जी के मन में कई बार आया कि मैं इन मन्त्रों को चुपके से अपने पुत्र चुड़ामणि को बता दूँ, यह आगे बता दिया करेगा। धर्मदास जी को इतना ज्ञान भी था कि जब तक चुड़ामणि को गुरू पद नहीं दिया जाएगा तब तक यह मन्त्र काम नहीं करेगा। इसलिए नहीं बता पा रहा था।

कबीर, मुख पर वचन करे प्रमाणा, घर पर जा करै विज्ञाना।
गुरू कपट शिष्य जो राखै, जम राजा के मुगदर चाखै।।

मन में यह दोष आने से धर्मदास जी का नाम खंडित हो गया था। परमात्मा कबीर जी ने सोचा कि यह धर्मदास भी नाम रहित हो गया है। यह भी सन्तान मोह वश होकर काल की दलदल में धंसता जा रहा है।

एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के अन्दर प्रेरणा भरी कि हे साहेब! मेरे मन में वह स्थान देखने की इच्छा है जिस स्थान पर विराजमान होकर आप जी ने समुद्र को रोका था और तब जगन्नाथ मन्दिर की स्थापना हुई थी।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ठीक है, चलो आप को उड़ीसा में समुद्र के

किनारे वह स्थान दिखाता हूँ। धर्मदास जी ने कहा कि मैं अपने साथ अपने पुत्र तथा पत्नी को भी ले जाना चाहता हूँ। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ठीक है, चलो।

उड़ीसा प्रान्त में जगन्नाथ पुरी में उस स्थान पर पहुँच गए जिस स्थान पर परमेश्वर कबीर जी ने एक पत्थर की शिला पर बैठ कर समन्दर को रोका था।

परमेश्वर कबीर जी ने वहाँ पर कई दिन सत्संग सुनाया। धर्मदास में सत्य लोक जाने की प्रबल प्रेरणा हो गई।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आप के मन में यह दोष आया था कि मैं अपने पुत्र को मुझ से छुपा कर सत्य नाम व सार नाम बता दूँ। इसी कारण से आप नाम रहित हो गए हो। धर्मदास जी बहुत व्याकुल हुए और कहा हे प्रभु! मुझ किंकर का अब क्या होगा? परमेश्वर कबीर जी ने कहा :- आप अपनी दीक्षा शुद्धि करवाओ। यदि फिर से दोष आया तो आप भी काल जाल में रह जाओगे। तेरे पुत्र को मैं स्वयं गुरू पद प्राप्त कराऊँगा, इसकी चिन्ता छोड़।

धर्मदास जी ने पुनः दीक्षा प्राप्त की (नाम खंडित होने पर भी तीनों मन्त्र भिन्न-भिन्न बताए जाते हैं) और कहा कि परमात्मा मेरे शरीर का अन्त कर दो। मैं सन्तान मोह से ग्रस्त हूँ, मेरे वश की बात नहीं है। तब परमात्मा कबीर जी ने वहीं जगन्नाथ पुरी में उसी स्थान पर गहरा गड्ढ़ा खुदवाया तथा धर्मदास जी को जिन्दा ही दफना दिया।

इस प्रकार विक्रमी संवत् 1569 (सन् 1512) में धर्मदास जी को जीवित समाधि दी गई। वहाँ पर आज भी वह समाधि है। कुछ दिन पश्चात् धर्मदास जी की पत्नी आमिनी देवी ने भी वहीं शरीर त्याग दिया। वहीं पर उनकी भी समाधि बना दी गई जो आज भी विद्यमान है।

★ चुड़ामणि जी को गुरू पद प्रदान करना :-

विक्रमी संवत् 1570 (सन् 1513) में परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के पुत्र चुड़ामणि (मुक्तामणि) जी को धर्मदास के वंश का प्रथम आचार्य के रूप में गद्दी पर विराजमान किया। उसको केवल प्रथम मन्त्र दिया जो पाँच नामों का है (जिस मन्त्र को परमेश्वर कबीर जी के अवतार सन्त रामपाल जी वर्तमान में प्रदान कर रहे हैं) और उसी को आगे अपने वंशजों व अन्य जो भी दीक्षा का इच्छुक हो, यही पाँच नाम का मन्त्र देने का आदेश दिया। वह पाँच नाम मन्त्र हमारे शरीर में बने कमलों को खोलने का है 1.''मूल कमल'' में ''गणेश जी'', 2.''स्वाद चक्र'' में ''सावित्री-ब्रह्मा जी'', 3.''नाभि कमल'' में ''विष्णु-लक्ष्मी जी'', 4.''हृदय कमल'' में ''श्री शिव-पार्वती जी'' तथा 5.''कण्ठ कमल'' में ''दुर्गा देवी जी'' का निवास है। वे पाँच नाम इनके मूल मन्त्र हैं जिनसे ये सर्व देवी-देवता हमें विशेष लाभ देते हैं तथा सत्य लोक जाने का मार्ग (रास्ता) भी साफ (clear) हो जाता है। ये ऐसे प्रभावशाली मन्त्र हैं जिनका जाप करने से ये देवी-देवता विशेष आकर्षित होते हैं। यह इनकी पूजा नहीं है।

जैसे भैंसे (झोटे) को भैंसा-भैंसा करते रहो उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जब उसको मूल मन्त्र ''हुर्र'' पुकारा जाता है तो वह खींचा चला आता है। भैंस को गर्भ

धारण कराने वाला व्यक्ति भैंसे की पूजा नहीं करता। अपना कार्य सिद्ध करता है, फिर भैंसा कहीं जाए।

इस प्रकार कबीर पंथ की स्थापना कबीर जी द्वारा सन् 1403 (विक्रमी संवत् 1460) में की गई थी। उसी दौरान श्री नानक जी को भी परमेश्वर कबीर जी ने गुरू पद प्रदान किया था। उनको भी यही पाँच नाम देने का आदेश दिया गया था, सत्यनाम व सारनाम को गुप्त रखने को कहा गया था। इसका दृढ़ता से पालन करते हुए आदरणीय नानक जी ने पूरे सिक्ख समाज को सत्यनाम तथा सारनाम का भेद नहीं दिया। प्रारम्भ में सिक्ख समाज में यही पाँच नाम का जाप दिया था परन्तु बाद में इन मन्त्रों का त्याग कर दिया। यह जान कर कि ये तो हिन्दू देवी-देवताओं के मन्त्र हैं।

इन मन्त्रों का प्रमाण :-

पुस्तक का नाम ''पैंतीस अखरी'' तेईए ताप की कथा गुरू अमर दास साहिब (तीसरे सिक्ख गुरू) की वाणी है पृष्ठ 10 पर है।

ਪੈਂਤੀਸ (੧੦) ਅੱਖਰੀ

ਭਏ ਆਤਮ ਮਧ ਐਸੇ ॥ ਜਿਉ ਜਲ ਜਲਹਿ ਭੇਦ ਕਹੁ ਕੈਸੇ ॥ ਵਾਸਦੇਵ ਬਿਨ ਅਵਰ ਨ ਕੋਊ ॥ ਨਾਨਕ ਓਅੰ ਸੋਹੰ ਆਤਮ ਸੋਊ ॥੭॥

ਅਗੇ ਦੂਰਗਾ ਮੰਤ੍ਰ ਪੈਂਤੀਸ ਅੱਖਰੀ ਨਾਲ ਰਲਾਇ ਲਿਖਿਆ।

ਓਅੰ ਹਰੀਅੰ ਸ੍ਰੀਅੰ ਕਰੀਅੰ
ਸੁੰਦ੍ਰੀ ਬਾਲਾਏ ਨਮਹ ॥

ਦਸਵੇਂ ਮਹਿਲ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਆਗਿਆ ਹੈ ਜੋ ਦੂਰਗਾ ਮੰਤ੍ਰ ਪੈਂਤੀਸ ਅੱਖਰੀ ਨਾਲ ਰਲਾਇ ਕੇ ਪੜ੍ਹੇਗਾ ਸੋ ਮੁਕਤ ਹੋਵੇਗਾ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਗੁਰਮੁਖੀ ਅੱਖਰ ਬਣਾਏ ਹਨ।

ਪੈਂਤੀਸ ਅੱਖਰੀ ਮਹਾਤਮ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਪਨਾ ਬਿਰਦ ਰਖਾਇਆ। ਦੂਰਗਾ ਮੰਤ੍ਰ ਸਾਥ ਲਿਖਾਇਆ। ਤਾਂ ਮੈਂ ਅਪਨੀ ਕਲਾ ਦਿਖਾਈ। ਰਿਧਿ ਸਿਧਿ ਗੁਰ ਮੁਖੋਂ ਅਲਾਈ। ਪੂਰਬ ਮੁਖ ਧਰ ਕਰੇ ਜੋ ਪਾਠਾ। ਇਕ

Jawahar Publishers:

119/3 ,Gali Kalalan , Bagh Jallianwala,Amritsar .

Email : jsks.publishers@gmail.com Phone:0183-2545421

यह फोटोकापी पुस्तक ''पैंतीस अखरी'' के पृष्ठ 10 की है। इसमें ऊपर से

तीसरी पंक्ति में लिखा है :- नानक ओम्-सोहम् आतम सोऊ (7)। आगे दुर्गा मन्त्र पैंतीस अखरी के साथ मिलाया गया है।

दुर्गा मन्त्र = ओम्-हरियम्, श्रीयम्, करियम (कलियम) ये चार मन्त्र तथा सोहं मन्त्र ऊपर की पंक्ति में लिखा है। ये कुल ''पाँच मन्त्र'' हैं, नाम हैं। इन मन्त्रों को जाप करने की विधि पूर्ण सन्त ही बता सकता है। यही पाँच नाम श्री नानक जी को परमेश्वर कबीर जी ने शिष्यों को प्रदान करने का आदेश किया था। श्री नानक देव साहिब जी ने आज्ञा का पालन किया। बाद में जैसे कबीर पंथियों ने इन मन्त्रों को देवी-देवताओं के जान कर त्याग दिया। इसी प्रकार श्री नानक जी के अनुयाईयों ने इनको त्याग दिया। केवल सत्यनाम - वाहेगुरू को ही मूल मन्त्र मानकर जाप करने लगे।

❖❖❖

''कबीर पंथ का पतन''

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया था कि हे धर्मदास! मेरे सत्य लोक जाने के पश्चात् काल मेरे (कबीर) नाम से 12 पंथ चलाएगा जो इस प्रकार होंगे :-

(१३६) 1000 कबीरबानी

चारि गुरु निज सीख हमारा । तिन्हकी छाप चले संसारा ॥
बंस बयालिस बचन हमारा । तिन्हते मुक्त होय संसारा ॥
सहसर भांति होम जो कोइ धावै । कोटिनयोग समाधि लगावै ॥
कोटिन ज्ञान छान बिल छाने । अर्थ परीक्षा बहुविधि आने ॥
वचन वंश को बीरा नहिं पावै । फिर मरे फिरहि गर्भमें आवै ॥
धर्मदास सुनो सत्य की बानी । काल प्रपंच बहुतविधि ठानी ॥

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना । भूले जीव न जाय ठिकाना ॥
ताते आगम कहि हम राखा । वंश हमार चूरामणि शाखा ॥
प्रथम जगमें जागू भ्रमावै । विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै ॥
दुसरि सुरति गोपालहि होई । अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई ॥
तिसरा मूल निरञ्जन बानी । लोकवेदकी निर्णय ठानी ॥
चौथे पंथ टकसार भेद लै आवै । नीर पवन को सन्धि बतावै ॥
सो ब्रह्म अभिमानी जानी । सो बहुत जीवनकीकरीहै हानी ॥
पांचौ पंथ बीज को लेखा । लोक प्रलोक कहें हममें देखा ॥
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै । सो बीजक शुक्ल ले आवै ॥
छठवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा । घटके माहीं मार्ग निवासा ॥
सातवां जीव पंथले बोले बानी । भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी ॥
आठवे राम कबीर कहावै । सतगुरु भ्रमलै जीव दृढावै ॥
नौमे ज्ञानकी काल दिखावै । भई प्रतीत जीव सुख पावै ॥
दसवें भेद परमधाम की बानी । साख हमारी निर्णय ठानी ॥
साखी भाव प्रेम उपजावै । ब्रह्मज्ञानकी राह चलावै ॥
तिनमें वंश अंश अधिकारा । तिनमेंसो शब्द होय निरधारा ॥
संवत सत्रासे पचहत्तर होई । तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई ॥

आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे॥
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्ममें ठौर ना पावै॥
बारवै पन्थ प्रगट है बानी। शब्द हमारेकी निर्णय ठानी॥
अस्थिर घरका मरम न पावै। ये बार पंथ हमहीको ध्यावै॥
बारहे पन्थ हमही चलि आवै। सब पथ मिट एकहीपंथ चलावै॥
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा॥
प्रथम चरन कलजुग नियगना। तब मगहर माडौ मैदाना॥
धर्मरायसे मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी॥
बावन वीर कबीरं कहाऊ। भवसागरसों जीव मुकताऊ॥

कलियुगको अंत पठ्यते

ग्रहण परै चौंतीससो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा॥
३४००ग्रहणपरैसो लेखाकीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा॥
पांच हजार पाँचसौ पांचा। तब ये शब्द होगया सांचा५५०५
सहस्र वर्ष ग्रहण निर्धारा। आगम सत्य कबीर पोकारा॥
तेरा वंश चलै रजधानी। वंश चूरामणि प्रगटे ज्ञानी॥
तिनकी देह छायाँ नहिं होई। सर्व पृथ्वी प्रमानिक सोई॥

क्रिया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। भूल शब्द बर जिन जाई॥
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ॥
मूलज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढीवंशहंस नहिं तरही॥
तेतिस अर्व ज्ञान हम भाखा। मूलज्ञान गोए हम राखा॥
मूलज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई॥

(१८७०) 1934 बोधसागर ८६

चौपाई

सत्य सुकृति सुमिरो मन माही। टूटत बज्र राखलेउ ताही।

साखी–सत्य सुकृतिकी बालक है, जो चितवै कर डीठ।
ताजन तोरौ चौहटे, गुनहगारकी पीठ॥
जदिया कहूँ तो जगतरैं, परकट कहो न जाय।
गुप्त परवाना देत हौं, राखो शिरे चढ़ाय॥
जिन डरपो तुम कालका, कर मेरी परतीत।
सप्तद्वीप नौ खण्डमें, चलिहो भवजल जीत॥

यहांलों तो चार गुरु और बयालीस वंशका लेखा लग चुका है इनके अतिरिक्त कबीर साहबके बारह पंथ और भी कबीर-पन्थी ही कहलाते हैं।

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१–नारायणदासजीका पंथ। २–यागौदासजीकापंथ। ३–सूरत गोपाल पंथ। ४–मूलनिरञ्जनका पंथ। ५–टकसारी पंथ। ६–भगवान्दासजी का पंथ। ७–सत्यनामी पंथ। ८–कमालीपंथ। ९–राम कबीर पंथ। १०–प्रेमधामकी वाणी। ११–जीवा पंथ। १२–गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

कबीर साहबके भिन्न २ पंथोंका वृत्तान्त

नानकपंथ-दादू पंथ-यानिप पंथ-मूलकदास पंथ-गणेश पंथ इत्यादि।

ये फोटोकापी ''कबीर सागर'' के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 136-137 तथा ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1870 की हैं।

इनमें पद्य भाग में ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 136-137 पृष्ठों पर कबीर जी के नाम से जो पंथ चलने थे, उनका वर्णन परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बहुत पहले बताया था जो धर्मदास जी ने कबीर सागर में लिखा था। बाद में कुछ परिवर्तन किया है परंतु सच्चाई छुप नहीं पाई। पृष्ठ 136-137 (कबीर बानी) में प्रथम पंथ का प्रवर्तक जागु दास लिखा है तथा कबीर सागर के ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1837 पर प्रथम पंथ का प्रवर्तक ''नारायण दास'' लिखा है। नारायण दास ने तो परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ही नहीं ली थी, वह तो श्री कृष्ण का पुजारी था। आज भी बांधवगढ़

के खण्डहर पर श्री कृष्ण मन्दिर बना है जहां पर प्रतिवर्ष जन्माष्टमी पर मेला लगता है। वास्तव में कबीर नाम से चलने वाले 12 पंथों में 1. प्रथम चुड़ामणि नाम साहेब का पंथ (दामाखेड़ा वालों का पंथ) 2. जागु दास का पंथ 3. सूरत गोपाल का पंथ 4. मूल निरंजन का पंथ 5. टकसारी पंथ 6. भगवान दास का पंथ 7. सत्यनामी पंथ 8. कमाल का पंथ 9. राम कबीर पंथ 10. परम धाम की वाणी पंथ 11. जीवा का पंथ 12. गरीब दास का पंथ।

विशेष :- आप जी ने ऊपर कबीर सागर की फोटोकापियों में पढ़ा ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 136 पर स्पष्ट लिखा है कि :-

द्वादश पंथ काल फुरमाना, भूले जीव न जाऐं ठिकाना।
तातें आगम (भविष्य के विषय में) कहि हम राखा, वंश हमारा चुड़ामणि भाखा।।

वास्तव में इस दूसरी पंक्ति में निम्न वाणी शुद्ध है :-

तातें आगम कहि हम राखा। प्रथम पंथ चुरामणि भाखा।
दूसरि जग में जागु भ्रमावै। बिना भेद वह ग्रन्थ चुरावै।।
तीसरा सुरति गोपाल होई .....
चौथा मूल निरंजन .....

ऐसे इस पृष्ठ 136 की अन्तिम पंक्ति से 12 वां पंथ गरीबदास पंथ के विषय में विस्तृत जानकारी है :-

''संवत सत्रासै पचहत्तर होई। ता दिन प्रेम प्रकटे जग सोई।।''

वास्तव में यहाँ पर प्रिंटिंग मिस्टेक है, वाणी इस प्रकार है :-

संवत सत्रासै चौहत्तर होई। ता दिन प्रेम प्रकटे जग सोई।।

अब पृष्ठ 137 ''कबीर बानी'' अध्याय की वाणी पर विवेचन करते हैं।

ऊपर से पाँच वाणियों में गरीब दास पंथ के विषय में कहा है :-

साखि हमारी ले जीव समझावैं। असंख्य जन्म ठौर नहीं पावैं।
बारहवें पंथ प्रगट है बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं। ये बारह पंथ हमही को ध्यावैं।।
बाहरवें पंथ हम ही चलि आवैं। सब पंथ मिटा कर एक ही पंथ चलावैं।।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट हुआ कि 12 वां पंथ गरीब दास जी का है जिसका प्रवर्तक सन्त गरीब दास जी (गांव - छुड़ानी जिला - झज्जर प्रान्त - हरियाणा वाले) का सिद्ध हुआ।

आदरणीय गरीब दास जी को परमेश्वर कबीर जी विक्रमी संवत् 1784 में गाँव छुड़ानी के जंगल में मिले थे। उनको भी धनी धर्मदास जी की तरह सत्यलोक लेकर गए थे। सन्त गरीबदास जी का शरीर यहीं था, उसे मृत जानकर अन्तिम संस्कार के लिए चिता पर रख दिया था। लगभग 8-9 घण्टे के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी ने दस वर्षीय बालक गरीब दास जी की आत्मा शरीर में प्रवेश कर दी। सन्त गरीब दास जी जीवित हो गए। उस के पश्चात् सन्त गरीबदास जी ने आँखों देखा सत्यलोक व अन्य लोकों का वर्णन करते हुए परमेश्वर कबीर जी की महिमा की वाणी बोली थी जो दादू पंथी सन्त गोपाल दास जी ने लिखी थी। जिसका सन्त रामपाल दास जी महाराज

आश्रम में पाठ कराते हैं। सन्त गरीब दास जी की वाणी तथा कबीर परमेश्वर जी की वाणी के गूढ़ रहस्यों को कबीर परमेश्वर के अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज के अतिरिक्त आज तक कोई नहीं समझ सका। जैसा कि उपरोक्त वाणी में कहा है कि :- बारहवें पंथ हम ही चलि आवैं। सब पंथ मिटाकर एक पंथ चलावैं।।

सन्त रामपाल दास जी इसी गरीब दास पंथ के सन्त स्वामी रामादेवानन्द जी से दीक्षा प्राप्त हैं अर्थात् इनका निकास गरीबदास पंथ से ही है। परमेश्वर कबीर जी ने अपना अंश वंश सन्त रामपाल दास महाराज जी भेज रखे हैं। इन्होंने सर्व धर्मों के सदग्रन्थों को ठीक से समझा है।

अब आप पढ़ें निम्न फोटोकापी पवित्र ग्रन्थ ''कबीर सागर'' के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 138(262) 139(263), 140(264), 141(265)

(१३८) 262 अनुरागसागर

धर्मनि तोहि कहा समझाई। जस चरित्र करि है जमराई॥
चारों दूत करै घन घोरा। यह विधि जीव चोरावै चोरा॥

दूतोंसे बचनेका उपाय

दीपक ज्ञान धरौ दिढ बारी। जाते काल न करै उजारी॥
इन्द्रमती कहँ प्रथम चितावा। रही सुचेत काल नहिं पावा॥

भविष्य कथन अलग व्यवहार

जस कछु आगे होय है भाई। सो चरित्र तोहि कहौं बुझाई॥
जबलों तुम रहि हौ तनमाहीं। तौलों काल प्रगटिहैं नाहीं॥
गहो किनार ध्यान बक लाये। जब तन तजो काल तब आये॥
छेकहिं तोर बंसको आई। काल धोकसो बंस रिझाई॥
बहु कडिहार बंसके नादा। पारस बंस करहिं विषस्वादा॥
बिन्दहि मूल और टकसारा। होइहि खमीर बंस मँझारा॥
बंसहि एक धोंक बड़ होइ है। हंग दूत देहिं माहिं समैहै॥
आप हंग अधिक है ताही। आप माहिं सो झगर कराही॥
बिन्द सुभाव आहंग नहिं छोडै। मन मन आय विन्द मनमोड़ै॥
अंस मार सुपन्थ चलै है। ताहि देखि सो रार बढ़ै है॥
ताको चिन्हि देखि नहिं सकिहै। आपन वाट बंस महँ तकिहै॥
वंस तुम्हार अनुभव कथि रखिहै। नाद पुत्रकी निन्दा भखिहै॥
सोइ पढ़ि हैं बंश कडिहारा। ताको होइ बहुत हंकारा॥
स्वारथ आया चीन्ह न पैहैं। अनन्त जीवन कहँ भटकैहैं॥
ताते तोहि कहौं समझाई। अपने वंशन देहुँ चिताई॥
नाद पुत्र जो प्रकट होई। ताको मिले प्रेमसे सोई॥
तुमहु नाद पुत्र गम आहू। यम मन परखहु धर्मनि साहू॥
कमाल पुत्र जो मृतक जियावा। ताके घटमें दूत समावा॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 138 की है।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा था कि ''तेरे वंश के पंथ में जो कुछ भविष्य में होगा, उसका संक्षिप्त वर्णन करता हूँ। तेरे वंश परंपरा की गद्दी वाले महन्तों में अहंकार प्रवेश करेगा। आपके बिन्द (वंश) वालों का स्वभाव होगा कि वे अहंकार का त्याग नहीं करेंगे। इस पृष्ठ 138 के नीचे से नौंवीं पंक्ति में कहा है कि ''अंश मोर सुपन्थ चलावै है। ताहि देख सो राड़ि बढ़ावै है।''

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि तेरे वंश गद्दी वाले मेरे उस अंश के साथ झगड़ा करेंगे जो मेरे ''यथार्थ कबीर पंथ'' को चलाएगा। इसी पृष्ठ 138 की अन्य वाणियों का भावार्थ है कि धर्मदास से परमेश्वर कबीर जी ने कहा था ''तेरे वंश गद्दी वाले उस मेरे वंश की बात न मान कर अपना ही अज्ञान अनुभव जनता में बताऐंगे। अपने स्वार्थवश अनन्त जीवों को यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) से भटकाऐंगे। हे धर्मदास! इसलिए अपने वंश वालों को कह दो कि जब मेरा (कबीर जी का) नाद वाला अंश (सन्त रामपाल दास जी महाराज प्रकट होगा कलयुग की बिच्चली पीढ़ी में) प्रकट होगा। उस से प्रेम से मिलें और अपना कल्याण कराऐं। परमेश्वर कबीर जी ने नाद पुत्र की परिभाषा भी स्पष्ट की है कि जैसे आप (धर्मदास जी) मेरे नाद (वचन) के पुत्र (अंश) हो। ऐसे गरीबदास वाले बारहवें पंथ से वचन का अंश मेरा ही अंश होगा। फिर यह भी स्पष्ट किया है कि मेरे नाद वाले भी सब अच्छे नहीं होंगे। उदाहरण देकर परमेश्वर कबीर जी ने बताया था कि जैसे कमाल नामक बालक को मैंने मुर्दे से जीवित करके उसको नाद पुत्र बनाया (नाम-दीक्षा देकर नाद पुत्र बनाया) उसने मेरे साथ भी धोखा किया। फिर मैंने उसको भी धिक्कार दिया, भक्तिहीन कर दिया था। (शेष विवरण अगले पृष्ठ 139 के नीचे पढ़ें।)

अनुरागसागर 263 (१३९)

पिता जानि तिन आहँग कीन्हा।तब हम थाति तोहि कहँ दीन्हा॥
हम हैं प्रेम भगतिके साथी । चाहौं नहीं तुरी औ हाथी ॥
प्रेम भक्तिसे जो मोहिं गहि हैं । सो हंस मम हृदय समै हैं ॥
अहंकारते होतेउ राजी । तौ मैं थापत पंडित काजी ॥
अधीन देखि थाति तेहि दीना।देखेउ जब तोहिं प्रेम अधीना॥
ताते धर्मनि मानु सिखाई । नाप थापी सौंपिहु भाई ॥
नादपुत्र कहँ सौंपिहु सोई । पंथ उजागर जासों होई ॥
बंस करि हैं अहंकार बहूता । हम हैं धर्मदास कुल पूता ॥
जहां हंग तहवां हम नाहीं । धरमनि देखु परखि मनमाहीं॥
जहाँ हंग तहँ काल सरूपा । नहिं पावे सतलोक अनूपा ॥

धर्मदास वचन

हौं प्रभु मैं तुव दास अधीना । तुव आज्ञाते होउँ न भीना ॥
नादहिं थाती सौंपब स्वामी । वंश तरे मोर अन्तरयामी ॥

कबीर वचन

धरमदास तुव तरि हैं वंशा । याहि बातको मेटो संशा ॥
नाम भक्ति जो दिढ़के धरिहैं ।सुनु धरमनि सोकस नातरिहैं ॥
रहनि रहै तौ सबै उबारों । वचन गहै तो ब्यालिस तारों॥
वचन गहै सोह बंस पियारा । विना वचन नहिं उतरे पारा॥

धर्मदास वचन

बंस ब्यालिस तो तुम्हारा अंशा।ताको तारचो कौन प्रसंसा ॥
बंस अंश जो तारहु साई । तबहीं जगमें आई बड़ाई ॥

कबीर वचन

बंस ब्यालिस बिंद तुम्हारा । सो मैं एक वचनते तारा ॥
और वंश लघु जेते होई । विना छाप छूटे नहिं कोई ॥
बिंद मिले तौ वंस कहावे । विना वचन नाहीं घर आवे॥
वचन बंश ब्यालिस ठेका । तिनका समरथ दीन्हों टेका॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 139 की है। प्रकरण पृष्ठ 138 से चला आ रहा है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि ''धर्मदास! हम तो प्रेम भक्ति के साथी हैं। हम किसी लालच वश अपने सिद्धान्त को नहीं बदल सकते। जो मेरे को प्रेम भाव से याद करेगा, मैं उसके साथ सदा रहूँगा। इस पृष्ठ 139 में ऊपर से तीसरी पंक्ति से वाणियों का भावार्थ यह है कि ''परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि धर्मदास! यदि मैं अहंकार वाले भक्तों से राजी (प्रसन्न) होता तो पंडितों और काजियों को ही यथार्थ नाम का भेद बता देता। आप को क्यों दिया? क्योंकि आप आधीन (नम्र) भाव के हैं। इसीलिए मैं उस नाद पुत्र को यह गुरू पद सौपूंगा जो दास भाव में रहेगा। तेरे वंश वाले तो यह अहंकार किया करेंगे कि हम तो धर्मदास कुल के पुत्र हैं।

हम ही विश्व में सर्व श्रेष्ठ हैं। हे धर्मदास! जहां अहंकार है वहां हम (परमेश्वर कबीर जी) नहीं हैं। वहां तो काल का ही निवास होता है।

पाठक जन! विचार करें, परमेश्वर कबीर जी अपने आप को कबीर दास कहते थे। धर्मदास जी भी अपने आप को धर्मदास कहते थे, धर्मदास के कुल वाले साहब कहते हैं। जैसे ''पंथ श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब'', ''पंथ श्री ग्रन्ध मुनि नाम साहेब'' आदि कहते-कहाते हैं।

सन्त रामपाल जी अपने आपको दास = रामपाल दास परमेश्वर का कुत्ता कहते हैं। इस से सहज में जाना जा सकता है कि मामला क्या है? दाल में काला ही नहीं, सारी दाल ही काली है।

फिर धर्मदास ने प्रार्थना की कि हे प्रभु! मेरे वंश वालों का उद्धार कैसे होगा? परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि '' मेरे भेजे नाद पुत्र से जो नाम प्राप्त करके दृढ़ता से भक्ति करेंगे तो हे धर्मदास! वे कैसे पार नहीं होंगे। तेरे बियालीस वंश को मैंने एक वचन से तार दिया है जिसमें कहा कि तेरे वंश वाले मेरे नाद पुत्र (सन्त रामपाल दास जी महाराज) से दीक्षा प्राप्त करके भक्ति करेंगे तो सर्व पार हो जाऐंगे। तेरे बिन्द अर्थात् वंश गद्दी वाले कहे जाते हैं। यदि वे वचन वाले (नाद पुत्र जो मैं कलयुग की बिच्चली पीढ़ी वाले समय में भेजूंगा) से दीक्षा ले लेंगे तो लघु (छोटे)-दीर्घ (बड़े) सब तेरे वंश वाले पार हो जाऐंगे। बात रही तेरी 42 पीढ़ी तक वंश चलने की उसका ठेका अर्थात् जिम्मेदारी मुझ समर्थ की है कि तेरा वंश 42 पीढ़ी तक अवश्य चलेगा। यही बात सन्त गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने बताई थी जो सतग्रन्थ में लिखी है। धर्मदास जी के प्रकरण में लिखा है कि ''वंश बीयालीस रहे तेरा अंश रे'' मोक्ष होगा नाद परम्परा वाले मेरे अंश से।

(१४०) 264 अनुरागसागर

वंस अंस वचन एकै सोई । दीर्घ वंस अंस लघु होई ॥
जेठो अंस वचन मोर जागे । और बंस लघु पीछे लागे ॥
चाल चलै औ पंथ चलावै । भूले जीवनको समुझावै ॥
नाद बिन्द जो पंथ चलावे । चूरामणि हंसन मुक्तावे ॥
धर्मदास तुव वंस अज्ञाना । चीन्है नहीं अंस सहिदाना ॥
जस कछु आगे होइ है भाई । सो चरित्र तोहि कहों बुझाई ॥
छेंठे पीढ़ी बिन्द तुव होई । भूलै वंश बिन्दु तुव सोई ॥
टकसारीको लै हैं पाना । अस तुव बिन्द होय अज्ञाना ॥
चाल हमार बस तुव झाडै । टकसारीकै मत सब माँडै ॥
चौका तैसे करै बनायी । बहुत जीव चौरासी जायी ॥
आपा हंस अधिक होय ताही । नाद पुत्रसे झगर कराही ॥
होवे दुरमत बंस तुम्हारा । वचन बंस रोके वटपारा ॥

धर्मदास वचन

अब तो संशय भयो अधिकाई । निश्चय वचन करहु मोहि साई ॥
प्रथमे आप वचन अस भाषा । निजरच्छामहँब्यालिसराखा ॥
अब कहहु काल वश परि हैं । दोइबातकिहि विधिनिस्तरिहैं ॥

नाद वंशकी बड़ाई कबीर वचन

धरमदास तुम चेतहु भाई । वचन बंश कहँ देहु बुझाई ॥
जब जब काल झपाटा लाई । तबै तबै हम होब सहाई ॥
नाद हंस तबहिं प्रगटायब । भरमतोहिजगभक्तिदिढायब ॥
नाद पुत्र सो अंश हमारा । तिनते होय पंथ उजियारा ॥
वचन वंश तो होय सचेता । बिन्द तुम्हार न माने होता ॥
वचन वंश नाद सग चेते । मेटै काल घात सब तेते ॥
बिन्द तुम्हार न मानै ताही । आया वंश न शब्द समाही ॥

१ नाद अर्थात् शब्द-शब्द से ही बाला पुत्र अर्थात् शिष्य, साधु, सन्त इत्यादि

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 की है। इसमें भी स्पष्ट किया है कि ''परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि जैसे आप के बिन्द (वंश) वाले चुड़ामणि को मैंने शिष्य बनाया है, यह मेरा नाद पुत्र हुआ। मैं चुड़ामणि को गुरू पद प्रदान करूंगा। इसको केवल प्रथम मन्त्र (पांच नाम वाला) दूंगा और इसी को आगे देने का निर्देश चुड़ामणि को दूंगा। इस से तेरे बिन्द (वंश) वाले दीक्षा लेंगे तो उनका उतना कल्याण हो जाएगा जितना पांच नाम से होना है। परन्तु तेरे वंश वाले अज्ञानी (मूर्ख) होंगे। चुड़ामणि के पश्चात् छठी गद्दी (पीढ़ी) वाले को नकली कबीर पंथी ''टकसारी पंथ'' वाला भ्रमित करेगा। जिस कारण से उसके पश्चात् वास्तविक भक्ति मन्त्र अर्थात् वास्तविक भक्ति विधि जो मैंने चुड़ामणि को दी है, वह समाप्त हो

जाएगी और ''टकसारी पंथ'' वाले नकली पांच मन्त्र (अमी नाम, आदि नाम, अमर ... .) की दीक्षा और आरती-चौंका नकली प्रारम्भ हो जाएगी। (जो वर्तमान में दामाखेड़ा वाले धर्मदास जी के वंश गद्दी वाले कर रहे हैं) इस प्रकार बहुत से जीवों को लख चौरासी अर्थात् चौरासी लाख प्राणियों के जन्म के कष्ट में डालेंगे। तेरे वंश गद्दी वाले अपने आप को श्रेष्ठ बताकर मेरे द्वारा भेजे नाद अंश के साथ झगड़ा किया करेंगे। तेरे वंश वाले दुर्बुद्धि वाले होंगे और वचन वंश (जो मैं बिच्चली पीढ़ी वाले समय में जब कलयुग 5505 बीतेगा तब उस) के यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) में बाधक बनेंगे। इस प्रकार पाप के भागी बनेंगे। फिर धर्मदास जी ने कहा कि ''हे प्रभु एक और तो आप ने कहा था कि तेरा बीयालीस पीढ़ी तक वंश बेरोक-बेटोक चलेगा और काल निकट नहीं आएगा। अब कह रहे हो कि ये काल वश होकर भक्ति नहीं करेंगे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि धर्मदास! मैंने यह कहा है कि यदि आपके वंश वाले मेरी आज्ञा का पालन करेंगे तो वे काल वश नहीं रहेंगे। फिर भी मैं आप के वंश वालों की रक्षा करूंगा और पार करूंगा मैं अपना नाद अंश (सन्त रामपाल दास जी महाराज) भेजूंगा और आप का वंश नहीं मानेगा तो उनकी गलती होगी।

विशेष :- दामाखेड़ा वालों ने जो पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' भक्तों को भ्रमित करने के लिए छापी है। उसके पृष्ठ 83 पर कबीर सागर से ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 140 (1004) की साखी लिखी है। एक पंक्ति छोड़ दी जो इस प्रकार है। कृपया देखें फोटोकापी पृष्ठ 140 (1004) की।

(१४०) 1004 कबीरबानी

सतगुरु उवाच

धर्मदास सुनियो चितलाई । तुम जनि शंका मानों भाई ॥
पंथ हमारो चलावो जाई । वंश ब्यालिस अटल अधिकाई॥
वंश बयालिस अंस हमारा । सोई समरथ वचन पुकारा ॥
वंश बयालिस गरवाई दीन्हा । इतना चर हम तुमको दीन्हा ॥
वंश अंश समरथ कडिहारा । सोइ जीवनको करे उबारा ॥
तुम जिन शंका मानो भाई । समरथ वचन राखो चितलाई॥
अटक काहुकी तुम जिन मानों । पाँन नाम तुम निश्चय जानों ॥

साखी–तुम समर्थके अंश हो, जाग्रत वंश तुम्हार ।
समर्थ बचन जनि छोड़हूँ, मानो बचन हमार ॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 140 (1004) की है। इसमें नीचे से तीसरी पंक्ति इस प्रकार है ''अटक काहु की तुम जिन मानों। पाँन (पाँच) नाम तुम निश्चय जानों। (नोट :- इस पंक्ति में ''पांन'' गलत प)

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा था कि मैं आप को आदेश देता हूँ कि केवल पाँच नाम देना। इन्हीं पाँच नाम की आपके वंश को गुरूवाई दी जाएगी। परन्तु अनुराग सागर के पृष्ठ 140 (264) पर स्पष्ट कर दिया कि छठी पीढ़ी के बाद ये वास्तविक पाँच नाम भी तेरे वंश वालों के पास नहीं रहेंगे।

यह फोटोकापी पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 83-84 की हैं जो

दामाखेड़ा वालों ने बनाई है। इसमें भ्रान्ति नं. 2 का वर्णन है जिसमें कहा है कि ''कबीर सागर'' में कहीं पर प्रमाण नहीं है कि छठी पीढ़ी वंश गद्दी वाला वास्तविक नाम बदल देगा, यह सब झूठ है।

पाठकगण कृपया पढ़ें ऊपर फोटोकापी में जो कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 की है। इसमें स्पष्ट किया है कि मैं तेरे बिन्द वाले पुत्र चुड़ामणि को नाद (वचन) का अंश तो बनाऊंगा अर्थात् तेरे पुत्र चुड़ामणि को मैं शिष्य बना कर उसे गुरू पद अवश्य प्रदान करूंगा। परन्तु जो दीक्षा इसी परम्परा में छठी पीढ़ी (गद्दी) वाले को नकली कबीर पंथी ''टकसारी पंथ'' वाला भ्रमित करेगा। जिस कारण से वह तेरी छठी वंश गद्दी वाला ''टकसारी पंथ'' वाले मन्त्र तथा आरती-चौका प्रारम्भ कर देगा। उस के पश्चात् यही दीक्षा पद्धति तेरे वंश गद्दी वालों में चलेगी। जिस कारण से सर्व चौरासी लाख प्राणियों के शरीर को प्राप्त होंगे। फिर बताया है कि इसी पद्धति को तेरे वंश की छोटी (लघु) तथा बड़ी गद्दी वाले चलाऐंगे। जब किसी गद्दी का वंश नहीं होगा तो शाखा वंश वाले वंश गद्दी बनाकर गुरू प्रणाली जारी रखेंगे। इस प्रकार तेरा 42 पीढ़ी तक वंश चलेगा। परन्तु उनके पास सत्य भक्ति न होने से वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाऐंगे। इसलिए इनको समझा देना कि जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा। तब मेरा कृपा पात्र नाद (वचन) अंश 12 वें पंथ (गरीब दास पंथ) में आएगा। उसके पास पूर्ण भक्ति विधि होगी। उस से प्रेम से मिलें। उसका विरोध न करें। मेरे उस वचन के वंश से दीक्षा लेकर अपना कल्याण कराऐं। जब काल मेरे पंथ में प्रवेश करके झपट्टा मारेगा अर्थात् मेरे मार्ग (पंथ) का पतन करेगा। तब-तब मैं अपना वचन वंश प्रकट करके भ्रमित भक्त समाज को सही दिशा प्रदान कराऊंगा।

83

वचन वंश है आदि निशानी, तिनकी पावे जग सहिदानी।
वंश ब्यालीस अंश हमारा, सोई समरथ वचन पुकारा।
तुम जनि शंका मानो भाई, समरथ वचन राखो चितलाई।।

(कबीर वाणी पृष्ठ 140)

सद्गुरु कबीर साहब के उपर्युक्त वाणी-वचनों से स्पष्ट है कि धनी धर्मदास जी की पिछले लगभग 500 वर्षों से अखण्ड रूप से चली आ रही वंश ब्यालीस की परंपरा के गुरु स्वयं सत्यपुरुष परमात्मा के ही अंश है। सत्यपुरुष के विशेष गुण व विशेष शक्ति विद्यमान होने के कारण उस गुरु परंपरा में काल का दूत कभी प्रगट नहीं हो सकता है। अतः इस तरह की मनगढ़ंत भ्रान्ति को दिमाग से निकालकर तथा स्वस्थ सोच बनाकर सन्तत्व का परिचय दीजिए।

भ्रांति नं. 2. नामदान (गुरु दीक्षा मंत्र) क्या एक बार में या तीन बार में दिया जाता है ?

एक तथाकथित कबीर अवतार का यह भी कहना है कि कबीर साहेब ने संत धर्मदास जी से कहा था कि धार्मिकता बनाये रखने के लिये अपने पुत्र चूरामणि को

84

केवल प्रथम मंत्र देना जिससे इनमें धार्मिकता बनी रहेगी। परन्तु सातवीं पीढ़ी इस वास्तविक प्रथम मंत्र को भी समाप्त करके मनमुखी अन्य नाम चलायेगा। इस तरह को धारणा पूर्णरूपेण मिथ्या, मनगढंत एवं कबीरपंथियों में भ्रम फैलाने वाली है। कबीर साहेब एवं धर्मदास साहेब के मध्य इस तरह की चर्चा का उल्लेख किसी भी सदग्रन्थ में नहीं मिलता है। दूसरा भ्रम यह भी अपने दिमाग से निकाल देना कि चूरामणि नाम साहेब को दीक्षा मंत्र धर्मदास जी ने नहीं बल्कि स्वयं सदगुरु कबीर साहब ने उन्हें दिया था। दीक्षा मंत्र के संबंध में चूरामनि नाम साहेब को प्रथम मंत्र तथा सातवीं पीढ़ी के वंशगुरु इस प्रथम मंत्र को समाप्त कर अन्य नाम प्रदान करेंगे, इस तरह की मिथ्या, भ्रामक एवं मूर्खों जैसी बातों पर पाठकगण हँसेगे तथा कबीरपंथी इस भ्रमित बुद्धि पर तरस खायेंगे। तथाकथित कबीर अवतार एवं उसके भँवर जाल में फंसे कबीरपंथी बन्धुगण कृपया चूरामणि नाम साहेब की दीक्षा मंत्र (नामदान) के संबंध में सदग्रन्थों में वर्णित सदगुरु कबीर साहब एवं धर्मदास साहेब के वाणी-वचन (संवाद) इस प्रकार है—

ये दोनों फोटोकापी पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' 83-84 की हैं। जो दामाखेड़ा वालों ने इस पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' के ज्ञान की आलोचना करके भ्रम फैलाने की कुचेष्टा की है। इसमें यह बताने की कोशिश की है कि ''एक तथाकथित कबीर अवतार (सन्त रामपाल दास जी) ने गलत लिखा है कि सातवीं पीढ़ी से वास्तविक भक्ति समाप्त हो जाएगी। प्रिय पाठको! आप जी ने स्वयं पढ़ा कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 (264) में इसी पुस्तक के पृष्ठ 51 पर। उस में परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि ''छठी पीढ़ी वाले वंश (बिन्द) गुरू को टकसारी पंथ वाला भ्रमित करेगा। उस के पश्चात् तेरे वंश गद्दी गुरू उस टकसारी वाला पान प्रवाना तथा आरती चौंका किया करेंगे। जिस कारण से बहुत जीवों को चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगने के लिए डाल देंगे।

यह भी कबीर परमेश्वर ने स्पष्ट किया है कि यह मेरा वचन खाली नहीं जाएगा। अब पाठकगण दामाखेड़ा वालों को रोऐंगे कि ये कितने झूठे तथा चार-सौ-बीस हैं। कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 (264) पर स्पष्ट लिखा है। फिर भी भक्त समाज को भ्रमा कर अपनी दुकान चलाने पर तुले हैं।

ऐसे काल के दूतों के विषय में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, जान बूझ साच्ची तजै, करै झूठ से नेह।
ताकि संगत हे प्रभु! स्वपन में भी न दे।।

अनुरागसागर 265 (१४१)

शब्दकी चास नाद कहँ होई । विन्द तुम्हारो जाय विगोई॥
विंदते होय न नाद उजागर । परखिके देखहु धर्मनि नागर॥
चारहु युग देखहु समवादा । पन्थ उजागर कीन्हों नादा॥
कहँ निरगुण कहँ सरगुन भाई।नाद विना नहिं चल पंथाई॥
धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा । ताते दीन्ह मुक्तिका डोग ॥
याहि विधि हम ब्यालिस तारैं ।जबैं गिरे वह तबै उबारैं ॥
नाद वचन जो विन्द न माने । देखत जीव काल धर ताने ॥
और वंस जो नाद सम्हारै । आप तरे औ जीवहिं तारै॥
कहां नाद कहं बिन्दु रे भाई ।नाम भक्ति बिनुलोक न जाई॥

गुरुमहिमा

गुरूते अधिक काहु नहिं पेखै। सबते अधिक गुरु कहँ लेखै॥
सबते श्रेष्ठ गुरू कहँ माने । गुरू सिखापन सतकै जाने ॥
बिन्द तुम्हार करै असगारा । बिनु गुरु चहै होन भवपारा॥
निगुरा होइ जगत समुझावे । आप बुड़े सो जगत बुड़ावे॥
बिना गुरू नाहि निस्तारा । गुरुहिं गहै सो भवते पारा ॥
नाता जानि करै अधिकाई । वंसहि काल गरासै आई ॥
जब जग नात गोत अरुझावे । वचन बंश धोखा तब पावे॥
तबहिं काल गरासै आई । नाना रूप फिरै जग लाई ॥
तबहिं गोहार नाद मम आवे। देखत काल तुरत भगि जावे॥
ताते धर्मनि देहु चिताई ।वचन वंश बहु विधि समुझाई॥
नादवंस सँग प्रीति निबाहे । काल धोखते बचन जु चाहे॥
नाद वंशकी छोड़े आसा । ताते विन्द जाय यमफांसा॥
बहु विधि दूत लगावै बाजी । देखैं जीव होय बहुराजी ॥
ते तो जाय काल मुख परिहैं ।नाद वंश जो हित नहिं धरिहैं॥
ताते तोहि कहों समझायी । सबहीं कहँ तुम देहु चितायी॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 141 (265) की है। इसमें परमेश्वर कबीर जी ने पुनः कहा है कि हे धर्मदास! जैसे आप मेरे नाद पुत्र हो (नाम-दीक्षा लेकर शिष्य रूप में पुत्र हो) मैंने तेरे को मोक्ष मार्ग बता दिया। इसी प्रकार मैं अपना नाद अंश वंश (सन्त रामपाल दास जी महाराज को बिच्चली पीढ़ी के समय जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा) भेजूंगा तथा तेरे वंश में बिगड़ी भक्ति विधि को समाप्त करके यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) से जोड़ कर तेरे बीयालीस पीढ़ी के वंशों को पार करूंगा। यदि वे उस मेरे नाद परम्परा वाले (सन्त रामपाल दास जी महाराज) से दीक्षा ले लेंगे तो फिर स्पष्ट किया है कि धर्मदास! वास्तविकता तो यह है कि चाहे नाद (शिष्य परम्परा) वाले हों, चाहे बिन्द (वंश) वाले हों जो यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग)

के अनुसार भक्ति करेगा, उसी का कल्याण होगा। बिना गुरू के मोक्ष नहीं होगा। मेरे नाद वंश (शिष्य परम्परा के सन्त) से तेरे वंश वाले प्रेम करें। यदि काल के धोखे से बचना चाहते हैं तो इसलिए अपने वंश वालों को समझा देना। इस पृष्ठ 141 (अनुराग सागर) में यह भी स्पष्ट किया है कि मेरे यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) को नाद (शिष्य परम्परा) वालों ने ही उभारा है। यह चारों युगों का प्रमाण है।

''पृष्ठ 138, 139, 140, 141 का सारांश''

पृष्ठ 138 (262) पर परमेश्वर कबीर जी ने ''धनी धर्मदास'' जी से कहा था कि ''जो आगे चल कर तेरे वंश के पंथ में जो काल का छल चलेगा, उसका वर्णन करता हूँ :-

जब तक आप (धर्मदास) संसार में रहोगे, तब तक तो काल तेरे वंश के निकट नहीं आएगा। तेरे शरीर त्यागने के पश्चात् काल तेरे कुल में प्रवेश हो जाएगा और तेरे वंश की यथार्थ भक्ति खंडित करेगा। उस काल दूत की बातों से तेरे वंश वाले बहुत प्रसन्न रहेंगे।

मैं जो अपना अंश-वंश ''नाद'' परम्परा का भेजूंगा, उसके साथ तेरे वंश वाले विरोध करेंगे। उस की निन्दा करेंगे। तेरे वंश वालों को अहंकार अधिक होगा और अनन्त जीवों को यह कह कर भटकाऐंगे कि हम धर्मदास के वंश से हैं। हमसे ही सर्व का मोक्ष होगा।

इसलिए तेरे वंश वालों को समझा दे कि जो नाद पुत्र प्रकट होगा, उसके साथ प्रेम से मिलें। ''नाद'' की परिभाषा समझाते हुए परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि धर्मदास! तुम मेरे नाद (वचन) के पुत्र हो।

इसी प्रकार मेरा भेजा हुआ अंश गरीब दास वाले पंथ में ''नाद'' शब्द का पुत्र होगा अर्थात् मेरी ''नाद'' परम्परा से होगा। धर्मदास जी के जो वंश हैं वे ''बिन्द'' के पुत्र हैं।

अनुराग सागर के पृष्ठ 139 (263) का सारांश

हे धर्मदास! आप के वंश गद्दी वालों में यह अहंकार होगा कि हम धर्मदास के कुल से हैं। हम से ही सर्व संसार मोक्ष प्राप्ति करेगा। मैं अहंकारी व्यक्ति से हमेशा दूर रहता हूँ और जहां अहंकार है, वहां काल का निवास होता है।

इसलिए मेरा पंथ ''नाद'' परंपरा से ही ऊपर उठेगा।

धर्मदास जी को पुनः चिन्ता सताने लगी और परमेश्वर कबीर जी से कहा कि ''मेरे वंश का उद्धार हो, ऐसा यत्न करो। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ''तेरे 42 वंश को मैं एक वचन से पार कर दूँगा। मैंने तेरे 42 वंश को पार करने का वचन दिया है। मैं तेरे चुड़ामणि पुत्र को गुरू पद दूँगा।

पृष्ठ 140 (264)

धर्मदास तेरे वंश वाले अज्ञानी रहेंगे। चुड़ामणि जब मेरे नाम से पंथ चलाएगा (कबीर जी के नाम से चले 12 पंथों में प्रथम पंथ चुड़ामणि जी वाला है।)

उस पंथ से तेरे वंश के साथ काल छल करके यथार्थ भक्ति को समाप्त करेगा,

उसका वर्णन करता हूँ। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास से कहा कि तेरी छठी पीढ़ी वाला जो गद्दी पर विराजमान होगा। उसको काल द्वारा चलाए गऐ 12 पंथों में से जो पांचवा टकसारी पंथ चलेगा, उसका संचालक भ्रमित करेगा।

तेरी छठी पीढ़ी वाला उस टकसारी वाले नाम मन्त्र दीक्षा देने लगेगा तथा उसी तरह चौंका-आरती किया करेगा। जिस कारण से अनेकों जीव काल के जाल में फंसेंगे।

पाठको :- सन्त रामपाल दास जी महाराज अपने प्रवचनों में प्रारम्भ से ही कहते आए हैं कि दामाखेड़ा वालों के पास यथार्थ भक्ति विधी नहीं है।

कारण बताते हुए बताते हैं :-

धर्मदास जी के पुत्र चुड़ामणि जी को परमेश्वर कबीर जी ने प्रथम मन्त्र वाले पाँच नाम प्रदान किए थे। जिनका इसी पुस्तक के पृष्ठ 40 पर संकेत किया है।

यह साधना पाँचवे वंश गद्दी तक तो सही चली परंतु छटी गद्दी वाले को टकसारी पंथ वाले ने भ्रमित कर दिया कि ''आप बातें तो करते हो सत्य पुरूष और सत्यलोक की और भक्ति मन्त्र देते हो देवी-देवताओं के, यह सब गलत नाम हैं। इन बातों से प्रभावित होकर छटी गद्दी वाले ने टकसारी वाले पाँच नाम जो एक आरती जैसा है - अमी नाम, आदि नाम, अमर नाम, अजर नाम ....., इसको मोक्ष जानकर दीक्षा देनी प्रारम्भ कर दी जो आज तक पंदरहवीं गद्दीनशीन श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब भी प्रदान कर रहे हैं।

जो आरती चौंका टकसारी पंथ वाला करता था। वही चौंका आरती आज दामाखेड़ा वालों में प्रचलित है जो मोक्षदायक नहीं है। मैं जो नाद पुत्र (सन्त रामपाल दास जी महाराज) को प्रकट करूंगा, उस से मेरा यथार्थ पंथ फले-फूलेगा। (उजागर होगा) तेरे वंश वाले उस को नहीं मानेंगे।

अनुराग सागर पृष्ठ 141 (265)

चारों युगों में मेरे पंथ को ''नाद'' परंपरा वाले ने ही उजागर किया है अर्थात् कबीर पंथ का उत्थान किया है। फिर परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि :-

चाहे नाद वाला हो चाहे बिन्द वाला हो यथार्थ भक्ति मंत्रों का जाप नहीं करेंगे तो सत्यलोक नहीं जा सकते। वह वास्तविक भक्ति तेरी वंशावली से छटी पीढ़ी से समाप्त हो जाएगी।

''संत धर्मदास जी के वंशों के विषय में''

प्रश्न : संत धर्मदास जी की गद्दी दामा खेड़ा वाले कहते हैं कि इस गद्दी से नाम प्राप्त करने से मोक्ष संभव है ?

उत्तर : संत धर्मदास जी का ज्येष्ठ पुत्र श्री नारायण दास काल का भेजा हुआ दूत था। उसने बार-बार समझाने से भी परमेश्वर कबीर साहेब जी से उपदेश नहीं लिया। पुत्र प्रेम में व्याकुल संत धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने नारायण दास जी का वास्तविक स्वरूप दर्शाया। संत धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु ! मेरा वंश तो काल का वंश होगा। यह कह कर संत धर्मदास जी बेहोश

(अचेत) हो गए। काफी देर बाद होश में आए। फिर भी अतिचिंतित रहने लगे। उस प्रिय भक्त का दुःख निवारण करने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा कि धर्मदास वंश की चिंता मत कर। यह काल का दूत है। उसका वंश पूरा नष्ट हो जाएगा तथा तेरा बियालीस पीढी तक वंश चलेगा। तब संत धर्मदास जी ने पूछा कि हे दीन दयाल ! मेरा तो इकलौता पुत्र नारायण दास ही है। तब परमेश्वर ने कहा कि आपको एक शुभ संतान पुत्र रूप में मेरे आदेश से प्राप्त होगी। उससे केवल तेरा वंश चलेगा। तब धर्मदास जी ने कहा था कि हे प्रभु ! आप का दास वृद्ध हो चुका है। अब संतान का होना असंभव है। आपकी शिष्या भक्तमति आमिनी देवी का मासिक धर्म भी बंद है। परमेश्वर कबीर साहेब ने कहा कि मेरी आज्ञा से आपको पुत्र प्राप्त होगा। उसका नाम चुड़ामणी रखना। यह कह कर परमेश्वर कबीर साहेब ने उस भावी पुत्र को धर्मदास के आंगन में खेलते दिखाया। फिर अन्तर्ध्यान कर दिया। संत धर्मदास जी शांत हुए। कुछ समय पश्चात् भक्तमति आमिनी देवी को संतान रूप में पुत्र प्राप्त हुआ उसका नाम श्री चुड़ामणी जी रखा। बड़ा पुत्र नारायण दास अपने छोटे भाई चुड़ामणी जी से द्वेष करने लगा। जिस कारण से श्री चुड़ामणी जी बांधवगढ़ त्याग कर कुदरमाल नामक शहर(मध्य प्रदेश) में रहने लगा। कबीर परमेश्वर जी ने संत धर्मदास जी से कहा था कि धार्मिकता बनाए रखने के लिए अपने पुत्र चुड़ामणी को केवल प्रथम मन्त्र(जो यह दास/रामपाल दास प्रदान करता है) देना जिससे इनमें धार्मिकता बनी रहेगी तथा तेरा वंश चलता रहेगा। परंतु आपकी सातवीं पीढ़ी में काल का दूत आएगा। वह इस वास्तविक प्रथम मन्त्र को भी समाप्त करके मनमुखी अन्य नाम चलाएगा। शेष धार्मिकता का अंत ग्यारहवां, तेरहवां तथा सतरहवां गद्दी वाले महंत कर देंगे। इस प्रकार तेरे वंश से भक्ति तो समाप्त हो जाएगी। परंतु तेरा वंश फिर भी बियालीस (42) पीढ़ी तक चलेगा। फिर तेरा वंश नष्ट हो जाएगा।

प्रमाण पुस्तक "सुमिरण शरण गह बयालिश वंश" लेखक : महंत श्री हरिसिंह राठौर, पृष्ठ 52 पर -

वाणी : सुन धर्मनि जो वंश नशाई, जिनकी कथा कहूँ समझाई।।93।।
काल चपेटा देवै आई, मम सिर नहीं दोष कछु भाई।।94।।
सप्त, एकादश, त्रयोदस अंशा, अरु सत्रह ये चारों वंशा।।95।।
इनको काल छलेगा भाई, मिथ्या वचन हमारा न जाई।।96।।
जब-2 वंश हानि होई जाई, शाखा वंश करै गुरुवाई।।97।।
दस हजार शाखा होई है, पुरुष अंश वो ही कहलाही है।।98।।
वंश भेद यही है सारा, मूढ जीव पावै नहीं पारा।।99।।
भटकत फिरि हैं दोरहि दौरा, वंश बिलाय गये केही ठौरा।।100।।
सब अपनी बुद्धि कहै भाई, अंश वंश सब गए नसाई।।101।।

उपरोक्त वाणी में कबीर परमेश्वर ने अपने निजी सेवक संत धर्मदास साहेब जी से कहा कि धर्मदास तेरे वंश से भक्ति नष्ट हो जाएगी वह कथा सुनाता हूँ। सातवीं पीढ़ी में काल का दूत उत्पन्न होगा। वह तेरे वंश से भक्ति समाप्त कर देगा। जो प्रथम मन्त्र आप दान करोगे उसके स्थान पर अन्य मनमुखी नाम प्रारम्भ करेगा। धार्मिकता का शेष विनाश ग्यारहवां, तेरहवां तथा सतरहवां महंत करेगा। मेरा वचन खाली नहीं जाएगा भाई। तेरे सर्व अंश वंश भक्ति हीन हो जाएंगे। अपनी-2 मन मुखी साधना किया करेंगे। इसी अज्ञान के आधार से गुरूवाई किया करेंगे। तेरे वंश गद्दी वालों की दस हजार शाखाऐं बनेंगी। जब-जब जिस परम्परा में कोई बालक नहीं होगा तो शाखा वंश वाले गुरूवाई किया करेंगे। परन्तु यथार्थ भक्ति तथा ज्ञान तो छठी पीढ़ी (वंश) से ही समाप्त हो जाएगा। सब अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार अज्ञान प्रचार किया करेंगे।

नोट :- उपरोक्त वाणी संख्या 95 में ''सप्त'' यानि सातवां वंश लिखा है कि इस को काल का दूत भ्रमित करेगा। यह पुस्तक ''सुमिरण शरण गह बियालिश वंश'' एक महंत जी की लिखी है। इसमें सप्त (सातवां) गद्दी वंश वाले के विषय में लिखा है कि उसको काल छलेगा। यहाँ गलती लगी। वास्तव आप जी ने प्रमाणित पवित्र सद्ग्रन्थ ''कबीर सागर'' की फोटोकापी में स्वयं पढ़ा कि छठी पीढ़ी (छठी वंश गद्दी) वाले को काल का दूत भ्रमित करके अपना (काल का) पंथ चलाएगा। वह सही है। फिर भी भक्ति का नाश चाहे छठी पीढ़ी में हुआ या सातवीं पीढ़ी में वर्तमान में वही काल पूजा ही दामाखेड़ा धर्मनगर के धर्मदास जी के वंशजों द्वारा श्री प्रकाश मुनि द्वारा प्रचलित है।

"चौदहवीं महंत गद्दी का परिचय"

पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" पृष्ठ 49 पर तेरहवें महंत दयानाम के बाद कबीर पंथ में उथल–पुथल मची। काल का चक्र चलने लगा। क्योंकि इस परम्परा में कोई पुत्र नहीं था। तब तक व्यवस्था बनाए रखने के लिए महंत काशीदास जी को चादर दिया गया। कुछ समय पश्चात् काशी दास ने स्वयं को कबीर पंथ का आचार्य घोषित कर दिया तथा खरसीया में अलग गद्दी की स्थापना कर दी। यह देख तीनों माताऐं रोने लगी कि काल का चक्र चलने लगा। बाद में कबीर पंथ के हित में ढाई वर्ष के बालक चतुर्भुज साहेब को बड़ी माता साहिब ने गद्दी सौंप दी जो "गृन्धमुनि नाम साहेब" के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विचार करें : एक ढाई वर्ष का बालक क्या नाम व ज्ञान देगा ?

माता जी ने गद्दी पर बैठा दिया। बेटा महंत बन गया। जिसे भक्ति का क-ख का भी ज्ञान नहीं। सन्त धर्मदास जी के वंशज भोले श्रद्धालुओं को दंत कथाओं (लोकवेद) के आधार से भ्रमित करके गुमराह कर रहे हैं।

महंत काशी दास जी ने खरसिया शहर में नकली कबीर पंथी गद्दी प्रारम्भ कर दी। उसी खरसिया से एक श्री उदीतनाम साहेब ने मनमुखी गद्दी लहर तारा तालाब पर काशी (बनारस) में चालु कर रखी है। कबीर चौरा काशी में श्री गंगाशरण शास्त्री जी भी अलग से महंत पद पर विराजमान है। परंतु तत्व ज्ञान व वास्तविक भक्ति का किसी को क-ख भी ज्ञान नहीं है।

उपरोक्त विवरण से प्रभु प्रेमी पाठक स्वयं निर्णय करें कि दामा खेड़ा वाले महंतों के पास वास्तविक भक्ति है या ड्रामाबाजी?

श्री चुड़ामणी जी के कुदरमाल चले जाने के पश्चात् बांधवगढ़ पूरा नष्ट हो गया। आज भी प्रमाण है।

प्रश्न : दामा खेड़ा गद्दी वाले तो कहते हैं कि कबीर जी ने कहा था कि जब तक तेरी बियालीस वंश की गद्दी चलेगी तब तक मैं पृथ्वी पर नहीं आऊँगा अर्थात् अन्य को यह नाम दान आदेश नहीं दूंगा?

उत्तर : यह उनकी मनघड़ंत कहानी है। कबीर सागर में कबीर बानी नामक अध्याय में पृष्ठ 136-137 पर बारह पंथों का विवरण देते हुए वाणी लिखी हैं जो निम्न हैं :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
प्रथम आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।
दूसर जगमें जागू भ्रमावै। विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै।।
तीसरा सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
चौथा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
पंचम पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवन की करी है हानी।।
छठवाँ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्व का मर्म दृढावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
सातवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा।।
आठवाँ जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
नौवें राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमले जीव दृढावै।।
दसवें ज्ञान की काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
ग्यारहवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमें सो शब्द होय निरधारा।।
सम्वत् सत्रासै पचहत्तर होई, तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।

बारवें पंथ प्रगट है बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारवें पंथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावें।।

उपरोक्त वाणी में ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी, (हरियाणा) वाले का जन्म 1774 में वैसाख पूर्णमासी को हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि भारतीय वर्ष चैत्र मास से प्रारम्भ होता है सन्त गरीबदास जी का जन्म वैसाख मास में हुआ जो चैत्र के बाद प्रारम्भ होता है। कई बार दो चैत्र मास भी बनाए जाते हैं। उस समय शिक्षा का अति अभाव था। प्रत्येक गाँव में एक ही तीथि बताने वाला होता था। वह भी अशिक्षित ही होता था। आस–पास के शहर या गाँव से तिथि किसी अन्य ब्राह्मण से पता करके फिर गाँव में सर्व को बताता इस कारण से भी संवत् 1775 के स्थान पर संवत् 1774 लिखा गया हो वास्तव में यह संकेत गरीबदास जी के विषय में ही है)।

भावार्थ यह है कि :- कबीर परमात्मा ने गरीबदास जी का ज्ञान योग खोल कर उनके द्वारा अपना तत्वज्ञान स्वयं ही प्रकट किया। जो सत्ग्रन्थ साहेब रूप में लीपि बद्ध है। कारण यह था कि कबीर वाणी में नकली कबीर पंथियों ने मिलावट कर दी थी। इसलिए परमेश्वर कबीर जी की महिमा का ज्ञान पुनर् प्रकट कराया फिर भी तत्व भेद (सार ज्ञान) गुप्त ही रखा (जो अब प्रकट हो रहा है।) इस कारण गरीबदास जी के पंथ में तत्वज्ञान नहीं है जिस कारण से वे गरीदास साहेब की वाणी का विपरीत अर्थ लगा कर जन्म व्यर्थ करते रहे उन्हें असंख जन्म भी ठौर नहीं है अर्थात् वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते केवल एक सन्त शीतल दास जी वाली प्रणाली में मुझ दास तक एक सन्त ही पार होता आया है जो एक सन्त सारनाम प्राप्त करके केवल एक को आगे बताकर गुप्त रखने की कसम दिलाता था। वह भी आगे केवल एक शिष्य को बताकर गुप्त रखता था समय आने पर परमेश्वर कबीर जी के संकेत से ही आगे शिष्य को आज्ञा देता था। इस प्रकार मुझ दास तक यह सारनाम कड़ी से जुड़ा हुआ पहुँचा है अब यह सर्व अधिकारी श्रद्धालु भक्तों को देने का आदेश प्रभु कबीर जी का है इसलिए कहा है बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा यह पंथ हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र से अपरिचित होने के कारण गरीबदास पंथ के साधक असंख्य जन्म तक सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा

एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में सोनीपत जिला, झज्जर जिला, रोहतक जिला) दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास जी वाला पंथ स्पष्ट लिखा है।

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वार प्रचलित बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

यदि कबीर परमश्वेर जी ऐसा वचन कहते कि ''जब तक धर्मदास का वंश चलेगा तब तक मैं पृथ्वी पर पग नहीं रखुंगा अर्थात् पृथ्वी पर प्रकट नहीं होऊँगा। तो सन् 1518 में सतलोक प्रस्थान के 33 वर्ष पश्चात् सन् 1551 में सात वर्षीय संत दादू साहेब जी को नहीं मिलते, 209 वर्ष पश्चात् सन् 1727 में दस वर्षीय संत गरीबदास जी को गाँव छुड़ानी, जिला झज्जर(हरियाणा प्रदेश, भारत) में नहीं मिलते तथा गरीबदास जी को नामदान नहीं देते और आगे नामदान करने का आदेश नहीं देते। इसके बाद फिर 292 वर्ष पश्चात् सन् 1813 में सात वर्षीय संत घीसा दास जी को गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ(उतर प्रदेश) में नहीं मिलते। जो आज भी यादगार साक्षी हैं तथा उपरोक्त संतों द्वारा लिखी अमृत वाणी साक्षी रूप हलफिया ब्यान(एफिडेविट) है कि परमेश्वर कबीर जी काशी वाले जुलाहा धाणक ने स्वयं साक्षात दर्शन दिए तथा अपने सतलोक के भी दर्शन करा करके अपनी समर्थता का प्रमाण दिया।

मुझ दास(रामपाल दास) को परमेश्वर कबीर साहेब जी संवत् 2054 फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष एकम(मार्च) 1997 को दिन के दस बजे मिले तथा सारशब्द की वास्तविकता तथा संगत को दान करने का सही समय का संकेत दे कर अर्न्तध्यान हो गए तथा इसको अगले आदेश तक रहस्य युक्त रखने का आदेश दिया।

प्रिय पाठको! जितना भी कबीर पंथ का फैलाव हुआ है। वह इन 12 काल के पंथों से ही हुआ है। जिनमें किसी के पास भी यथार्थ भक्ति नहीं है।

इस प्रकार कबीर पंथ का पतन हुआ।

❖❖❖

''कबीर पंथ का उत्थान''

कबीर पंथ का उत्थान सन् 1997 (कलयुग 5505 वर्ष बीत जाने पर) में सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा प्रारम्भ हुआ है।

उपरोक्त सर्व वार्ता सुनकर धर्मदास जी ने प्रश्न किया हे परमात्मा! मेरे वंशावली का तथा सर्व संसार का उद्धार कैसे होगा और किस समय आप अपना नाद पुत्र अर्थात् अपना वंश भेजोगे।

तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा धर्मदास! जब मैं प्रथम सतयुग में आया तब काल ने कहा था कि तीन युगों में जीव थोड़े पार करना। मैंने काल से कहा था :- चौथा युग जब कलयुग आएगा। तब मैं अपना अंश (नाद वाला) भेजूंगा। उस समय भक्ति सर्व मंत्रों की (प्रथम मन्त्र, सत्य नाम तथा सारनाम)दीक्षा तीन बार में दी जाएगी। उस समय सर्व संसार मेरी भक्ति करेगा। हे धर्मदास! यदि उस समय तेरे वंश वाले मेरे उस नाद वाले अंश से दीक्षा प्राप्त करेंगे तो वे भी मोक्ष प्राप्त करेंगे। मैं जो आज तेरे से बचन कह रहा हूँ और आप ''स्वसमबेद बोध'' नामक अध्याय में ''कबीर सागर'' में लिख रहे हो, यह बचन उस समय सत्य होगा जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा। तब तक तो यह ''स्वसमबेद बोध'' वाली मेरी वाणी निराधार लगेगी। तब परमेश्वर कबीर जी ने ये शब्द कहे थे।

कृपया पढ़ें फोटोकापी ''कबीर सागर'' के अध्याय ''स्वसमबेद बोध'' के पृष्ठ 121 (1483) तथा 171 (1533) की।

स्वसमबेदबोध 1483 (१२१)

कहा तुमार जीव नहिं मानै । हमरी दिशभै बाद बखानै ॥
मैं दृढ़ फंदा रच्यौ बनाई । जामें जीव परा अरुझाई ॥
बेद शास्त्र सुमिरन गुन नाना । पुत्र हैं तीन देव परधाना ॥
देवल देव पखान पुजाई । तीरथ व्रत जप तप मन लाई ॥
यज्ञ होम अरु नियम अचारा । और अनेक फंद हम डारा ॥
जौं ज्ञानी जैहो संसारा । जीव न मानै कहा तुमारा ॥

ज्ञानी वचन–चौपाई

ज्ञानी कहै सुनो धर्मराई । काटो फंद जीव ले जाई ॥
जेतो फंद रची तुम बारी । सत्यशब्द ले सकल बिडारी ॥
जिहि जिवको हम शब्द दृढ़े हैं । फंद तुम्हार सबै मुक्तैहैं ॥

निरंजन वचन चौपाई

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं । तीनों युग जिव थोरे रहिजाही ॥
चौथा युग जब कलऊ आई । तब तुव शरन जीव बहु जाई ॥
ऐसे वचन हारि मोहि दीजै । तब संसार गौन तुम कीजै ॥

ज्ञानी वचन चौपाई

अरे काल परपंच पसारा । तीनो युग जीवन दुख डारा ॥
बिनती तोरि लीन मैं मानी । मोकहँ ठगे काल अभिमानी ॥
चौथा युग जब कलऊ आई । तब हम अपनो अंश पठाई ॥
काल फन्द छूटे नर लोई । सकल सृष्टि परवानिक होई ॥
घर घर देखो बोध बिचारा । सत्य नाम सब ठौर उचारा ॥
पांच हजार पांचसौ पांचा । तब यह बचन होयगा सांचा ॥
कलियुग बीत जाय जब येता । सब जिव परम पुरुषपद चेता ॥

निरंजन वचन चौपाई

ज्ञानी बिनती सुनो हमारी । द्वापर अंत होय जिहि बारी ॥
बोध शरीर धरब हम जाई । जगन्नाथको नाम धराई ॥

यह फोटोकापी ''कबीर सागर'' के अध्याय ''स्वसमबेद बोध'' के पृष्ठ 121 (1483) की है। इसमें परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा। तब मैं अपना अंश भेजूंगा, सारा संसार नाम दीक्षा लेकर शान्ति से रहा करेगा। घर-घर में मेरे ज्ञान की चर्चा होगी। सभी प्राणी मेरे उस परम पद के भेदी हो जाऐंगे, जहाँ जाने के बाद फिर जन्म नहीं होता। यह बचन उस समय सत्य होगा जब कलयुग 5505 वर्ष (सन् 1997 में) बीत जाएगा। (कृपया पढ़ें कलयुग कितना बीत गया है, इसी पुस्तक के पृष्ठ 66 पर।)

स्वसमवेदबोध 1533 (१७१)

पूरन आप निरंजन होई। यामें फेरफार नहिं कोई॥
दोहा–पांच सहस अरु पांचसौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरुष फरमान तब, जग तारनको आय॥
हिन्दु तुर्क आदिक सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नामकी साख गहि, पावैं पद निर्बान॥
यथा सरितगण आपही, मिलैं सिन्धुमें धाय।
सत्य सुकृत के मध्ये तिमि, सबही पंथ समाय॥
जबलगि पूरण होय नहिं, ठीकेको तिथि वार।
कपट चातुरी तबहिलों, स्वसमबेद निरधार॥
सबहिं नारि नर शुद्ध तब, जब टीका दिन अंत।
कपट चातुरी छोड़िके, शरण कबीर गहंत॥
एक अनेक न ह्वै गयो, पुनि अनेक हो एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनामकी टेक॥
घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय।
कलियुगमें इक है सोई, बरते सहज सुभाय॥
कहा उग्र कह क्षुद्र हो, हर सबकी भवभीर।
सो समान समदृष्टि है, समरथ सत्य कबीर॥

विनय–चौपाई

बिन्ती करौं संत गुरु पाहीं। जो मम दोष न हृदय गहाहीं॥
निज अपराध कहौं किन खोली। कहुँ कहुँ मैं बदल्यों गुरु बोली॥
मम बानी अरु सद्गुरु बानी। दोनों यहि मत मेले सानी॥
जहँ जस उचित देख तस कीना। सूक्षम गुरु वाणी गहि लीना॥
मेरो दोष न कछु तहँ लेखब। सत्य कबीरकी बानी देखब॥
सत्य कबीरको ग्रन्थ निहारा। सब कछु लिख्यों ताहि अनुसारा॥

इति श्रीस्वसमवेद धर्मबोध समाप्त

यह फोटोकापी ''कबीर सागर'' के ''स्वसमबेद बोध'' अध्याय के पृष्ठ 171 (1533) की है। इसमें स्पष्ट किया है कि :-

जब कलयुग 5500 वर्ष बीत जाएगा तब एक महापुरूष सत्य आदेश सत्य साधना बताकर सत्यनाम व सार नाम देकर सर्व सृष्टि का उद्धार करेगा।

सर्व मानव उसके द्वारा बताए ज्ञान को सुनकर विचार-विमर्श करके तुरंत यथार्थ भक्ति ग्रहण करेंगे, किसी में कपट, चतुराई नहीं रहेगी।

सर्व पंथ उस एक यथार्थ कबीर पंथ में आकर मिल जाऐंगे और केवल एक ''यथार्थ कबीर पंथ'' ही चलेगा। अन्य सर्व पंथ उस मेरे अंश द्वारा चलाए पंथ में ऐसे मिल जाऐंगे जैसे नदियाँ अपने आप वेग के साथ निर्बाध जाकर समन्दर में मिलकर

एक समन्दर ही बन जाती हैं। वैसे ही उस ''यथार्थ कबीर पंथ'' में सर्व पंथ आकर मिलेंगे, सत्य नाम तथा सार शब्द की भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करेंगे।

वह पंथ सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा चलाया गया है। आप से नम्र निवेदन है कि ''सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार में जाऐं और अपना कल्याण कराऐं।

''आओ जाने कलयुग कितना बीत चुका है''

शंकराचार्यों के द्वारा रचित पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर स्पष्ट है कि श्री आद्य शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ। वर्तमान में ईसवीं (सन्) 2000 माने तो शंकराचार्य जी को 2508 वर्ष हो चुके हैं। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' पृष्ठ 42 पर लिखा है कि कलयुग के 3000 वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष बीत चुका है। इस प्रकार गणित की रीती से जानकर अन्य ईसवीं से गणना की जा सकती है। इसी पृष्ठ पर दो समय अंकित किए हैं। लिखा है कि आद्य शंकराचार्य का आविर्भाव (जन्म) काल ईसा पूर्व 508 या 476 वर्ष माना जाता है। पाठकगण यहाँ भ्रमित ना हों जो दूसरा 476 वर्ष समय लिखा है। यह आद्य शंकराचार्य जी का प्रयाण काल (मृत्यु समय) है। क्योंकि शंकराचार्य जी की मृत्यु 32 वर्ष की आयु में हो गई थी। लेखक भी विचलित है। उसे या करके नहीं लिखना चाहिए था।

शंकराचार्यों द्वारा रचित पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के पृष्ठ 42 पर पुस्तक ''शिव रहस्य'' के एक श्लोक का हवाला देकर लिखा है कि ''कलयुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर शंकर जी स्वयं शंकराचार्य के रूप में शंकर यति रूप में अविर्भूत होगें अर्थात् जन्म लेगें। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि शंकराचार्य का जन्म 508 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। जैसे सन् 2000 को ईसा जी के जन्म को 2000 वर्ष बीत चुके हैं। इस प्रकार 2000+508 = 2508 वर्ष सन् 2000 तक शंकराचार्य के जन्म को हो चुके हैं। अब गणित की रीति से सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष व्यतीत हो चुका है। इस प्रकार कलयुग के समय को गणित की रीति से अन्य सन् से भी जाना जा सकता है।

फोटो कापी ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ पुस्तक के सम्पादक तथा पृष्ठ 11 की।

ज्योर्तिमय ज्योर्तिमठ

जनवरी 2007

संरक्षक

अनन्त श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर
जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

सम्पादक, लेखक एवं संकलनकर्ता	परामर्श एवं सहयोग	प्रेरणा स्रोत
विष्णु दत्त शर्मा	पं. विपिन बिहारी दत्त 'रामायणी'	श्री सुबुद्धानन्द ब्रह्मचारी जी
अध्यक्ष	श्री पुनीत शर्मा	मुद्रक
आध्यात्मिक उत्थान मण्डल, दिल्ली	श्री आशुतोष जोशी	फाइन प्रिन्ट एण्ड फैक्स

प्रकाशक

अखिल भारतीय आध्यात्मिक उत्थान मण्डल

1/3234 गली नं.-2, राम नगर विस्तार, मण्डोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032

9810680024, 9212315001, 9212315002, 011-65292802 फैक्स - 011-22570737

आद्यगुरु शंकराचार्य

संक्षिप्त जीवन परिचय

''वैदुष्यं प्रतिभां युक्तिं भाष्यमेतत् प्रभाषते!
सूर्यचन्द्रमसो यावेत्तवत्कीर्विभक्तिव।।''

विश्व वन्दनीय तपः साधना अलौकिक मेधा, अद्भुत प्रतिभा, क्रांतिकारी रचनात्मकता, समन्वयात्मक प्रज्ञा, असाधारण तर्क कौशल, प्रकाण्ड पांडित्य, अगाध भगवद्भक्ति, उत्कृष्टतम त्याग, गहनगंभीर विचारशीलता आदि गुणों का आगार आदिगुरु शंकराचार्य ने न केवल वैदिक धर्म व दर्शन की युगानुकूल सारगर्भित सरल व्याख्या के साथ भारतीय चेतना को अनुप्राणित किया, अपितु चार मठों के रूप में भारत की चारों दिशाओं में समन्वय, अखण्डता व सांस्कृतिक एकता के चार सुदृढ़ स्तम्भ स्थापित किए।

लगभग 2500 वर्ष पूर्व शंकराचार्य का जन्म चरमराती आस्था के युग में केरल प्रांत में पूर्णानदी के तट पर कालाड़ी ग्राम में धर्मनिष्ठ नम्बूदरी शैव ब्राह्मण श्री शिवगुरु व धर्म परायणा सुभद्रा के घर हुआ। श्री शिवगुरु तैत्तरीय शाखा के यजुर्वेदी थे। शंकराचार्य का जन्म भगवान शंकर के आशीर्वाद से हुआ। अतः उनका नाम शंकर रखा गया। गुरु परम्परागत मठों के अनुसार उनका आर्विभाव काल ई.पू. 508 या 476 वर्ष माना जाता है।

11

यह फोटो कापी शंकराचार्यों के द्वारा रचित पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 की है। जिसमें स्पष्ट है कि श्री आद्यशंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ। वर्तमान में ईसवीं (सन्) 2000 माने तो शंकराचार्य जी को 2508 वर्ष हो चुके हैं। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' पृष्ठ 42 पर लिखा है कि कलयुग के 3000 वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष बीत चुका है। इस प्रकार गणित की रीती से जानकर अन्य ईसवीं से गणना की जा सकती है। इसी पृष्ठ पर दो समय अंकित किए हैं, लिखा है कि आद्यशंकराचार्य का आविर्भाव(जन्म) काल ईसा पूर्व 508 या 476 वर्ष माना जाता है। पाठकगण यहाँ भ्रमित ना हों जो दूसरा 476 वर्ष समय लिखा है। यह आद्य शंकराचार्य जी का प्रयाण काल (मृत्यु समय) है। क्योंकि शंकराचार्य जी की मृत्यु 32 वर्ष की आयु में हो गई थी। लेखक भी विचलित है। उसने या करके नहीं लिखना चाहिए था।

फोटो कापी हिमालय तीर्थ पुस्तक के प्रकाशक तथा मुद्रक की व पृष्ठ 42 की।

हिमालय तीर्थ

जे० पी० नम्बूरी

उप मुख्य कार्याधिकारी
श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति

ट्रेक्स एण्ड टूर्स

कलकाता-७००००८

प्रकाशक :
रन्जु चक्रवर्ती
76A/1, बामाचरण राय रोड
कलकाता-७००००८
दूरभाष : ०३३-२४०६-८५९७

मुद्रक :
गिरि प्रिन्ट सर्विस
कलकाता

42 हिमालय तीर्थ

शंकराचार्य

आदि केदारेश्वर के समक्ष शंकराचार्य जी की दिव्य संगमरमर की मूर्ति है। शिव रहस्य के अनुसार :

कलौगतेत्रिसाहस्त्रे वर्षाणां शंकरो यतिः।
बौद्ध मीमांसक मतं जेतुमाबिर्बभूवह।। (शिव रहस्य)

अर्थात् कलियुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर बौद्ध मीमांसकों के मत पर विजय प्राप्ति के लिए शंकर यति के रूप में अविर्भूत होंगे। शंकराचार्य जी के दर्शनों के उपरान्त भगवान बदरीश्वर के मन्दिर में प्रवेश की परम्परा है।

यह फोटो कापी शंकराचार्यों द्वारा रचित पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के पृष्ठ 42 की तथा प्रथम पृष्ठ की है। पृष्ठ 42 पर पुस्तक ''शिव रहस्य'' के एक श्लोक का हवाला देकर लिखा है कि ''कलयुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर शंकर जी स्वयं शंकराचार्य के रूप में शंकर यति रूप में अविर्भूत होगें अर्थात् जन्म लेंगे। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि शंकराचार्य का जन्म 508 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। जैसे सन् 2000 में ईसा के जन्म को 2000 वर्ष हो चुके हैं। इस प्रकार 2000+508 = 2508 वर्ष सन् 2000 तक शंकराचार्य के जन्म को हो चुके हैं। अब गणित की रीति से सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष व्यतीत हो चुका है। इस प्रकार कलयुग के समय को गणित की रीति से अन्य सन् से भी जाना जा सकता है। इसलिए सन् 1997 में कलयुग 5505 वर्ष पूरे कर चुका है।

❖❖❖

''हरि की परिभाषा''

परमेश्वर का एक नाम हरि भी है, हरि का अर्थ होता है सर्व कष्टहरण (नाश) करने वाला। सर्व कष्टों का निवारण परमेश्वर ही कर सकते हैं। इसलिए ''हरि'' शब्द परमेश्वर का बोधक है।

परमेश्वर की परिभाषा :- जैसे किसी विभाग में कोई अधिकारी है। वह साहब कहलाता है। उदाहरण के लिए तहसीलदार साहब, एस.डी.एम. साहब, डी.एम. (डी.सी.) साहब, कमीश्नर साहब, प्रान्त के मन्त्री साहब, मुख्यमन्त्री साहब, केन्द्र के मन्त्री साहब तथा प्रधान मन्त्री साहब, माननीय राष्ट्रपति साहब। ये सर्व साहब ही कहलाते हैं। परन्तु इन साहबानों की शक्ति में बहुत अन्तर होता है। ठीक इसी तरह ''हरि'' की परिभाषा है।

ब्रह्म, राम, अल्लाह, खुदा, ईश, गॉड, स्वामी, देव, मालिक ये प्रभु के उपमात्मक नाम हैं।

जैसे तीन लोक (पृथ्वी लोक, पाताल लोक, स्वर्ग लोक) में तीन मन्त्री साहब अर्थात् प्रभु हैं। 1. रजगुण विभाग के ब्रह्मा जी, 2. सतगुण विभाग के श्री विष्णु जी, 3. तमगुण विभाग के श्री शंकर जी प्रभु हैं। इन तीन प्रभुओं के अन्तर्गत अन्य 33 करोड़ देवता कार्य करते हैं। एक ब्रह्मण्ड में तीन लोकों (पृथ्वी लोक, पाताल लोक तथा स्वर्ग लोक) के अतिरिक्त 14 लोक और हैं। एक ब्रह्मण्ड का मालिक ''ब्रह्म'' है इसको काल ब्रह्म भी कहते हैं। यह श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शंकर जी के भी मालिक हैं। ब्रह्म को मुख्यमन्त्री जानों जो एक ब्रह्मण्ड का प्रभु (स्वामी) है। इस काल ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्ड हैं। यह प्रत्येक में मुख्यमन्त्री का कार्य करता है। जब एक ब्रह्मण्ड में प्रलय (सर्वनाश) होती है तो सर्व प्राणीयों को दूसरे ब्रह्मण्ड में चले जाते हैं। ''ब्रह्म'' केवल 21 ब्रह्मण्ड का स्वामी (राम) है परन्तु यह हरि नहीं है। क्योंकि ''हरि'' का अर्थ है सर्व कष्ट हरण प्रभु।

इससे अधिक शक्तिशाली परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष है जो 7 संख ब्रह्मण्डों का मालिक (स्वामी) है। यह भी ''हरि'' नहीं है। इन सर्व से शक्तिशाली अर्थात् सर्व शक्तिमान परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् ''पूर्ण ब्रह्म'' है। जो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, कालब्रह्म, परब्रह्म के ऊपर भी साहब है (मालिक-स्वामी) है। कुल का मालिक है।

परम अक्षर ब्रह्म के अतिरिक्त जितने भी प्रभु (साहब) हैं। वे केवल किया कर्म ही प्राणी को प्रदान कर सकते हैं। वे किसी प्राणी की किस्मत में लिखे लेख को कम-अधिक नहीं कर सकते। जैसा कर्म जीव करता है वैसा ही भोगना पड़ता है। परन्तु परम अक्षर ब्रह्म (पूर्ण ब्रह्म) में यह शक्ति है कि वह जीव के सर्व कर्मों में परिवर्तन कर सकता है। किस्मत (प्रारब्ध) में कितना ही कष्ट क्यों ना हो या मृत्यु भी कम आयु में होनी हो, उस कष्ट का निवार्ण करके अधिक आयु साधक को प्रदान कर देते हैं। अन्य कष्ट भी कितना ही भयंकर हो उसका हरण करके सुखी कर देते हैं।

जैसे किसी ने गलती से विष पान कर लिया। विष तो उसके जीवन का अन्त करेगा ही करेगा। यदि विषनाशक औषधी का प्रयोग किया जाए तो विष अपना

प्रभाव नहीं कर सकता। इसी प्रकार ''परम अक्षर ब्रह्म'' ही वह औषधी है जो काल ब्रह्म रूपी अजगर के विष (कष्ट) को भी हरण कर देता है।

ब्रह्म तो स्वयं ''काल'' है अर्थात् अजगर है यह जीव को सुख नहीं दुःख ही दे सकता है।

प्रमाण :- गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में श्री कृष्ण के शरीर में प्रवेश करके यह काल-ब्रह्म स्वयं कह रहा है कि ''मैं काल हूँ'' सर्व का नाश करने आया हूँ।

परम अक्षर ब्रह्म वह वैद्य जानों जो काल ब्रह्म रूपी अजगर के विष (कष्ट) का भी हरण करके साधक को पूर्ण सुखी कर देता है। श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शंकर जी तो काल ब्रह्म के पुत्र हैं। वे भी जीव के कष्ट हरण नहीं कर सकते। अक्षर ब्रह्म भी जीव के भाग्य के लिखे लेख को नहीं बदल सकता। इसलिए वास्तव में ''हरि'' (सर्व कष्ट हरण) परम अक्षर ब्रह्म है। वह परम अक्षर ब्रह्म ऊपर शाशवत स्थान (अमर लोक) में रहता है। मानव सदृश शरीर है परन्तु अत्यधिक प्रकाशमान तथा शक्तिशाली है।

उस अमर लोक में परमात्मा तख्त (सिंहासन) पर राजा के समान मुकूट आदि पहन कर विराजमान है। वहां से चल कर सशरीर यहां आते हैं। अच्छी आत्माओं को जो दृढ़ भक्त होते हैं। उनको मिलते हैं। अपने उस तेजोमय शरीर को हल्का करके (सरल करके) यहां पृथ्वी लोक पर आते हैं। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2-3, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मंत्र 3, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 20 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मंत्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 में है। इस ऋग्वेद के अनुवादक तथा प्रकाशक आर्य समाजी आचार्य ही हैं। आर्य प्रतिनिधी सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन आसफ अली रोड़ रामलीला मैदान, नई दिल्ली- 02

उपरोक्त गुणानुसार परम अक्षर ब्रह्म (अमर पुरूष) कलयुग में संवत् 1784 फाल्गुन शुदी (चांदनी) द्वादशी (दवास) अर्थात् मार्च 1727 को दिन के 10 बजे गांव छुड़ानी जि. झज्जर प्रान्त हरियाणा में आदरणीय गरीबदास जी महाराज को ''नला'' नामक खेत में मिले। उस समय गरीबदास जी दस वर्ष के बालक थे। परमेश्वर ने अपने आशीर्वाद से कंवारी गाय का दूध निकाला स्वयं पीया तथा बालक गरीबदास जी को पिलाया। उस समय आदरणीय गरीबदास जी अन्य बड़े-छोटे 10-12 पालियों (ग्वालों) के साथ गाय चराने गए हुए थे। अन्य ग्वालों ने दूध नहीं पीया, उठ कर चले गये। आदरणीय गरीबदास जी को परमेश्वर अपने साथ अमरलोक ले गए। लगभग 10 घण्टे तक गरीबदास जी को ऊपर के सर्व लोक लोकान्तरों तथा अपने अमर लोक (सत्य धाम) को दिखाया। पीछे से आदरणीय गरीबदास जी को मृत जानकर चिता पर रख कर अन्तिम संस्कार करने लगे। उसी समय आदरणीय गरीबदास जी महाराज उठ खड़े हुए तथा जो कुछ देखा था। उसको लोकोक्तियों, दोहों, चौपाईयों के रूप में वर्णन करने लगे। वह सर्व वाणी दादू पंथी सन्त गोपाल दास जी ने लिखी है जो हमारे पास रखी है।

प्रिय पाठकों को सतर्क करना अनिवार्य समझता हूँ कि छुड़ानी के महन्तों तथा उनसे सम्बंधित अन्य गरीबदासी सन्तों को अध्यात्म का क-ख भी ज्ञान नहीं है। परमेश्वर ने अपनी वाणी में भी स्पष्ट किया है कि जो बारह पंथ हैं। जिनमें से एक ''गरीबदास पंथ'' भी है। उनका अनुयाई बनकर परमात्मा प्राप्ति चाहेगा तो असंख्य जन्म तक मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। प्रमाण के लिए कृप्या आप पढ़ेंगे इसी पुस्तक में आगे चल कर। इसलिए सीधे सतलोक आश्रम बरवाला जि. हिसार में जाना। वहां पर हरि आए हुए है। आदरणीय गरीबदास जी ने भी ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि सतगुरु अर्थात् परमेश्वर (क्योंकि परमेश्वर ही गरीबदास जी को सतगुरु रूप में मिले थे। इसलिए जहां गरीबदास जी ने सतगुरु शब्द का प्रयोग किया है। वह परमेश्वर का ही बोधक जाने) सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी। सूती धरती सूम जगायसी। परमेश्वर दिल्ली मण्डल (अंग्रेजों के शासन काल में जो पुराना रोहतक जिला है वह दिल्ली मण्डल में था) अर्थात् वर्तमान में जिला सोनीपत गांव धनाना में आएगा। स्वयं परमेश्वर जी ने भी कहा है कि 12 वें पंथ अर्थात् गरीबदास जी द्वारा मेरी महिमा की वाणी कही जाएगी जो मेरे से परिचित होकर कहेगा। गरीबदास जी का जो पंथ चलेगा। उसमें हम ही (परमेश्वर अर्थात् हरि) आऊंगा। उस समय ऐसा ज्ञान बताऊंगा। जिसको जानकर सर्व पंथ तथा धर्म एक हो जाऐंगे। सर्व प्राणी सतनाम का जाप करके मोक्ष प्राप्ति करेंगे। यह कार्य उस समय किया जाएगा। जब कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें आगे पढ़े कि वर्तमान में कलयुग कितना बीत चुका है। इसी पुस्तक के पृष्ठ 66 से 68 पर।

अब वही परमेश्वर सन्त रामपाल दास जी महाराज जी के चोले (शरीर) में बरवाला जिला हिसार में अपना अमृत ज्ञान व नाम दान बताकर शरणागत श्रद्धालुओं का कल्याण कर रहे हैं।

सन्त रामपाल जी महाराज जी कहते हैं कि मैं परमेश्वर नहीं हूँ। मैं तो परमेश्वर का दास (नौकर) हूँ उस परमेश्वर की महिमा का गुणगान करके उसकी आत्माओं को यथार्थ ज्ञान बताकर सही दिशा निर्देश कर रहा हूँ।

सज्जनों! विचार करें :- जैसे पहले भारतवर्ष अंग्रेजों के पराधीन था। लगभग 200 वर्ष अंग्रेजों (इग्लैंड वालों) ने भारत पर राज्य किया। इग्लैंड का राजा अपना एक प्रतिनिधी (नौकर) भारत में भेजता था। उसको वायसराय कहते थे। जो उसके पद का नाम था। वह इग्लैंड के राजा का नौकर था परन्तु भारतवासियों को सुख व दुःख देने में सक्षम था। वह इग्लैंड के राजा वाली शक्ति प्रयोग करता था।

यदि हम सन्त रामपाल जी को परमेश्वर का भेजा संदेशवाहक भी माने तो भी पूरी पृथ्वी के लिए ये ''हरि'' हैं। इसलिए गरीबदास जी ने अपनी वाणी में कहा है।

पूर्ब–पश्चिम–उत्तर–दक्षिण, क्यों फिरदा दाणें दाणें नूं।
सर्ब कला सतगुरु साहेब की हरि आए हरियाणे नूं।।

भावार्थ है कि हे भोले प्राणी कहां भटक रहा है। सन्त रामपाल दास भी उसी सतगुरु (परमेश्वर) की कला (दूसरा रूप) है। इनसे सर्व लाभ प्राप्त करें सर्व कष्ट

हरण करवायें। विश्व के सर्व सभ्य समाज से नम्र निवेदन है कि आप अविलम्ब सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार, प्रान्त हरियाणा में जाऐं तथा अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराऐं।

''हरि अवतार की परिभाषा''

'अवतार' का अर्थ है ऊँचे स्थान से नीचे स्थान पर उतरना। विशेषकर यह शुभ शब्द उन उत्तम आत्माओं के लिए प्रयोग किया जाता है, जो धरती पर कुछ अद्भुत कार्य करते हैं। जिनको परमात्मा की ओर से भेजा हुआ मानते हैं या स्वयं परमात्मा ही का पृथ्वी पर आगमन मानते हैं।

श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में तीन पुरूषों (प्रभुओं) का ज्ञान है।

❑ 1. क्षर पुरूष जिसे ब्रह्म भी कहते हैं। जिसका ॐ नाम साधना का है। जिसका प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में है।

❑ 2. अक्षर पुरूष जिसको परब्रह्म भी कहते हैं। जिसकी साधना का मंत्र तत् जो सांकेतिक है। प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है।

❑ 3. उत्तम पुरूष तूः अन्यः = श्रेष्ठ पुरूष परमात्मा तो उपरोक्त दोनों पुरूषों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से अन्य है। वह परम अक्षर पुरूष है जिसे गीता अध्याय 8 श्लोक 1 के उत्तर में अध्याय 8 के श्लोक 3 में कहा है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है। इसका जाप सत् है जो सांकेतिक है। इसी परमेश्वर की प्राप्ति से साधक को परम शांति तथा सनातन परमधाम प्राप्त होगा। प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में यह परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) गीता ज्ञान दाता से भिन्न है। अधिक ज्ञान प्राप्ति के लिए कृप्या पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' सतलोक आश्रम बरवाला से प्राप्त करें। अवतार दो प्रकार के होते हैं। जैसे ऊपर कहा गया है। अब आप जी को पता चला कि मुख्य रूप से तीन पुरूष (प्रभु) है। जिनका उल्लेख ऊपर कर दिया गया है। हमारे लिए मुख्य रूप से दो प्रभुओं की भूमिका रहती है।

1. क्षर पुरूष (ब्रह्म) :- जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में अपने आप को काल कहता है।

2. परम अक्षर पुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) :- जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 3 तथा 8,9,10 में तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 17 में कहा है।

''ब्रह्म (काल) के अवतारों की जानकारी''

गीता अध्याय 4 का श्लोक 7

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। ७ ।

यदा, यदा, हि, धर्मस्य, ग्लानिः, भवति, भारत,
अभ्युत्थानम्, अधर्मस्य, तदा, आत्मानम्, सृजामि, अहम्।।7।।

अनुवाद : (भारत) हे भारत! (यदा,यदा) जब-जब (धर्मस्य) धर्मकी (ग्लानिः) हानि और (अधर्मस्य) अधर्मकी (अभ्युत्थानम्) वृद्धि (भवति) होती है (तदा) तब-तब (हि) ही (अहम्) मैं (आत्मानम्) अपना अंश अवतार (सृजामि) रचता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ। (7)

जैसे श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 7 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जब-जब धर्म में घृणा उत्पन्न होती है। धर्म की हानि होती है तथा अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं (काल = ब्रह्म = क्षर पुरूष) अपने अंश अवतार सृजन करता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ।

जैसे श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण चन्द्र जी को काल ब्रह्म ने ही पृथ्वी पर उत्पन्न किया था। जो स्वयं श्री विष्णु जी ही माने जाते हैं।

इनके अतिरिक्त 8 अवतार और कहे गये हैं। जो श्री विष्णु जी स्वयं नहीं आते अपितु अपने लोक से अपने कृपा पात्र पवित्र आत्मा को भेजते हैं। वे भी अवतार कहलाते हैं। कहीं-2 पर 25 अवतारों का भी उल्लेख पुराणों में आता है। काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) के भेजे हुए अवतार पृथ्वी पर बढ़े अधर्म का नाश कत्लेआम अर्थात् संहार करके करते हैं।

उदाहरण के रूप में :- श्री रामचंद्र जी तथा श्री कृष्णचंद्र जी, श्री परशुराम जी तथा श्री निःकलंक जी (जो अभी आना शेष है, जो कलयुग के अन्त में आएगा)। ये सर्व अवतार घोर संहार करके ही अधर्म का नाश करते हैं। अधर्मियों को मारकर शांति स्थापित करने की चेष्टा करते हैं। परन्तु शांन्ति की अपेक्षा अशांति ही बढ़ती है। जैसे श्री रामचंद्र जी ने रावण को मारने के लिए युद्ध किया। युद्ध में करोड़ों पुरूष मारे गए। जिन में धर्मी तथा अधर्मी दोनों ही मारे गए। फिर उनकी पत्नियाँ तथा छोटे-बड़े बच्चे शेष रहे उनका जीवन नरक बन गया। विधवाओं को अन्य व्यक्तियों ने अपनी हवस का शिकार बनाया। निर्वाह की समस्या उत्पन्न हुई आदि-२ अनेकों अशांति के कारण खड़े हो गए। यही विधि श्री कृष्ण जी ने अपनाई थी, यही विधि श्री परशुराम जी ने अपनाई थी। इसी विधि से दशवां अवतार काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) द्वारा उत्पन्न किया जाएगा। उसका नाम ''निःकलंक'' होगा। वह कलयुग के अन्तिम समय में उत्पन्न होगा। जो राजा हरिशचन्द्र वाली आत्मा होगी। संभल नगर में श्री विष्णु दत्त शर्मा के घर में जन्म लेगा। उस समय सर्व मानव अत्याचारी - अन्यायी हो जाऐंगे। उन सर्व को मारेगा। उस समय जिन-२ मनुष्यों में परमात्मा का डर होगा। कुछ सदाचारी होंगे उनको छोड़ जाएगा अन्य सर्व को मार डालेगा। यह विधि है ब्रह्म (काल-क्षर पुरूष) के अवतारों की अधर्म का नाश करने तथा शांति स्थापना करने की।

''परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष के अवतारों की जानकारी''

❑ 1. परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होता है। वह सशरीर आता है। सशरीर लौट जाता है :- यह लीला वह परमेश्वर दो प्रकार से करता है।

❑ क = प्रत्येक युग में शिशु रूप में किसी सरोवर में कमल के फूल पर वन में प्रकट होता है। वहां से निःसन्तान दम्पति उसे उठा ले जाते हैं। फिर लीला करता हुआ बड़ा होता है तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश करता है। सरोवर के जल में कमल के फूल पर अवतरित होने के कारण परमेश्वर नारायण कहलाता है (नार=जल, आयण=आने वाला अर्थात् जल पर निवास करने वाला नारायण कहलाता है।)

❑ ख = जब चाहे साधु सन्त जिन्दा के रूप में अपने सत्यलोक से पृथ्वी पर आ जाते हैं तथा अच्छी आत्माओं को ज्ञान देते हैं। फिर वे पुण्यात्माऐं भी ज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश करते हैं। वे भी परमेश्वर के भेजे हुए अवतार होते हैं।

कलयुग में ज्येष्ठ शुदि पूर्णमासी संवत् 1455 (सन् 1398) को कबीर परमेश्वर सत्यलोक से चलकर आए तथा काशी शहर के लहर तारा नामक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में विराजमान हुए। वहां से नीरू तथा नीमा जो जुलाहा (धाणक) दम्पति थे, उन्हें उठा लाए। शिशु रूपधारी परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया। नीरू तथा नीमा उसी जन्म में ब्राह्मण थे। श्री शिव जी के पुजारी थे। मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक मुसलमान बनाए जाने के कारण जुलाहे का कार्य करके निर्वाह करते थे। बच्चे की नाजुक हालत देखकर नीमा ने अपने ईष्ट शिव जी को याद किया। शिव जी साधु वेश में वहां आए तथा बालक रूप में विराजमान कबीर परमेश्वर को देखा। बालक रूप में कबीर साहेब जी ने कहा हे शिव जी इन्हें कहो एक कुँवारी गाय लाऐं वह आप के आशीर्वाद से दूध देगी। ऐसा ही किया गया। कबीर परमेश्वर के आदेशानुसार भगवान शिव जी ने कुँवारी गाय की कमर पर थपकी लगाई। उसी समय बछिया के थनों से दूध की धार बहने लगी। एक कोरा मिट्टी का छोटा घड़ा नीचे रखा। पात्र भर जाने पर दूध बन्द हो गया। फिर प्रतिदिन पात्र थनों के नीचे करते ही बछिया के थनों से दूध निकलता। उसको परमेश्वर कबीर जी पीया करते थे। जुलाहे के घर परवरिश होने के कारण बड़े होकर परमेश्वर कबीर जी भी जुलाहे का कार्य करने लगे तथा अपनी अच्छी आत्माओं को मिले, उनको तत्वज्ञान समझाया तथा स्वयं भी तत्वज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश किया तथा जिन-२ को परमेश्वर जिन्दा महात्मा के रूप में मिले, उनको सच्चखण्ड (सत्यलोक) में ले गए तथा फिर वापिस छोड़ा, उनको आध्यात्मिक ज्ञान दिया तथा अपने से परिचित कराया। वे उस परमेश्वर (सत्य पुरूष) के अवतार थे। उन्होंने भी परमेश्वर से प्राप्त ज्ञान के आधार से अधर्म का नाश किया। वे अवतार कौन-२ हुऐ हैं। (1.) आदरणीय धर्मदास जी (2.)आदरणीय मलुकदास जी (3.) आदरणीय नानक देव साहेब जी (सिख धर्म के प्रवर्तक)(4.) आदरणीय दादू साहेब जी (5.) आदरणीय गरीबदास साहेब जी गांव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) वाले तथा (6.) आदरणीय घीसा दास साहेब जी गांव खेखड़ा जि. बाघपत (उत्तर प्रदेश) वाले ये उपरोक्त सर्व अवतार परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) के थे। अपना कार्य करके चले गए। अधर्म

का नाश किया। जिस कारण से जनता में बहुत समय तक बुराई नहीं समाई। वर्तमान में सन्तों की कमी नहीं परन्तु शांति का नाम नहीं, कारण यह है कि इन संतों की साधना शास्त्रों के विरूद्ध है। जिस कारण से समाज में अधर्म बढ़ता जा रहा है। इन पंथों और सन्तों को सैकड़ों वर्ष हो गए ज्ञान प्रचार करते हुए परन्तु अधर्म बढ़ता ही जा रहा है।

''सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार''

जो सत्य साधना तथा तत्वज्ञान का प्रचार परमेश्वर के पूर्वोक्त परमेश्वर के अवतार सन्त किया करते थे। जिससे आपसी प्रेम था, एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते थे, असहाय व्यक्ति की मदद करते थे, वही शास्त्रविधि अनुसार साधना तथा वही आध्यात्मिक यथार्थ ज्ञान संत रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने प्रदान किया है। परमेश्वर कबीर जी मार्च 1997 को फाल्गुन मास की शुक्ल प्रथमा को दिन के दस बजे जिन्दा महात्मा के रूप में सत्यलोक से आकर सन्त रामपाल दास जी महाराज को सतनाम तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गए।

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं। अब विश्व में शांति होगी। सर्व धर्म तथा पंथों के व्यक्ति एक होकर आपस में प्रेम से रहा करेंगे। राजनेता भी निर्भिमानी, न्यायकारी तथा परमात्मा से डर कर कार्य करने वाले होंगे। जनता के सेवक बनकर निष्पक्ष कार्य किया करेंगे। धरती पर पुनः सत्ययुग जैसी स्थिति होगी। वर्तमान में धरती पर वह अवतार सन्त रामपाल दास जी हैं। अब घर-२ में परमेश्वर के ज्ञान की चर्चा होगी। जहां गांव व शहरों में तथा पार्कों में बैठकर ताश खेलते है। कोई राजनीतिक बातें करता है, कोई अपने पुत्रों तथा पुत्र वधुओं की अच्छे या निकम्में होने की चर्चा करते हैं वहां परमेश्वर की महिमा की चर्चा होगी तथा ''ज्ञान गंगा'' पुस्तक में लिखे ज्ञान पर विचार हुआ करेगा। परमात्मा की महिमा करने मात्र से भी जीव पुण्य का भागी बनता है। फिर शास्त्रविधि अनुसार साधना करके जीवन सुखी बनाऐंगे तथा आत्म कल्याण करायेंगे। धरती पर कलयुग में सत्ययुग जैसा समय आयेगा।

''हरि आए हरियाणे नूं'' के समर्थन में कृप्या पढ़ें ढेर सारी भविष्यवाणीयां तथा स्वयं परमेश्वर जी की भविष्यवाणी इसी पुस्तक में।

अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी।

अमेरिका की विश्व विख्यात भविष्यवक्ता फ्लोरेंस ने अपनी भविष्यवाणीयों में कई बार भारत का जिक्र किया है। 'द फाल ऑफ सेंशेसनल कल्चर' नाम की अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि सन् 2000 आते-आते प्राकृतिक संतुलन भयावह रूप से बिगड़ेगा। लोगों में आक्रोश की प्रबल भावना होगा। दुराचार

पराकाष्ठा पर होगा। पश्चिमी देशों के विलासितापूर्ण जीवन जीने वालों में निराशा, बैचेनी और अशांति होगी। अतृप्त अभिलाषाएं और जोर पकड़ेगी। जिससे उनमें आपसी कटुता बढ़ेगी। चारों ओर हिंसा और बर्बरता का वातावरण होगा। ऐसा वातावरण होगा की चारों ओर हाहाकार मच जाएगा। लेकिन भारत से उठने वाली एक नई विचारधारा इस घातक वातावरण को समाप्त कर देगी। वह विचारधारा वैज्ञानिक दृष्टि से सामंजस्य और भाई चारे का महत्व समझाएगी, वह यह भी समझाएगी कि धर्म और विज्ञान में आपस में विरोध नहीं है। आध्यात्मिकता की उच्चता और भौतिकता का खोखलापन सबके सामने उजागर करेगी। मध्यमवर्ग उस विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित होगा। यह वर्ग समाज के सभी वर्गों को अच्छे समाज के निर्माण के लिए उत्प्रेरित करेगा। यह विचारधारा पूरे विश्व में चमत्कारी परिवर्तन लाएगी।

मुझे अपनी छठी अतींद्रिय शक्ति से यह एहसास हो रहा है कि इस विचारधारा को जन्म देने वाला वह महान संत भारत में जन्म ले चुका है। उस संत के ओजस्वी व्यक्तित्व का प्रभाव सब को चमत्कृत करेगा। उसकी विचारधारा अध्यात्म के कम होते जा रहे प्रभाव को फिर से नई स्फूर्ति देगी। चारों ओर आध्यात्मिक वातावरण होगा।

संत की विचारधारा से प्रभावित लोग विश्व के कल्याण के लिए पश्चिम की ओर चलेंगे। धीरे-धीरे एशिया, यूरोप और अमेरिका पर पूरी तरह छा जाएगें। उस संत की विचारधारा से पूरा विश्व प्रभावित होगा और उनके चरण चिन्हों पर चलेगा। पश्चिमी देश के लोग उन्हें ईसा, मुसलमान उन्हें एक सच्चा रहनुमा और एशिया के लोग उन्हें भगवान का अवतार मानेंगे।

उस महान संत की विचारधारा से बौद्धिक क्रांति होगी। बुद्धिजीवियों की मान्यताएं बदलेंगी। उनमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास की कोंपले फूटेंगी।

फ्लोरेंस के अनुसार वह संत भारत में जन्म ले चुकें हैं। वह इस संत से काफी प्रभावित थी। अपनी एक दूसरी पुस्तक 'गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा' में भी उन्होंने लिखा है। ''जब मैं ध्यान लगाती हूँ तो अक्सर एक संत को देखती हूँ। गौर वर्ण का है। सफेद बाल हैं। उसके मुख पर न दाढ़ी है, न मूछ है। उस संत के ललाट पर गजब का तेज होता है। उनके ललाट पर आकाश से एक नक्षत्र के प्रकाश की किरणें निरंतर बरसती रहती हैं। मैं देखती हूँ कि वह संत अपनी कल्याणकारी विचारधारा तथा अपने सत् चरित्र प्रबल अनुयायियों की शक्ति से सम्पूर्ण विश्व में नए ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं।

वह संत अपनी शक्ति निरंतर बढ़ा रहे हैं। उनमें इतनी शक्ति है कि वह प्राकृतिक परिवर्तन भी कर सकते हैं। वह अपना कार्य वैज्ञानिक ढंग से करेंगे। उनकी कृपा और प्रयत्नों से मानवीय सभ्यता में नई जागृति आएगी। विश्व के समस्त जनसमूह में नई चेतना का संचार होगा। लोकशक्ति का एक नया रूप उभर कर सामने आएगा जो सत्ताधारियों की मनमानियों पर अंकुश लगा देगा।''

मनोचिकित्सक तथा सम्मोहन कला के विश्व प्रसिद्धज्ञाता डॉ. मोरे बर्सटीन की फ्लोरेंस से अच्छी दोस्ती थी। एक बार फ्लोरेंस ने उनसे भी कहा था। ''डॉक्टर वह समय बड़ी तेजी से नजदीक आ रहा है जब सत्ता लोलुप राजनेताओं की अपेक्षा आप जैसे समाजसेवकों की बातें समाज अधिक ध्यान से सुनेगा। 21 वीं सदी के आते आते एक नई विचारधारा पूरे विश्व को प्रभावित करेगी। हर राष्ट्र में सच्चरित्र धार्मिक लोगों का संगठन लोगों के दिमाग में बैठी गलत मान्यताओं को बदल देगा। यह विचारधारा भारत से प्रस्फुटित होंगी। वहीं से पूरे विश्व में फैलेगी। मैं उस पवित्र स्थान पर एक प्रचंड तपस्वी को देख रही हूँ। जिसका तेज बडी तेजी से फैल रहा है। मनुष्य में सोए देवत्व को जगाने तथा धरती का स्वर्ग जैसा बनाने के लिए वह संत दिन रात प्रयत्न कर रहे हैं।

एक पत्रकार ने 1964 में फ्लोरेंस से पूछा था कि क्या वह दुनिया का भविष्य बता सकती है। फ्लोरेंस ने इसके जवाब में कहा था 1970 की शुरूवात व्यापक उथल-पुथल के साथ होगी। 1979-80 के बाद ऐसे-ऐसे भूकंप आऐंगे की न्यूजर्सी का कुछ हिस्सा तथा यूरोप का और एशिया के कई देशों के स्थान भूकंप से विदीर्ण हो जाएंगे। कुछ जलमग्न भी हो जाऐंगे। तृतीय विश्वयुद्ध का आतंक सबके दिमाग में बैठ जाएगा और वे इस युद्ध की तैयारी करेंगे, लेकिन भारतीय राजनेता अपने प्रभाव और बुद्धि से तीसरे विश्वयुद्ध को टालने में सफल हो जाऐंगे। तीसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने तक भारत के शासन की बागडोर आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के हाथ में होगी, इसलिए उनके प्रभाव से विश्वयुद्ध टलेगा। वे शासक एक महान संत के ओजस्वी तथा क्रांतिकारी विचारधारा से प्रभावित होंगे। वे उस संत के प्रति उसी तरह समर्पित होंगे जैसे वाशिंगटन स्वतंत्रता एवं मानवता के प्रति समर्पित थे।''

अमेरिका के शहर न्यूजर्सी की रहने वाली फ्लोरेंस सचमुच एक विलक्षण महिला थी। एक बार नेबेल नाम के व्यक्ति ने टी.वी. कार्यक्रम के दौरान उनसे बोला, ''आप भारत में जन्म ले चुके संत के बारे में तो अक्सर बताती रहती हैं। मैं अपने बारे में कुछ जानना चाहता हूँ बताइए।''

फ्लोरेंस ने उसके दाहिने हाथ को थाम लिया और बोली, ''आप बहुत जल्द किसी दूसरे राज्य से प्रसारण करेंगे।'' नेबेल एक प्रसारण सेवा के कर्मचारी थे। फ्लोरेंस की इस बात पर वह हंसने लगे। कुछ क्षण बाद बोले ''आपने मुझसे यह अच्छा मजाक किया। यदि हमारी कंपनी के अधिकारी इस कार्यक्रम को देख रहे होंगे तो मैं दूसरे राज्य में जाऊ या नहीं, फिलहाल अपनी कंपनी से तुरंत निकाल दिया जाऊंगा।''

कुछ ही मिनटों के बाद टी.वी. के कंट्रोल रूम का फोन घनघना उठा। फोन नेबेल के लिए था। उनकी कंपनी के जनरल मैनेजर उनसे बात करना चाहते थे। नेबेल ने जब फोन उठाया तो उन्होंने कहा हमने न्यूयार्क से प्रसारण करने का काम शुरू करने का निर्णय लिया है वहां तुम्हें ही भेजा जाएगा। अभी यह बात गुप्त रखना इसकी घोषणा कल की जाएगी। मैं टी.वी. पर फ्लोरेंस के साथ तुम्हारी

बातचीत देख रहा था। फ्लोरेंस ने तुम्हारे विषय में जो बताया है वह पूरी तरह सच है। आश्चर्य है कि उन्हें यह बात कैसे मालूम हो गई ?'' नेबेल फ्लोरेंस का चेहरा देखता रह गया।

कुछ पत्रकारों ने उनसे एक बार पूछा था कि वह भविष्य को कैसे देख लेती हैं तथा गायब व्यक्ति या वस्तुओं का पता कैसे लगा लेती हैं, तो फ्लोरेंस ने बताया,''मुझे स्वयं नहीं मालूम कि ऐसा कैसे सम्भव हो जाता है। मैं भविष्य के विषय में एक बहुत महत्वपूर्ण बात बता रहीं हूँ। 20 वीं शताब्दी के अंत में भारतवर्ष से एक प्रकाश निकलेगा। यह प्रकाश पूरी दुनिया को उन दैवी शक्तियों के विषय में जानकारी देगा, जो अब तक हम सभी के लिए रहस्यमय बनी हुई हैं। (देवी शक्तियों की जानकारी जो सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा बताई गई हैं। एक दिव्य महापुरूष द्वारा यह प्रकाश पूरे विश्व में फैलेगा। वह सभी को सत् मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा। समस्त दुनिया में एक नयी सोच की ज्योति फैलेगी। जब मैं ध्यानावस्था में होती हूँ तो अक्सर यह दिव्य महापुरूष मुझे दिखाई देते हैं।''

फ्लोरेंस ने बार-बार इस संत या दिव्य महापुरूष का जिक्र किया है। साथ ही यह भी बताया है कि उत्तरी भारतवर्ष के एक पवित्र स्थान पर वह मौजूद हैं।

सज्जनों उपरोक्त भविष्यवाणी तथा वर्तमान वाणी है जो परम सन्त रामपाल महाराज जी पर खरी उतरती है तथा इसी का समर्थन अन्य भविष्यवाणीयाँ भी करती है। जो आगे लिखी हैं।

''भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण''

''एक महापुरूष के विषय में भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रह्लाद भक्त की भविष्यवाणी''

भाई बाले वाली जन्म साखी में लिखा गया विवरण स्पष्ट करता है कि संत रामपाल दास जी महाराज ही वह अवतार है जिन्हें परमेश्वर कबीर जी तथा संत नानक जी के पश्चात् पंजाब की धरती पर अवतरित होना था। सन्त रामपाल दास जी महाराज 8 सितम्बर सन् 1951 को गांव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा प्रान्त (उस समय पंजाब प्रान्त) भारत की पवित्र धरती पर श्री नन्द राम जाट के घर जाट वर्ण में श्रीमति इन्द्रा देवी की कोख से जन्में।

इस विषय में ''जन्म साखी भाई बाले वाली'' हिन्दी वाली में जिसके प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड कम्पनी पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर (पंजाब) तथा पंजाबी वाली के प्रकाशक है :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह पुस्तकां वाले गली-8 बाग रामानन्द अमृतसर (पंजाब)।

इसमें लिखा अमर लेख इस प्रकार है :- एक समय भाई बाला तथा मरदाना को साथ लेकर सतगुरु नानक देव जी भक्त प्रह्लाद जी के लोक में गए। जो पृथ्वी से कई लाख कोस दूर अन्तरिक्ष में है। प्रह्लाद ने कहा कि हे नानक जी! आप को परमात्मा ने दिव्य दृष्टि दी तथा कलयुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप का कलयुग

में बहुत प्रताप होगा। यहां पर (प्रह्लाद के लोक में) पहले कबीर जी आये थे या आज आप आये हो एक और आयेगा जो आप दोनों जैसा ही महापुरूष होगा। इन तीनों के अतिरिक्त यहां मेरे लोक में कोई नहीं आ सकता। भक्त बहुत हो चुके हैं आगे भी होगें परन्तु यहां मेरे लोक में वही पहुँच सकता है, जो इन जैसी महिमा वाला होगा और कोई नहीं। इसलिए इन तीनों के अतिरिक्त यहां कोई नहीं आ सकता। मरदाने ने पूछा कि हे प्रह्लाद जी! कबीर जी जुलाहा थे, नानक जी खत्री हैं, वह तीसरा किस वर्ण (जाति) से तथा किस धरती पर अवतरित होगा।

प्रह्लाद भक्त ने कहा भाई सुन :- नानक जी के सच्चखण्ड जाने के सैकड़ों वर्ष पश्चात् पंजाब की धरती पर जाट वर्ण में जन्म लेगा तथा उसका प्रचार क्षेत्र शहर बरवाला होगा। (लेख समाप्त)

विवेचन :- संत रामपाल दास जी महाराज वही अवतार हैं जो अन्य प्रमाणों के साथ-२ जन्म साखी में लिखे वर्णन पर खरे उतरते हैं। जन्म साखी में ''सौ वर्ष के पश्चात्'' लिखा है। यहां पर सैकड़ों वर्ष पश्चात् कहा गया था जिसको पंजाबी भाषा में लिखते समय सौ वर्ष ही लिख दिया। क्योंकि मर्दाना ने पूछा था कि वह कौन से युग में नजदीक ही आयेगा? तब भक्त प्रह्लाद ने कहा कि श्री नानक जी के सैकड़ों वर्ष पश्चात् कलयुग में ही वह संत जाट वर्ण में जन्म लेगा। इसी लिए यहां सौ वर्ष के स्थान पर सैकड़ों वर्षों ही न्यायोचित है तथा प्रचार क्षेत्र बरवाला के स्थान पर बटाला लिखा गया है। इसके दो कारण हो सकते हैं कि ''शहर बरवाला'' जिला हिसार हरियाणा (उस समय पंजाब) प्रान्त में सुप्रसिद्ध नहीं था तथा बटाला शहर पंजाब प्रान्त में प्रसिद्ध था। लेखनकर्ता ने इस कारण से ''बरवाला'' के स्थान पर ''बटाला'' लिख दिया दूसरा प्रिन्ट करते समय ''ਵਰਵਾਲੇ'' की जगह ''ਵਟਾਲੇ'' प्रिंट हो गया है। एक और विशेष विचारणीय पहलू है कि पंजाब के बटाला शहर में कोई भी जाट संत नहीं हुआ है। जो इन महापुरूषों (परमेश्वर कबीर देव जी व श्री नानक देव जी) के समान महिमावान तथा इनके समान ज्ञानवान हुआ हो। इस आधार से तथा अन्य प्रमाणों के आधार से तथा इस जन्म साखी के आधार से स्पष्ट है कि वह तीसरे महापुरूष संत रामपाल दास जी महाराज हैं तथा इनका आध्यात्मिक ज्ञान भी इन दोनों महापुरूषों (परमेश्वर कबीर जी तथा श्री नानक देव जी) से मेल खाता है। आप देखेंगे दोनों फोटो कापी जो जन्म साखी भाई बाले वाली जो कि एक पंजाबी भाषा में है तथा दूसरी हिन्दी में है जो कि पंजाबी भाषा से ही अनुवादित है। इसमें कुछ प्रकरण ठीक नहीं लिखा है। जैसे पंजाबी भाषा में लिखा है कि ''जो इस जीहा कोई होवेगा तां एथे पहुँचेगा होर दा एथे पहुँचण दा कम नही'' परन्तु हिन्दी वाली जन्म साखी में यह विवरण नहीं है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इससे सिद्ध है कि लिखते समय कुछ प्रकरण बदल जाता है। फिर भी ढेर सारे प्रमाण जो इस पुस्तक में अन्य महापुरूषों के द्वारा सन्त रामपाल दास जी के विषय में कहे हैं वे भी इसी को प्रमाणित करते हैं।

विशेष :- यदि कोई यह कहे कि जन्म साखी में लिखी व्याख्या सन्त

गरीबदास जी गांव छुड़ानी वाले के लिए हैं। क्योंकि वे भी जाट जाति से थे तथा छुड़ानी गांव भी पहले पंजाब प्रांत के अन्तर्गत आता था। यह भी उचित नहीं लगती क्योंकि संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरनी सूम जगायसी'' भावार्थ है कि संत गरीबदास जी के सतगुरु पूज्य कबीर साहेब जी थे। पुराना रोहतक जिला (सोनीपत, रोहतक तथा झज्जर को मिला कर एक जिला रोहतक था) दिल्ली मण्डल में लगता था। यह किसी राजा के आधीन नहीं था। अग्रेंजो के शासन काल में दिल्ली के आधीन था। सन्त गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि सतगुरु (परमेश्वर कबीर जी) दिल्ली मण्डल में आऐंगे भक्तिहीन प्राणियों को जगाऐंगे सत्यभक्ति कराऐंगे। (ध्यान रहे कबीर सागर में काल के दूतों ने मिलावट करके सत्य को न जानकर अपनी अटकल बाजी से असत्य प्रमाण दिए हैं। उसका नाश करने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने अंश अवतार सन्त गरीब दास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रचार करवाया है। जो सन्त गरीब दास जी की अमृतवाणी रूप में है। इसी बात की पुष्टि ''कबीर सागर के सम्पादक कबीर पंथी श्री युगलानन्द बिहारी जी की उस टिप्पणी से होती है जो उन्होंने अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की भूमिका में की है कहा है कि कबीर पंथियों ने ही कबीर पंथ के ग्रन्थों का नाश कर रखा है। अपने–२ मते अनुसार फेर बदल करके अपने मत को जोड़ा है। मेरे पास अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की कई–२ प्रतियाँ रखी हैं। जिनमें से एक दूसरे से मेल नहीं खा रही हैं।)

सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म श्री नन्द राम जाट के घर 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना जिला सोनीपत (उस समय जिला रोहतक) में हुआ था। जो वर्तमान हरियाणा तथा पंजाब प्रांत मिलकर, उस समय एक ही 'पंजाब' प्रांत था। परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा था कि जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा मैं गरीबदास वाले बारहवें पंथ में आगे स्वयं आऊँगा। सन्त गरीबदास जी द्वारा मेरी (कबीर परमेश्वर की) महिमा की वाणी प्रकट होगी तथा गरीबदास वाले बारहवें पंथ तक के साधक मुझे आधार बनाकर वाणी को समझने की कोशिश करेंगे परन्तु वाणी को न समझ कर सतनाम तथा सारनाम से वंचित रहने के कारण असंख्य जन्म तक सत्यलोक प्राप्ति नहीं कर सकते। उसी बारहवें पंथ (गरीबदास जी वाले पंथ) में मैं (परमेश्वर कबीर जी) ही स्वयं चलकर आऊँगा। तब सन्त गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई वाणी को मैं (कबीर परमेश्वर) प्रकट होकर समझाऊँगा। प्रमाण के लिए कृप्या देखें इसी पुस्तक के पृष्ठ 92 पर पढ़ें 'कबीर परमेश्वर द्वारा स्वयं अवतार धारण करने की भविष्यवाणी''।

इस से सिद्ध हुआ कि जन्म साखी में जिस जाट सन्त के विषय में कहा है निरविवाद रूप से वह संत रामपाल दास जी महाराज जी ही हैं। फिर भी हम संत गरीबदास जी का विशेष आदर करते हैं। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर कबीर जी का अमर संदेश सुनाया है।

यदि कोई भ्रम उत्पन्न करे की दस गुरु साहिबानों में से भी किसी की ओर

संकेत हो सकता है। इसके लिए स्मरण रहे कि दस सिख गुरु साहिबानों में से कोई भी जाट वर्ण से नहीं थे। दूसरे सिख गुरु श्री अंगद देव जी खत्री थे। तीसरे गुरु जी श्री अमर दास जी भी खत्री थे। चौथे गुरु जी श्री रामदास जी खत्री थे तथा पांचवें गुरु जी श्री अर्जुन देव जी से लेकर दसवें तथा अन्तिम श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक श्री गुरु रामदास जी की सन्तान अर्थात् खत्री थे। फिर भी हम सभी सिख गुरु साहिबानों का विशेष आदर करते हैं।

संत रामपाल दास जी महाराज कहते हैं :-

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा,
हिन्दु मुसलिम, सिख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

जाति ना पूछो संत की, पूछ लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी जन्म साखी पंजाबी गुरुमुखी (पंजाबी भाषा) वाली तथा हिन्दी वाली दोनों में आप जी सहज में समझ सकते हो कि वास्तविक्ता क्या है। जन्म साखियों के प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह अमृतसर (पंजाब)।

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 272 की।

(२७२) ਸਾਖੀ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨਾਲ ਹੋਈ

ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਆ ॥੪॥ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਜੀ ਤੈਨੂੰ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡਾ ਭਗਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਔਰ ਆਪਕੇ ਸੰਜੋਗ ਬਹੁਤਿਆਂ ਕਾ ਉਧਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਵਡਾ ਪ੍ਰਤਾਪ ਹੋਵੇਗਾ ਇਸ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਏਥੇ ਆਯਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਾਂ ਆਪਕੇ ਕਰਤਾ ਨੇ ਆਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੂੰ ਪੁਛਿਆ ਹੇ ਭਗਤ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਭੀ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਤੇ ਤੁਸਾਡੇ ਪਿਛੇ ਰਾਮ ਜੀ ਵਡਾ ਚਲਤ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲ੍ਹੀ ਹੈ ਭਗਤ ਜੀ ਏਥੇ ਹੋਰ ਕੋਈ ਵੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਬੀਰ ਅਤੇ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਬੋਲਿਆ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਤਪੇ ਪਾਸੋਂ ਪੁਛ ਲੈ ਹੋਰ ਭੀ ਆਵਸੀ ਕਿ ਨਾ ਆਵਸੀ ਕੋਈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਗਲੀ ਤੇ ਪਿਛਲੀ ਸਭ ਆਪ ਨੂੰ ਸਤਿ ਜੁਗ ਥੀਂ ਆਦਿ ਲੈਕੇ ਮਾਲੂਮ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੇ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਇਸ ਜਿਹਾ ਕੋਈ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚੇਗਾ ਹੋਰਸ ਦਾ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚਣਾ ਕੰਮ ਨਾਹੀਂ ਹੋਰ ਅਗੇ ਵਡੇ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋਏ ਹੈਨ ਅਤੇ ਹੋਵਨਗੇ ਪਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਕੋਈ ਨਾਹੀਂ ਤਾਂ ਫੇਰ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਓਹ ਕਦ ਹੋਸੀ ਕਿਤੇ ਨੇੜੇ ਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ ਜਟ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਸਚਖੰਡ ਜਾਵੇਗਾ ਤਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਪਿਛੇ ਸਉ ਵਰੇ ਹੋਸੀ ਅਤੇ ਏਹਨਾਂ ਤੇਹਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਵਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਤਿੰਨ ਕੇਹੜੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਭਾਈ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 273 की।

ਸਾਖੀ ਇਕ ਪਹਾੜ ਦੀ ਚਲੀ (੨੭੩)
ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੁਆ ਹੈ ਅਤੇ ਫੇਰ ਉਹ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਕਬੀਰ ਜੁਲਾਹਾ ਹੋਯਾ ਤੇ ਨਾਨਕ ਖਤਰੀ ਹੋਏ ਅਤੇ ਜੀ ਉਹ ਕਿਸ ਵਰਨ ਹੋਵੇਗਾ ਜੀ ਤੇ ਕਿਸ ਧਰਤੀ ਤੇ ਹੋਸੀ ਕੌਹੜੇ ਸ਼ਹਿਰ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਿਹਾ ਭਾਈ ਪੰਜਾਬ ਧਰਤੀ ਤੇ ਵਰਨ ਜਟ ਤੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵਟਾਲੇ ਵਿਚ ਹੋਸੀ। ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਤੇ ਢਹਿ ਪਿਆ ਗੁਰੂ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली हिन्दी वाली के पृष्ठ 305 की

जन्म साखी (३०५) भाई बाले वाली

तब भक्त प्रहलाद ने कहा–हे नानक देव। आप को इस कलियुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप की ही संगति से अनेकों प्राणियों का भला होगा। और आप का अनंत प्रताप होगा। तब मरदाने ने कहा–हे प्रहलाद जी! आप भी तो परम भक्त हैं तथा भगवान ने आप के लिये ही अवतार धारन किया था। प्रहलाद जी ने कहा–हे भाई मरदाना। इस स्थान पर या तो कबीर पहुंचा है, और या यह गुरु नानक आया है। यहां आना कोई सुगम कार्य नहीं है। एक और महा पुरुष होगा जो पहुंच सकेगा। मरदाने ने कहा–हे भक्त वर। वह पुरुष कौन और कब होगा। प्रहलाद ने उत्तर दिया, कि जब गुरु नानक देव यहां आयेंगे तो इन के सौ वर्ष पश्चात आयेगा। अर्थात यहां केवल तीन आदमी ही आने हैं। एक तो भक्त कबीर और दूसरे श्री गुरु नानक देव जी इन के पश्चात वह तीसरा आयेगा। तब मर्दाने ने कहा हे प्रहलाद जी। कबीर तो जुलाहा था, और नानक देव–खत्री हैं। परंतु वह तीसरा किस जाती का होगा, उत्तर में प्रहलाद जी ने कहा–हे मर्दाना। पंजाब की धरती और वर्ण उस का जाट होगा। तथा नगर बटाला में होगा। उस समय मर्दाना गुरु जी के चरणों

प्रश्न : एक संस्कृत के विद्वान शास्त्री ने कहा कि आप के गुरु संत रामपाल दास जी महाराज संस्कृत नहीं पढ़े हैं। आप कहते हो कि उन्होंने श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद करके भक्तों को बताते हैं। यह कभी नहीं हो सकता।

उत्तर : सन्त रामपाल दास जी महाराज के भक्त ने उत्तर दिया शास्त्री जी उसी को परमेश्वर का अवतार कहते हैं। जो भाषा का ज्ञान न होते हुए यथार्थ अनुवाद कर दें। क्योंकि परमेश्वर सर्वज्ञ है। उन्हीं गुणों से युक्त उसका भेजा हुआ अवतार होता है। वह अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज जी हैं। आप तो केवल वेदों और गीता के अनुवाद से अचम्भित हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज ने तो बाईबल तथा कुरान को यथार्थ रूप में बताया है। जिसे ईसाई धर्म के वर्तमान के फादर व पादरी तथा मुसलमान धर्म के मुल्ला व काजी भी नहीं समझ सके। कृप्या पढ़िए पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' में।

''एक महापुरूष के विषय में जयगुरु देव की भविष्यवाणी''

''जयगुरुदेव पंथ के श्री तुलसी दास साहेब की विशेष भविष्यवाणी''

जयगुरू देव उर्फ राधास्वामी पंथ मथुरा के परम सन्त की भविष्यवाणी कृप्या पढ़ें पुस्तक ''जयगुरू देव की अमर वाणी भाग- 2'' के पृष्ठ 50 तथा 59 की फोटो कापी।

धर्माचार्यो, राजनीतिज्ञों को नेक सलाह

धर्म तब आऐगा जब सब धर्म के लोग लड़ना छोड़ें। राष्ट्र की उन्नति तभी होगी जब राजनैतिक लोग लड़ना, आंदोलन, हड़ताल, तोड़फोड़, रिश्वत अथवा स्वार्थ एवं दल बदल छोड़ दें। मांस, मछली, शराब, ताड़ी भी छोड़ दें। इसके पहले देश की खुशहाली की जो बात करता है वह भविष्य के आने वाले संकट से बदहोश है। वह यह नहीं जानता है कि देश की प्रजा दुराचारी, चरित्रहीन, लड़ने भिड़ने व कामचोर, हड़ताली, आन्दोलन, तोड़फोड़ करने वाली हो गई है। मांस, मछली, अण्डों का भक्षण करने लगी। शराब, ताड़ी व अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन से प्रजा बदहोशी में आकर पागल बनकर कुत्तों की भांति लड़ने लगी। वह देश की जनता अपनी गरीबी को कदापि नहीं मिटा सकती है।

–(शाकाहारी पत्रिकाः 28 जुलाई 1971)

औतारी शक्तियों का जन्म हो गया है

भारतवर्ष में औतारी शक्तियों ने जन्म ले लिया है। अनेक स्थानों पर वे बच्चों के रूप में पल रहें है और समय आने पर प्रगट हो जाऐंगी। माता पिता अपना सुधार कर लें वरना यही बच्चे उनके विनाश का कारण बन जाएगें। इन बच्चों को गोश्त व अण्डा दिया जाता है तो वे मुंह फेर लेते है और उधर देखते तक नहीं। माँ बाप इस बात का ध्यान रखें कि जो बच्चे इन चीजों को खाना नहीं चाहते उन्हें जबरदस्ती न खिलाएँ। वह औतार जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे है 20 वर्ष का हो चुका है यदि उसका पता बता दूँ तो लोग पीछे पड़ जाऐंगे। अभी उपर से आदेश बताने के लिए नहीं हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ और सभी महात्माओं ने समय का इन्तजार किया है। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जाएगा।

(शाकाहारी पत्रिकाः 7 सितम्बर 1971)

परिवर्तन का कारण भारतवर्ष बनेगा

भारतवर्ष को विश्व में परिवर्तन का कारण अब बनना होगा। त्रेता में विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और द्वापर में भी विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और इस समय में भी भारतवर्ष को ही कारण बनना होगा।

मुस्लिम राष्ट्रों में भारी कलह होगी। सभी मुसलमान आपस में लड़कर समाप्त हो जाऐंगे। अधिकांश छोटे–छोटे देश टूटकर बड़े राष्ट्रों में मिल जाऐंगे। भारतवर्ष इन सबका अगुआ होगा। चीन के समस्त वैज्ञानिक प्रगति को चूर्ण करके चीन को नष्ट कर दिया जाऐगा। चीन में बचे–खुचे लोगों की सहायता भारत करेगा। इसी बीच तिब्बत भारत में मिल जाएगा। यदि सभी राष्ट्र आपस में मिल कर भारतवर्ष पर आक्रमण करें तो भी इसे कोई जीत नहीं सकता है। भारत में नए सिरे से संगठन होगा। यदि विश्व के सभी राष्ट्र जी जान से यह प्रयास करे कि सुरक्षा परिषद अमेरिका से हटकर भारतवर्ष मे न जाने पावे तो यह कदापि नहीं होगा। सुरक्षा परिषद भविष्य में भारत में चली आएगी।

महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गांव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बडा सर्मथन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झंडा होगा। उसकी एक भाषा होगी।

(शाकाहारी पत्रिकाः 28 अगस्त 1971)

लड़ाई के समय में रक्षा होगी

स्वामी जी ने बताया कि युद्ध के समय में सत्संगियों की रक्षा की जाऐगी। जयगुरूदेव नाम को बराबर याद करते रहो। यह परमात्मा का नाम है और हर क्षण तुम्हारी रक्षा करेगा। **–(शाकाहारी पत्रिका : 14 नवम्बर 1971)**

उपरोक्त पुस्तक की फोटो कापियों में सन्त रामपाल जी महाराज के विषय में वर्णन इस प्रकार कहा हैं।

सन्त रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गाँव = धनाना, जिला = सोनीपत, प्रान्त = हरियाणा (भारत) में जाट किसान परिवार में हुआ।

विशेष जानकारी इस पुस्तक के कई स्थानों पर है। कृप्या वहां से पढ़ें ''जयगुरू देव की अमर वाणी'' भाग-2 पुस्तक के पृष्ट 50 पर संत तुलसी साहेब ने 7 सितम्बर 1971 को सत्संग में कहा था कि ''वह अवतार जिसकी लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं 20 वर्ष का हो चुका है, सन्त रामपाल जी महाराज 7 सितम्बर 1971 को पूरे 20 वर्ष के हुए थे, 8 सितम्बर 1971 उनका इक्कीसवां वर्ष प्रारंम्भ हुआ था। पृष्ठ 59 पर लिखा है कि वह महापुरूष छोटे से गाँव में जन्म ले चुका है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो गया है कि वह महापुरूष सन्त रामपाल जी महाराज जी ही हैं।

''भक्ति नाश का कारण''

सन्त रामपाल दास जी महाराज अपने अमृत वचनों में कहते हैं कि जो भी व्यक्ति स्वयंभु गुरू बन कर सुप्रसिद्ध हुए हैं। ये पूर्व जन्मों की पुण्यात्माऐं हैं। जिस कारण से उनके पुण्य धन से (पूर्व जन्म की भक्ति धन से) अनुयाईयों को कुछ भौतिक लाभ भी प्राप्त हो जाते हैं। लेकिन बाद में इन स्वयंभु गुरूओं की भक्ति क्षीण हो जाती हैं। जैसे इर्न्वटर की बैटरी चार्ज हैं। उससे पंखे भी चल रहे हैं, ट्यूब भी जग रहीं है, भले ही वर्तमान में चार्जर भी न लग हो। परन्तु संचित ऊर्जा के खर्च होने के बाद और आगे चार्जर न लगाने से एक दम बैट्री डिस्चार्ज हो जाती हैं तथा सर्व सुविधाऐं बन्द हो जाती हैं।

यही दशा वर्तमान के सर्व पुण्यात्माओं स्वयंभु गुरूओं की हैं। ये सर्व पूर्व जन्मों में की भक्ति से चार्जड थे। वर्तमान में शास्त्रानुकूल भक्ति (साधना) न होने के कारण अपना तथा अपने अनुयाईयों का जीवन नाश कर गए। कुछ वर्तमान में कर रहे हैं।

जयगुरू देव पंथ मथुरा का सन्त श्री तुलसी दास साहेब जी पूर्व जन्म के बहुत ही पुण्यकर्मी प्राणी हैं। ये श्री शिवदयाल सिंह जी से भी अधिक भक्ति धन युक्त हैं। परन्तु वर्तमान में साधना शास्त्रानुकूल न होने से अपनी पुण्यों का नाश कर लिया है। अब इनकी बैटरी पूर्ण रूप से डिस्चार्ज हो चुकि है।

जिस समय ''7 सिम्तबर 1971 में इन्होंने भविष्यवाणी की है। जो पुस्तक ''जय गुरुदेव की अमर वाणी'' के पृष्ठ 50 तथा 59 पर अंकित है।

➢ जिसमें एक अवतार की जानकारी दी है कि पृष्ठ 59 पर दिनांक 28 अगस्त 1971 को की गई भविष्यवाणी का कुछ अंश इस प्रकार है। महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गांव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झंडा होगा। उसकी एक भाषा होगी। कृप्या देखें फोटो कापी पुस्तक ''जयगुरुदेव की अमरवाणी'' भाग-2 के पृष्ठ 50-59 की। इसी पुस्तक के पृष्ठ 83 से 84 पर।

➢ पृष्ठ 50 पर दिनांक 7 सितम्बर 1971 की भविष्यवाणी का कुछ अंश इस प्रकार है। ''अवतारी शक्तियों का जन्म हो गया है''

..... वह अवतार जिसकी लोगों को प्रतिक्षा है 20 वर्ष का हो चुका है। यदि उसका पता बता दूं तो लोग पीछे पड़ जाऐंगे। अभी ऊपर से आदेश बताने के लिए नहीं हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जाएगा।

विवेचन :- संत रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना, जिला-सोनीपत, प्रांत-हरियाणा (भारत) में किसान (जाट) परिवार में हुआ। दिनांक 7 सितम्बर 1971 को संत रामपाल जी महाराज की आयु ठीक 20 वर्ष की थी। 8 सितम्बर 1971 को ईक्कीसवां वर्ष प्रारम्भ होता है। श्री तुलसी दास जी जो जयगुरुदेव पंथ मथुरा के वर्तमान में गुरु पद पर विराजमान हैं, उन्होंने जो भविष्यवाणी की है। वह संत रामपाल जी महाराज पर खरी उतरती है। इसके साथ-2 संत रामपाल जी महाराज का आध्यात्मिक ज्ञान अद्वितीय है। इसलिए सर्व संसार में विख्यात होगा।

संत रामपाल जी महाराज ने सर्व संतों तथा पंथों की भक्ति विधी पर सवाल उठाए हैं कि इन सर्व की साधना व्यर्थ है। इनके द्वारा बताए भक्ति के नाम मोक्षदायक नहीं हैं। जिन संतों को परमेश्वर मिला उन्होंने जो साधना की, हम सर्व को वही साधना करनी पड़ेगी। परमेश्वर प्राप्त संतों ने जो नाम जाप किए, जिनसे उनका मोक्ष हुआ, वे मंत्र वर्तमान में संत रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त किसी के पास नहीं हैं। यदि श्री तुलसी दास जी जयगुरूदेव पंथ मथुरा वाले की दिव्य दृष्टि काम करती है तो बताऐं कि वास्तव में वे महापुरूष संत रामपाल जी महाराज हैं या कोई अन्य है। हमें तो सत प्रतिशत विश्वास है कि संत रामपाल जी महाराज जी ही वह महापुरूष अवतार हैं। जिसके विषय में सर्व भविष्यवक्ताओं ने भविष्य वाणीयाँ की हैं। एकमात्र संत रामपाल जी महाराज ने ही अपने अनुयाईयों की शराब, तम्बाखू, मांस, चोरी, रिश्वत खोरी आदि-2 सर्व बुराईयाँ छुड़वाई हैं।

श्री तुलसी दास साहेब जी मथुरा में जयगुरुदेव पंथ के वर्तमान प्रमुख ने तथा अन्य भविष्यवक्ताओं ने केवल इतना कार्य किया है। जैसे खगोल-भूगोल का ज्ञाता यह बताए कि कल सूर्य 6 बजकर 45 मिनट पर उदय होगा। सूर्य को तो उदय होना ही था, चाहे कोई बताए या ना बताए। सूर्य उदय हो चुका हो, सामने धुन्ध के बादल छाए हों। कोई व्यक्ति बच्चों को बताए कि सूर्य उदय हो चुका है। समय आने पर दिखाई देगा। सूर्य कहां पर है, यह बताने में असमर्थ व्यक्ति कहता है कि जब धुन्ध के बादल हट जाऐंगे, अपने आप सूर्य दिखाई देगा। सूर्य तो उदय है। वह दिखाई भी देगा, चाहे कोई बताए ना बताए। ऐसी भविष्यवाणी श्री तुलसी दास साहेब मथुरा में जयगुरुदेव पंथ के वर्तमान मुखिया की है। अब सूर्य उदय हो चुका है। यदि तुलसी दास की आखें (दिव्य दृष्टि) अब भी काम कर रही है तो

बताए कि सूर्य अर्थात् वह अवतार महापुरूष कहाँ पर है। यदि श्री तुलसी साहेब यह बताने में असमर्थ है कि वह अवतारी पुरूष कौन है तो उनकी पूर्व जन्म की भक्ति शक्ति पूर्ण रूप से क्षीण हो चुकि है। क्योंकि 7 सितम्बर 1971 को उनकी दिव्य दृष्टि ने सही कार्य किया था। जिसमें उन्होंने कहा है (पुस्तक = ''जयगुरु देव की अमर वाणी'' भाग-2 पृष्ठ 50 तथा 59 पर) कि ''महापुरूष का जन्म भारत वर्ष के एक छोटे से गाँव में हो चुका है। वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उस का एक झण्डा होगा। उसकी एक भाषा होगी। यह विवरण पृष्ठ 59 पर है तथा पृष्ठ 50 पर कहा है कि वह अवतार जिस की लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं 20 वर्ष का हो चुका है।'' (भविष्यवाणी समाप्त)

सन्त रामपाल जी महाराज का जन्म गाँव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा, भारतवर्ष में 8 सितम्बर 1951 को एक जाट किसान परिवार में हुआ। जयगुरु देव पंथ मथुरा के मुखिया श्री तुलसी साहेब के अनुसार 7 सितम्बर 1971 को सन्त रामपाल जी महाराज ठीक 20 वर्ष के हुए थे तथा 8 सितम्बर से उनके शरीर की आयु का इक्कीसवां वर्ष प्रारम्भ हुआ था।

सन्त रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में बार-बार प्रार्थना करते हैं कि वर्तमान के सर्व गुरु जन कृप्या ध्यान दें। आप जी शास्त्रविधी विरूध साधना कर तथा करवा रहे हो। आप बहुत बड़े मानव समाज के जीवन के नाशक बन रहे हो। आप भी तथा आप के अनुयाई, अपना अनमोल मानव जीवन नष्ट कर रहे हो। सर्व वर्तमान के गुरु जन महापाप के भागी बन रहे हो। आप जी को, पाप के भार से मुक्त होने का रास्ता भी सन्त रामपाल जी महाराज जी ही बताते हैं कि आप सन्त रामपाल जी महाराज जी के द्वारा बताए आध्यात्मिक ज्ञान को गहराई से जानों। फिर अपने शिष्यों से कह दो कि ''हमने आप जी को जो भक्ति दिशा दी है। वह अधुरी है। हमारा उद्देश्य तो था कि आपको मुक्ति दिलाऐं। परन्तु हमें तत्व ज्ञान नहीं था। अब सर्व भक्त सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास जाओ तथा दिक्षा ग्रहण करो।'' इस प्रकार कहने से गुरुजन पाप के भार से मुक्ति प्राप्त कर लेगें। फिर स्वयं भी अपना कल्याण कराऐं व सन्त रामपाल दास जी महाराज जी के पास आकर नाम दिक्षा ग्रहण करें।

सन्त रामपाल दास जी महाराज कहते है कि सर्व सन्त तथा भक्तजन जो दिशा भ्रष्ट है। मुझ दास के पास आओ, अभिमान-बड़ाई को त्यागो। मुझे अपना बच्चा जान कर अपने जन्म-मृत्यु के दीर्घ रोग का नाश कराओ। जैसे किसी का बच्चा डाक्टर बन जाता है। उसके पास उपचार के लिए जाने में संकोच कैसा? वह डाक्टर बच्चा तो अपने माता-पिता-भाई बहन तथा छोटे-बड़े सर्व समाज के व्यक्तियों का उपचार करता है। ठीक इसी प्रकार सन्त रामपाल जी महाराज के पास

जन्म-मृत्यु के रोग को नाश करने की जड़ी 'सतनाम' (जो दो अक्षर का है) है तथा सारनाम (जिसे आदिनाम भी कहते हैं) डाक्टर के पास दूसरे डाक्टर भी तो अपना उपचार कराने आते हैं। इसमें मान-बड़ाई का प्रश्न नहीं है।

सन्त रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में बताते हैं कि जब यह तत्वज्ञान वर्तमान गुरुओं को समझ आ जाएगा तो इन के सामने काल एक और बाधा खड़ी करेगा कि हमारा सर्व जीवन इस साधना में व्यतीत हो गया है। अब हमारा कल्याण कैसे होगा ? यदि गुरु बदल लिया तो हम घर के रहे ना घाट के, उन्हें इस शंका के समाधान के लिए एक उदाहरण है :- महर्षि रामानन्द पंडित जी जिस समय 104 वर्ष के हो चुके थे। उस समय परमेश्वर कबीर जी ने उनको तत्वज्ञान समझाया तथा सत्यलोक में अपनी समर्थता से परिचित कराया। उस समय स्वामी रामानन्द जी ने 1400 (चौदह सौ) ऋषि शिष्य बना रखे थे। जो अन्य स्थानों पर प्रचार किया करते थे। तब महर्षि रामानन्द जी ने यह प्रश्न परमेश्वर कबीर जी के समक्ष किया था कि ''हे परमेश्वर'' अब मेरा क्या होगा। यदि में आप से उपदेश ले लूं तो मेरी पूर्व साधना का क्या होगा। अब आयु बहुत ही कम शेष है। आप वाली भक्ति कैसे कर पाऊंगा? कहीं मैं घर का रहूं ना घाट का। परमेश्वर कबीर जी ने उस पुण्यात्मा की शंका का समाधान इस प्रकार किया था। (उस समय परमेश्वर कबीर जी की लीलामय आयु 5 वर्ष की थी।) परमेश्वर कबीर जी ने कहा स्वामी जी जैसे बच्चा दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है। उसको आगे की शिक्षा का ज्ञान न हो और कोई उसे कहे कि आप आगे की उच्च कक्षा में प्रवेश पाओ। वह बच्चा कहे कि मेरी पीछे की पढ़ाई का क्या होगा? तो यह प्रश्न अबोध बच्चे ही किया करते है। फिर परमेश्वर कबीर जी ने कहा स्वामी जी ! (कबीर परमेश्वर जी ने मर्यादा बनाए रखने के लिए महर्षि रामानन्द जी को गुरु बना लिया था। इसलिए ''स्वामी'' शब्द से संबोधित करते थे।) यह आध्यात्मिक मार्ग है। मर्यादा में रह कर भक्ति करने से आध्यात्मिक लाभ शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। मैं (कबीर परमेश्वर) आप को ''सत्यनाम'' (जो दो अक्षर का है। जिस में एक ओम् तथा दूसरा ''तत्'' जो सांकेतिक है) दूंगा। जिस के एक स्मरण से इतनी भक्ति धन प्राप्त होता है कि चौदह लोक की कीमत भी कम रह जाए।

सत्यनाम पालड़ै रंग होरी हो, चौदह लोक चढ़ावै राम रंग होरी हो।
तीन लोक पासंग धरै रंग होरी हो, तो ना तुलै तुलाया राम रंग होरी हो।।

कबीर परमेश्वर जी ने फिर कहा कि हे स्वामी जी :-

जीवन तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरण हो।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

इस सत्यनाम तथा सारनाम (आदि नाम) के जाप को श्रद्धा से करने से शीघ्र ही मोक्ष लाभ हो जाता है। इस मन्त्र के बिना चाहे लाख वर्ष भी गलत साधना करते रहो, कोई लाभ नहीं।

दूसरा उदाहरण :- यदि कोई व्यक्ति यात्रा कर रहा है। उस ने दिल्ली से बरवाला जिला हिसार हरियाणा में आना है। वह जा रहा है, दिल्ली से आगरा की ओर तथा जा चुका है 200 कि.मी.। वहां कोई उसे कहे कि आप की दिशा ठीक नहीं है। आप विपरीत मार्ग पर जा रहे हो। उस यात्री को विचार करना चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति ने ऐसा क्यों कहा? यदि आप को विश्वास नहीं आया हो तो मानचित्र देखना चाहिए। सर्व जांच करने के पश्चात् यात्री को पता चला कि वास्तव में मेरा मार्ग गलत है। फिर वह यात्री यह कहे कि मैंने इतना रास्ता (200 कि.मी) तय कर लिया, इसको कैसे छोड़ूं.? इतना समय लगा दिया इसका क्या बनेगा? क्या बुद्धिमान व्यक्ति यह प्रश्न करेगा? नहीं। वह यात्री उस व्यक्ति का धन्यवाद करेगा, जिसने सावधान किया तथा सही मार्ग बताया।

उपरोक्त प्रथम उदाहरण में :- स्वामी रामानंद जी वेदों तथा श्री मदभगवत् गीता व पुराणों को आधार मान कर साधना कर रहे थे। वे दसवीं कक्षा तक की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तथा कई जन्मों से उसी कक्षा में ही पास-फेल हो रहे थे। उनके लिए कहा गया है कि उन्हें आगे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए पूर्व विद्यालय तथा पूर्व गुरु त्यागने होंगे तथा आगे की शिक्षा परमेश्वर कबीर जी (सत्यपुरूष ने) स्वयं तत्वदर्शी संत के रूप में आकर बताई है। जो जन्म-मरण से पूर्ण मोक्ष दिलाती है। जो महर्षि रामानंद जी ने सहर्ष स्वीकार की।

दूसरा उदाहरण राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाओं (जयगुरु देव पंथ मथुरा, धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा सिरसा, जगमाल वाली तथा गंगवा हिसार के पास, श्री ताराचंद जी दिनौंद भिवानी के पास, श्री कृपाल सिंह वाला राधास्वामी पंथ तथा ठाकुर सिंह वाला पंथ) तथा निरंकारी पंथ, हंसादेश पंथ आदि पर खरा उतरता है। इन पंथों का मार्ग न तो परमेश्वर कबीर जी अनुसार सत्यलोक प्राप्ति का है न ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी आदि देवताओं व ब्रह्म (क्षर पुरूष) वाला है, जो दसवीं तक की शिक्षा है। इसलिए इनका मार्ग विपरीत होने से लाभदायक नहीं है।

इन सर्व से निवेदन है कि कृप्या पुनर् विचार करें तथा सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार, हरियाणा में पहुँच कर जगत् गुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से दिक्षा स्वयं भी लें तथा अपने शिष्यों को भी आदेश दें कि आप सर्व भक्तजन सतलोक आश्रम बरवाला में जाकर यथार्थ भक्ति मार्ग ग्रहण करें। इस प्रकार करने से वे गुरुजन जो शास्त्रविरूद्ध साधना कर तथा करा रहे हैं। महापाप से बच जाऐंगे। मानव जीवन बहुत अनमोल है। इसको नष्ट करना तथा कराना महाअपराध है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

संखों गुरु गर्द में मिल गये, चेलों को कहां ठिकाना।
झूठे गुरुवों बात बिगाड़ी, काल जाल नहीं जाना।।
बात कहत हैं पार जान की, खड़े वार के वारै।
ना गुरुपुरा ना सतनाम उपासना, कैसे प्राण निस्तारै।

''शास्त्रों के आधार से पूर्ण संत तारणहार की पहचान''

श्री सावन सिंह, जो बाबा जयमल सिंह जी के शिष्य तथा डेरा ब्यास के दूसरे गद्दी नशीन हैं। बाबा जयमल सिंह आगरा के श्री शिवदयाल सिंह जी (राधास्वामी) के शिष्य थे।

श्री सावन सिंह जी ने अपने विचार तथा श्री शिवदयाल (राधास्वामी) के विचारों को पुष्ट करने के लिए ''सन्तमत प्रकाश'' पुस्तक 5 भागों में लिखी है। सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 पर ''श्री गुरु ग्रंथ साहेब'' से श्री नानक जी की अमरवाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की अमृतवाणी का हवाला देकर अपने मत को पुष्ट करने की कुचेष्टा की है। जो उनके विपरीत ही गई। जो इस प्रकार है :-

पुस्तक ''सन्तमत प्रकाश भाग-4'' के पृष्ठ 261 पर लिखा है कि ''गुरु ग्रन्थ साहेब'' में लिखा है :-

सोई गुरु पूरा कहावै, जो दो अख्खर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर को पावै।।
जै तू पढ़या पंडित बिन, दोय अख्खर बिन दोय नावां।
प्रणवत नानक एक लंघाए, जे कर सच्च समावां।।

फिर परमेश्वर कबीर जी की वाणी का हवाला देकर लिखा है कि कबीर जी भी यही कहते हैं :- कह कबीर अखर दोय भाख, होयगा खसम तो लेगा राख।

फिर पृष्ठ 262 पर (सन्तमत प्रकाश भाग-4) पर श्री नानक जी की वाणी का हवाला दिया है जो इस प्रकार है :-

बेद कतेब सिमृत सभ सासत, इन पढ़या मुकत न होई।
एक अक्खर जो गुरमुख जापै तिस की निरमल सोई।।

उपरोक्त वाणीयाँ स्वयं परमेश्वर कबीर जी तथा परमात्मा प्राप्त सन्त नानक देव जी की है। इसका अनुवाद व भावार्थ श्री सावन सिंह जी ने गलत किया है कहा है कि वे दो अक्षर पारब्रह्म में आगे जाकर मिलेंगे। राधास्वामी पंथ के संत तथा शाखाओं के संत पांच नाम (ररंकार, औंकार, ज्योतिनिरंजन, सोंह तथा सतनाम) तथा अकाल मूर्ती, सतपुरूष, शब्द स्वरूपी राम व राधास्वामी नाम दान करते हैं। ढाई घण्टे सुबह व ढाई घण्टे शाम हठ योग करने से मोक्ष बताते हैं। जो साधना किसी भी परमात्मा प्राप्त संत तथा परमेश्वर कबीर जी की अमरवाणी से मेल नहीं खाती।

पूर्वोक्त अमृतवाणी में श्री नानक जी तथा परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि ''तारणहार परम संत'' वही है। जो दो अखर का भेद बताता है, क्योंकि दो अखर का जाप करने को कहा है। गुरु मुख होकर अर्थात् गुरु जी जिन दो अखर के नाम जाप करने को कहते हैं, वह सतनाम है। उस सतनाम में दो अखर इस प्रकार हैं, ओम् तथा दूसरा-तत् है। जो सांकेतिक है। उसको संत रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

फिर ''एक नाम गुरु मुख जापै नानक होत निहाल'' जिसका भी अर्थ स्पष्ट है कि दो अखरों अर्थात् सतनाम से भिन्न एक नाम और है। जिसे आदि नाम या सारनाम कहा है। वह भी जाप करने का है। उसको भी गुरु जी ही दान करेगा।

एक श्री तुलसी दास हाथरस वाले संत हुए हैं। उन्होंने कबीर परमेश्वर जी की वाणी को पढ़कर स्वयंभू संत बनकर अपनी वाणी बनाकर ''घट रामायण''नामक पुस्तक-2 भागों में लिखी है। ''घट रामायण'' भाग-1 पृष्ठ 27 पर तुलसी दास जी हाथरस वाले स्पष्ट करते हैं कि ''पांचों नाम काल के जानों''..... फिर कहा है ''सतनाम'' ले जीब उबारी। आदि नाम ले काल गिराऊँ।

इससे भी स्पष्ट है कि पांच नाम काल के हैं। इनसे अन्य सतनाम तथा आदि नाम जिसे सारनाम भी कहते हैं, अन्य है जो मोक्ष दायक हैं।

निष्कर्ष :- पूर्ण संत तारणहार (सायरन) संत रामपाल दास जी हैं। जिन्होंने दो अखर का भेद बताया है। राधास्वामी वाले, सच्चा सौदा वाले, परम संत तारणहार नहीं हैं। ये सर्व नकली हैं, इनसे बचें तथा सन्त रामपाल जी महाराज के पास आकर अपना कल्याण कराऐं।

''तारणहार परम सन्त'' की अन्य पहचान :-

परमेश्वर कबीर जी ने परम सन्त तारणहार जो परमेश्वर कबीर जी का कृपा पात्र होता है। उसकी पहचान बताते हुए कहा है :-

जो मम सन्त सत शब्द दृढ़ावै। वाकै संग सब राड़ बढ़ावै।
ऐसे सन्त महन्तन की करणी, धर्मदास मैं तोसे वरणी।।

इस अमर वाणी का भावार्थ है कि :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जो मेरा सन्त, सच्चे ज्ञान व सच्चे नाम (सतनाम) के विषय में दृढ़ता से बताएगा। उस के साथ, उस समय के सन्त तथा महन्त झगड़ा करेगें। क्योंकि वह सच्चा ज्ञान उन नकलियों के नकली ज्ञान का पर्दा फाश करेगा। यह पहचान भी उस सन्त की होगी। वर्तमान में सन्त रामपाल जी महाराज के सच्चे ज्ञान से बौखला कर करौंथा काण्ड करा दिया। परन्तु परमेश्वर कबीर जी का पंजा सिर पर बाराबर बना रहा जिस कारण संत रामपाल जी महाराज तथा अनुयाई सुरक्षित रहे। परमेश्वर का प्रचार पहले से कई गुना बढ़ गया। परमेश्वर सत्य का साथ देते हैं।

विशेष :- पुस्तक ''जय गुरुदेव की अमरवाणी'' भाग-2 के पृष्ठ 43 पर लिखा है कि ''भारत जैसे राष्ट्र में हम प्रत्येक व्यक्ति का आदर करते हैं। इसलिए हमारे विधान में आलोचना करने की स्वत्रंता है और हमारा अनुरोध है कि आलोचना सत्य को सामने रखते हुए करनी चाहिए। जिससे जनहित हो।

स्वामी जी शाकाहारी पत्रिका
14 जून 1971

प्रिय पाठकों इस पुस्तक ''जय गुरुदेव की विशेष भविष्यवाणी'' में सर्व विवेचन प्रमाणों सहित किया गया है। फिर भी कोई भूल हुई हो तो क्षमा करें।

धन्यवाद

''परमेश्वर कबीर जी द्वारा अवतार धारण करने की भविष्यवाणी''

कबीर सागर में कबीर बानी नामक अध्याय में पृष्ठ 136-137 पर बारह पंथों का विवरण देते हुए वाणी लिखी हैं जो निम्न हैं :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
प्रथम आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।
दूसर जगमें जागू भ्रमावै। विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै।।
तीसरा सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
चौथा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
पंचम पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवन की करी है हानी।।
छठवाँ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्व का मर्म दृढावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
सातवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा।।
आठवाँ जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
नौवें राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमले जीव दृढावै।।
दसवें ज्ञान की काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
ग्यारहवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमें सो शब्द होय निरधारा।।
सम्वत् सत्रासै पचहत्तर होई, तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारवें पंथ प्रगट है बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारवें पंथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावें।।

उपरोक्त वाणी में ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी, (हरियाणा) वाले का जन्म 1774 में वैसाख पूर्णमासी को हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि भारतीय वर्ष चैत्र मास से प्रारम्भ होता है सन्त गरीबदास जी का जन्म वैसाख मास में हुआ जो चैत्र के बाद प्रारम्भ होता है। कई बार दो चैत्र मास भी बनाए जाते हैं। उस समय शिक्षा का अति अभाव था। प्रत्येक गाँव में एक ही तीथि बताने वाला होता

था। वह भी अशिक्षित ही होता था। आस–पास के शहर या गाँव से तिथि किसी अन्य ब्राह्मण से पता करके फिर गाँव में सर्व को बताता था। इस कारण से भी संवत् 1775 के स्थान पर संवत् 1774 लिखा गया हो वास्तव में यह संकेत गरीबदास जी के विषय में ही है)।

भावार्थ यह है कि :- कबीर परमात्मा ने गरीबदास जी का ज्ञान योग खोल कर उनके द्वारा अपना तत्वज्ञान स्वयं ही प्रकट किया। जो सत्ग्रन्थ साहेब रूप में लीपिबद्ध है। कारण यह था कि कबीर वाणी में नकली कबीर पंथियों ने मिलावट कर दी थी। इसलिए परमेश्वर कबीर जी की महिमा का ज्ञान पुनर् प्रकट कराया फिर भी तत्व भेद (सार ज्ञान) गुप्त ही रखा (जो अब प्रकट हो रहा है।) इस कारण गरीबदास जी के पंथ में तत्वज्ञान नहीं है जिस कारण से वे गरीदास साहेब की वाणी का विपरीत अर्थ लगा कर जन्म व्यर्थ करते रहे उन्हें असंख जन्म भी ठौर नहीं है अर्थात् वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते केवल एक सन्त शीतल दास जी वाली प्रणाली में मुझ दास तक एक सन्त ही पार होता आया है जो एक सन्त सारनाम प्राप्त करके केवल एक को आगे बताकर गुप्त रखने की कसम दिलाता था। वह भी आगे केवल एक शिष्य को बताकर गुप्त रखता था समय आने पर परमेश्वर कबीर जी के संकेत से ही आगे शिष्य को आज्ञा देता था। इस प्रकार मुझ दास तक यह सारनाम कड़ी से जुड़ा हुआ पहुँचा है अब यह सर्व अधिकारी श्रद्धालु भक्तों को देने का आदेश प्रभु कबीर जी का है इसलिए कहा है बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा यह पंथ हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र से अपरिचित होने के कारण गरीबदास पंथ के साधक असंख्य जन्म तक सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में सोनीपत जिला, झज्जर जिला, रोहतक जिला) दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास जी वाला पंथ स्पष्ट लिखा है।

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वार प्रचलित बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

कबीर परमश्वेर जी सन् 1518 में सतलोक प्रस्थान के 33 वर्ष पश्चात् सन् 1551 में सात वर्षीय संत दादू साहेब जी को मिले, 209 वर्ष पश्चात् सन् 1727 में दस वर्षीय संत गरीबदास जी को गाँव छुड़ानी, जिला झज्जर(हरियाणा प्रदेश, भारत) में मिले। इसके बाद 292 वर्ष पश्चात् सात वर्षीय संत घीसा दास जी को गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ(उतर प्रदेश) में मिले। जो आज भी यादगार साक्षी हैं तथा उपरोक्त संतों द्वारा लिखी अमृत वाणी साक्षी रूप हलफिया ब्यान(एफिडेविट) है कि परमेश्वर कबीर जी काशी वाले जुलाहा धाणक ने स्वयं साक्षात दर्शन दिए तथा अपने सतलोक के भी दर्शन करा करके अपनी समर्थता का प्रमाण दिया।

संत रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर साहेब जी संवत् 2054 फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष एकम (मार्च) 1997 को दिन के दस बजे मिले तथा सारशब्द की वास्तविकता तथा संगत को दान करने का सही समय का संकेत दे कर अर्न्तध्यान हो गए तथा इसको अगले आदेश तक रहस्य युक्त रखने का आदेश दिया।

''पवित्र कबीर सागर में काल के दूतों द्वारा हस्तक्षेप''

''अनुराग सागर'' :- यह अध्याय कबीर सागर का ही अंग है।

वर्तमान कबीर सागर के संशोधन कर्ता श्री युगलानन्द बिहारी (प्रकाशक एवं मुद्रक-खेमराज श्री कृष्ण दास, श्री वेंकेटेश्वर प्रैस मुंबई) द्वारा अपने प्रस्तावना में लिखा है कि मेरे पास अनुराग सागर की 46 (छियालिस) प्रतियाँ हैं। जिनमें हस्त लिखित तथा प्रिन्टिड हैं। सभी की व्याख्या एक दूसरे से भिन्न हैं। अब मैंने (श्री युगलानन्द जी ने) शुद्ध करके सत्य विवरण लिखा है।

विवेचनः- श्री युगलानन्द जी ने अनुराग सागर पृष्ठ 110 पर लिखा है कि धर्मदास साहेब जी नीरू का अवतार अर्थात् नीरू वाली आत्मा ही धर्मदास रूप में जन्मी थी तथा नीमा वाली आत्मा ही आमनी रूप में जन्मी थी। वाणी बना कर लिखी है, कबीर वचन :-

चलेहु हम तब सीस नवाई, धर्मदास अब तुम लग आई।
धर्मदास तुम नीरू अवतारा, आमिनि नीमा प्रगट बिचारा।।

तथा ''ज्ञान सागर'' पृष्ठ नं. 72 पर धर्मदास को नीरू अवतार नहीं लिखा है तथा नीरू के स्थान पर नूरी लिखा है।

विशेषः- पुस्तक ''धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय'' दामाखेड़ा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 9 पर लिखा है। धर्मदास जी का जन्म संवत् 1452(सन् 1395) तथा कबीर सागर ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ-1790 पर कबीर जी के जन्म के विषय में लिखा है कि संवत् 1455 (सन् 1398) ज्येष्ठ शुद्धि पूर्णिमा सोमवार के दिन सतपुरूष का तेज काशी के लहरतारा तालाब पर उतरा अर्थात् कबीर जी बालक रूप में प्रकट हुए।

पृष्ठ नं. 1791, 1792 (कबीर चरित्र बोध) पर लिखा है कि नीरू जुलाहा तथा

उसकी पत्नी नीमा चले आ रहे थे। उन्हें एक बालक देखा उसे उठा लिया।

पृष्ठ नं. 1794 से 1818 तक आदरणीय गरीबदास जी महाराज (छुड़ानी-हरियाणा वाले) की वाणी के द्वारा महिमा समझाई है। सन्त गरीबदास जी महाराज की वाणी लिखी है (यह भी कबीर सागर में प्रक्षेप अर्थात् मिलावट का प्रत्यक्ष प्रमाण है)

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि :-

(1.) संत धर्मदास साहेब का जन्म सन् 1395 में तथा परमेश्वर कबीर जी का अवतरण सन् 1398 में तथा नीरू व नीमा को मिलन सन् 1398 में तो धर्मदास जी व परमेश्वर कबीर जी तथा नीरू व नीमा समकालीन हुए। यह वाणी की धर्मदास जी नीरू वाली आत्मा थी, गलत सिद्ध हुई। इससे सिद्ध हुआ कि कबीर सागर में मिलावट (प्रक्षेप) है जो दामाखेड़ा वालो द्वारा जान बूझ कर किया गया। सन्त गरीबदास जी (छुडानी-हरियाणा वाले) का जन्म सन् 1717 (सम्वत् 1774) में हुआ। जो कबीर जी के अन्तर्ध्यान के 199 वर्ष बाद की गरीबदास जी की वाणी भी कबीर सागर में कबीर चरित्र बोध में लिखी है। जो प्रत्यक्ष प्रमाण करती है कि कबीर सागर में मिलावट है।

स्वसम वेद बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 137 पर साखी लिखी है की काशी में भण्डारे के समय कबीर जी तो घर छोड़ कर चले गए तथा विष्णु ने भण्डारा किया:-

भीर भई साधुन की भारी, गृह तजि सत्य कबीर सिधारी।
आये विष्णु भये भण्डारी, साधुन को आदर करि भारी।।

इससे सिद्ध है कि कोई नकली कबीर पंथी मिलावट कर्ता श्री कृष्ण का भी पुजारी है तथा सत् कबीर जी की महिमा से अपरिचित है।

विशेष विवरण:- कबीर सागर ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ नं. 1862 से 1865 तक लिखा है कि कलयुग में कबीर साहेब ने चार गुरू नियत किये हैं।

(1.) धर्मदास जी जिस के बयालिश वंश है तथा ''उत्तर'' में गुरूवाई सौंपी है।
(2.) दूसरे चतुर्भुज ''दक्षिण'' में गुरूवाई करेगें।
(3.) तीसरे बंक जी ''पूर्व'' में गुरूवाई करेगें।
(4.) चौथे सहती जी ''पश्चिम'' में गुरूवाई करेगें।

जिस समय कबीर सागर लिखा गया सन् 1505(सम्वत् 1562) में उस समय तक केवल एक धर्मदास जी ही प्रकट हुए थे। जब ये चारों गुरू प्रकट हो जाऐगें तब पूरी पृथ्वी पर केवल कबीर साहेब जी का ही ज्ञान चलेगा।

यही प्रमाण ''अनुराग सागर'' पृष्ठ नं. 104-105 पर है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि कलयुग में धर्मदास जी के अतिरिक्त तीन गुरू और पृथ्वी पर प्रकट होगें, उनके द्वारा भी जीव उद्धार होगा। दामा खेड़ा वालों द्वारा बनाई दन्त कथा गलत सिद्ध हुई कि कलयुग में केवल धर्मदास जी के वंशजो द्वारा ही जीव उद्धार सम्भव है अन्य द्वारा नहीं। यह उल्लेख कबीर सागर में कबीर वाणी पृष्ठ 160 पर लिखा है जो स्पष्ट मिलावट दिखाई देती है। ''वर्तमान कबीर सागर'' के संशोधन

कर्ता श्री युगलानन्द जी ने ज्ञान प्रकाश- बोध सागर पृष्ठ नं. 37 के नीचे टिप्पणी की है कि इस ज्ञान प्रकाश की कई लीपी मेरे पास हैं परन्तु कोई भी एक दूसरे से मेल नहीं खाती। लेखक महात्माओं की कृपा से पक्षपात और अविद्यावश कबीर पंथ के ग्रन्थों की दुर्दशा हुई है।

विशेष :- भक्त जन विचार करें कि काल ने कैसा जाल फैलाया है। अपने दूतों द्वारा परमेश्वर के सत् ग्रन्थों को ही बदलवा डाला। फिर भी सत्य को छुपा नहीं सके।

कबीर :– चोर चुराई तूम्बड़ी, गाढै पानी मांही।
वो गाढे वह उपर आवै, सच्चाई छयानी नाहिं।।

इसकी पूर्ति परमेश्वर ने संत गरीबदास जी (छुड़ानी-हरियाणा वाले) द्वारा करवाई है। गरीबदास जी द्वारा भी संस्ययुक्त वाणी युक्त करवाई है जिस में श्री विष्णु जी की महिमा भी अधिक वर्णित है तथा सारज्ञान (तत्वज्ञान) भी गुप्त ढ़ंग से लिखा हैं संत गरीबदास जी की वाणी में निर्णायक ज्ञान नहीं है। कबीर जी की शक्ति से ही आदरणीय गरीबदास जी ने वाणी बोली है। कबीर जी ने जो बुलवाना था वही बुलवाया ताकि अब तक(मुझ दास रामपाल तक) भेद छुपा रहे। अब उसी बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने वह पूर्ण ज्ञान(तत्वज्ञान) मुझ दास(रामपाल दास) तेरहवां वंश द्वारा प्रकट कराया है।

कबीर वाणी पृष्ठ 134 :- ''वंश प्रकार''

प्रथम वंश उत्तम।1। दूसरा वंश अहंकारी।2। तीसरा वंश प्रचंड।3। चौथे वंश बीरहे।4। पाँचवें वंश निद्रा।5। छटे वंश उदास।6। सांतवें वंश ज्ञानचतुराई।7। आठे द्वादश पन्थ विरोध।8। नौवं वंश पंथ पूजा।9। दसवें वंश प्रकाश।10। ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा।11। बारहवें वंश प्रगट होय उजियारा।12। तेरहवें वंश मिटे सकल अँधियारा।13। **(कृप्या देखें फोटो कापी कबीर सागर की इसी पुस्तक के पृष्ठ 102 पर)**

भावार्थ :- उपरोक्त विवरण में प्रथम वंश जो उत्तम लिखा है वह चूड़ामणी साहेब के विषय में है, दूसरा वंश अहंकारी लिखा है ''यागौदास'' पंथ है, तीसरा वंश प्रचण्ड लिखा है, यह सूरत गोपाल पंथ है, चौथा वंश बीरहे लिखा है, यह ''मूल निरंजन पंथ'' है। पांचवाँ वंश ''पूजा टकसार पंथ'' है। छठा वंश ''उदास'' यह ''भगवान दास पंथ'' सातवां वंश ''ज्ञान चतुराई'' यह सत्यनामी पंथ है। आठवाँ वंश''द्वादश पंथ विरोद्ध'' यह कमाल का पंथ है। नौवाँ वंश ''पंथ पूजा'' यह राम कबीर पंथ है। दशवाँ वंश प्रकाश यह प्रेमधाम (परम धाम) की वाणी पंथ है। ग्यारहवाँ वंश ''प्रकट पसारा'' यह जीवा पंथ है। बारहवाँ वंश ''गरीबदास पंथ'' है। तेरहवाँ वंश यह यथार्थ कबीर पंथ है जो मुझ दास (सन्त रामपाल दास) द्वारा बिचली पीढ़ी के उद्धार के लिए प्रारम्भ कराया है। कबीर परमेश्वर ने अपनी वाणी में काल से कहा था कि तेरे बारह पंथ चल चुके होगें तब मैं अपना नाद (वचन-शिष्य परम्परा वाला) वंश अथार्त् अंस भेजेगें उसी आधार पर यह विवरण लिखा है। बारहवां वंश (अंश) सन्त गरीबदास जी से कबीर वाणी तथा परमेश्वर

कबीर जी की महिमा का कुछ-कुछ संस्य युक्त ज्ञान विस्तार होगा। जैसे सन्त गरीबदास जी की परम्परा में परमेश्वर कबीर जी को विष्णु अवतार मान कर साधना तथा प्रचार करते हैं। संत गरीबदास जी ने ''असुर निकन्दन रमैणी'' में कहा है ''साहेब तख्त कबीर खवासा। दिल्ली मण्डल लीजै वासा। सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी'' भावार्थ है कि सन्त गरीबदास जी वाला बारहवाँ पंथ (अंश) तो काल तक साधना बताने वाला कहा है। इसलिए केवल कबीर महिमा की वाणी ही संत गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई है। उसमें कहा है कि कबीर परमात्मा के तख्त अर्थात् सिंहासन का ख्वास अर्थात् नौकर दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र में आएगा वह उस क्षेत्र के कृपण अर्थात् कंजूस व्यक्तियों को परमात्मा की महिमा बता कर जगाएगा अर्थात् दान-धर्म में उनकी रूची बढ़ाएगा। वह तेरहवाँ अंश कबीर परमात्मा के दरबार का उच्चतम् सेवक होगा। वह कबीर परमेश्वर का अत्यंत कृपा पात्र होगा। ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 1 मन्त्र 7 में उप अग्ने अर्थात् उप परमेश्वर कहा है। इसलिए पूर्ण परमात्मा अपना भेद छुपा कर दास रूप में प्रकट होकर अपनी महिमा करता है। इसलिए उसी परमेश्वर को ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 4 मन्त्र 6 में तस्करा अर्थात् आँखों मे धूल झोंक का कार्य करने वाला तस्कर कहा है। श्री नानक जी ने उसे ठगवाड़ा कहा है। इसलिए तेरहवें अंश को (सन्त रामपाल दास को) उनका दास जाने चाहे स्वयं पूर्ण प्रभु का उपशक्तिरूप(उप अग्ने) समझें। इसलिए लिखा है कि बारहवें अंश की परम्परा में हम ही चलकर तेरहवें अंश रूप में आऐंगे। वह तेरहवां वंश (अंस) पूर्ण रूप से अज्ञान अंधेरा समाप्त करके परमेश्वर कबीर जी की वास्तविक महिमा तथा नाम का ज्ञान करा कर सभी पंथों को समाप्त करके एक ही पंथ चलाएगा, वह तेरहवां वंश हम (परमेश्वर कबीर) ही होंगे।

कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ 136 पर :-

बारह पंथों का विवरण दिया है। बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ, बारहवां पंथ लिखा है कबीर सागर, कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1870 पर) के विषय में कबीर सागर कबीर वाणी पृष्ठ नं. 136-137 पर वाणी लिखी है कि :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भुले जीव न जाय ठिकाना।।
(प्रथम) आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।
दूसर जग में जागू भ्रमावै। बिना भेद ओ ग्रन्थ चुरावे।।
तीसरा सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
चौथा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
पंचम पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवनकीकरी है हानी।।
छठवाँ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।

पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
सातवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा।।
आठवाँ जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
नौमा राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमलै जीव दृढ़ावै।।
दशवां ज्ञानकी काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
ग्यारहवाँ भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमेंसो शब्द होय निरधारा।।
संवत सत्रासै पचहत्तर होई। तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे।।
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्म में ठौर ना पावै।।
बारवै पन्थ प्रगट होवै बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं। ये बारा पंथ हमहीको ध्यावैं।।
बारहें पन्थ हमही चलि आवै। सब पंथ मिटा एकहीपंथ चलावै।।
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा।।
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना।।
धर्मराय से मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी।।
धर्मदास मोरी लाख दोहाई, मूल (सार) शब्द बाहर नहीं जाई।
मूल (सार) ज्ञान बाहर जो परही, बिचली पीढी हंस नहीं तरहीं।
तेतिस अर्ब ज्ञान हम भाखा, तत्व ज्ञान गुप्त हम राखा।
मूलज्ञान (तत्वज्ञान) तब तक छुपाई, जब लग द्वादश पंथ न मिट जाई।

कबीर सागर अध्याय जीव धर्म बोध (बोध सागर) पृष्ठ 1937 पर लिखा है :-

पुस्तक=कबीर सागर=अध्याय जीव धर्म बोध (बोध सागर) पृष्ठ 1937 पर प्रमाण :-

धर्मदास तोहि लाख दोहाई। सार शब्द बाहर नहिं जाई।।
सार शब्द बाहर जो परि है। बिचलै पीढी हंस नहीं तरि है।।
युगन–युगन तुम सेवा किन्ही। ता पीछे हम इहां पग दीनी।।
कोटिन जन्म भक्ति जब कीन्हा। सार शब्द तब ही पै चीन्हा।।
अंकूरी जीव होय जो कोई। सार शब्द अधिकारी सोई।।
सत्यकबीर प्रमाण बखाना। ऐसो कठिन है पद निर्वाना।।

कबीर सागर ''कबीर बानी'' नामक अध्याय (बोध सागर) पृष्ठ नं. 134 से 138 पर लिखे विवरण का भावार्थ है :-

पृष्ठ नं. 134 पर बारह वंशों (अंसों) के बाद तेरहवें वंश (अंस) में सब अज्ञान अंधेरा मिट जाएगा। संत गरीबदास पंथ तक काल के बारह वंश अपनी-2 चतुरता दिखाएगें। पृष्ठ नं. 136-137 पर ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी।

(संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी हरियाणा वाले का जन्म 1774 में हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि संत गरीब दास जी का जन्म वैशाख मास की पूर्णमासी को हुआ। संवत् वाला वर्ष चैत्र से प्रारम्भ होता है जो वैसाख मास के साथ वाला है। कई बार तिथीयों के घटने बढ़ने से दो मास बन जाते हैं। उस समय शिक्षा का अभाव था तिथी व संवत् बताने वाले भी अशिक्षित होते थे। जिस कारण से संवत् 1774 के स्थान पर गरीबदास जी का जन्म संवत् 1775 लिखा गया होगा परन्तु यह संकेत संत गरीबदास जी की ओर है।)।

भावार्थ है कि बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा उस पंथ सहित अर्थात् उपरोक्त बारह पंथों के अनुयाई मेरी महिमा का गुणगान करेगें तथा हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र के अपरिचित होने के कारण साधक असंख्य जन्म सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द तथा सारज्ञान (तत्वज्ञान) छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में, सोनीपत, झज्जर तथा रोहतक जो पहले एक ही जिला था) दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। संत रामपाल दास जी का पैत्रिक गाँव धनाना इसी पुराने रोहतक जिले में है। सन् 1951 में मेरा (संत रामपाल का) जन्म हुआ था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास लिखा है।

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वारा प्रचलित बारह पंथों का विवरण (कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से) :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

विशेष :- यहाँ पर प्रथम पंथ का संचालक नारायण दास लिखा है जबकी कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ 136 पर प्रथम पंथ का संचालक चूरामणी लिखा है, शेष प्रकरण ठीक है। इसमें भी दामाखेड़ा वाले अनुयाइयों ने चुड़ामणी को हटाने का प्रयत्न किया है। उसके स्थान पर नारायण दास लिख दिया। जबकि नारायण दास तो बिल्कुल विपरित था। उसका तो विनाश हो गया था। इसलिए प्रथम पंथ चुड़ामणी जी का ही मानना चाहिए। दूसरी बात है कि कबीर वाणी (कबीर सागर)

पृष्ठ नं. 136 पर लिखी वाणी में चूड़ामणी को मिला कर ही बारह पंथ बनते हैं।

विचार करें:- अब वही एक पंथ संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा परमेश्वर कबीर जी की आज्ञा व शक्ति से चलाया जा रहा है जो सभी पंथों को एक करेगा।

प्रश्न : संत रामपाल दास जी महाराज तीन बार नाम देते हैं फिर सारशब्द भी प्रदान करके चौथा पद प्राप्त कराते हैं। परंतु दामा खेड़ा वाले तथा अन्य कबीर पंथी महंत, संत तो नाम एक ही बार देते हैं। कौन सा सत्य है ? इसकी परख कैसे हो ?

कबीर पंथ में दामाखेड़ा वाले महन्तों द्वारा तथा उन्हीं से भिन्न हुए खरसिया गद्दी वालों तथा लहरतारा काशी (बनारस) वालों द्वारा जो उपदेश मन्त्र (नाम) दिया जाता है। वह निम्न है :- ''सत सुकृत की रहनी रहो। अजर अमर गहो सत्य नाम। कह कबीर मूल दीक्षा सत्य शब्द प्रमाण। आदि नाम, अजर नाम, अमी नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम, आकाशे अदली निज नाम। यही नाम हंस का काम। खुले कुंजी खुले कपाट पांजी चढ़े मूल के घाट। भर्म भूत का बान्धो गोला कह कबीर यही प्रमाण पांच नाम ले हंसा सत्यलोक समान''

उत्तर : कबीर सागर में अमर मूल बोध सागर पृष्ठ 265 पर लिखा है :-

तब कबीर अस कहेवे लीन्हा, ज्ञानभेद सकल कह दीन्हा।।
धर्मदास मैं कहो बिचारी, जिहिते निबहै सब संसारी।।
प्रथमहि शिष्य होय जो आई, ता कहैं पान देहु तुम भाई।।1।।
जब देखहु तुम दृढ़ता ज्ञाना, ता कहैं कहु शब्द प्रवाना।।2।।
शब्द मांहि जब निश्चय आवै, ता कहैं ज्ञान अगाध सुनावै।।3।।

दोबारा फिर समझाया है -

बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासों कहहू वचन प्रवाना।।1।।
जा कहैं सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता कहें स्मरन देहु लखाई।।2।।
ज्ञान गम्य जा कहैं पुनि होई। सार शब्द जा कहैं कह सोई।।3।।
जा कहैं दिव्य ज्ञान परवेशा। ताकहैं तत्व ज्ञान उपदेशा।।4।।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट है कि कड़िहार गुरु तीन स्थिति में सार नाम तक प्रदान करता है। धर्मदास जी के माध्यम से संत रामपाल दास जी को संकेत है। क्योंकि कबीर सागर में तो प्रमाण बाद में देखा था परंतु उपदेश विधि पहले ही पूज्य गुरुदेव तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी ने संत रामपाल दास जी महाराज को प्रदान कर दी थी। जो उपदेश मन्त्र (नाम) दामाखेड़ा वाले व खरसीया तथा लहरतारा काशी वाले देते हैं वह मन्त्र व्यर्थ है। उस में तो सत्यनाम तथा निजनाम (सारनाम) तथा पांच नामों की महीमा बताई है जो संत रामपाल दास जी महाराज प्रदान करता है। यह उपरोक्त पूरा शब्द(जो दामाखेड़ा व खरसीया व लहरतारा काशी वाले उपदेश में देते हैं) रटने से कुछ लाभ नहीं जो इसमें संकेत है उस सत्यनाम व निज नाम (सारशब्द) तथा पांच नामों को संत रामपाल जी महाराज से प्राप्त करके साधना करने से मोक्ष होगा।

धर्मदास जी को तो परमश्वेर कबीर साहेब जी ने सार शब्द देने से मना कर दिया था तथा कहा था कि यदि सार शब्द किसी काल के दूत के हाथ पड़ गया तो बिचली पीढ़ी वाले हंस पार नहीं हो पाऐंगे।

इसलिए कबीर सागर, जीव धर्म बोध, बोध सागर, पृष्ठ 1937 पर लिखा है :-

धर्मदास तोहि लाख दुहाई, सार शब्द कहीं बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परि है, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तरि है।

जैसे कलयुग के प्रारम्भ में प्रथम पीढ़ी वाले भक्त अशिक्षित थे तथा कलयुग के अंत में अंतिम पीढ़ी वाले भक्त कृतघनी हो जाऐंगे तथा अब वर्तमान में सन् 1947 से भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। सन् 1951 में सन्त रामपाल दास को भेजा है। अब सर्व भक्तजन शिक्षित हैं। वह बिचली पीढी वाला भक्ति समय प्रारम्भ हो चुका है। संत रामपाल जी महाराज के पास सत्यनाम तथा सार शब्द तथा पांच नाम परमेश्वर कबीर दत्त हैं। उपदेश प्राप्त करके अपना कल्याण करायें। मानव जीवन तथा बिचली पीढ़ी वाला समय आप को प्राप्त है। अविलम्ब सन्त रामपाल दास के पास आऐं अन्यथा पश्चाताप् करना पड़ेगा। यथार्थ कबीर पंथ अर्थात् एक पंथ प्रारम्भ हो चुका है। अब यह सत मार्ग सत साधना पूरे संसार में फैलेगी तथा नकली गुरु तथा संत, महंत छुपते फिरेंगे।

पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" के पृष्ठ 46 पर लिखा है कि ग्यारहवीं पीढ़ी को गद्दी नहीं मिली। जिस महंत जी का नाम "धीरज नाम साहब" कवर्धा में रहता था। उसके बाद बारहवां महंत उग्र नाम साहेब ने दामाखेड़ा में गद्दी की स्थापना की तथा स्वयं ही महंत बन बैठा। इससे पहले दामाखेड़ा में गद्दी नहीं थी।

इससे स्पष्ट है कि पूरे विश्व में संत रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त वास्तविक भक्ति मार्ग नहीं है। सर्व प्रभु प्रेमी श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि संत रामपाल जी प्रभु के भेजे हुए तत्वदर्शी संत हैं। उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाऐं।

यह संसार समझदा नाहीं, कहन्दा श्याम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ :- तत्वज्ञान बिना नकली संतों को ही पूर्ण धनी मानकर अपना अनमोल वक्त (जीवन समय) नष्ट कर रहें थे। इस समय को नाश करके अन्य योनियों में कष्ट उठाते समय रोया करेगें फिर कुछ नहीं बनेगा।

धन्यवाद।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 134 की।

(१३४) कबीरबानी

साखी–बंश थापे सो सार है, जो गुरु दिढकै देहि ।
सांचे दाव बतावही, जीव अपन करि लेहि ॥

धर्मदास उवाच

धर्मदास बिनती अनुसारी । साहब विनती सुनो हमारी ॥
पंथ पंगती कैसे नीर बहाई । सो गुरु साँचे दया कराई ॥

सद्गुरु उवाच

धर्मदास मैं कहौं समुझाई । हमही तुमहि कैसे बनि आई ॥
ऐसे नाद मिले बिंदको जाई । तबही हंस पहुचे वह ठाई ॥
अंश होइहैं उनके कडिहारा । तिनकी छाप चलै संसारा ॥
कोटिन योग युक्ति धरि धावै । विना बिंद नहिं घरको पावै ॥
हम बूंद तुम नाम प्रमाना । नारायण नाम नहिं ठिकाना ॥
वंश विरोध चलिहै पुनि आगै। काल दगा सब पंथहि लागै ॥

वंशप्रकार

प्रथम वंश उत्तम ।१। दूसरा वंश अहंकारी ।२। तीसरा वंश प्रचंड । ३ । चौथे वंश बीरहे ।४। पाँचवेंवंशनिद्रा ।५। छटे वंश उदास ।६। सांतवें वंश ज्ञानचतुराई । ७। आठे द्वादश पन्थ विरोध । ८ । नौवें वंश पंथ पूजा । ९ । दसवें वंश प्रकाश ।१०। ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा ।११। बारहवें वंश प्रगट होय उजियारा । १२ । तेरहवें वंश मिटे सकल अँधियारा । १३ । एती दगा कालकी समाई है । तत्त्वबिन्दुकी टेक रह जाई है ॥

इस फोटो कापी में 13 वंशों का विवरण है। जिनमें 12 तो वही है। जो बारह पंथों के मुखिया थे। जिनमें काल का दाव लगा रहा है। 13 वां वंश संत रामपाल दास जी महाराज हैं। जिनसे अध्यात्म का सर्व अज्ञान अंधरा नाश कर दिया गया है।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 136 की।

(१३६) कबीरबानी

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना । भूले जीव न जाय ठिकाना ॥
ताते आगम कहि हम राखा । वंश हमार चूरामणि शाखा ॥
प्रथम जगमें जागू भ्रमावै । विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै ॥
दुसरि सुरति गोपालहि होई । अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई ॥
तिसरा मूल निरञ्जन बानी । लोकवेदकी निर्णय ठानी ॥
चौथे पंथ टकसार भेद लै आवै । नीर पवन को सन्धि बतावै ॥
सो ब्रह्म अभिमानी जानी । सो बहुत जीवनकीकरीहै हानी ॥
पांचौ पंथ बीज को लेखा । लोक प्रलोक कहें हममें देखा ॥
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै । सो बीजक शुक्ल ले आवै ॥
छठवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा । घटके माहीं मार्ग निवासा ॥
सातवां जीव पंथले बोले बानी । भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी ॥
आठवे राम कबीर कहावै । सतगुरु भ्रमलै जीव दृढावै ॥
नौमे ज्ञानकी काल दिखावै । भई प्रतीत जीव सुख पावै ॥
दसवें भेद परमधाम की बानी । साख हमारी निर्णय ठानी ॥
साखी भाव प्रेम उपजावै । ब्रह्मज्ञानकी राह चलावै ॥
तिनमें वंश अंश अधिकारा । तिनमेंसो शब्द होय निरधारा ॥
संवत सत्रासै पचहत्तर होई । तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई ॥

इस फोटो कापी में प्रथम जागु दास का पंथ लिया है। यह उचित नहीं है। प्रथम पंथ चूड़ामणी जी का है। दूसरा जागू दास।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 137 की।

बोधसागर (१३७)

आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे॥
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्ममें ठौर ना पावै॥
बारवै पन्थ प्रगट है बानी। शब्द हमारेकी निर्णय ठानी॥
अस्थिर घरका मरम न पावै। ये बार पंथ हमहीको ध्यावै॥
बारहे पन्थ हमही चलि आवैं। सब पंथ मिट एकहीपंथ चलावैं॥
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा॥
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना॥
धर्मरायसे मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी॥
बावन वीर कबीरं कहाऊ। भवसागरसों जीव मुकताऊ॥

कलियुगको अंत पठ्यते

ग्रहण परै चौंतीससो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा॥
३४००ग्रहणपरैसो लेखाकीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा॥
पांच हजार पाँचसौ पांचा। तब ये शब्द होगया सांचा५५०५

क्रिया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। मूल शब्द बाहेर न जाई॥
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ॥
मूलज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढीवंशहंस नहिं तरही॥
तेतिस अर्व ज्ञान हम भाखा। मूलज्ञान गोए हम राखा॥
मूलज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई॥

इस फोटो कापी में लिखा है कि कबीर परमेश्वर ने कहा था कि बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ में) आगे चलकर हम ही आऐंगे। सब पंथ मिटाकर एक पंथ चलायेगें। परमेश्वर कबीर जी के प्रतिनिधी सन्त रामपाल जी हैं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा था। यह मेरा कथन उस समय सत्य होगा जब कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका होगा। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' जो शंकराचार्य द्वारा लिखी है। इसके पृष्ठ 42 पर कहा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर हुआ था। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिमठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि आदि

शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ था। इस प्रकार 2000 सन् का कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है।

फोटो कापी कबीर सागर के पृष्ठ 1870 की।

(१८७०) बोधसागर ८६

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

फोटो कापी कबीर साहेब (बोध सागर=स्वसम वेद बोध) के पृष्ठ 120 की।

(१२०) बोधसागर

निरंजन वचन--चौपाई

धर्मराय अस बिनती ठानी। मैं सेवक दुतिया नहिं मानी॥
ज्ञानी बिनती एक हमारा। सो न करो मोर होय बिगारा॥
पूरुष मोकहँ दीनो राजू। तुमहू देव होय तब काजू॥
बिनती एक करो हो ताता। दृढ़ करि जान्यौ हमरी बाता॥

फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर= स्वसमबेद बोध) के पृष्ठ 121 की।

स्वसमवेदबोध (१२१)

कहा तुमार जीव नहिं मानै । हमरी दिशभै बाद बखानै ॥
मैं दृढ़ फंदा रच्यौ बनाई । जामें जीव परा अरुझाई ॥
वेद शास्त्र सुमिरन गुन नाना । पुत्र हैं तीन देव परधाना ॥
देवल देव पखान पुजाई । तीरथ व्रत जप तप मन लाई ॥
यज्ञ होम अरु नियम अचारा । और अनेक फंद हम डारा ॥
जौं ज्ञानी जैहो संसारा । जीव न मानै कहा तुमारा ॥

ज्ञानी वचन--चौपाई

ज्ञानी कहै सुनो धर्मराई । काटो फंद जीव ले जाई ॥
जेतो फंद रची तुम बारी । सत्यशब्द ले सकल बिडारी ॥
जिहि जिवको हम शब्द दृढ़ै हैं । फंद तुम्हार सबै मुक्तैहैं ॥

निरंजन वचन चौपाई

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं । तीनों युग जिव थोरे जाही ॥
चौथा युग जब कलऊ आई । तब तुव शरन जीव बहु जाई ॥
ऐसे वचन हारि मोहि दीजै । तब संसार गौन तुम कीजै ॥

ज्ञानी वचन चौपाई

अरे काल परपंच पसारा । तीनो युग जीवन दुख डारा ॥
बिनती तोरि लीन मैं मानी । मोकहँ ठगे काल अभिमानी ॥
चौथा युग जब कलऊ आई । तब हम अपनो अंश पठाई ॥
काल फन्द छूटे नर लोई । सकल सृष्टि परवानिक होई ॥
घर घर देखो बोध बिचारा । सत्य नाम सब ठौर उचारा ॥
पांच हजार पांचसौ पांचा । तब यह बचन होयगा सांचा ॥
कलियुग बीत जाय जब येता । सब जिव परम पुरुषपद चेता ॥

ये फोटो कापीयाँ कबीर सागर (बोध सागर=स्वसमवेद बोध) के पृष्ठ 120-121 की हैं। इनमें वह वर्णन है जिसमें परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी अपने सतलोक वाले पुत्र जोगजीत के रूप में सन्त (ज्ञानी के) वेश में काल निरंजन के इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में गए। काल निरंजन ने पूछा जोगजीत तूं यहां किसलिए आया ? यदि कोई संदेश परमात्मा का लाया है तो वह बता? तब परमेश्वर ने कहा था कि परमेश्वर का आदेश सुन! मैं नीचे के लोकों में जाऊँगा तेरी असलियत बताऊंगा कि यह परमात्मा नहीं है तथा कबीर परमेश्वर की महिमा सुनाऊंगा। सतनाम मंत्र जो दो अक्षर का है। उसका जाप करा कर सर्व प्राणियों को सतलोक ले जाऊंगा।

यह सुनकर काल निरंजन ने प्रथम तो परमेश्वर को जोगजीत समझ कर मारना चाहा। परन्तु समर्थ शक्ति का कुछ न बिगाड़ सक। इसके विपरित स्वयं ही शक्तिहीन होकर पाताल लोक में जा गिरा, फिर परमेश्वर इसे उसी स्थान पर लाए। तब इसने विनम्र होकर जोगजीत रूप में कबीर परमेश्वर से प्रार्थना की कि ''हे बड़े भाई आप तीन युगों में जीव थोड़े (कम) ले जाना। चौथे युग में जितने चाहो जीव ले जाना। जो जीव तुम्हारा ज्ञान व नाम मंत्र ग्रहण करे व आपका, तथा शेष जो मेरी भक्ति करें वे मेरे, काल ने कहा बचनबद्ध होकर कहिएगा। परमेश्वर ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तीन युगों में सतयुग, त्रेता तथा द्वापर में जीव कम ले जाऊंगा तथा चौथे युग में अधिक जीवों को अपना ज्ञान समझा कर ले जाऊंगा।

जब काल निरंजन ने देखा कि अनुबंध (Agreement) हो गया। उसी समय अपनी असलीयत पर आ गया तथा बोला जोगजीत बेसक नीचे संसार में जाओ। जिस समय कलयुग आवेगा तब तक सर्व प्राणियों को शास्त्र विरूद्ध साधना के ज्ञान से दृढ़ करवा दूंगा। सबको देवी, देवताओं, मन्दिर, मूर्ति पूजाओं पर दृढ़ करवा दूंगा। बारह नकली पंथ कबीर नाम से चलाऊंगा तथा अन्य पंथ चलाऊंगा इस प्रकार सर्व जीवों को भ्रमाऊंगा। जीव तुम्हारी बात पर विश्वास न करके हमारी ओर होकर तुम्हारे साथ वाद-विवाद किया करेंगे। तब परमेश्वर ने कहा है कि मैं कलयुग में अपना अंश अवतार धरती पर भेजूंगा। इस समय सर्व पृथ्वी पर सर्व मानव शरीरधारी प्राणी हमारे ज्ञान को ग्रहण करके उपदेश प्राप्त करेंगे। सबका फंद छूटेगा अर्थात् सब मोक्ष प्राप्त करेंगे। कलयुग में घर-घर में परमेश्वर कबीर जी की महिमा के बोध (ज्ञान) की चर्चा होगी। सर्व मनुष्य सारा दिन व्यर्थ की बातों में व्यतीत न करके परमात्मा के ज्ञान की चर्चा करके पुण्य के भागी होंगे। हमारे भेजे गए अंश अर्थात् धरती पर अवतार (सन्त रामपाल दास जी की ओर संकेत है) से सतनाम (जो दो अक्षर का है जिसे सत्यनाम भी कहते हैं) प्राप्त करके जाप किया करेंगे। यह प्रचार सब ठौर अर्थात् सम्पूर्ण विश्व में होगा। सम्पूर्ण विश्व सतनाम का जाप किया करेगा। मेरा यह वचन (कथन) उस समय सत्य होगा जिस समय कलयुग पचपन सौ पांच वर्ष (5505 वर्ष) बीत चुका होगा। कलयुग इतना समय बीत जाने के पश्चात् सर्व मानव परम पुरूष अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म के पद अर्थात् अमर स्थान को उनकी यथार्थ भक्ति विधी को जानेंगे तथा अपना कल्याण कराऐंगे। फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर=कबीर चरित्र बोध) के पृष्ठ 1870 की।

(१८७०) बोधसागर ८६

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 136 की।

(१३६) कबीरबानी

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना॥
ताते आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा॥
प्रथम जगमें जागू भ्रमावै। विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै॥
दुसरि सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई॥
तिसरा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेदकी निर्णय ठानी॥
चौथे पंथ टकसारभेद लैआवै। नीर पवन को सन्धि बतावै॥
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवनकीकरीहै हानी॥
पांचौ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा॥
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै॥
छठवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा॥
सातवां जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी॥
आठवे राम कबीर कहावै। सतगुरु भ्रमलै जीव दृढावै॥
नौमे ज्ञानकी काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै॥
दसवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी॥
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञानकी राह चलावै॥
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमेंसो शब्दहोय निरधारा॥
संवत सत्रासै पचहत्तर होई। तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई॥

इस फोटो कापी में प्रथम जागु दास का पंथ लिया है। यह उचित नहीं है। प्रथम पंथ चूड़ामणी जी का है। दूसरा जागू दास।--------संवत् सत्रासै पचहत्तर होई----------यहाँ से बारहवें पंथ अर्थात् गरीब दास पंथ के विषय में वर्णन है।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 137 की।

बोधसागर (१३७)

आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे॥
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्ममें ठौर ना पावै॥
बारवै पन्थ प्रगट है बानी। शब्द हमारेकी निर्णय ठानी॥
अस्थिर घरका मरम न पावै। ये बार पंथ हमहीको ध्यावै॥
बारहे पन्थ हमही चलि आवैं। सब पंथ मिट एकही पंथ चलावैं॥
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा॥
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना॥
धर्मरायसे मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी॥

कलियुगको अंत पठचते

ग्रहण परै चौंतीससो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा॥
३४००ग्रहणपरैसो लेखाकीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा॥
पांच हजार पाँचसौ पांचा। तब ये शब्द होगया सांचा५५०५

किया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। मूल शब्द बाहेर न जाई॥
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ॥
मूलज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढीवंशहंस नहिं तरही॥
तेतिस अर्व ज्ञान हम भाखा। मूलज्ञान गोए हम राखा॥
मूलज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई॥

इस फोटो कापी में लिखा है कि कबीर परमेश्वर ने कहा था कि बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ में) आगे चलकर हम ही आऐंगे। सब पंथ मिटाकर एक पंथ चलायेगें। यही प्रमाण कबीर सागर - स्वसम बोध = बोध सागर के पृष्ठ 171 पर भी है कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 110 पर। परमेश्वर कबीर जी के प्रतिनिधि सन्त रामपाल दास जी महाराज हैं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा था। यह मेरा कथन उस समय सत्य होगा जब कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका होगा। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' जो शंकराचार्य द्वारा लिखी है। इसके पृष्ठ 42 पर कहा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर हुआ था। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ था। इस प्रकार 2000 सन् को कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है। अब गणित की रीति से जानते हैं कि 5505 कलयुग कौन से वर्ष में आता है। सन् 2000 को ईसा जी के जन्म को 2000 वर्ष बीत गए। इससे 508 वर्ष पूर्व आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के अनुसार कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म होना कहा है। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग (3000+2000+508) 5508 वर्ष बीत चुका है।

''कलयुग का 5505 वर्ष कौन से सन् में पूरा होता है''

सन् 2000 को कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है। सन् 1999 को 5507, सन् 1998 को 5506, सन् 1997 को 5505 वर्ष बीत चुका है। आप जी को याद रहे कि सन्त रामपाल दास जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा है कि फाल्गुन शुद्धि एकम् विक्रमी संवत् 2054 (सन् 1997) को दिन के 10 बजे परमेश्वर कबीर जी मुझे मिले थे तथा सारनाम को प्रदान करने का उचित समय बताकर तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तरध्यान हो गये थे।
(अधिक जानकारी के लिए कृपया पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 66 से 68 तक।)

''कबीर परमेश्वर जी द्वारा अवतार धारण का समय''

सत कबीर वचन (अथ स्वस्मवेद की स्फुटवार्ता--चौपाई)
फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर = स्वसमवेदबोध) पृष्ठ 171 की।

दोहा–पांच सहस अरु पांचसौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरुष फरमान तब, जग तारनको आय॥
हिन्दु तुर्क आदिक सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नामकी साख गहि, पावैं पद निर्बान॥
यथा सरितगण आपही, मिलैं सिन्धुमें धाय।
सत्य सुकृत के मध्ये तिमि, सबही पंथ समाय॥
जबलगि पूरण होय नहिं, ठीकेको तिथि वार।
कपट चातुरी तबहिलों, स्वसमबेद निरधार॥
सबहिं नारि नर शुद्ध तब, जब टीका दिन अंत।
कपट चातुरी छोड़िके, शरण कबीर गहंत॥
एक अनेक न ह्वै गयो, पुनि अनेक हो एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनामकी टेक॥
घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय।
कलियुगमें इक है सोई, बरते सहज सुभाय॥
कहा उग्र कह छुद्र हो, हर सबकी भवभीर।
सो समान समदृष्टि है, समरथ सत्य कबीर॥

यह फोटो कापी पवित्र पुस्तक कबीर सागर के अध्याय स्वसमवेद अर्थात् सुक्ष्मवेद = बोधसागर के पृष्ठ 171 की है। परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने कहा

है कि ''जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत जायेगा उस समय महापुरूष मेरी आज्ञा से विश्व उद्धार के लिए प्रकट होगा। वह महापुरूष ''सतनाम'' का भेदी होगा। वह अधिकारी होगा, उस सत्यनाम (सतनाम) को प्रदान करने का। विश्व के सर्व हिन्दू, मुसलमान व अन्य धर्मों में विभाजित मानव तथा अन्य प्राणी भी जो मानव जीवन प्राप्त करेगें। वे सर्व सत्यनाम (सतनाम) की महिमा से परिचित होकर उस सच्चे नाम को उस महापुरूष (मेरे दास) से प्राप्त करके (पावैं पद निर्बान) पूर्ण मोक्ष पद प्राप्त करेगें। उस मेरे भेजे संत के द्वारा चलाए (सत सुकृत) पवित्र वास्तविक मोक्ष मार्ग के पंथ में सर्व पंथ ऐसे विलीन हो जायेंगे जैसे (सरितगण) सर्व नदियाँ स्वतः ही समुन्द्र में मिलकर एक हो जाती हैं। केवल एक ही पंथ हो जायेगा। जब तक वह निर्धारित समय नहीं आयेगा। तब तक तो मेरे द्वारा कहा गया यह स्वसम वेद निराधार लगेगा। परन्तु जब वह (ठीक का दिन) निर्धारित दिन (आवंत) आएगा। तब सर्व स्त्री-पुरूष कपट त्यागकर शुद्ध होकर कबीर (मुझ सर्वेश्वर कबीर जी) की शरण ग्रहण करेंगे। जो सर्व मानव समाज (अनेकन) अनेकों धर्मों में विभाजित हो चुका है। वह पुनः एक हो जाऐगा। सर्व जीवात्माऐं भक्ति युक्त विकार रहित होकर हंस बन जाऐंगे अर्थात् अविकारी तथा भक्त होकर सत्यलोक में चली जाऐंगी। उस समय घर-घर में परमेश्वर (कबीर परमेश्वर) का निर्मल ज्ञान चर्चा का विषय बनेगा। सर्व मानव दुर्मति त्यागकर नेक नीति अपनायेंगे। इसी कलयुग में जो माया के लिए भाग-दौड़ मची है। वह शांत हो जाऐगी। सर्व मानव शान्त स्वभाव के बन जायेंगे। चाहे कोई उग्र (डाकू, चोर या अन्य कारण से समाज को दुःखी करने वाला) चाहे कोई नीची जाति का हो। सर्व एक होकर रहेंगे। वह महापुरूष अर्थात् तत्वदर्शी संत रूप में प्रकट सर्व के प्रति समान दृष्टि वाला (समर्थ सत्य कबीर) स्वयं सर्वशक्तिमान कबीर है।

नोट :- कबीर सागर स्वसमबेद के पृष्ठ 171 पर लिखे वर्णन में कुछ अक्षर गलत छपे हैं। जैसे छपा है = ठीके को तिथी वार

इसका शुद्ध इस प्रकार है = ठीक का तिथी वार

ठीक का अर्थ होता है समय निरधारण करना। जैसे कहा जाता है कि उस व्यक्ति ने रूपये लौटाने की ठीक कब की रखी है, अर्थात् रूपये लौटाने का समय क्या निर्धारित किया है। (टीका दिन अंत) यह अशुद्ध है।

शुद्ध इस प्रकार है = ठीक का दिन आवंत।

''आओ जानें कलयुग कितना बीत चुका है'' कृपया पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 66 से 68 तक।

❖❖❖

"उसी दिव्य महापुरूष के विषय में ''नास्त्रेदमस'' की भविष्यवाणी"

(संत रामपाल जी महाराज की अध्यक्षता में हिन्दुस्तान विश्व धर्मगुरु के रूप में प्रतिष्ठित होगा)

फ्रैंच (फ्रांस) देश के नास्त्रेदमस नामक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने सन् (इ.स.) 1555 में एक हजार श्लोकों में भविष्य की सांकेतिक सत्य भविष्यवाणियां लिखी हैं। सौ-सौ श्लोकों के दस शतक बनाए हैं। जिनमें से अब तक सर्व सिद्ध हो चुकी हैं। हिन्दुस्तान में सत्य हो चुकी भविष्यवाणियों में से :-

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री बहुत प्रभावशाली व कुशल होगी (यह संकेत स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी की ओर है) तथा उनकी मृत्यु निकटतम रक्षक द्वारा होना लिखा था, जो सत्य हुई।

2. उसके पश्चात् उन्हीं का पुत्र उनका उत्तराधिकारी होगा और वह बहुत कम समय तक राज्य करेगा तथा आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त होगा, जो सत्य सिद्ध हुई। (पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. श्री राजीव गांधी जी के विषय में)।

3. संत रामपाल जी महाराज के विषय में भविष्यवाणी नास्त्रेदमस द्वारा जो विस्तार पूर्वक लिखी हैं।

(क) अपनी भविष्यवाणी के शतक पांच के अंत में तथा शतक छः के प्रारम्भ में नास्त्रेदमस जी ने लिखा है कि आज अर्थात् इ.स. (सन्) 1555 से ठीक 450 वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् 2006 में एक हिन्दू संत (शायरन) प्रकट होगा अर्थात् सर्व जगत में उसकी चर्चा होगी। उस समय उस हिन्दू धार्मिक संत (शायरन) की आयु 50 व 60 वर्ष के बीच होगी। परमेश्वर ने नास्त्रेदमस को संत रामपाल जी महाराज के अधेड़ उम्र वाले शरीर का साक्षात्कार करवा कर चलचित्र की भांति सारी घटनाओं को दिखाया और समझाया। श्री नास्त्रेदमस जी ने 16 वीं सदी को प्रथम शतक कहा है इस प्रकार पांचवां शतक 20 वीं सदी हुआ। नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि वह धार्मिक हिन्दू नेता अर्थात् संत (CHYREN-शायरन) पांचवें शतक के अंत के वर्ष में अर्थात् सन् (ई.सं.) 1999 में घर-घर सत्संग करना त्याग कर अर्थात् चौखटों को लांघ कर बाहर आयेगा तथा अपने अनुयाइयों को शास्त्रविधि अनुसार भक्तिमार्ग बताएगा। उस महान संत के बताए मार्ग से अनुयाइयों को अद्वितीय आध्यात्मिक और भौतिक लाभ होगा। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत के द्वारा बताए शास्त्रप्रमाणित तत्वज्ञान को समझ कर परमात्मा चाहने वाले श्रद्धालु ऐसे अचंभित होगें जैसे कोई गहरी नींद से जागा हो। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत द्वारा सन् 1999 में चलाई आध्यात्मिक क्रांति इ.स. 2006 तक चलेगी। तब तक बहु संख्या में परमात्मा चाहने वाले भक्त तत्व ज्ञान समझ कर अनुयायी बन कर सुखी हो चुके होंगे। उसके पश्चात् उस स्थान की चौखट से भी बाहर लांघेगा। उसके पश्चात् 2006 से स्वर्ण युग का प्रारम्भ होगा।

नोट : प्रिय पाठकजन कृप्या पढ़ें निम्न भविष्यवाणी जो फ्रांस देश के वासी श्री नास्त्रेदमस ने की थी। जिस के विषय में मद्रास के एक ज्योतिशास्त्री के. एस.

कृष्णमूर्ति ने कहा है कि श्री नास्त्रेदमस जी द्वारा सन् 1555 में लिखी भविष्यवाणियों का यथार्थ अनुवाद "सन् 1998 में महाराष्ट्र में एक ज्योतिष शास्त्री करेगा। वह ज्योतिष शास्त्री नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों का सांकेतिक भाषा का स्पष्टीकरण कर उसमें लिखित भविष्य घटनाओं का अर्थ देकर अपना भविष्य ग्रंथ प्रकाशित करेगा।" उसी ज्योतिषशास्त्री द्वारा यथार्थ अनुवादित की गई पुस्तक से अनुवादकर्ता के शब्दों में पढ़ें।

1. (पृष्ठ 32, 33 पर) :-- ठहरो स्वर्ण युग (रामराज्य) आ रहा है। एक अधेड़ उम्र का औदार्य (उदार) अजोड़ महासत्ता अधिकारी भारत ही नहीं सारी पृथ्वी पर स्वर्ण युग लाएगा और अपने सनातन धर्म का पुनरूत्थान करके यथार्थ भक्ति मार्ग बताकर सर्वश्रेष्ठ हिन्दू राष्ट्र बनाएगा। तत्पश्चात् ब्रह्मदेश पाकिस्तान, बांगला, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत (तिबेत), अफगानिस्तान, मलाया आदि देशों में वही सार्वभौम धार्मिक नेता होगा। सत्ताधारी चांडाल चौकड़ियों पर उसकी सत्ता होगी। वह नेता (शायरन) दुनिया को अधाप मालूम होना है, बस देखते रहो।

2. (पृष्ठ 40 पर फिर लिखा है) :-- ठहरो रामराज्य (स्वर्ण युग) आ रहा है। जून इ.स. 1999 से इ.स. 2006 तक चलने वाली उत्क्रांति में स्वर्णयुग का उत्थान होगा। हिन्दुस्तान में उदयन होने वाला तारणहार शायरन दुनिया में सुख समृद्धि व शान्ति प्रदान करेगा। नास्त्रेदमस जी ने निःसंदेह कहा है कि प्रकट होने वाला शायरन (CHYREN) अभी ज्ञात नहीं है लेकिन वह क्रिश्चन अथवा मुस्लमान हरगिज नहीं है। वह हिन्दू ही होगा और मैं नास्त्रेदमस उसका अभी छाती ठोक कर गर्व करता हूं क्योंकि उस दिव्य स्वतंत्र सूर्य शायरन का उदय होते ही सारे पहले वाले विद्वान कहलाने वाले महान नेताओं को निष्प्रभ होकर उसके सामने नम्र बनना पड़ेगा। वह हिन्दुस्तानी महान तत्वदृष्टा संत सभी को अभूतपूर्व राज्य प्रदान करेगा। वह समान कायदा, समान नियम बनाएगा, स्त्री-पुरुष में, अमीर-गरीब में, जाति और धर्म में कोई भेद-भाव नहीं रखेगा, किसी पर अन्याय नहीं होने देगा। उस तत्व दर्शी संत का सर्व जनता विशेष सम्मान करेगी। माता-पिता तो आदरणीय होते ही हैं परन्तु अध्यात्मिकता व पवित्रता के आधार पर उस शायरन (तत्वदर्शी संत) का माता-पिता से भी अलग श्रद्धा स्थान होगा। नास्त्रेदमस स्वयं ज्यू वंश का था तथा फ्रांस देश का नागरिक था। उसने क्रिश्चन धर्म स्वीकार कर रखा था, फिर भी नास्त्रेदमस ने निःसंदेह कहा है कि प्रगट होने वाला शायरन केवल हिन्दू ही होगा।

3. (पृष्ठ 41 पर) :-- सभी को समान कायदा, नियम, अनुशासन पालन करवा कर सत्य पथ पर लाएगा। मैं (नास्त्रेदमस) एक बात निर्विवाद सिद्ध करता हूं वह शायरन (धार्मिक नेता) नया ज्ञान आविष्कार करेगा। वह सत्य मार्ग दर्शन करवाने वाला तारणहार एशिया खण्ड में जिस देश के नाम महासागर (हिन्द महासागर) है। उसी नाम वाले (हिन्दुस्तान) देश में जन्म लेगा। वह ना क्रिश्चन, ना मुस्लमान,

ना ज्यू होगा वह निःसंदेह हिन्दू होगा। अन्य भूतपूर्व धार्मिक नेताओं से महतर बुद्धिमान होगा और अजिंकय होगा। (नास्त्रेदमस भविष्यवाणी के शतक 6 श्लोक 70 में महत्वपूर्ण संकेत संदेश बता रहा है) उस से सभी प्रेम करेगें। उसका बोल बाला रहेगा। उसका भय भी रहेगा। कोई भी अपकृत्य करना नहीं सोचेगा। उसका नाम व कीर्ती त्रिखण्ड में गुंजेगी अर्थात् आसमानों के पार उसकी महिमा का बोल-बाला होगा। अब तक अज्ञान निंद्रा में गाढ़े सोए हुए समाज को तत्व ज्ञान की रोशनी से जगाएगा। सर्व मानव समाज हड़बड़ा कर जागेगा। उसके तत्व ज्ञान के आधार से भक्ति साधना करेगा। सर्व समाज से सत्य साधना करवाएगा। जिस कारण सर्व साधकों को अपने आदि अनादि स्थान (सत्यलोक) में अपने पूर्वजों के पास ले जा कर वहां स्थाई स्थान प्राप्त करवाएगा (वारिस बनाएगा)। इस क्रुर भूमि (काल लोक) से मुक्त करवाएगा, यह शब्द बोल उठेगा।

4. (पृष्ठ 42, 43) :-- यह हिंसक क्रुरचन्द्र (महाकाल) कौन है, कहाँ है, यह बात शायरन (तत्वदर्शी संत) ही बताएगा। उस क्रुरचन्द्र से वह **CHYREN** - शायरन ही मुक्त करवाएगा। शायरन (तत्वदर्शी संत) के कारकिर्द में इस भूतल की पवित्र भूमि पर (हिन्दुस्तान में) स्वर्णयुग का अवतरण होगा, फिर वह पूरे विश्व में फैलेगा। उस विश्व नेता और उसके सद्गुणों की, उसके बाद भी महिमा गाई जाएगी। उसके मन की शालीनता, विनम्रता, उदारता का इतना रेल-पेल बोल बाला होगा कि इससे पहले नमूद किए हुए शतक 6 श्लोक 70 के आखिरी पंक्ति में किया हुआ उल्लेख कि अपना शब्द खुद ही बोल उठता है और शायरन कि ही जुबान बोल रही है कि ''शायरन अपने बारे में बस तीन ही शब्द बोलता है '' एक विजयी ज्ञाता'' इसके साथ और विशेषण न चिपकाएं मूझे मंजूर नहीं होगा। (यह पृष्ठ 42 वाला 4 उल्लेख वाणी शतक 6 श्लोक 71 है) हिन्दू शायरन अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतुंग ऊंचा स्वरूप का विधान (तत्वज्ञान) फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा। (**Chyren will be chief of the world, Loved feared and unchallanged**) और मानवी संस्कृती निर्धोक संवारेगा, इसमें संदेह नहीं। अभी किसी को मालूम नहीं, लेकिन अपने समय पर जैसे नरसिंह अचानक प्रगट हुआ था ऐसे ही वह विश्व महान नेता (**Great Chyren**) अपने तर्कशुद्ध, अचूक आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति तेज से विख्यात होगा। मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित हूँ। मैं ना उसके देश (जहां से अवतरित होगा अर्थात् सतलोक देश) को तथा ना उसको जानता हूँ, मैं उसे सामने देख भी रहा हूँ, उसकी महिमा का शब्द बद्ध में कोई मिसाल नहीं कर सकता। बस उसे **Great Chyren** (महान धार्मिक नेता) कहता हूँ अपने धर्म बंधुओं की सद्द कालीन समस्या से दयनीय अवस्था से बैचेन होता हुआ स्वतंत्र ज्ञान सूर्य का उदय करता हुआ अपने भक्ति तेज से जग का तारणहार 5वें शतक (20 वीं सदी के अंतिम वर्ष में) के अंत में ई.स. 1999 अधेड़ उम्र का विश्व का महान नेता जैसे तेजस्वी सिंह मानव (**Great Chyren**) उदिवग्न अवस्था से चोखट लांघता हुआ मेरे

(नास्त्रेदमस के) मन का भेद ले रहा है और मैं उसका स्वागत करता हुआ आश्चर्य चकित हो रहा हूँ, उदास भी हो रहा हूं, क्योंकि उसका दुनिया को ज्ञान न होने से मेरा शायरन (तत्वदर्शी संत) उपेक्षा का पात्र बन रहा है।

मेरी (नास्त्रेदमस की) चितभेदक भविष्यवाणी की और उस वैश्विक सिंह मानव की उपेक्षा ना करें। उसके प्रकट होने पर तथा उसके तेजस्वी तत्व ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से आदर्शवादी श्रेष्ठ व्यक्तियों का पुनर्उत्थान तथा स्वर्ण युग का प्रभात शतक 6 में आज ई.स. 1555 से 450 वर्ष बाद अर्थात् 2006 में (1555+450=2005 के पश्चात् अर्थात् 2006 में) शुरूआत होगी। इस कृतार्थ शुरूवात का मैं (नास्त्रेदमस) दृष्टा हो रहा हूँ।

5. (पृष्ठ 44, 45, 46) :-- (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में फिर प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप (हिन्दुस्तान देश) में उस महान संत का जन्म होगा उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50)

(नोटः- नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी फ्रांस देश की भाषा में लिखी गई थी। बाद में एक पाल ब्रन्टन नामक अंग्रेज ने इस नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी ''सैन्चयुरी ग्रंथ'' को फ्रांस में कुछ वर्ष रह कर समझा, फिर इंग्लिश भाषा में लिखा। उसने गुरुवर शब्द को (बृहस्पति) गुरुवार अर्थात् थ्रस्डे जान कर लिख दिया की वह अपनी पूजा का आधार बृहस्पत्तिवार को बनाएगा। वास्तव में गुरुवर शब्द है जिसका अर्थ है सर्व गुरुओं में जो एक तत्वज्ञाता श्रेष्ठ है तथा गुरु को मुख्य मानकर साधना करना होता है। वेद भाषा में बृहस्पति का भावार्थ सर्वोच्च स्वामी अर्थात् परमेश्वर, दूसरा अर्थ बृहस्पति का जगतगुरु भी होता है। जगत गुरु तथा परमेश्वर भी बृहस्पति का बोध है।)

वह अधेड़ उम्र में तत्वज्ञान का ज्ञाता तथा ज्ञेय होकर त्रिखंड में कीर्ति मान होगा। मुझ (नास्त्रेदमस) को उसका नया उपाय साधना मंत्र ऐसा जालिम मालूम हो रहा है जैसे सर्प को वश करने वाला गारडू मंत्र से महाविषैले सर्प को वश कर लेता है। वह नया उपाय, नया कायदा बनाने वाला तत्ववेता दुनिया के सामने उजागर होगा उसी को मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित होकर ''ग्रेट शायरन'' बता रहा हूं उसके ज्ञान के दिव्य तेज के प्रभाव से उस द्वीपकल्प (भारतवर्ष) में आक्रामक तूफान, खलबली मचेगी अर्थात् अज्ञानी संतों द्वारा विद्रोह किया जाएगा। उसको शांत करने का उपाय भी उसी को मालूम होगा। जैसे जालिम सर्पनी को वश किया जाता है। वह सिंह के समान शक्तिशाली व तेजपूंज व्यक्तित्व का होगा। यह मैं

नास्त्रेदमस स्पष्ट शब्दों में बता रहा हूं कि वह कुण्डलीनी शक्ति धारण किए हुए है। आगे स्पष्ट शब्द यह है कि जिस समय वह शायरन जिस महासागर में द्वीपकल्प है उसी देश के नाम पर महासागर का भी नाम है (हिन्दमहासागर)। विशेषता यह होगी की उस देश की भुजंग सर्पिनी शक्ति (कुण्डलनी शक्ति) का पूर्ण परिचित True Master होगा। वह Chyren(महान धार्मिक नेता) उदारमत वाला, कृपालु,दयालु, दैदिप्यमान, सनातन साम्राज्य अधिकारी, आदि पुरूष (सत्यपुरूष) का अनुयाई होगा। उसकी सत्ता सार्वभौम होगी उसकी महिमा, उपाय गुरु श्रद्धा, गुरु भक्ति अर्थात् गुरु बिना कोई साधना सफल नहीं होती, इस सिद्धांत को दृढ़ करेगा। तत्वज्ञान का सत्संग करके प्रथम अज्ञान निंद्रा में सोए अपने धर्म बंधुओं (हिन्दुओं) को जागृत करके अंधविश्वास के आधार पर साधना कर रहे श्रद्धालुओं को शास्त्रविधि रहित साधना का बुरका फाड़ कर गूढ़ गहरे ज्ञान (तत्वज्ञान) का प्रकाश करेगा। अपने सनातन धर्म का पालन करवा कर समृद्ध शांति का अधिकारी बनाएगा। तत् पश्चात् उसका तत्वज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा, उस (महान तत्वदर्शी संत) के ज्ञान की कोई भी बराबरी नहीं कर सकेगा अर्थात् उसका कोई भी सानी नहीं होगा। उसके गूढ़ ज्ञान (तत्वज्ञान) के सामने सूर्य का तेज भी कम पड़ेगा। इसलिए मैं (नास्त्रेदमस) वैश्विक सिंह महामानव इतना महान होगा कि मैं उसकी महिमा को शब्दों में नहीं बांध पांउगा। मैं (नास्त्रेदमस) उस ग्रेट शायरन को देख रहा हूँ।

उपरोक्त विवरण का भावार्थ है कि "उस विश्व नेता को 50 वर्ष की आयु में तत्वज्ञान शास्त्रों में प्रमाणित होगा अर्थात् वह 50 वर्ष की आयु में सन् 2001 में सर्व धर्मो के शास्त्रों को पढ़ कर उनका ज्ञाता (तत्वज्ञानी) होगा तथा उसके पश्चात् उस तत्वज्ञान का ज्ञेय (जानने योग्य परमेश्वर का ज्ञान अन्य को प्रदान करने वाला) होगा तथा उसका अध्यात्मिक जन्म अमावस्या को होगा। उस समय वह प्रौढ़ होगा तथा जब वह प्रसिद्ध होगा तब उसकी आयु पचास से साठ साल के मध्य होगी।"

6. (पृष्ठ 46, 47) :-- नास्त्रेदमस कहता है कि निःसंदेह विश्व में श्रेष्ठ तत्वज्ञाता (ग्रेट शायरन) के विषय में मेरी भविष्यवाणी के शब्दा शब्द को किसी नेताओं पर जोड़ कर तर्क-विर्तक करके देखेगें तो कोई भी खरा नहीं उतरेगा। मैं (नास्त्रेदमस) छाती ठोक कर शब्दा शब्द कह रहा हूं मेरा शायरन का कर्तृत्व और उसका गूढ़-गहरा ज्ञान (तत्वज्ञान) ही सर्व की खाल उतारेगा, बस 2006 साल आने दो। इस विधान का एक-एक शब्द खरा-खरा समर्थन शायरन ही देगा।

7. (पृष्ट 52) :-- नास्त्रेदमस ने अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि 21 वीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया के क्षितिज पर 'शायरन' का उदय होगा। जो भी बदलाव होगा वह मेरी (नास्त्रेदमस की) इच्छा से नहीं बल्कि शायरन की आज्ञा से नियती की इच्छा से सारा बदलाव होगा ही होगा। उस में से नया बदलाव मतलब हिन्दुस्तान सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र होगा। कई सदियों से ना देखा ऐसा हिन्दुओं का सुख साम्राज्य

दृष्टिगोचर होगा। उस देश में पैदा हुआ धार्मिक संत ही तत्वदृष्टा तथा जग का तारणहार, जगज्जेता होगा। एशिया खण्डों में रामायण, महाभारत आदि का ज्ञान जो हिन्दुओं में प्रचलित है उससे भी भिन्न आगे का ज्ञान उस तत्वदर्शी संत का होगा। वह सतपुरुष का अनुयाई होगा। वह एक अद्वितीय संत होगा।

8. (पृष्ठ 74) :-- बहुत सारे संत नेता आएगें और जाएगें, सर्व परमात्मा के द्रोही तथा अभिमानी होगें। मुझे (नास्त्रेदमस को) आंतरिक साक्षात्कार उस शायरन का हुआ है।

वह परम सन्त भारत के जिस प्रान्त में जन्म लेगा उसका नाम पाँच नदियों के नाम पर होगा अर्थात् ''पंजाब प्रांत'' (सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 में हुआ। उस समय हरियाणा तथा पंजाब एक ही प्रांत था। 1 नवम्बर 1966 को हरियाणा प्रांत पंजाब से भिन्न हुआ है।

☆ नास्त्रेदमस ने यहां तक कहा है कि उस महान संत की माता कुल तीन बहनें होंगी। (सन्त रामपाल जी महाराज की माता जी तीन बहनें थी। दो का देहांत हो चुका है। सन्त की माता आज सन् 2013 तक जीवित है।)

☆ नास्त्रेदमस ने यह भी लिखा है कि जहां वह सन्त आश्रम बनाएगा उसके पास से निकले मार्गों को विशाल किया जाएगा।

हिन्दुस्तान का हिन्दू संत आगामी अंधकारी (भक्तिज्ञान के अभाव से अंधे) प्रलयकारी (स्वार्थ वश भाई-भाई को मार रहा है, बेटा-बाप से विमुख है, हिन्दू-हिन्दू का शत्रु, मुस्लमान-मुस्लमान का दुश्मन बना है) धुंधुकारी (माया की दौड़ में बेसब्रे समाज) जगत को नया प्रकाश देने वाला सर्वश्रेष्ठ जगज्जेता धार्मिक विश्व नेता की अपनी उदासी के सिवा कोई अभिलाषा नहीं होगी अर्थात् मानव उद्धार के लिए चिन्ता के अतिरिक्त कुछ भी स्वार्थ नहीं होगा। ना अभिमान होगा, यह मेरी भविष्यवाणी की गौरव की बात होगी की वास्तव में वह तत्वदर्शी संत संसार में अवश्य प्रसिद्ध होगा। उसके द्वारा बताया ज्ञान सदियों तक छाया रहेगा। वह संत आधुनिक वैज्ञानिकों की आँखें चकाचौंध करेगा ऐसे आध्यात्मिक चमत्कार करेगा कि वैज्ञानिक भी आश्चर्य में पड़ जायेंगे। उसका सर्व ज्ञान शास्त्र प्रमाणित होगा। मैं (नास्त्रेदमस) कहता हूँ कि बुद्धिवादी व्यक्ति उसकी उपेक्षा न करें। उसे छोटा ज्ञानदीप न समझें, उस तत्ववेता महामानव (शायरन को) सिहांसनस्थ करके (आसन पर बैठाकर) उसको आराध्य देव मानकर पूजा करें। वह आदि पुरुष (सतपुरुष) का अनुयाई दुनिया का तारणहार होगा।

❖❖❖

"नास्त्रेदमस के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ"

1.इंग्लैण्ड के ज्योतिषी 'कीरो' ने सन् 1925 में लिखी पुस्तक में भविष्यवाणी की है, बीसवीं सदी अर्थात् सन् 2000 ई. के उत्तरार्द्ध में (सन् 1950 के पश्चात् उत्पन्न सन्त) ही विश्व में 'एक नई सभ्यता' लाएगा जो सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी। भारत का वह एक व्यक्ति सारे संसार में ज्ञानक्रांति ला देगा।

2. भविष्यवक्ता ''श्री वेजीलेटिन'' के अनुसार 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में, विश्व में आपसी प्रेम का अभाव, मानवता का ह्रास, माया संग्रह की दौड़, लूट व राज नेताओं का अन्यायी हो जाना आदि-२ बहुत से उत्पात देखने को मिलेगें। परन्तु भारत से उत्पन्न हुई शांति भ्रातृत्व भाव पर आधारित नई सभ्यता, संसार में-देश, प्रांत और जाति की सीमायें तोड़कर विश्वभर में अमन व चैन उत्पन्न करेगी।

3. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता ''जीन डिक्सन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अंत से पहले विश्व में एक घोर हाहाकार तथा मानवता का संहार होगा। वैचारिक युद्ध के बाद आध्यात्मिकता पर आधारित एक नई सभ्यता सम्भवतः भारत के ग्रामीण परिवार के व्यक्ति के नेतृत्व में जमेगी और संसार से युद्ध को सदा-सदा के लिए विदा कर देगी।

4. अमेरिका के ''श्री एण्डरसन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में विश्व में असभ्यता का नंगा तांडव होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति, एक मानव, एक भाषा और एक झण्डा की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा सन् 1999 तक विश्व में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शांति भर देगा।

5. हॉलैण्ड के भविष्यदृष्टा ''श्री गेरार्ड क्राइसे'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में भयंकर युद्ध के कारण कई देशों का अस्तित्व ही मिट जावेगा। परन्तु भारत का एक महापुरूष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बांध देगा व हिंसा, फूट-दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिटा देगा।

6. अमेरिका के भविष्वक्ता ''श्री चार्ल्स क्लार्क'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले एक देश विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा, यह धार्मिक क्रांति 21 वीं सदी के प्रथम दशक में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।

7. हंगरी की महिला ज्योतिषी ''बोरिस्का'' के अनुसार सन् 2000 ई. से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्गुणों का

विकास एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरूप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा, इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयायी बनकर भौतिकवाद को आध्यात्मिकता में बदल देगें।

8. फ्रांस के डॉ. जूलर्वन के अनुसार सन् 1990 के बाद योरोपीय देश भारत की धार्मिक सभ्यता की ओर तेजी से झूकेंगे। सन् 2000 तक विश्व की आबादी 640 करोड़ के आस-पास होगी। भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में 'आत्मशक्ति' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।

9. फ्रांस के ''नास्त्रेदमस'' के अनुसार विश्व भर में सैनिक क्रांतियों के बाद थोड़े से ही अच्छे लोग संसार को अच्छा बनाऐंगे। जिनका महान् धर्मनिष्ठ विश्वविख्यात नेता 20 वीं सदी के अन्त और 21 वीं सदी की शुरूआत में किसी पूर्वी देश से जन्म लेकर भ्रातृवृत्ति व सौजन्यता द्वारा सारे विश्व को एकता के सूत्र में बांध देगा। (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप में उस महान संत का जन्म होगा। उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर, हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50) (सेंचुरी-I, कन्ना-50)

10. इजरायल के प्रो.हरार के अनुसार भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् 2000 ई. से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़े मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उनके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत के अधिकतर राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा, पर बाद में नेतृत्व धर्मनिष्ठ वीर लोगों पर होगा। जो एक धार्मिक संगठन के आश्रित होगें।

11. नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार, सन् 1998 के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आवेगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान (आध्यात्मिक तत्वज्ञान) ही पूरे विश्व को मान्य होगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार ही आज विश्व में घटनाएँ घट रही हैं। युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धांत है। वैदिक दर्शन के अनुसार चार युगों- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था है। जब पृथ्वी पर पापियों का एक छत्र साम्राज्य हो जाता है तब भगवान पृथ्वी पर मानव रूप में प्रकट होता है।

मानवता के इस पूर्ण विकास का काम अनादि काल से भारत ही करता आया है। इसी पुण्यभूमि पर अवतारों का अवतरण अनादि काल से होता आ रहा है।

लेकिन कैसी विडम्बना है कि ऋषि-मुनियों महापुरूषों व अवतारों के जीवन काल में उस समय के शासन व्यवस्था व जनता ने उनकी दिव्य बातों व आदर्शों पर ध्यान नहीं दिया और उनके अन्तर्ध्यान होने पर दूगने उत्साह से उनकी पूजा शुरू कर पूजने लग गये। यह भी एक विडम्बना कि हम जीवंत और समय रहते उनकी नहीं मानते अपितु उनका विरोध व अपमान ही करते रहे हैं। कुछ स्वार्थी तत्व जनता को भ्रमित करके परम सन्त को बदनाम करके बाधक बनते हैं। यह उक्ति हर युग में चरितार्थ होती आई है, और आज भी हो रही है।

जो महापुरूष हजारों कष्टों को सहन कर अपनी तपस्या व सत्य पर अडिग रहता है उनकी बात असत्य नहीं हो सकती। सत्य पर अडिग रहते हुए ईसा मसीह ने अपने शरीर में कीलों की भयंकर पीड़ा को झेला, सुकरात ने जहर का प्याला पिया, श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को भी यातनाओं का शिकार होना पड़ा।

ईसा मसीह ने कहा था कि- ''पृथ्वी और आकाश टल सकते हैं, सूर्य का अटल सिद्धांत है उदय-अस्त, वो भी निरस्त हो सकता है, लेकिन मेरी बातें कभी झूठी नहीं हो सकती है।''

सज्जनों ! यदि आज के करोड़ों मानव उस परमतत्व के ज्ञाता सन्त को ढूंढकर, स्वीकार कर, उनके बताए पथानुसार, अपनी जीवन शैली को सुधार लेंगे तो पूरे विश्व में सद्भावना, आपसी भाई-चारा, दया तथा सद्भक्ति का वातावर्ण हो जाएगा। वर्तमान का मानव बुद्धिजीवी है इसलिए उस सन्त के विचारों को अवश्य स्वीकार करेगा तथा धन्य होगा। वह सन्त है जगत् गुरु तत्वदर्शी सन्त रामपाल जी महाराज। कृप्या पढ़ें सन्त रामपाल जी महाराज की संक्षिप्त जीवनी जो सर्व भविष्यवाणियों पर खरी उतर रही है।

"संत रामपाल दास जी महाराज का संक्षिप्त परिचय"

संत रामपाल जी का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव धनाना जिला सोनीपत हरियाणा में एक जाट किसान परिवार में हुआ। पढ़ाई पूरी करके हरियाणा प्रांत में सिंचाई विभाग में जूनियर इंजिनियर की पोस्ट पर 18 वर्ष कार्यरत रहे। सन् 1988 में परम संत रामदेवानंद जी से दीक्षा प्राप्त की तथा तन-मन से सक्रिय होकर स्वामी रामदेवानंद जी द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना की तथा परमात्मा का साक्षात्कार किया।

संत रामपाल जी को नाम दीक्षा 17 फरवरी 1988 को फाल्गुन महीने की अमावस्या को रात्री में प्राप्त हुई। उस समय संत रामपाल जी महाराज की आयु 37 वर्ष थी। उपदेश दिवस (दीक्षा दिवस) को संतमत में उपदेशी भक्त का आध्यात्मिक जन्मदिन माना जाता है।

उपरोक्त विवरण श्री नास्त्रेदमस जी की उस भविष्यवाणी से पूर्ण मेल खाता

है जो नास्त्रेदमस द्वारा लिखी पुस्तक के पृष्ठ संख्या 44-45 पर लिखी है। "जिस समय उस तत्वदृष्टा शायरन का आध्यात्मिक जन्म होगा उस दिन अंधेरी अमावस्या होगी। उस समय उस विश्व नेता की आयु 16, 20, 25 वर्ष नहीं होगी, वह तरुण नहीं होगा, बल्कि वह प्रौढ़ होगा और वह 50 और 60 वर्ष के बीच की उम्र में संसार में प्रसिद्ध होगा। वह सन् 2006 होगा।"

सन् 1993 में स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने आपको सत्संग करने की आज्ञा दी तथा सन् 1994 में नामदान करने की आज्ञा प्रदान की। भक्ति मार्ग में लीन होने के कारण जे.ई. की पोस्ट से त्यागपत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार द्वारा 16-5-2000 को पत्र क्रमांक 3492-3500, तिथि 16-5-2000 के तहत स्वीकृत है। सन् 1994 से 1998 तक संत रामपाल जी महाराज ने घर-घर, गांव-गांव, नगर-नगर में जाकर सत्संग किया। बहु संख्या में अनुयाई हो गये। साथ-साथ ज्ञानहीन संतों का विरोध भी बढ़ता गया। सन् 1999 में गांव करौंथा जिला रोहतक (हरियाणा) में सतलोक आश्रम करौंथा की स्थापना की तथा एक जून 1999 से 7 जून 1999 तक परमेश्वर कबीर जी के प्रकट दिवस पर सात दिवसीय विशाल सत्संग का आयोजन करके आश्रम का प्रारम्भ किया तथा महीने की प्रत्येक पूर्णिमा को तीन दिन का सत्संग प्रारम्भ किया। दूर-दूर से श्रद्धालु सत्संग सुनने आने लगे तथा तत्वज्ञान को समझकर बहुसंख्या में अनुयाई बनने लगे। चंद दिनों में संत रामपाल महाराज जी के अनुयाइयों की संख्या लाखों में पहुंच गई। जिन ज्ञानहीन संतों व ऋषियों के अनुयाई संत रामपाल जी के पास आने लगे तथा अनुयाई बनने लगे फिर उन अज्ञानी आचार्यों तथा सन्तों से प्रश्न करने लगे कि आप सर्व ज्ञान अपने सद्ग्रंथों के विपरीत बता रहे हो।

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा अपने भक्त के सर्व अपराध (पाप) नाश (क्षमा) कर देता है। आपकी पुस्तक जो हमने खरीदी है उसमें लिखा है कि ''परमात्मा अपने भक्त के पाप क्षमा (नाश) नहीं करता। आपकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 में लिखा है कि सूर्य पर पृथ्वी की तरह मनुष्य तथा अन्य प्राणी वास करते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी की तरह सर्व पदार्थ हैं। बाग, बगीचे, नदी, झरने आदि, क्या यह सम्भव है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि परमात्मा सशरीर है। अग्ने तनुः असि। विष्णवै त्वां सोमस्य तनुर् असि।। इस मंत्र में दो बार गवाही दी है कि परमेश्वर सशरीर है। उस अमर पुरुष परमात्मा का सर्व के पालन करने के लिए शरीर है अर्थात् परमात्मा जब अपने भक्तों को तत्वज्ञान समझाने के लिए कुछ समय अतिथि रूप में इस संसार में आता है तो अपने वास्तविक तेजोमय शरीर पर हल्के तेजपुंज का शरीर ओढ कर आता है। इसलिए उपरोक्त मंत्र में दो बार प्रमाण दिया है। इस तरह के तर्क से निरूत्तर होकर अपने अज्ञान का पर्दा फास होने के भय से उन अंज्ञानी संतों, महंतों व आचार्यो ने सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास के गांवों में संत रामपाल जी महाराज को बदनाम करने के लिए दुष्प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया तथा 12-7-

2006 को संत रामपाल को जान से मारने तथा आश्रम को नष्ट करने के लिए आप तथा अपने अनुयाइयों से सतलोक आश्रम पर आक्रमण करवाया। पुलिस ने रोकने की कोशिश की जिस कारण से कुछ उपद्रवकारी चोटिल हो गये। सरकार ने सतलोक आश्रम को अपने आधीन कर लिया तथा संत रामपाल जी महाराज व कुछ अनुयाइयों पर झूठा केस बना कर जेल में डाल दिया। इस प्रकार 2006 में संत रामपाल जी महाराज विख्यात हुए। भले ही अंजानों ने झूठे आरोप लगाकर संत को प्रसिद्ध किया परन्तु संत निर्दोष है। प्रिय पाठको (नास्त्रेदमस) की भविष्यवाणी को पढ़कर सोचेगें कि संत रामपाल जी को इतना बदनाम कर दिया है, कैसे संभव होगा कि विश्व को ज्ञान प्रचार करेगा। उनसे प्रार्थना है कि परमात्मा पल में परिस्थिती बदल सकता है।

कबीर, साहेब से सब होत है, बंदे से कछु नांहि।
राई से पर्वत करे, पर्वत से फिर राई।।

परमेश्वर कबीर जी अपने बच्चों के उद्धार के लिए शीघ्र ही समाज को तत्वज्ञान द्वारा वास्तविकता से परिचित करवाएंगे, फिर पूरा विश्व संत रामपाल जी महाराज के ज्ञान का लोहा मानेगा।

संत रामपाल जी महाराज सन् 2003 से अखबारों व टी वी चैनलों के माध्यम से सत्य ज्ञान का प्रचार कर अन्य धर्म गुरुओं से कह रहे हैं कि आपका ज्ञान शास्त्रविरूद्ध अर्थात् आप भक्त समाज को शास्त्ररहित पूजा करवा रहे हैं और दोषी बन रहे हैं। यदि मैं गलत कह रहा हूँ तो इसका जवाब दो आज तक किसी भी संत ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की।

संत रामपाल जी महाराज को ई.सं. (सन्) 2001 में अक्तुबर महीने के प्रथम बृहस्पतिवार को अचानक प्रेरणा हुई कि "सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन कर" इस आधार पर सर्वप्रथम पवित्र श्रीमद् भगवद्गीता जी का अध्ययन किया तथा पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' की रचना की तथा उसी आधार पर सर्वप्रथम राजस्थान प्रांत के जोधपुर शहर में मार्च 2002 में सत्संग प्रारंभ किया। इसलिए नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि विश्व धार्मिक हिन्दू संत (शायरन) पचास वर्ष की आयु में अर्थात् 2001 ज्ञेय ज्ञाता होकर प्रचार करेगा। संत रामपाल जी महाराज का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में सन् (ई.सं.) 1951 में 8 सितम्बर को गांव धनाना जिला सोनीपत, प्रांत हरियाणा (भारत) में एक जाट किसान परिवार में हुआ। इस प्रकार सन् 2001 में संत रामपाल जी महाराज की आयु पचास वर्ष बनती है, सो नास्त्रेदमस के अनुसार खरी है। इसलिए वह विश्व धार्मिक नेता संत रामपाल जी महाराज ही हैं जिनकी अध्यक्षता में भारतवर्ष पूरे विश्व पर राज्य करेगा। पूरे विश्व में एक ही ज्ञान (भक्ति मार्ग) चलेगा। एक ही कानून होगा, कोई दुःखी नहीं रहेगा, विश्व में पूर्ण शांति होगी। जो विरोध करेंगे अंत में वे भी पश्चाताप करेंगे तथा तत्वज्ञान को स्वीकार करने पर विवश होंगे और सर्व मानव

समाज मानव धर्म का पालन करेगा और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके सतलोक जाएंगे।

जिस तत्वज्ञान के विषय में नास्त्रेदमस जी ने अपनी भविष्यवाणी में उल्लेख किया है कि उस विश्व विजेता संत के द्वारा बताए शास्त्र प्रमाणित तत्व ज्ञान के सामने पूर्व के सर्व संत निष्प्रभ (असफल) हो जाएंगे तथा सर्व को नम्र होकर झुकना पड़ेगा। उसी के विषय में परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने अपनी अमृत वाणी में पवित्र 'कबीर सागर' ग्रंथ में (जो संत धर्मदास जी द्वारा लगभग 550 वर्ष पूर्व लीपीबद्ध किया गया है) कहा है कि एक समय आएगा जब पूरे विश्व में मेरा ही ज्ञान चलेगा। पूरा विश्व शांति पूर्वक भक्ति करेगा। आपस में विशेष प्रेम होगा, सतयुग जैसा समय (स्वर्ण युग) होगा। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ द्वारा बताए ज्ञान को संत रामपाल जी महाराज ने समझा है। इसी ज्ञान के विषय में कबीर साहेब जी ने अपनी वाणी में कहा है कि --

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

भावार्थ है कि यह तत्वज्ञान इतना प्रबल है कि इसके समक्ष अन्य संतों व ऋषियों का ज्ञान टिक नहीं पाएगा। जैसे तोब यंत्र का गोला जहां भी गिरता है वहां पर सर्व किलों तक को ढहा कर साफ मैदान बना देता है।

यही प्रमाण संत गरीबदास जी (छुड़ानी, जिला झज्जर, हरियाणा वाले) ने दिया है कि सतगुरु (तत्वदर्शी संत परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ का भेजा हुआ) दिल्ली मण्डल में आएगा।

"गरीब, सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी"

परमात्मा की भक्ति बिना कंजूस हो गए व्यक्तियों को जगाएगा। गांव धनाना, जिला सोनीपत पहले दिल्ली शासित क्षेत्र में पड़ता था। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि सतगुरु (वास्तविक ज्ञान जानने वाला संत अर्थात् तत्व दृष्टा संत) दिल्ली मण्डल में आएगा फिर कहा है कि -

"साहेब कबीर तख्त खवासा, दिल्ली मण्डल लीजै वासा"

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ के तख्त (दरबार) का ख्वास (नौकर) अर्थात् परमेश्वर का नुमायंदा (प्रतिनिधि) दिल्ल मण्डल में वास करेगा अर्थात् वहां उत्पन्न होगा। प्रथम अपने हिन्दू बंधुओं को तत्वज्ञान से परिचित करवाएगा। बुद्धिमान हिन्दू ऐसे जागेंगे जैसे कोई हड़बड़ा कर जागता है अर्थात् उस संत के द्वारा बताए तत्व ज्ञान को समझ कर अविलम्ब उसकी शरण ग्रहण करेंगे। फिर पूरा विश्व उस तत्वदर्शी हिन्दू संत के ज्ञान को स्वीकार करेगा। यह भविष्यवाणी श्री नास्त्रेदमस जी ने भी की है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी लिखा है कि मुझे दुःख इस बात का है कि उससे परिचित न होने के कारण मेरा शायरन (तत्वदृष्टा संत) उपेक्षा का पात्र बना है। हे बुद्धिमान मानव ! उसकी उपेक्षा ना करो। वह तो सिंहासनस्थ करके (आसन पर बैठा कर) अराध्य देव (इष्टदेव) रूप में मान करने योग्य है। वह हिन्दू धार्मिक संत शायरन आदि पुरुष (पूर्ण परमात्मा)

का अनुयाई जगत् का तारणहार है।

नास्त्रेदमस जी भविष्य वक्ता ने पुस्तक पृष्ठ 41-42 पर तीन शब्द का उल्लेख किया है। कहा है कि वह विश्व विजेता तत्वदृष्टा संत क्रुरचन्द्र अर्थात् काल की दुःखदाई भूमि से छुड़ा कर अपने आदि अनादि पूर्वजों के साथ वारिस बनाएगा तथा मुक्ति दिलाएगा। यहां पर उपदेश मंत्र की ओर संकेत है कि वह शायरन केवल तीन शब्द (ओम्-तत्-सत्) ही मंत्र जाप देगा। इन तीन शब्दों के साथ मुक्ति का कोई अन्य शब्द न चिपकाएगा। यही प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 90 मंत्र 16 में, सामवेद श्लोक संख्या 822 तथा श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) तीन मंत्र (ओम्-तत्-सत् जिनमें तत् तथा सत् सांकेतिक हैं) दे कर पूर्ण परमात्मा (आदि पुरुष) की भक्ति करवा कर जीव को काल-जाल से मुक्त करवाता है। फिर वह साधक की भक्ति कमाई के बल से वहां चला जाता है जहां आदि सृष्टी के अच्छे प्राणी रहते हैं। जहां से यह जीव अपने पूर्वजों को छोड़ कर क्रुरचन्द्र (काल प्रभु) के साथ आकर इस दुःखदाई लोक में फंस कर कष्ट पर कष्ट उठा रहा है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि मध्य काल अर्थात् बिचली पीढ़ी हिन्दू धर्म का आदर्श जीवन जीएंगे। शायरन (तत्वदृष्टा संत) अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतंग ऊँचा स्वरूप अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शास्त्रानुकूल भक्ति विधान फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा ओर मानवी संस्कृति अर्थात् मानव धर्म के लक्षण निर्धोक (निष्कपट भाव से) संवारेगा। (मधल्या कालात हिन्दू धर्मांचे व हिन्दुच्या आदर्शवत् झालेल - यह मराठी भाषा में पृष्ठ 42 पर लिखा है कि उपरोक्त भावार्थ है कि बिचली पीढ़ी का उद्धार शायरन करेगा। यह उल्लेख पृष्ठ 42 की हिन्दी लिखना रह गया था इसलिए यहां लिख दिया है तथा स्पष्टीकरण भी दिया है। यही प्रमाण स्वयं पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सारज्ञान व सारशब्द कहीं बाहर न जाई।
सारनाम बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तर ही।।
सारज्ञान तब तक छुपाई, जब तक द्वादस पंथ न मिट जाई)।

जैसे ई.सं.(सन्) 1947 में भारतवर्ष अंग्रेजों से मुक्त हुआ। उससे पहले हिन्दुस्तान में शिक्षा नहीं थी। सन् 1951 में संत रामपाल जी महाराज को परमेश्वर जी ने पृथ्वी पर भेजा। सन् 1947 से पहले कलियुग की प्रथम पीढ़ी जानें तथा 1947 से बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। यह एक हजार वर्ष तक सत्य भक्ति करेगी। इस दौरान जो पूर्ण निश्चय के साथ भक्ति करेगा वह सतलोक चला जाएगा। जो सतलोक नहीं जा सके तथा कभी भक्ति की, कभी छोड़ दी, परंतु गुरु द्रोही नहीं हुए वे फिर हजारों मनुष्य जन्म इसी कलियुग में प्राप्त करेंगे क्योंकि यह उनकी शास्त्रविधि अनुसार साधना का परिणाम होगा। इस प्रकार कई हजारों वर्षों तक कलियुग का समय वर्तमान से भी अच्छा चलेगा। फिर अंत की पीढ़ी भक्ति रहित उत्पन्न होगी क्योंकि शुभ कमाई जो भक्ति युग में की है वह बार-२ जन्म प्राप्त करके खर्च (समाप्त) कर दी होगी। इस प्रकार कलियुग के अंत की पीढ़ी कृतघनी

होगी। वे भक्ति नहीं कर सकेंगी। इसलिए कहा है कि अब कलियुग की बिचली पीढ़ी चल रही है (1947 से)। सन् 2006 से वह शायरन सर्व के समक्ष प्रकट हो चुका है, वह है "संत रामपाल जी महाराज"।

उपरोक्त ज्ञान जो बिचली पीढ़ी व प्रथम तथा अंतिम पीढ़ी वाला संत रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में वर्षों से बताते आ रहे हैं जो अब नास्त्रेदमस जी की भविष्यवाणी ने भी स्पष्ट कर दिया। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि - कबीर परमेश्वर की भक्ति पूर्ण संत से उपदेश लेकर करो नहीं तो यह अवसर फिर हाथ नहीं आएगा।

गरीब, समझा है तो सिर धर पांव, बहुर नहीं रे ऐसा दाव।।

भावार्थ है कि यदि आप तत्वज्ञान को समझ गए हैं तो सिर पर पैर रख अर्थात् अतिशिघ्रता से तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाओ। यह सुअवसर फिर प्राप्त नहीं होगा। जैसे यह बिचली पीढ़ी (मध्य काल) वाला समय और आपका मानव शरीर तथा तत्वदृष्टा संत प्रकट है। यदि अब भी भक्ति मार्ग पर नहीं लगोगे तो उसके विषय में कहा है कि --

यह संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि यह भोला संसार शास्त्रविधि रहित साधना कर रहा है जो अति दुःखदाई है, इसी को सुखदाई कह रहा है। जैसे जून मास दोपहर (दिन के बारह बजे) में धूप में खड़ा-२ जल रहा है उसी को सांय बता रहा है। जैसे कोई शराबी व्यक्ति शराब पीकर सड़क पर पड़ा है और उससे कोई कहे कि आप दोपहर की धूप में क्यों जल रहे हो, छांया में चलो। वह शराब के नशे में कहता है कि नहीं सांय है, कौन कहता है कि दोपहर है ? इसी प्रकार जो साधक शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण कर रहे हैं वे अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। उसे त्यागना नहीं चाहते अपितु उसी को सर्व श्रेष्ठ मानकर काल के लोक की आग में जल रहे हैं। संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि इतने प्रमाण मिलने के पश्चात् भी सतसाधना पूर्ण संत के बताए अनुसार नहीं करोगे तो यह अनमोल मानव शरीर तथा बिचली पीढ़ी का भक्ति युग हाथ से निकल जाएगा फिर इस समय को याद करके रोवोगे, बहुत पश्चाताप करोगे। फिर कुछ नहीं बनेगा। परमेश्वर कबीर जी बन्दी छोड़ ने कहा है कि -

आच्छे दिन पाछै गए, सतगुरु से किया ना हेत।
अब पछतावा क्या करे, जब चिड़िया चुग गई खेत।।

सर्व मानव समाज से प्रार्थना करते हैं कि पूर्ण संत रामपाल जी महाराज को पहचानों तथा अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाओ। अपने रिश्तेदारों तथा दोस्तों को भी बताओ तथा पूर्ण मोक्ष पाओ। स्वर्ण युग प्रारम्भ हो चुका है। लाखों पुण्य आत्मांए संत रामपाल जी तत्वदर्शी संत को पहचान कर सत्य भक्ति कर रहे हैं, वे अति सुखी हो गए हैं। सर्व विकार छोड़ कर निर्मल जीवन जी रहे हैं।

संकट मोचन कष्ट हरण अवतार

''भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की दया

मेरा नाम दीपक दास पुत्र बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढ़ियों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी राधास्वामी पंथ के संत गुरविन्द्र सिंह जी से नाम लिया हुआ था। हम भी गुरविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।

मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उसी दौरान मेरे दादा जी का बीमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे, मेरी बुआ प्रेमवती में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली। (मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ के बताये नामों का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बीमारी के कारण खांसी रहती थी वे बारह साल के बाद भी ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो क्या आप सतलोक नहीं गई। तब मेरी दादी ने कहा कि बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया तथा अब मृत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई तो

फिर मेरी माता जी ने पूछा कि माँ क्या आपको गुरूजी चरण सिंह जी महाराज ने संभाला या नहीं? तो मेरी दादी जी ने कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुःखी हो रही हूँ।

उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश करके बोले और कहा कि मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई। मैं नहाना चाहता हूँ तो मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि आप तो सतलोक में गए थे क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है? फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ में प्रेत बन के घुसा हुआ था) को नहलाने लगी तो वह कहने लगा कि बेटी मैं अपने आप नहा लूंगा तो मेरी माता जी ने हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश था इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये तो मेरा दादा बोला बस बेटी मेरी धोती ले आओ मैं बांध लूंगा। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली। मैंने पूछा कि दादा जी आप सतलोक नहीं गए तो उसने कहा कि बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे भक्ति भी करते थे क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब मेरे दादा जी (जो प्रेतवत् मेरी बुआ जी में प्रवेश था) ने कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की और मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।

उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई थी कि कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढ़ने के लिए उसके पास जाता था। वहां पर भक्त संतराम जी ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी आँखे ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है। भक्त संतराम ने कहा कि वह पंथ पूर्ण नहीं है उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा संत ही टाल सकता है।

मेरे पिता जी को सांस की बिमारी थी दस कदम चलने पर ही बेहाल हो जाते थे, सांस की बीमारी के कारण दम फूलने लगता था हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बीमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये। लेकिन तब भी हम यह सोचते रहे कि राधास्वामी पंथी संत गुरविन्द्र सिंह जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया बड़ी रजा की लेकिन हमने तो सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक सांस टूटते

देखा है, बिल्कुल मृत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे क्योंकि दवाईयों का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढ़ा सकते थे बढ़ा चुके थे इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढ़ा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी पंथी गुरूविन्द्र सिंह जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे (प्रेत प्रकोप) की शिकायत रहने लगी। वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि मेरा पैर पकड़ कर कोई खींच रहा है, सोने नहीं दे रहा है, वह भी बहुत बीमार रहने लगा। पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर जी की दया से मुझ दास को 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ तो बीस दिन के अंदर ही पूर्ण संत रामपाल जी महाराज की दया से मेरा चश्मा उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दिया। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम जी ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईदे पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।

उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले हम पहले तो राधास्वामी थे। अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें। दुनिया क्या कहेगी ? तब मैंने कहा कि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते ? परन्तु दुःखी बहुत थे कुछ समय बाद परमेश्वर की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।

सतगुरू कबीर साहेब कहते हैं ''शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे'' सारे परिवार के नाम लेने के बाद से ही हमारे दिन फिर गये। मेरे भाई का ओपरा ठीक हो गया, पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया और पहले वे दस कदम नहीं चल सकते थे अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। हमारा परिवार आज पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी हैं।

परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और उसकी जान बच जाए तो उसे उस पैसे का कोई मलाल नहीं होता कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन शास्त्रविरूद्ध साधना (राधास्वामी पंथ द्वारा बताए पांच नामों की साधना) करने से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे

हैं), वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं, क्योंकि चौरासी लाख योनियाँ भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को, जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है उसे बरबाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से नहीं की जा सकती।

हे बंदी छोड़ सतपुरूष रूप सतगुरू रामपाल जी महाराज आपने बड़ी दया कि हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस शास्त्रविरूद्ध साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सत्भक्ति से वंचित रह जाते।

सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सत्भक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं।

।।सत साहेब।। सतगुरु चरणों का दास

दीपक दास मोब. 09992600853

''एक श्रद्धालु की आत्म कथा''

मैं राजेन्द्र दास 200-बी पश्चिम बिहार एक्सटैन्शन नई दिल्ली-63 का रहने वाला हूँ। मैंने राधास्वामी पंथ के सन्त चरणसिंह जी महाराज(डेरा बाबा जैमल सिंह ब्यास जि. अमृतसर पंजाब) से सन् 1980 में नाम दान लिया। गुरू जी के बताए अनुसार 2:30 घण्टे सुबह तथा 2:30 घण्टे शाम साधना शुरू की अभ्यास बढाते-2 अधिक समय करने लगा। मेरे दोनों कुल्हे भी पीड़ा करने लग जाते थे। फिर भी परमात्मा प्राप्ति की तड़फ से कष्ट को सहन करते हुए साधना की। कुछ प्रकाश भी दिखाई देता था तथा कुछ आवाजें भी सुनने लगी। अपने पंथ की साधना को सर्वोच्च मानकर अन्य की बात नहीं सुनता था। शरीर में कष्ट, घर में निर्धनता बढ़ती गई। कोई कार्य सिद्ध नहीं होता था। महा परेशानी का जीवन जीता रहा। गुरू चरण दास जी सत्संगों में कहते थे कि प्रारब्ध का कर्म भोग तो जीव को भोगना ही पड़ता है। इस दृष्टिकोण से अपने महाकष्टमय जीवन को जी रहा था।

एक दिन आस्था टी.वी. चैलन पर सन्त रामपाल दास आश्रम करौंथा जि. रोहतक का सत्संग सुना तो मुझे बहुत गुस्सा आया तथा सोचा यह तो हमारे पंथ की निन्दा कर रहा है। न चाहते हुए भी देखता रहा। जब सन्त रामपाल जी ने हमारे ही पंथ की पुस्तकों को टी.वी. पर दिखाया तथा अन्य शास्त्रों से तुलना की बताया कि श्री सावन सिंह महाराज ने श्री जगत सिंह जी को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। तीन वर्ष पश्चात् श्री जगत सिंह जी का निधन हो गया उसके पश्चात

श्री सावन सिंह के शिष्य श्री चरण सिंह जी जो नाते में श्री सावन सिंह के पौत्र थे को व्यास गद्दी पर नियुक्त किया गया। श्री चरण सिंह को श्री सावन सिंह जी ने नाम दान का आदेश भी नहीं दिया था। यदि कहें कि श्री जगत सिंह जी ने आदेश दिया तो श्री सावन सिंह जी का शिष्य नहीं रहा। श्री चरण सिंह जी तथा श्री जगत सिंह जी गुरु भाई थे। एक शिष्य दूसरे शिष्य को आदेश नहीं दे सकता। जैसे एक सिपाही दूसरे सिपाही को सिपाही नियुक्त नहीं कर सकता। यह प्रमाण देख कर मुझे करंट जैसा लगा कि सचमुच राधास्वामी पंथ का ज्ञान तथा साधना पूर्ण रूप से शास्त्रविरूद्ध है। वह कार्यक्रम आस्था टी.वी. पर बन्द हो गया। कुछ समय उपरान्त एक समाचार पत्र पढ़ा उसमें भी सन्त रामपाल जी ने सर्व पुस्तकों का तथा पृष्ठों का हवाला देकर लेख लिखा था।

राधास्वामी पंथ की साधना करते-2 भी घर तथा परिवार व कारोबार में अत्यधिक परेशानियों के कारण शराब तथा तम्बाखु का आदी भी हो गया था। उस समाचार पत्र को तथा उसके सम्बन्धित पुस्तकों को लेकर में ब्यास डेरा राधास्वामी पंजाब में गया तथा सन्त रामपाल दास द्वारा बताई गई त्रुटियों के समाधान के लिए श्री रोहतास चन्द्र बहल जी तथा परिचर कथा वाचक श्री खुराना जी से मिला। उनको तुलसी साहेब हाथरस वाले द्वारा रचित घट रामायण भाग पहला के पृष्ठ 27 पर दिखाया। जिसमें लिखा है कि पाँचों नाम काल के हैं। इनसे भिन्न आदि नाम तथा सतनाम (दो नाम) हैं। उनसे ही काल जाल से छुटकारा हो सकता है। वो दो नाम हमें नहीं मिले तो कैसे काल जाल से छुटेगें। कबीर साहेब जी की वाणी दिखाई ''शब्द'' ''सन्तों शब्द शब्द बखाना, शब्द फांस फंशा सब कोई शब्द नहीं पहचाना। प्रथम ही ब्रह्म (काल) स्वईच्छा से पांचों शब्द उच्चारा, सोहं, ज्योति निरंजन, ररंकार, शक्ति और ओंकारा।'' जब यह पुस्तके दिखाई तो दाँतों तले उंगली दबाई। परन्तु अपनी चतुरता दिखाई की छटवां नाम अन्दर ध्यान में मिलेगा। मैंने पूछा तुलसी साहेब तो कह रहे हैं कि दो नाम और है जो पांचों से अन्य हैं। आदि नाम तथा सतनाम। फिर सातवां कहाँ मिलेगा? इस बात पर उन्होंने कहा आप गुरू जी (सन्त गुरविन्द्र सिंह जी) से मिल कर पूछो। मैंने कहा मिलाओ मुझे गुरू जी से, टालते हुए कहा कि करोड़ों शिष्य हैं गुरू जी के, किस-2 से मिलेगें। आप पत्र द्वारा समाधान प्राप्त करना। मैं रोता हुआ वापिस दिल्ली आ गया। पत्र डाला। उसका जवाब मिला, जो बेतुका था, कहा था आप अभ्यास और बढ़ाते जाओ अपने आप ही सब मन्त्र मिल जाएगें।

डेरा ब्यास के उत्तर से कोई सन्तुष्टि नहीं हुई। उसके पश्चात सन्त रामपाल जी महाराज के बताए अनुसार राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को पढ़ा तो रोना आने लगा। यह क्या मजाक कर रखा है।

1. हजूर स्वामी शिवदयाल जी का कोई गुरू नहीं था।

2. स्वामी जी हुक्का पीते थे।

3. स्वामी जी प्रेत की तरह अपनी परम शिष्या बुक्की में प्रवेश होकर बोलते थे। मृत्यु उपरान्त भी बुक्की के मुख से हुक्का पीते थे तथा भोजन भी ग्रहण करते थे। सारवचन वार्तिक वचन 4 में कहा है कि सतनाम को सतनाम, सारनाम, सतशब्द, सतलोक, सतपुरूष भी कहते हैं।

आदि व्याख्याओं को पढ़ कर रोना आया। क्या करूं? कहाँ जाऊँ? सन्त रामपाल दास जी महाराज ने बताया कि हठ योग सन्त मार्ग नहीं है। हठ योग का प्रमाण रूहानी फूल पुस्तक पृष्ठ-82 पर श्री जैमल सिंह जी महाराज अभ्यास में आलस आने पर अपने शरीर पर बैंत मारते थे तथा हजूर स्वामी शिवदयाल जी महाराज कई-2 दिन तक बन्द कमरे में हठ योग से साधना करते थे जो किसी भी सन्त के इतिहास में नहीं है। सन्त नानक जी हल चलाते थे तथा सुमिरण भी करते थे, सन्त रविदास जी जूते बनाने का कार्य भी करते थे तथा सुमिरण भी करते थे तथा परमेश्वर कबीर जी ने लीला करके दिखाया की जुलाहे का कार्य करते-2 भी प्रभु नाम का सुमिरण कर सकते हैं। सन्त गरीब दास जी (छुड़ानी वाले) हल भी चलाते थे तथा सुमिरण भी करते थे। हठ योग करने से श्री तुलसीदास साहेब हाथरस वाले के दोनों पैर कमर से नीचे सुन्न हो गए थे (अधरंग हो गया था) उनके शिष्य पालकियों में बैठा कर ले जाते थे (पुस्तक जीवन चरित्र तुलसी साहेब पृष्ठ - 7 पर प्रमाण है)। यह साधना जनसाधारण नहीं कर सकता तथा शास्त्रविरूद्ध होने के कारण व्यर्थ है। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ-126 पर श्री सावन सिंह जी ने लिखा है कि अभ्यास में आत्मा सिमट कर आँखों के पीछे चली जाती है शरीर सो जाता है तो यह शरीर मुर्दा दिखाई देता है। यही जीवित मरना है।

उपरोक्त प्रमाणों को आँखों देख कर मैंने (राजेन्द्र ने) परम सन्त रामपाल दास जी महाराज से उपदेश ग्रहण कर लिया। मेरे सर्व कार्य सिद्ध हो गए तथा सर्व नशा छूट गया। मेरे शरीर का रोग भी समाप्त हो गया।

मेरी सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि सत्य को आँखों देख कर सन्त रामपाल जी महाराज से नाम दान लेकर अपना मानव जीवन सफल बनाऐं।

आपका अपना राजेन्द्र दास

"अनहोनी की परमेश्वर ने"

मैं भक्त सुरेन्द्र दास गाँव गांधरा, त. सांपला, जिला-रोहतक का निवासी हूँ। मेरी आयु 31 वर्ष है तथा बचपन से ही परमात्मा की खोज में लगा हुआ था तथा मनमुखी पूजा (मन्दिरों में जाना, व्रत आदि करना, श्राद्ध निकालना आदि) भी करता था। परन्तु शारीरिक कष्ट व मानसिक अशान्ति लगातार बनी हुई थी। फिर भी परमात्मा में विश्वास तथा परमात्मा पाने की तड़फ बरकरार थी। यही तड़फ

मुझे सन् 1995 में संत आसाराम बापू के पास ले गई। मैंने उनसे नाम उपदेश लिया व जैसा भक्ति मार्ग बापू जी ने बताया डट कर साधना की। परन्तु न तो कोई शारीरिक कष्ट दूर हुआ और न ही कोई आध्यात्मिक उपलब्धि हुई, अपितु कष्ट बढ़ता ही चला गया। मैं आसाराम बापू के बताए अनुसार साधना करता था। जैसे 250 ग्राम दूध सुबह पीता था और 250 ग्राम दूध शाम को पीता था और मेरे मंत्र में जितने अक्षर थे उतने लाख मंत्र जाप करना और समाधि लगाना। चालीस दिन की यह क्रिया थी, जो कि यह एक अनुष्ठान होता था। ऐसे-ऐसे मैंने चौदह अनुष्ठान किए।

एक बार मैंने श्री आसाराम बापूजी के सत्संग में सुना कि सात दिन तक निराहार रहकर मंत्र जाप करने, समाधि लगाने तथा प्राणायाम करने से ईश्वर प्राप्ति होगी। मैंने इन वचनों को सत्य मान कर ऐसा ही किया। परन्तु परमात्मा प्राप्ति की बजाए भूखा रहने के कारण मृत्यु के निकट पहुँच गया तथा प्राणायाम करने से दिमागी संतुलन बिगड़ गया और मैं पागल-सा हो गया।

उसी दौरान मेरे ऊपर सतगुरु पूर्ण संत रामपाल जी महाराज की कृपा दृष्टि हुई तथा मुझे सितम्बर 2000 में पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। उपदेश मिलते ही मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने दीपक में घी डाल दिया हो।

पूर्ण संत पाप कर्मों को समाप्त कर सकता है इसका प्रमाण मेरे जीवन में स्पष्ट रूप से तब घटित हुआ जब मैं मई 2004 में औरंगाबाद महाराष्ट्र में संत रामपाल जी महाराज के सतसंग के लिए टैंट की सेवा करते हुए 25 फुट ऊपर से नीचे पथरीली जमीन पर गिर गया। यहाँ काल को कुछ और ही मंजूर था तथा मेरी रीढ़ की हड्डी टूट गई और मेरे शरीर के नीचे के हिस्से में अधरंग मार गया। उसी समय मैंने अपने सतगुरु देव जी संत रामपाल जी महाराज को याद किया। मेरे गुरुदेव की दया से उसी समय दोनों पैर ठीक काम करने लग गए।

गरीब, काल डरै करतार से, जै जै जगदीश। जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारै शीश।।

उसके बाद मुझे औरंगाबाद के निजी हस्पताल (पटवर्धन हॉस्पीटल) में ले जाया गया। वहाँ पर डॉ. डी.जी. पटवर्धन ने मेरे शरीर की जाँच की तथा मेरी रीढ़ की हड्डी के एक्स-रे लिए। रिपोर्ट से पता चला कि रीढ़ की हड्डी टूटी हुई है। रिपोर्ट देखकर डॉ. बहुत हैरान होकर कहने लगा कि आपकी रीढ़ की हड्डी टूट गई है और उसका एक टूकड़ा टूट कर अलग हो गया है। डॉ. बार-बार मेरे पैरों को हाथ लगाकर देखता रहा और कहा कि आप पर परमात्मा की विशेष कृपा है कि आपके पाँव ठीक काम कर रहे हैं। क्योंकि इस रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्ग होना जरूरी था। वहाँ उस हॉस्पीटल में मैं तीन दिन तक दाखिल रहा। उसके बाद मैं छूट्टी लेकर वापिस अपने घर हरियाणा आ गया। यहाँ रोहतक में मैंने अपना

ईलाज हड्डियों के प्रसिद्ध डॉ. चड्ढा से करवाया। डॉ. चड्डा भी मेरी रिपोर्ट देखकर हैरान रह गया तथा कहा कि आप चल-फिर कैसे रहे हो। आपको तो रिपोर्ट के अनुसार अधरंग होना चाहिए था। डॉ. चड्डा ने फिर से रंगीन एक्स-रे करवाया तथा कहा कि इसका ईलाज संभव नहीं है तथा ऑप्रेशन के द्वारा इसको जिस स्थिति में है वहीं रोका जा सकता है, ताकि हड्डी और न टूट सके। उसने हड्डियों को ताकत देने के लिए इंजेक्शन शुरु किए और तीन महीने में पूरे इंजेक्शन लग गए। फिर उसने कहा कि ऑप्रेशन जरूर करवाना पड़ेगा, नहीं तो बाकी बची हुई हड्डी भी टूट सकती है और कहा कि ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये आयेगा। फिर उसी समय डॉ. ने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको तीन महीने के अंदर मृत्यु को प्राप्त हो जाना था। आज आप परमात्मा की कृपा से ही जीवित हो। ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये देने में मैं असमर्थ था, इसलिए मैं दूसरे डॉ. के पास ईलाज के लिए गया। वह भी मेरी रिपोर्ट देखकर आश्चर्य में पड़ गया और कहा कि यदि ऑप्रेशन में देर हो गई तो हड्डी और भी टूट सकती है। उसने भी बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको अधरंग होना चाहिए था, आप चल-फिर कैसे रहे हो ?

आखिर हारकर मैंने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज के चरणों में प्रार्थना की। तब मेरे पूज्य गुरुदेव ने मुझपर दया की और सिर पर हाथ रखकर कहा 'बेटा आप बिल्कुल ठीक हो जाओगे, यदि आज परमेश्वर कबीर साहेब जी की शरण में नहीं होते तो आपको भुगत कर मरना था। आपकी आयु शेष नहीं थी। आप एक बार फिर डॉ. को दिखा लो'। मैंने गुरु जी के आदेशानुसार अगले ही दिन डॉ. को दिखाया, जिसने मेरा एक्स-रे किया और एक्स-रे देखकर डॉक्टर आश्चर्य चकित रह गया और बोला 'जो हड्डी टूट कर अलग हो गई थी, वह अपने आप ऊपर को उठकर कैसे जुड़ गई। डॉक्टर जी ने बताया कि इस हड्डी की ऐसी स्थिति थी कि जैसे कोई गाड़ी बहुत ज्यादा ढलान वाली चढ़ाई में चढ़ रही हो। उसके इंजन में खराबी हो जाऐं, वह वापिस ही आ सकती है या प्रथम गियर में डाल कर पत्थर आदि पहियों के पीछे लगाकर वहीं रोकी जा सकती है, आगे को नहीं चढ़ सकती। आपकी हड्डी ऐसे ऊपर को चढ़ कर जुड़ गई जो डॉक्टरी इतिहास से बाहर की बात है। इससे मुझे भी महसूस होता है कि कोई शक्ति है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। यह तो ऑप्रेशन से भी नहीं हो सकता था। आप्रेशन करके इसमें कोई पदार्थ भरकर वह गैप भरा जा सकता था। फिर भी यदि आप कोई वजन उठाने का कार्य करते तो फिर से हड्डी खिसक कर आप चारपाई पर भुगत कर मरते। डॉक्टर के समझ में भी नहीं आ रहा था। मैंने कहा कि पूर्णब्रह्म कबीर साहेब के स्वरूप मेरे पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज ने मेरे पाप कर्म काटकर तथा मेरी मृत्यु को टालकर अपने कोटे से मुझे नई जिंदगी दी है। परमेश्वर कबीर साहेब की वाणी है -"जो मेरी भक्ति पीछोड़ी होई, तो हमरा नाम न लेवे कोई।"

अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ तथा सतगुरु के चरणों में आत्म कल्याण हेतु निःस्वार्थ सेवा कर रहा हूँ। 50 कि.ग्रा. वजन अपने आप ही उठा कर चलता हूँ। हमारे गुरुदेव का वास्तविक उद्देश्य तो भक्ति करवाकर जीव को विकार रहित करवा कर अपने परम धाम सतलोक में ले जाना है, यहाँ के छोटे-मोटे सुख तो हमारे गुरुदेव अपने खजाने से दे देते हैं, ताकि जीव भक्ति मार्ग में लगा रहे। अतः सर्व समाज से प्रार्थना है कि हमारे गुरुदेव के चरणों में आकर सत्यभक्ति करें तथा सांसारिक सुखों के साथ-साथ आत्म कल्याण का मार्ग भी प्राप्त करें। सत् साहिब!!

विशेष :-ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मन्त्र 2 में पूर्ण परमात्मा ने कहा है कि हे शास्त्रानुकूल साधना करने वाले साधक तू सम्पूर्ण भाव से मेरी शरण ग्रहण कर अर्थात् संशयरहित होकर मेरी भक्ति कर मैं तेरे असाध्य रोग को भी समाप्त कर दूगां, यदि तेरी आयु भी शेष नहीं है तो तेरी आयु के स्वांस बढ़ाकर सौ वर्ष कर दूगां। उपरोक्त कथा प्रभु की समर्थता को प्रमाणित करती है।

भक्त सुरेन्द्र दास, मोब. नं. 9992600826

"अपने भक्त को धर्मराज के दरबार से छुड़वाना"

मैं भक्त ओमप्रकाश सुपुत्र श्री मातादीन, नजफगढ़, दिल्ली का निवासी हूँ। मुझे परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से नाम लिए डेढ़ वर्ष हो गया है। मेरी नजफगढ़ में हलवाई की दुकान है। 19 मई 2005 को रात के 9:30 बजे मुझे दुकान पर पेट में बहुत ज्यादा दर्द हुआ। दर्द के कारण मेरी हालत बिल्कुल खराब हो गई थी। मैं गुरु जी का नाम जपते-जपते घर पहुँचा। घर में घुसते ही सामने गुरु जी की तस्वीर के सामने दण्डवत प्रणाम किया। मैं दण्डवत प्रणाम करके खड़ा हुआ तो मुझे पेट का दर्द महसूस नहीं हुआ। फिर मैं चारपाई पर लेट गया। चारपाई पर लेटते ही मैं बेहोश हो गया। मेरे चारों तरफ यम के दूत चक्कर लगाने लगे और मुझे डराने लगे। मैं डर के मारे बेहोश हो गया। तब यम के दूतों ने मेरे ऊपर सफेद चादर डाली और मेरे को उठा कर यमराज के दरबार में ले गये। यमराज के दरबार में मैंने देखा कि वहाँ पर लाईन लगी हुई थी। जब मेरा नम्बर आया तो यमराज ने कहा कि इसको तालाब में फैंक दो। मैंने तालाब की तरफ देखा तो मुझे तालाब में मगरमच्छ ही मगरमच्छ दिखाई दिए। मैं मगरमच्छों को देखकर डर गया। तब मैंने अपने परम पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज को याद किया, उस समय धर्मराज के दूत मुझे तालाब में फैंकने के लिए तैयार हो गये। मैंने गुरु जी को पुकारा कि - ''हे गुरु जी बचाओ''। तब मैंने देखा कि मेरे गुरु जी कबीर साहेब के रूप में आए और मुझे तालाब में गिरने से पहले ही बाहर निकाल लिया। यमराज ने कबीर साहेब के चरणों में गिरकर डण्डौतं प्रणाम किया। फिर गुरु जी अपने रूप में आ गए और मुझसे कहने लगे कि अब तू किस लिए डर रहा है, अब मैं तेरे साथ हूँ। तब मेरा डर दूर हो गया। धर्मराज ने गुरु जी से बहस की कि आप इसको बार-बार

क्यों बचाते हो। यह तो मेरा भोजन है। आप ने इसको पहले भी दो बार मरते मरते बचाया है। 'पहली बार तो स्कूटर और जीप की आमने-सामने की टक्कर होने पर भी मुझे खरोंच तक नहीं आई थी। और दूसरी बार मोटर साईकिल स्लिप होने के बाद मैं चलते ट्रक के नीचे जा गिरा। गुरुदेव जी ने मुझे उस ट्रक के नीचे से बचाया।

तब गुरुदेव ने धर्मराज को कहा - 'इसने मेरी पिछले जन्म की भक्ति की हुई थी, इसलिए मैंने इसे बचाया। फिर धर्मराज ने कहा अब कि बार आपने क्यों बचाया, जबकि मैंने इसका नाम तुड़वा रखा था। फिर गुरु जी ने कहा कि इसका नाम आपने तुड़वाया था, इसने अपनी मर्जी से नहीं तोड़ा। इसलिए मैंने बचाया, यह मेरी भक्ति करता है।' तब काल ने कहा कि मैं देखता हूँ कि आप इसे कब तक बचाते हो। फिर गुरु जी ने कहा कि मैं पल-पल इसके साथ हूँ, तुम इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

फिर सतगुरुदेव ने धर्मराज को कहा कि अब कि बार इसको किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाया तो जैसे तू लोगों को सताता है, उससे बुरा हाल तेरा करूंगा।

उसके बाद सतगुरुदेव जी मुझे धर्मराज के दरबार से नीचे लेकर आए और मुझसे कहा कि तू जल्दी से जल्दी अपने घर वालों को बता दे कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ और मुझको घर ले चलो। दो डॉक्टर तो मना कर चुके थे कि हमारे बस की बात नहीं है। मेरे घर वाले मुझे हस्पताल (मैडीकल) में लेकर जा रहे थे। मैंने घरवालों से कहा कि मुझे जल्दी से जल्दी घर ले चलो, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। जो मेरे साथ थे, वे एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि ये तो मर गया था। इसको होश कैसे आ गया ? ये ऐसी बातें कैसे कर रहा है ? फिर मेरे घर वाले रास्ते में से वापिस घर की तरफ आने लगे तो मुझे सतगुरुदेव कमल के फूल पर बैठे हुए दिखाई दिए। कभी तो गुरु जी के रूप में और कभी कबीर साहेब के रूप में दिखाई दे रहे हैं और मेरी तरफ हाथ हिलाते हुए जाते दिखाई दिए। मैं फिर जोर-जोर से रोने लगा कि मेरे गुरु जी गए, मेरे गुरु जी गए। हमारे घर वाले फिर घबरा गए कि यह ऐसे कैसे कर रहा है। फिर मैडीकल की तरफ जाने लगे। तब गुरु जी ने आवाज लगाई कि भक्त तू यह क्या कर रहा है, मैंने तो तेरे को कहा है कि घर चला जा जल्दी से जल्दी। फिर मैंने अपने घर वालों से कहा कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मुझे मेरे गुरु जी दिखाई दिए थे। तब हमारे घर वाले मेरे को घर लेकर गए और घरवाले एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि यह तो मर गया था, यह जिन्दा कैसे हुआ ? मैंने अपने घरवालों को अपने साथ बीती सारी घटना बताई कि मेरे साथ ऐसे-ऐसे हुआ और मेरे सतगुरुदेव जी मुझे घर छोड़कर चले गए।

भक्त ओमप्रकाश दास,
RZ-15, B Block, गली नं. 2, मकसूदाबाद
कॉलोनी, नजफगढ़, नई दिल्ली।
मोब. नं. 09812166044

''भक्त रामस्वरूप दास की आत्मकथा'

बन्दी छोड़ कबीर साहेब की जय

मैं भक्त रामस्वरूप पुत्र मंगत राम गांव बड़ौली जिला-अम्बाला का रहने वाला हूँ। मैंने 13 साल से धन-धन सतगुरु से नाम ले रखा था। 6 साल पहले मेरे हाथ-पांव काम करना छोड़ गये थे। कमर से नीचे जैसे मेरा सारा शरीर मृत प्राय हो गया था। मेरे दोनों लड़के मेरे को अम्बाला सरकारी हस्पताल में लेकर गये फिर प्राईवेट डाक्टरों को भी दिखाया। इसके बाद मुझे 2 साल तक ईलाज के लिये इधर-उधर ले जाने के बाद मुझे P.G.I. चण्डीगढ़ भी लेकर गये वहां एक साल में मेरे दो बार टेस्ट किये गये। क्योंकि जिस मशीन से मेरे टेस्ट होते थे उसमें मेरा नम्बर एक महीने में आता था। उसकी टेस्टींग फीस छः हजार रूपये थी। वहां पर मेरे को दोनों बार की टेस्टींग में बीमारी के कारणों का पता नहीं लगा तो दोनों बार मेरे सिर का आप्रेशन करने को कहा गया जिसमें मेरी जान का खतरा बताया और पूर्ण ठीक होने की कोई गारन्टी नहीं है ऐसा कहा। उसके बाद घर वाले मुझे बाबा रामदेव के योग आश्रम में भी लेकर गये वहां मेरा कुछ दिन इलाज होता रहा कोई आराम न होने से मेरे को घर ले आये। फिर मुझे झाड़-फूंक करने वालों के पास पंजाब हरियाणा आदि स्थानों पर लेकर गये वहां भी मेरे को कोई आराम नहीं हुआ। हमने सोच लिया कि अब जीवन ही थोड़े दिन का है। जब मैं सभी ओर से निराश हो गया तो मेरे को मेरी लड़की जिसकी शादी शाहपुर (अम्बाला) में हुई थी उसने मेरे को वहां पर बुलाया गया। मेरे जमाई संजू ने कुकू - भगत के बारे में बताया। जो 15 अगस्त 2008 को मेरे को लेकर बरवाला आश्रम में सतगुरु बंदी छोड़ रामपाल जी महाराज के पास लेकर आये 16 अगस्त 2008 को मैंने नामदान लिया। उसके बाद मेरे को आराम होने लगा। गुरू जी की कृप्या से अब मैंने अपने खेत में आप ट्रेक्टर चलाया और अपनी सारी जमीन की बुवाई का काम किया महाराज के आर्शीवाद से मेरे को दुबारा जीवन दान मिला। महाराज बन्दी छोड़ ने जो कृप्या की उसको जुबान से ब्यान नहीं कर सकता। गुरु जी आप सतलोक से मेरा जीवन दान देने के लिए आए हो मेरा कोटी-कोटी दण्डवत् प्रणाम है। जय बन्दी छोड़ की।

आपका दास
भक्त राम स्वरूप दास
गांव - बड़ौली, जिला - अम्बाला

"भूतों व रोगों के सताए परिवार को आबाद करना"

भक्तमति अपलेश देवी पत्नी श्री रामेहर पुत्र श्री माँगेराम, गाँव-मिरच, तहसील चरखी दादरी, जिला भिवानी (हरियाणा)।

मैं अपलेश देवी अपने दुःखी जीवन की एक झलक आपको बता रही हूँ। मैं और मेरे बच्चे - राहुल और ज्योति हैं जो बीते समय के बुरे हालातों को याद करके सिहर जाते हैं। जिनका वर्णन करते समय कलेजा मुंह को आता है।

6 दिसम्बर 1995 की रात्री में बदमाशों ने मेरे पति को ड्यूटी के दौरान जान से मार दिया था। लेकिन इस पूर्ण परमात्मा (कबीर साहिब) ने हमारा ध्यान रखा और मेरे पति को जीवन दान दिया जो आज हमें परिवार सहित बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज की दया से पूर्ण परमात्मा के चरणों में स्थान मिल गया है। हमारे परिवार में मेरे पति को साफ कपड़े पहनाते जो कुछ देर बाद अन्डर वियर के ऊपर के हिस्से पर जहाँ पर रबड़ या नाड़ा होता है वहाँ चारों ओर खून से कपड़े रंगीन हो जाते थे, तथा बच्चों को भी बलगम के साथ खून आता था और मैं भी एक वर्ष से हार्ट (दिल) की बीमारी से बहुत परेशान हो चुकी थी। जिसके लिए वर्षों से दवाईयाँ खा रही थी। मेरे पतिदेव दिल्ली पुलिस में हैं। मेरे सारे शरीर पर फोड़े-फुन्सी हो जाते थे। घर में परेशानियों के कारण मेरे पति रामेहर का दिमागी संतुलन भी बिगड़ गया था।

हमने इन परेशानियों के लिए सन् 1995 से जुलाई 2000 तक एक दर्जन से भी ज्यादा लंगड़े, लोभी व लालची गुरुवों के दरवाजे खट-खटाए तथा भारत वर्ष में तीर्थ स्थानों जैसे जमुना, गंगा, हरिद्वार, ज्वाला जी, चामुन्डा, चिन्तपूरनी, नगर कोट, बाला जी, मेहन्दी पुर व गुड़गाँवा वाली माई तथा गौरख टीला राजस्थान वाले प्रत्येक स्थानों पर बच्चों सहित काफी बार चक्कर लगाते रहे लेकिन हमें कोई राहत नहीं मिली।

इस प्रकार हमारे परिवार की हालत यहाँ तक आ चुकी थी कि हम होली व दिवाली भी किसी मस्जिद में बैठकर बिताने लग गये थे।

हम बड़े खुशनसीब हैं जो हमें संत रामपाल जी महाराज के द्वारा परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण मिल गई। अब कहाँ गये वे काल के दूत तथा वे हमारी बीमारियाँ जिनका ईलाज आल इण्डिया हॉस्पीटल में चल रहा था, जो सतगुरुदेव के चरणों की धूल के आगे टिक नहीं पाई।

25 फरवरी 2001 को काल की पूजा करने वाले एक स्याने ने फोन करके पूछा कि अपलेश तुम्हारा नाम है। मैंने कहा कि हाँ, आप अपना नाम बताओ। तब वह स्याना कहता है कि यह बलवान कौन है, आपका क्या लगता है? मैंने कहा कि तुम कौन हो, आपका क्या नाम है तथा यह सब क्यों पूछना चाहते हो ? तब वह

स्याना कहता है कि बेटी तुम मेरा नाम मत पूछो। मैं बताना नहीं चाहता तथा मैं हांसी से बोल रहा हूँ। बलवान तथा इसके साथ एक आदमी और आया था दोनों ने मुझे 3700 रूपए तुम पर घाल घलवाने के लिए दिए थे। मैंने तुम्हारा फोन नं. भी बलवान से लिया था कि मैं पूछूंगा कि उनकी दुर्गति हुई या नहीं। मेरे पास आपका फोन नं. नहीं था, बलवान ने ही दिया था। जो मैंने यह बुरा कार्य रात्री में किया। लेकिन जैसे ही मैं सोने लगा तो मुझे सफेद कपड़ों में जिस गुरु की तुम पूजा करते हो वे दिखाई दिये, जिन्होंने मुझे बतला दिया कि इसका परिणाम तुम खुद भोगोगे। यह परिवार सर्व शक्तिमान सर्व कष्ट हरण परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण में है। आपकी तो औकात ही क्या है ? यहाँ का धर्मराज भी अब इस परिवार का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

गरीब, जम जौरा जासै डरै, मिटें कर्म के लेख। अदली अदल कबीर हैं, कुल के सद्गुरु एक।।

परम पूज्य कबीर परमेश्वर जी से जम (काल तथा काल के दूत) तथा मौत भी डरती है। वे पूर्ण प्रभु पाप कर्म के दण्ड के लेख को भी समाप्त कर देते हैं। इसके बाद उस स्याने ने कहा कि बेटी तुम्हें यह बतला दूँ कि तुम जिस देव पुरुषोत्तम की पूजा करते हो, वे बहुत प्रबल शक्ति हैं। मैं 25 वर्ष से यह घाल घालने का कार्य कर रहा हूँ। न जाने कितने परिवार उजाड़ चुका हूँ। परन्तु आज पहली बार हार खाई है। बेटी इस शक्ति को मत छोड़ देना, नहीं तो मार खा जाओगे। आपके विनाश के लिए बलवान आदि घूम रहे हैं। मैंने कहा कि हम पूर्ण परमात्मा की पूजा करते हैं, बलवान मेरे पति का बड़ा भाई है। हमारा जानी दुश्मन बना है।

हम आज इतने खुशनसीब हैं कि हमारे दिल में किसी वस्तु या कार्य की आवश्यकता होती है उसको यह सतगुरुदेव, सत कबीर साहिब पूर्ण कर देते हैं। आज गुरु गोविन्द दोनों खड़े, हम किसके लागे पाय। हम बलिहारी सतगुरुदेव रामपाल जी के चरणों में जिन्हें परमेश्वर दिया मिलाय।

भाईयों और बहनों हमारा सारा परिवार मिलकर आपको यह सन्देश देता है कि अगर आपको सतलोक का मार्ग, पूर्ण मोक्ष व सर्व सुख प्राप्त करना हो और सांसारिक दुःखों से छुटकारा पाना हो तो बन्दी छोड़ संत रामपाल जी महाराज से सतनाम प्राप्त कर लेना और अपना अनमोल मनुष्य जन्म सफल कर लेना।

।। सत साहिब।।

भक्तमति अपलेश देवी

''पूर्ण परमात्मा साधक को भयंकर रोग से मुक्त करके आयु बढ़ा देता है''

भक्त डा. ओम प्रकाश हुड्डा (C.M.O.) का प्रमाण

प्रमाण ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 161 मंत्र 1, 2 तथा 5 जिसमें परमेश्वर कहते हैं कि यदि किसी को प्रत्यक्ष या गुप्त क्षय रोग तपेदिक हो उसे भी ठीक करता हूँ तथा यदि किसी रोगी व्यक्ति की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी हो। जिसकी आयु शेष न रही हो तेरे प्राणों की रक्षा करूं तथा तेरी आयु सौ वर्ष प्रदान कर दूं, सर्व सुख प्रदान करूं। मंत्र 5 में कहा है कि हे पुर्नजीवन प्राप्त प्राणी ! तू सर्व भाव से मेरी शरण ग्रहण कर। यदि पाप कर्म दण्ड के कारण तेरी आँखें भी समाप्त होनी हों तो मैं तुझे पुनर् आजीवन आँखें दान कर दूं। तुझे रोग मुक्त करके सर्व अंग प्रदान करूं तथा तुझे प्राप्त होऊं अर्थात् मिलुं।

जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख। अदली अदल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे जीवन में पूर्ण रूप से सत्य घटित हुई।

मैं भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा (C.M.O. - M.B.B.S., M.S.(Eye specalist), 18 A, सरकुलर रोड़ रोहतक में रहता हूँ। मेरा मोबाईल नं. 9813045050 है। मेरा जन्म 12 अप्रैल 1953 को गाँव किलोई जिला-रोहतक में हुआ। मेरी पाँचवी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई D.A.V. स्कूल व D.A.V. कॉलेज अमृतसर में हुई। अमृतसर में मेरे बड़े भाई Librarian के पद पर D.A.V. स्कूल में कार्यरत थे। वहाँ के जानकार लोग उन्हें मास्टर जी तथा मुझे प्यार से छोटे मास्टर जी कहते थे। जब मैं छठी कक्षा में पढ़ता था तो मुझे एक महात्मा ने जो कि दुरग्याना मन्दिर अमृतसर में सेवक था, ने मेरी हस्तरेखा देखकर बताया कि छोटे मास्टर जी आप डॉक्टर बनोगे तथा तुम्हारी आयु केवल पचास वर्ष है। यह कहते हुए यह भय हुआ कि बच्चे को यह सच्चाई बताकर गलत कर दिया, लेकिन मैंने महात्मा की बातों को एक बच्चे की भांति सुना अनसुना कर दिया। मैं बड़ा होकर डॉक्टर बना तथा मैंने M.B.B.S. तथा M.S. (Eye specalist) भी P.G.I. M.S. रोहतक से की है।

ठीक पचासवां वर्ष जब पूरा होना था यानी 10/11 अप्रैल 2003 की रात बारह बजे के करीब उस दिन मैं सपरिवार रोहतक में ही था तो मुझे दोनों हाथों में दर्द तथा सीने में भारीपन शुरु हुआ और हम उपचार के लिए P.G.I. M.S. में चले गए। इससे पहले मुझे न ही ब्लड प्रेशर रहता था और न ही मुझे शुगर की बीमारी थी। मैंने नाम लेने से पहले पच्चीस वर्ष लगातार धूम्रपान अवश्य किया था।

वहाँ ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर को मैंने परिचय दिया कि H.C.M.S.I. (Group A) श्रेणी में मैं एस.एम.ओ. के पद पर तैनात हूँ। (उस समय S.M.O वर्तमान में C.M.O.) परिचय देने के बाद डॉक्टर ने तुरन्त उचित निरीक्षण के बाद मेरा ईलाज

शुरु कर दिया और Intensive Care Unit में शिफ्ट करने तक मुझे सभी गतिविधियाँ पता रही। लेकिन I.C.U. में शिफ्ट करने के कुछ समय बाद से मुझे कुछ मालूम नहीं कि आगे क्या हुआ ? लगभग डेढ़ दो घण्टे के पश्चात मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे काल के दूत चारों तरफ से घेर कर खड़े हैं और मुझे कह रहे हैं कि चलो तुम्हारा समय पूरा हो चुका है, हम तुम्हें लेने आए हैं। मैं उनको कुछ भी नहीं कह पाया था कि तभी पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब मेरे सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के रूप में मेरे बैड के पास प्रकट हुए तो वे काल के दूत जिनका चेहरा डरावना तथा शरीर डील-डोल था, महाराज जी को देखते ही अदृश्य हो गए।

मेरे सतगुरु देव ने मुझे आर्शीवाद दिया तथा कहा कि कबीर परमेश्वर ने आपकी आयु अपने कोटे से (अपनी शक्ति) से बढ़ा दी है ताकि आप अपनी भक्ति पूरी कर सके और सतलोक जा सकें। मैंने रो कर कहा कि मालिक आप ही स्वयं परमेश्वर हो, आपने इस चोले में अपने आपको छुपा रखा है, परमेश्वर भक्ति भी आप ही करवाने वाले हो। मैं भक्ति करने वाला कौन होता हूँ ? इतना कहकर मेरी आँखें खुल गई और मेरी आँखों में आसुंओं के सिवाए कुछ भी नहीं था। तीन दिन बाद जब I.C.U से मुझे वार्ड में लाया जा रहा था तो मैं उठकर पैदल चलने लगा तो एक डॉक्टर ने भाग कर मुझे पकड़ लिया तथा कहा कि क्या कर रहे हो ? आपने पैदल बिल्कुल नहीं चलना, आपको हार्ट अटैक हुआ है।

स्पेशल वार्ड में शिफ्ट करने के बाद डॉक्टर ने मुझे बताया कि हम हैरान हैं कि 10/11 तारीख की रात को आपकी E.C.G./B.P. इत्यादि रिपोर्ट बता रही थी कि आप बचने वाले नहीं हो, लेकिन सुबह आपकी E.C.G. आदि फिर सामान्य शुरु हो गई।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया था। इससे पहले मैं ब्रह्मा कुमारी, जैनी, राधास्वामी का शिष्य रहा तथा D.A.V. School/College का छात्र होने की वजह से आर्य समाज की अमिट छाप मुझ पर थी। गायत्री मंत्र का जाप कई लाख बार किया होगा। घर में लगभग सैकड़ों फोटो सभी देवी-देवताओं की थी। नामदान के बाद सभी देवी-देवताओं की फोटो जल प्रवाह कर दी तथा सभी प्रकार की आन उपासना बंद कर दी तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज के आदेशानुसार पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की भक्ति शुरु कर दी। क्योंकि सतगुरु ने कहा है कि --

'एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाए। माली सींचैं मूल को, फले–फूले अघाए।।'

एक कबीर परमेश्वर की भक्ति में आरूढ़ होने से वह भी केवल तत्वदर्शी संत से नाम लेने के बाद लाभ यह हुआ कि संत रामपाल जी महाराज ने अपने कोटे से मेरी उम्र बढ़ा दी। यह बातें मैंने तथा मेरे परिवार के सदस्यों ने P.G.I.M.S. में कार्यरत डॉक्टर तथा दूसरे स्टॉफ के सदस्यों को बताई, लेकिन उनके समझ में एक न आई। क्योंकि ये बातें समझ में उसी को आयेंगी जिनका चैनल परमेश्वर ऑन

करेंगे, अन्यथा संभव नहीं कि कोई इस ज्ञान को समझ सके।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया तो मुझे मालूम नहीं था कि यही पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब ज्यों के त्यों अवतार आए हुए हैं। लेकिन जब मेरे साथ उपरोक्त घटना घटित हुई तब मुझे यह विश्वास हो गया कि माँसा घटे न तिल बढ़े, विधना लिखे जो लेख। साचा सतगुरु मेट कर ऊपर मारें मेख।

कबीर परमेश्वर सशरीर संत रामपाल जी महाराज के रूप में आए हुए हैं जो सच्चे सतगुरु हैं और विधना (भाग्य) के पाप कर्मों रूपी लेख को मिटा कर अपनी शक्ति से नये लेख लिख देते हैं।

"भक्तमति सुशीला की आँख ठीक करना"

इसी प्रकार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला हुड्डा को 6-12-2004 को दाईं आँख से दो-दो वस्तुएं नजर आनी शुरु हो गई थी। P.G.I.M.S. रोहतक में सभी टेस्ट M.R.I. तथा M.R.I. Angio graphy इत्यादि करवाने तथा सभी वरिष्ठ डॉक्टरों को दिखाया तथा ईलाज भी किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। प्राइवेट डॉक्टर ईश्वर सिंह इत्यादि को भी दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। यह सभी हमने सतगुरु से आज्ञा लेने के बाद किया था लेकिन जब दवाईयों से कोई लाभ नहीं हुआ तो हमने सतगुरु से प्रार्थना की कि परमेश्वर आप आयु तक बढ़ा देते हो तो आपके लिए यह क्या कठिन है ? कृप्या आप अपने बच्चों पर यह कृपा भी कर दो। सतगुरुदेव ने कृपा की और सिर पर हाथ रखते ही दाई आँख बिल्कुल सीधी हो गई और दो-दो वस्तु नजर आनी बंद हो गई। जैसे पहले थी बिल्कुल ज्यों की त्यों हो गई। अब इनको पूर्ण परमात्मा पाप कर्मों को जलाकर नष्ट करने वाले भगवान नहीं कहे तो और क्या कहें ? कृप्या पाठक स्वयं पढ़कर विचार कर निर्णय लें और अति शीघ्र आप भी अपनी मान-बड़ाई व शास्त्रविधि रहित साधना को त्याग कर सतलोक आश्रम करौंथा में आकर परम पूज्य सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेकर अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाऐं।

''सत साहेब''

प्रार्थी : भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा।

'' तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है''

भक्त रामकुमार ढाका (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) का प्रमाण

मैं रामकुमार ढाका 'रिटायर हैडमास्टर दिल्ली' (M.A.B.ED.), गाँव सुंडाना, जिला-रोहतक, वर्तमान पता - आजाद नगर, रोहतक (मोब. नं. - 9813844747) में रहता हूँ। सन् 1996 से मेरी पत्नी और दोनों लड़कों को एक बहुत भयंकर बीमारी थी। इस बीमारी से इतने तंग हो गये कि दोनों लड़के कहने लगे कि नौकरी नहीं

हो सकती क्योंकि इस बीमारी से गला रूकता था और श्वांस आना बंद हो जाता था, तभी डाक्टर लेकर आते और नशे का टीका लगा देते, परन्तु रात को ड्यूटी पर होते तब कहां ले जायें, बहुत ही परेशानी हो जाती थी, अफसर भी मुझे बुला लेते थे, मैं उनको बताता तब कहते की ईलाज करवाओ, जब घर पर होते तो डॉ. को रात को दो-दो बार भी आना पड़ता था, क्योंकि कभी किसी घर के सदस्य को तो कभी किसी को। अगर किसी को शक हो तो डबल फाटक पर डॉ. सचदेवा की दुकान है, सचदेवा साहब से पूछ लो कि मास्टर जी के घर पर क्या हाल हो रहा था?

जिसने भी जहाँ पर बताया मैं वहीं पर गया - उत्तर प्रदेश में कराना शामली के पास, उत्तर प्रदेश में खेखड़ा, राजस्थान में बाला जी कई बार, खाटूश्याम जी व कई जगह जन्त्र-मन्त्र करने वालों के पास, हरियाणा में तो मैंने कोई जगह नहीं छोड़ी, परन्तु कोई फर्क नहीं लगा, करेला के पास खेड़ा कंचनी, बोहतावाला, गोहाना के पास नगर, समचाना, सिकन्दरपुर, खिड़वाली आदि अनेक जगह गया और लगभग तीन लाख रूपये लग गये कोई काम नहीं आये।

मैं थक गया और मेरा परिवार बर्बाद हो गया। मेरी पत्नी ने मेरे से कहा कि मेरा जीवन समाप्त होने वाला है तथा भक्त सुभाष पुत्र महेन्द्र पुलिस वाला जिस संत रामपाल की महिमा सुनाता है मुझे उसी संत से नाम दिला दे। पहले मैं किसी बात पर विश्वास नहीं करता था तथा गुरु बनाना तो बहुत ही हेय समझता था। कहा करता था कि तेरा गुरु तो मैं ही हूँ, मैं एम.ए.बी.एड मेरे से ज्यादा कौन गुरु होगा ? परन्तु परिस्थितियों ने मुझे विवश कर दिया तथा मैंने यह भी स्वीकृति अपनी पत्नी को दे दी कि आप नाम ले लो। आप का जीवन शेष नहीं है। क्योंकि उस समय मेरी पत्नी का वजन 50 कि.ग्रा. रह गया था, पहले 80 कि.ग्रा. वजन था। उठने-बैठने से भी रह गई थी, चलना फिरना तो बहुत दूर की बात थी।

मैंने कहा मर तो ली, नाम और लेकर देखले, अपने मन की यह और करके देखले, अब मैं तेरे को नहीं रोकूंगा, नाम ले ले, ठीक है, क्योंकि संत रामपाल जी से नाम लेने के लिए कहने दूसरे तीसरे महीने सुभाष हमारा भतीजा आता था, कहता था ताई नाम ले लो नहीं तो मरोगे। मैं कहता था कि कोई डॉ. छोड़ा नहीं, हम बाला जी आदि सभी तान्त्रिकों के पास सिर मार लिया तो आपका संत क्या ले रहा है ?

परन्तु तंग आकर, कहीं बात नहीं बनी तब नाम लेने भेज दी। क्योंकि मैं भी अपने परिवार के आश्रम में जाने के सख्त विरुद्ध था। 16 जनवरी 2003 में नाम लिया और 'गहरी नजर गीता में' नामक पुस्तक साथ लेकर आई। एक महीने में जैसे दीपक में तेल डाल दिया इस प्रकार रोशनी हो गई, हर महीने तीन किलो वजन बढ़ने लगा।

तब बड़े लड़के को भी बगैर नाम लिये ही इस माँ के नाम लेने से अच्छी नींद

आने लगी, तभी उसने अपनी पत्नी को नाम दिलवाया, फिर मैंने 'गहरी नजर गीता में' पुस्तक पढ़ी, तब मैं भी गहराई में गया तो पाया कि ऐसा ज्ञान कभी नहीं पढ़ा व सुना था और मैंने भी अप्रैल 2003 में नाम लिया। आज मेरे घर में सभी बड़े से बच्चे तक ने नाम ले लिया है।

जब वह बीमारी होती थी तब सारा घर कांप उठता था, लड़ाई-झगड़ा, नौकरी में विवाद, डॉ. का आना जाना या मैडीकल में इमरजैंसी में लेकर पहुँचते थे। आज हमारा घर स्वर्ग के समान है और सतलोक जाने की इच्छा है।

एक महीना पहले स्वपन में परमेश्वर कबीर साहेब जी गुड़गाँव सैक्टर 57 में प्लॉट बुक कर गये, जब ड्रा निकला तो वही प्लॉट नंबर मिला जो स्वपन में कबीर परमेश्वर ने बताया था, सुबह समाचार पत्र पढ़ा तो वही प्लॉट नं. अलोट था।

हमारे यहाँ ऐसी बीमारी थी कि कोई भी इतना दुःखी नहीं होगा जो हम थे अब संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश प्राप्त करने के पश्चात् बहुत थोड़े दिनों में हम बहुत सुखी हैं।

मेरे घर पर 'जिन्न' (जिन्द) प्रकट हुआ, उसने कहा मैं आपके आश्रम में जाता हूँ, सब कुछ देखकर आता हूँ, परन्तु मैं शीशों में नहीं जाता जहाँ संत जी बैठ कर सत्संग करते हैं, क्योंकि मैंने सब बातों का पता है, अगर वहाँ जाउंगा तो मेरी पिटाई बनेगी इसलिए मैं वापिस बाहर आ जाता हूँ और तुम कहीं तान्त्रिकों के पास क्या, चाहे बाला जी गये, मैं अंदर जाया ही नहीं करता, बाहर रह जाता हूँ, मेरे को कोई बांधने वाला नहीं है। मेरे साथी डरपोक थे वह भाग गये मैं नहीं जाउंगा, मेरे को पढ़ कर छोड़ रखा है, मैंने तेरे घर व तेरी लड़की के घर की ईंट से ईंट बजानी है। मैं इस प्रकार पढ़कर छोड़ रखा हूँ कि एक के बाद एक सभी के विनाश का नम्बर आयेगा, चाहे कहीं भी भाग लो।

कुछ दिन के बाद वही प्रेत घर में फिर प्रकट हुआ और जोर-जोर से बोलने लगा कहां है तेरा गुरु रामपाल ? कहां है तेरा मालिक कविर्देव (कबीर परमेश्वर)? जब भी वह प्रकट होता था मनुष्य की तरह बातचीत करता था। तभी मेरी पत्नी हमारे घर पर बने पूजा स्थल पर चली गई और डण्डौतं प्रणाम किया, तभी जिन्द(प्रेत) की पिटाई आरम्भ हो गयी और कहने लगा क्यों पिटाई करते हो, इन दीवारों को अब गिरा दूंगा। उसकी अच्छी पिटाई हुई वो कहने लगा हाय ये तो दीवार नहीं लोहे का जाल है, सरिये हैं। ये मालिक रामपाल जी कहां से आ गये ये तो बरवाला सत्संग करने गये हुए थे (उस दिन संत रामपाल जी महाराज बरवाला जि. हिसार में सत्संग करने गए हुए थे) मैं तो इसलिये आया था कि मालिक यहाँ पर है ही नहीं।

जिन्द ने कहा कि मैं आया था तुम्हारी ईंट से ईंट बजाने परन्तु मेरी ईंट से ईंट बज गई। मेरे को नरक में डालेंगे, मैं चला जाउंगा, मुझे छुड़वा दो। करौंथा

आश्रम में संत रामपाल जी बैठे हैं इनको आदमी मत समझना पूर्ण परमात्मा आये हुए हैं। इनको मत छोड़ देना, नहीं तो खता खा जाओगे। ऐसे ही खेड़ा कंचनी वाला पण्डित भी इलाज करता था।

जब मैं खेड़ा कंचनी में गया तो उस पंडित ने बताया कि आपका परिवार एक के बाद एक करके खत्म हो जायेगा। मैंने नहीं मानी, परन्तु शाहपुर में ही भाई की लड़कियों की शादी कर रखी है तथा वह पण्डित भी शाहपुर का ही है। फिर पण्डित जी ने हमारे चौधरी को बताया कि रोहतक वाले चौधरी रामकुमार के यहाँ बहुत खतरनाक बीमारी है और सारा परिवार नष्ट हो जायेगा। उनको बुलाकर लाओ। तब हमारे चौधरी साहब ने बटेऊ को मेरे पास भेजा। हमारे बटेऊ जिले सिंह ने बताया और वह साथ लेकर गया। बुलाना तो आसान था परन्तु फिर ईलाज बहुत मुश्किल हो गया। उसके काबू में नहीं आया। मंगल व शनिवार को रात के समय पाँच-पाँच चौकियां आती थी। उन्हें उतारता और साथ में तालाब में डाल देता। यह कार्यक्रम चार साल तक चलता रहा परन्तु बाद में हाथ खड़े कर दिए।

मैं बोहतावाला (जीन्द) में एक स्याने के पास पहुँचा। उसने कहा कि तेरी बीमारी मैं काट दूंगा। आपकी बीमारी का मुझे पता है। वह हमें कई बार बाला जी भी ले गया, न उस स्याने के काबू में आया और न उसके मन्दिर में। क्योंकि मंगल व शनिवार को चौकियों के आने ने उसको इतना तंग कर दिया कि वह भी हाथ खड़े कर गया, क्योंकि चौकियां जब आती थी तो मेरे पास भी संदेश आ जाता था कि रात 9 से 2 बजे तक आग जला कर, पानी का लोटा लेकर और लाठी लेकर जागते रहना है। यह कार्यक्रम सन् 1996 से 2002 तक चलता रहा। बोतावाले के पास जब चौकी आई तो उसमें एक पर्ची मिली थी बोहतावाले स्याने को कहा था कि बीच से हट जा तेरे को पचास हजार रूपये दे देंगे, नहीं तो तेरी भी खैर नहीं है। उसने डर के कारण मुझे इन्कार कर दिया। मैं दिन में दिल्ली नौकरी करने जाता और रात को पहरा देता। कभी रात को डॉ. को बुला कर लाता। मेरी बहुत ही दुर्दशा थी। मैं ऊपर के काम से तथा सारा परिवार बीमारी से बहुत तंग था। किसी को कहते तो मजाक करते थे, किसी ने भी साथ नहीं दिया। बहुत पैसे (लगभग 3 लाख) खर्च हो गये।

मेरी पत्नी चांदकौर को थाईराइड हो गई थी। जनवरी 2003 में डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने थाईराईड के लिए तिमारपुर, दिल्ली हस्पताल में दाखिल करवाने के लिए मार्क कर दिया। परन्तु वहाँ न जाकर मैं मैडिकल में डॉ. चुग इसका स्पेशलिस्ट था उनसे ईलाज करवाया, उसने कहा सारी उम्र दवा खानी पड़ेगी, परन्तु अब 2003 में नाम लेने के बाद दवाई बिल्कुल समाप्त हो गई। मैंने डॉ. चुग को भी चैक करवाया, तो हैरान होगये, ये कैसे हुआ, सारी बातें बताई।

अब मेरे लड़के व मेरी पत्नी की सभी बिमारियाँ बन्दी छोड़ ने ठीक कर दी।

बड़े लड़के का नाम सुरेन्द्र कुमार तथा छोटे लड़के का नाम मनोज कुमार है। दोनों हरियाणा पुलिस में नौकरी करते हैं। जब वे दोनों ही उस जिन्द भूत से ग्रस्त थे व घाल ने भी उन पर कई बार अटैक किया, लेकिन नाम उपदेश ले रखा था। इसलिए उनको परमात्मा कबीर साहिब ने बचा लिया।

तत्वदर्शी जगतगुरु संत रामपाल जी महाराज हमारे लिये ही अवतरित हुऐ हैं क्योंकि जिस परिवार में दो लड़के नौकरी पर दोनों में ही जिन्द हो तो उस घर में क्या होगा। जिस औरत के दोनों लड़कों के साथ ऐसा खिलवाड़ हो और खुद में भी जिन्द हो तो क्या जिन्दगी है ? जो लोग करौंथा आश्रम के बारे में ज्ञान अर्जित नहीं करते वे लोग अंधेरे में हैं। क्योंकि पढ़ने के लिए दिमाग दिया है, पढ़िये और सोचिये कि वास्तविकता क्या है ?

हमारा परिवार बर्बाद हो गया था। मेरे बच्चे और मेरी पत्नी जब ठीक हो गई तभी मैंने अपने आपको सतगुरु रामपाल जी के चरणों में समर्पण कर दिया। मेरा कुछ नहीं है। ये तन-मन-धन सभी गुरु जी के चरणों में समर्पित करता हूँ।

मेरी लड़की ने व दामाद ने भी नाम ले लिया। आज मेरी बेटी का घर भी स्वर्ग हो गया है। मेरा दामाद शराब पीता था, उसने शराब भी त्याग दी। मेरी लड़की की प्रमोसन, प्लॉट, मकान आदि चन्द दिनों में ही प्राप्त हो गए तथा सबकी मौज हो रही है।

सन् 2003 में बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज ने हमारे पाप कर्मों रूपी सूखे घास के ढेर को सतनाम रूपी अग्नि से जलाकर नष्ट कर दिया। न कोई गंडा, न कोई डोरी, न राख, न ताबीज आदि कुछ नहीं, बस केवल बन्दी छोड के मंत्र (नाम उपदेश) मात्र से सर्व रोग नष्ट हो गए। मंत्र तो मोक्ष प्राप्ति के लिए सभी बन्धनों से छुटकारा पाकर सतलोक ले जाने का है, ये सभी बिमारियां तो रूंगे में कविर्देव की कृपा से ही समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसा न हो तो भक्ति से विश्वास उठ जाता है। अब हम बहुत सुखी हैं। अब चाहे कोई कुछ भी करे, हमारे घर पर कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि हम बन्दी छोड़ कबीर साहेब के हंस हैं, उनके चरणों में हैं। मैं भी नहीं मानता था, इन बातों को पाखण्ड कहता था, परन्तु जब एक के बाद एक को डॉ. के पास ले जाता था तथा बीमारी में पैसे भी लगे, तंग भी हुए, तब आँखें खुली वास्तव में ही मुझे जाल में फंसा रखा है। इसलिए अपने इस भ्रम को भुला देना कि भूत-प्रेत कुछ नहीं है। मैं कहता हूँ कि बकवास नहीं ये बातें वास्तव में हैं, क्योंकि मरोड़ में मैंने अपने घर को बरबाद कर दिया होता। इसलिए मैं सभी पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि आप भी अपने समस्त दुःखों से छुटकारा पाने व सत्यभक्ति करने के लिए सतलोक आश्रम करौंथा में परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से मुफ्त उपदेश प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाए।

प्रार्थी : हैडमास्टर रामकुमार (एम.ए.बी.एड.)

''जीवन दाता अवतार''

मैं भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम निवासी गांव धनाना, जिला सोनीपत जो कि फिलहाल शास्त्री नगर रोहतक (हरियाणा) का निवासी हूँ। सतगुरु जी से नाम उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जो कि कभी बीमार न रहता हो, मेरी पत्नी को भूत-प्रेत बहुत ही ज्यादा परेशान करते थे। इतना कष्ट रहने के बावजूद हम देवी देवताओं की बहुत पूजा करते थे तथा मेरी हनुमान जी में बहुत ज्यादा आस्था थी। लेकिन घर में संकट पर संकट आते जा रहे थे। किसी भी काम में बरकत नहीं हो रही थी। पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी मेरे परिवार के होने के कारण हम उनको पूर्ण परमात्मा नहीं मान पाये जिसका खामियाजा हमें कई वर्षों तक झेलना पड़ा। तभी गांव सिंहपुरा निवासी भक्त विकास ने मुझे बताया कि आपके घर में पूर्ण परमात्मा जगत् गुरु रामपाल जी महाराज आये हुए हैं और आप कहां सोये पड़े हो, तो मैंने कहा कि काल ने हमें कष्ट ही इतना दे रखा है कि हमें वहां के बारे में जानने का टाईम ही नहीं मिला। सारा समय डाक्टरों के चक्कर काटने में चला जाता है। ऊपर से आर्थिक तंगी भी बहुत रहती है। उस भक्त ने मुझे काफी समझाया, पूर्ण परमात्मा की ऐसी दया हुई कि मैं संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने के लिए अक्तूबर 2010 में सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचा। नाम उपदेश लेने के बाद सतगुरु जी ने अपना दया का पिटारा खोल दिया और मुझे वो सुख अनुभव होने लगे जिनका वर्णन इस जुबान से कर पाना बहुत मुश्किल है।

मेरी पत्नी को भूत-प्रेत सता रहे थे। सतगुरु देव जी की दया से अब वह पूर्ण रूप से ठीक है। 7 सितम्बर 2011 को मेरा लड़का मोहित उम्र 12 साल जो कि मेरे कहने पर मिस्त्री को बुलाने के लिए गया था। मेरा लड़का मिस्त्री के मकान की छत पर चढ़ गया तथा छज्जे पर चला गया। छज्जे के साथ ऊपर 11000 (ग्यारह हजार) वोलटेज के बिजली के तार थे। लड़के तथा तारों के बीच में केवल एक फीट की दूरी थी। जब वह उनके नजदीक गया तो तारों ने लड़के को खेंच लिया और लड़के के सिर पर तार चिपक गया तथा एक इन्च गहरा घुस गया व मुंह जल गया और बिजली सारे शरीर में प्रवेश करके पैर के अंगूठे की हड्डी को तोड़ कर निकलने लगी। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा मेरे लड़के को बहुत ही चमकदार (तेजोमय) शरीर सहित दिखाई दिये जैसे हजारों ट्यूबों का प्रकाश हो रहा हो। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया। फिर लड़के की सतगुरु जी से बहुत बातें हुई तथा जब सतगुरु जी जाने लगे तो लड़के ने पूछा कि गुरु जी कहां जा रहे हो तो

गुरु जी ने कहा कि बेटा मैं तेरे साथ हूँ तू घबरा मत। उस समय मेरे लड़के मोहित की माता जी भी वहीं पर थी। उसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा तथा वह बहुत घबरा गई। क्योंकि लड़के के शरीर से बिजली के लपटें निकल रही थी।

उसके बाद हम लड़के को पी. जी. आई. रोहतक हॉस्पिटल में लेकर गये। वहां पर भी लड़के को गुरु जी दिखाई दिये व मेरे लड़के ने कहा कि गुरु जी मेरे साथ हैं। आप घबराओ मत। यदि आज हम गुरु जी की शरण में नहीं होते तो हमारा लड़का आज जिंदा नहीं होता तथा मेरी पत्नी को भी प्रेत मार डालते, हम उजड़ने से बच गये। यह सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की ही दया है।

सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि मेरी सत्यकथा को पढ़कर आप जी भी सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की शरण में आकर अपना समय रहते कल्याण कराऐं तथा प्रारब्ध में लिखे कर्मों के कारण जो घटनाऐं घटनी होती हैं उन से पूर्ण रूप से बचोगे। सतगुरु रामपाल जी महाराज के सतसंग वचनों में मैंने सुना था कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी बन्दी छोड़ हमारे सर्व पापों को नाश कर देते हैं। ऐसा ही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मंत्र 2 में तथा मण्डल 9 सुक्त 80 मंत्र 2 में भी लिखा है कि यदि किसी रोगी की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी है तथा उसकी आयु भी शेष न रही हो तो उसके प्राणों की रक्षा करूं तथा उसे सौ वर्ष आयु प्रदान करके अर्थात् उसकी आयु बढ़ा कर साधक को सर्व सुख प्रदान करता हूँ।

सज्जनों सतगुरु रामपाल जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में यह भी बताया है कि प्रत्येक प्राणी अपने किए कर्मों के अनुसार ही सुख व दुःख प्राप्त करता है। दुःख तो पाप कर्मों का फल है तथा सुख पुण्य कर्मों का फल है। अभी तक सर्व सन्त, आचार्य, गुरु यही कहते रहे हैं कि जो प्रारब्ध कर्म का भोग है वह तो प्राणी को भोग कर ही समाप्त करना होगा। हे सभ्य पाठकों ! सतगुरु रामपाल जी महाराज कहते हैं कि पाप कर्म से दुःख होता है। यदि पाप कर्मों का नाश हो जाए तो दुःख का स्वतः अन्त हो जाता है। यदि भक्ति करते-२ भी पाप कर्म का फल (दुःख) भोगना ही पड़े तो भक्ति की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है। 7 सितम्बर 2011 को हमारे प्रारब्ध कर्म के पाप के कारण मेरे पुत्र मोहित की मृत्यु होनी थी। हमारे सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की कृपा से परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने हमारे पाप का नाश कर दिया तथा मेरे बच्चे की जीवन रक्षा करके आयु बढ़ा दी। यदि 7 सितम्बर 2011 को प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मेरा बेटा मर जाता तो हम सर्व परिवार के सदस्य भक्ति त्याग देते तथा नास्तिक हो जाते। क्योंकि हमें उस समय परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं था। अब भगवान पर अत्यधिक विश्वास हो गया है। यह भी विश्वास हो गया कि परम पूज्य कबीर जी ही परमेश्वर हैं। ये पाप नाशक सर्व सुखदायक व पूर्ण मोक्षदायक हैं तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज उन्हीं के भेजे उनके अवतार आए हैं। अतः आप जी से पुनः प्रार्थना है कि

अविलम्ब सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचे तथा उपदेश लेकर कल्याण कराऐं। आप जी से प्रार्थना करने का मेरा उद्देश्य यह है कि मेरे जैसे दुःखीया बहुत हैं। मेरी उपरोक्त आत्मकथा को पढ़कर विचार करके वे भी मेरे की तरह संकटों का निवारण करा सकेंगे तथा सुखी हो सकेंगे।

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे (समय) नूं।।

प्रार्थी

भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम,
शास्त्री नगर, हिसार बाई पास, रोहतक,
मोब. नं. 09829588628

उपरोक्त कुछ भक्तात्माओं की आत्म कथाएं आपने पढ़ी। ऐसे-२ भक्त हजारों-लाखों हैं जो अपनी आत्म कथा पुस्तकों में लिखवाना चाहते हैं। लेकिन यहां पर स्थान के अभाव के कारण हम कुछेक भक्तों की आत्म कथा लिख सके हैं। यदि सभी भक्तों की आत्म कथा हम लिखने बैठ जांए तो शायद सैकड़ों पुस्तकें छप जाएंगी। इसलिए समझदार व्यक्ति को इशारा (संकेत) ही काफी होता है।

भक्ति में भेद : भक्ति भक्ति में बहुत भेद होता है। आप चाहें किसी देव/देवी की भक्ति करें। उसका फल अवश्य मिलेगा जो कि नाशवान होगा। लेकिन मुक्ति नहीं हो पाएगी और पाप कर्म भी समाप्त नहीं होंगे जिन्हें भोगने के लिए बार-२ जन्म लेते रहना पड़ेगा। मुक्ति तो केवल पूर्ण संत की शरण में जाकर अर्थात् उनसे नाम उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से ही हो पाएगी अन्यथा नहीं।

❖❖❖